

VIDEHA · MONOGRAPH SERIES

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३२

समानान्तर मैथिली साहित्येतिहास

विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन



सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३२

समानान्तर मैथिली साहित्येतिहासक विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन

मूल ग्रन्थ

A Parallel History of Mithilā & Maithilī Literature

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह • प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका • २०२६

प्रकाशन आ पुस्तक-पहिचान

शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ३२

मूल पुस्तक : A Parallel History of Mithilā & Maithilī Literature
(Volumes 1–100), with Critical Appreciations of Representative
Maithili Writers

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक एवं समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशन-सन्दर्भ : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X

प्रकाशन-वर्ष : २०२६

© प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर, २०२६ । वास्तविक पुस्तकाधिकार मूल अधिकार-
विवरणक अधीन रहत ।

पुस्तकाकार : ६ × ९ इंच · देवनागरी युनिकोड · मिरर्ड मार्जिन

सम्पादकीय टिप्पणी

ई पुस्तक समानान्तर मैथिली साहित्येतिहासक उपलब्ध मूल Word पाठक
आधारपर विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन अछि। मूल ग्रन्थमे प्रस्तुत विवादित
ऐतिहासिक, जीवनीगत आ संस्थागत दाबीकेँ स्वतन्त्र साक्ष्यसँ प्रमाणित तथ्य
मानि नहि दोहराओल गेल अछि। मूल लेखकक कथन, आलोचनात्मक अनुमान
आ बाह्य सत्यापनक आवश्यकता जहाँ उचित हो तहाँ अलग स्पष्ट कएल गेल
अछि।

मूल ग्रन्थक अनुच्छेद-संकेत Wordक संरचनात्मक क्रम अछि, मुद्रित पृष्ठ-
संख्या नहि। मूल उद्धरण, कृतिनाम आ पुस्तकाधारित विशेष दाबी सन्दर्भसहित
राखल गेल अछि।

विस्तृत अनुक्रमणिका

००१. समानान्तर साहित्येतिहासक प्रतिज्ञा : प्रतिष्ठानसँ बहिष्कृत पाठ धरि १४
००२. भाषा, सांस्कृतिक आधिपत्य आ राजनीतिक प्रतिनिधित्व १६
००३. चर्यापद, पूर्व-मैथिली आ आदिकालक विवाद १८
००४. दू विद्यापतिक भेद : प्रतिज्ञा, कालक्रम आ पाठकर्तृत्व २०
००५. गङ्गेश उपाध्याय आ पञ्जीक प्रमाणशास्त्र २१
००६. सीमापार मैथिली : नेपालक रंगमंच आ असमक ब्रजावली २२
००७. अकाल-काव्य, सामाजिक यथार्थ आ पुरस्कार-प्रतिष्ठान २३
००८. स्त्रीस्वर, दलित रंगमंच आ डिजिटल प्रतिअभिलेख २५
००९. मागधी, अपभ्रंश आ मैथिली : भाषा-उद्भवक काल-विभाजन २७
०१०. तिरहुता, देवनागरी आ सांस्कृतिक अभिलेखक राजनीति २८
०११. सिद्ध, नाथ, ज्योतिरीश्वर आ जनभाषाक प्रारम्भिक रूप २९
०१२. मिथिला-नेपाल-असमक नाटक : तुलनात्मक रंगशास्त्र ३०
०१३. आधुनिक नवजागरण आ साहित्यिक मान्यता : कारणक परीक्षण ३१
०१४. लोकनायक, दीनाभट्टी, सलहेस आ स्त्री-नायिकाक स्मृति ३२
०१५. नूतन कथासाहित्य, सामाजिक विस्थापन आ पञ्जी-इतिहासक पुनर्विचार ३३
०१६. राधाकृष्ण चौधरीक सर्वेक्षण : स्रोत, भाषा आ आरम्भिक साहित्य ३४
०१७. ब्रजबुली आ ब्रजावली : साझा साहित्यिक भाषा अथवा एकदिश प्रभाव? ३५
०१८. नेपालक मैथिली नाटक : पाण्डुलिपि, दरबार आ कीर्तनिया परम्परा ३६
०१९. सत्रहम-उन्नीसम शताब्दीक 'अवनति' : मानक कसकर? ३७
०२०. ग्रियर्सन आ चन्दा झा : औपनिवेशिक ज्ञान आ भाषिक नवजागरण ३८
०२१. आरम्भिक पत्रिका-आन्दोलन : छप्पाइ, जाति आ पाठक-विस्तार ३९
०२२. बीसम शताब्दीक आधुनिकता : कथा, नाटक, गीत आ स्वीकृति ४०
०२३. राधाकृष्ण चौधरीक सर्वेक्षण : उपलब्धि आ आलोचनाक उचित कसौटी ४१
०२४. तुलनात्मक कालरेखा आ 'दाता सभ्यता'क निष्कर्ष : प्रमाणक बोझ ४२

०२५. अनुलग्नकक उत्तरवर्ती विवाद : रामनाथ झा आ संस्थागत क्षेत्र-सीमा ४३
०२६. अकादेमीक मान्य संगठनसभ : सूचीसँ प्रतिनिधित्व धरि ४४
०२७. पुरस्कार-वितरणक आँकड़ा : आन्तरिक सङ्ख्यागत असङ्गति ४५
०२८. संस्थागत उद्देश्य, लेखकीय उत्तरदायित्व आ सुधारक प्रस्ताव ४६
०२९. विदेहक आरम्भिक डिजिटल इतिहास : माध्यमसँ साहित्यिक आन्दोलन ४७
०३०. सूचनाक अधिकार आ चयन-आरोप : दस्तावेजी दावीक प्रमाणसीमा ४८
०३१. मैथिली विकिपीडिया, तिरहुता आ तकनीकी मानकीकरणक इतिहास ४९
०३२. जगदीश प्रसाद मण्डलक आगमन : युग-विभाजनक साहित्यिक कसौटी ५०
०३३. गङ्गेश उपाध्यायक जीवनी : दार्शनिक प्रतिष्ठा आ विवादित वंशवृत्त ५१
०३४. पञ्जी-प्रबन्धक कालक्रम आ श्रोत्रिय वर्गक ऐतिहासिक गठन ५२
०३५. दूषण पञ्जीक पीढ़ी-क्रम : एकटा अभिलेखीय उदाहरणक व्याख्या ५३
०३६. गङ्गेश-सम्बन्धी पञ्जी-प्रविष्टि : नाम, पारिभाषिक पद आ पाठ-साक्ष्य ५४
०३७. प्राचीन न्यायसँ नव्य न्याय : बौद्धिक वंश-रेखाक पुनर्निर्माण ५५
०३८. प्रत्यक्षप्रमाणक विवेचन : अनुभूतिक रूप आ ज्ञानक प्रामाण्य ५६
०३९. अनुमानप्रमाण : व्याप्ति, उपाधि आ तर्कदोषक ऐतिहासिक भूमिका ५७
०४०. उपमान-शब्दप्रमाण आ टीका-परम्परा : ज्ञानक प्रसार ५८
०४१. यथार्थज्ञान आ परतःप्रामाण्य : प्रमाणक वैधताक प्रश्न ५९
०४२. प्रत्यक्षक सीमा : लौकिक सन्निकर्ष, अवधारणा आ आत्मानुभूति ६१
०४३. व्याप्ति, पक्षधर्मता आ हेत्वाभास : निष्कर्षक अनुशासन ६३
०४४. उपमान, आप्तवाक्य आ वाक्यार्थ : साहित्यिक भाषाक दार्शनिक आधार ६५
०४५. द्रव्यसँ अभावधरि : नव्य न्यायक सत्तामीमांसा आ संस्थागत इतिहास ६७
०४६. गङ्गेशक नाम, काल आ पञ्जी-विवाद : जीवनी आ स्रोतक अधिकार ६८
०४७. न्याय, मीमांसा आ वेदान्तक मतभेद : तुलनात्मक प्रमाणमीमांसाक पुनर्पाठ ७०

०४८. गङ्गेश-उदयन-रघुनाथ : तुलना, आलोचना आ नव्य न्यायक गतिशील परम्परा ७२
०४९. गङ्गेशक पुनर्प्रस्तुति : साहित्येतिहास, ज्ञान-परम्परा आ सामाजिक स्मृति ७४
०५०. दूषण पञ्जी : मूल लिप्यन्तरण, परवर्ती वंशक्रम आ प्रमाणक श्रेणी ७६
०५१. प्रत्यक्षखण्डक तेरह प्रकरण : मंगल, प्रामाण्य आ ज्ञानोत्पत्तिक विवाद ७८
०५२. मिथिलासँ नवद्वीप : शास्त्रीय प्रसार आ बौद्धिक केन्द्रक पुनर्गठन ८०
०५३. अभावज्ञानक प्रकरण आ नव्य न्यायसँ कथा-साहित्यक संवाद ८२
०५४. कारकवाद : क्रिया, कर्ता, कर्म आ विभक्तिक दार्शनिक अर्थ ८४
०५५. धातुवाद आ प्रत्ययार्थ : अवच्छेदक, समानाधिकरण आ साङ्गति ८६
०५६. पश्चिम, जापान आ इस्राएल : नव्य न्याय-ग्राह्यता आ तुलनाक प्रमाणसीमा ८८
०५७. गजलक यात्रापथ : अरबी आरम्भसँ मैथिलीक स्वतन्त्र शिल्पधरि ९०
०५८. जीवन् झासँ विजय नाथ झाधरि : आरम्भिक मैथिली गजलक कालक्रम ९२
०५९. बहर, काफिया, रदीफ आ मात्रा : गजलक भाषिक अनुशासन ९३
०६०. अनचिन्हार आखर : डिजिटल पाठशाला आ सम्पादकीय अधिकार ९४
०६१. नव बहरक स्थानीय नामकरण आ बाल-भक्ति गजलक विधागत विस्तार ९५
०६२. मंचीय गजल, स्त्रीलेखन आ सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व ९६
०६३. भारतीय गजल-परम्पराक तुलना : समान शिल्प, भिन्न संस्थागत इतिहास ९७
०६४. “भगवती गजल” : सीताराम झाक मूल पाठ आ गायनक पाठान्तर ९८
०६५. बोयी भीमन्ना : प्रतिप्रश्न, पुराकथाक पुनर्वाचन आ दलित ऐतिहासिक चेतना ९९
०६६. जे. सुभद्रा : चमड़ा, साड़ी आ श्रमिक मातृत्वक वस्तु-काव्य १००
०६७. चल्लपल्ली स्वरूपाराणी : स्त्री-अस्मिता, रूपान्तर आ देहक काव्यभाषा १०२
०६८. शशिनिर्मला : ऋतुकालीन वस्त्र, नामकरण आ दलित स्त्रीक प्रत्यक्ष वाणी १०४

०६९. गौरी : मेंहदी लागल हाथ आ चर्मश्रमक सौन्दर्यात्मक पुनराधिकार १०५
०७०. महूरी विजयश्रीक अलिसम्मा : शाप, न्यायालय आ मानवीकरणक वाक्य १०६
०७१. गुजराती दलित कविता : पोस्टर आ सहवासक राजनीतिक रूपक १०७
०७२. उमेश सोलंकी : जमि जाउ लोकसभ, झाड़ू आ सुधारवादी प्रतीकक सीमा १०८
०७३. बसुदेव सुनानी : ओड़िया दलित कविताक बिम्ब, आशा आ विडम्बना १०९
०७४. 'The Crow' आ 'Black Ink' : तेलुगु दलित कथाक नैतिक विडम्बना ११०
०७५. 'Jigiri' : जीविका, पशु-स्नेह आ भूमि-अधिकारक उपन्यास-विरोधाभास १११
०७६. दलित काव्यशास्त्र : रस, ध्वनि आ श्रमिक अनुभवक आलोचनात्मक पुनर्पाठ ११२
०७७. 'विद्यापतिक पिया देसन्तर' : गीत-पङ्क्ति, प्रवासन आ दृश्यात्मक पुनर्रचना ११३
०७८. 'विद्यापतिक बिदेसिया' : नाट्यविधा, लोकपरम्परा आ दू विद्यापतिक प्रश्न ११४
०७९. मैथिली समालोचनाशास्त्रक प्रस्ताव : भारतीय आ पाश्चात्य पद्धतिक संयोजन ११६
०८०. दलित समालोचनाक विशिष्टता आ आभा झाक आलोचनात्मक गद्य ११७
०८१. अभिलाष ठाकुर : बीहनि कथा आ व्यङ्ग्यक सूक्ष्म राजनीतिक क्षण ११८
०८२. कुन्दन कुमार कर्ण : गजल, बालगजल आ हजलमे विधागत अनुशासन ११९
०८३. अजित कुमार झा : पाठकीय विनय, सम्पादित संग्रह आ समालोचनात्मक प्रमाण १२०
०८४. आमोद कुमार झा : 'बिम्बक पाथर' आ प्रवासक बहुस्तरीय कविता १२१
०८५. आनन्द कुमार झा : लोकमंच, नाटकक सामाजिक प्रश्न आ प्रदर्शनक प्रमाण १२२
०८६. आशीष अनचिन्हार : गजलक अरूज आ नामसहित आलोचना-पद्धति १२३
०८७. छुओ समकालीन लेखक : लघु परिचयक अभिलेखीय उपयोग आ सीमा १२४

०८८. अरविन्द ठाकुर : स्वतन्त्रचेतना, सम्पादकीय गद्य आ सामाजिक व्यङ्ग्य १२५

०८९. अशोक : आरम्भिक कथा सँ सामाजिक यथार्थ आ समालोचनाधरि १२६

०९०. बद्रीनाथ राय 'अमात्य' : भाषिक व्यङ्ग्य, नकार आ नव्य न्यायीय उपमा १२७

०९१. बेचन ठाकुर : जनपदीय रंगमंच आ सामाजिक विरोधक नाट्यशिल्प १२८

०९२. पण्डित भवनाथ झा : शिलालेख, पाण्डुलिपि आ प्राचीन ज्ञानक पाठालोचना १२९

०९३. राम भरोस कापडी 'भ्रमर' : नेपालक मैथिली आ लोकसांस्कृतिक विस्तार १३०

०९४. बिनय भूषण : कोसी-अञ्चलक कविता आ सामाजिक-पर्यावरणीय अनुभव १३१

०९५. कालिकान्त झा 'बूच' : 'कलानिधि'क पश्चात्-प्रकाशन आ गीतक भाषा १३२

०९६. सत्यानन्द पाठक : 'गाम गेल छलहुँ' आ स्मृतिक सामाजिक निबन्धन १३३

०९७. दिनेश कुमार मिश्र : महानन्दा आ कमलाक बाढ़ि-इतिहासक आलोचनात्मक पद्धति १३४

०९८. भुतही बलान आ स्थानीय जलप्रणाली : भूगोल, बस्ती आ जोखिमक अन्तर १३५

०९९. कोसी : मिथकीय स्मृति, तटबन्धक भीतरक जीवन आ पुनर्वास १३६

१००. बागमती आ तटबन्ध-अभियान्त्रिकी : संरक्षणक लाभ-हानिक परीक्षण १३७

१०१. १९४७-१९५६क बाढ़ि-अभिलेख : नीति, राहत आ कृषिक बदलैत प्राथमिकता १३८

१०२. नदी-अभिलेखक नैतिकता : मूल स्रोत, दाबी आ संस्थागत आलोचनाक सीमा १३९

१०३. दुर्गानन्द मण्डल : 'संचयिका'क कथा, बीहनि कथा आ सामाजिक यथार्थ १४०

१०४. भाषा-क्षेत्रक दार्शनिक रूपक : हरिमोहन झा, अवच्छेदक आ शब्दबोध १४१

१०५. हितेन्द्र गुप्ता : मैथिली पत्रकारितामे सार्वजनिक नीतिक प्रमाण-प्रश्न १४२

१०६. जितेन्द्र कुमार झा 'जीतू' : जनकपुरक रंगमंच आ नाट्य-समाचार १४३

१०७. नवेन्दु कुमार झा : सेतु, लोकपर्व, रेडियो आ चुनावक सार्वजनिक अभिलेख
१४४
१०८. हितनाथ झा : शम्भु बादलक काव्यानुवाद आ 'कोइलख'क ग्रामकथा १४५
१०९. हृदय नारायण झा : लुप्तप्राय लोकगीतक दस्तावेजीकरण आ लोकविद्या
१४६
११०. लोकगीतक विधा आ गीत-पाठ : पराती, गोसाउनि आ झूमराक समीपपाठ
१४७
१११. नवगीत आ पुरान धुन : गोसाउनिक नौ गीतक द्विभाषिक टिप्पणी-परीक्षण
१४८
११२. झूमरा आ लोकगीतक शब्दकोश : गहबरक लोकसाक्ष्य आ संरक्षणनीति १४९
११३. संस्थागत मान्यताक चारि परत : साहित्यक अधिकार आ सार्वजनिक प्रमाण
१५०
११४. सात पुरस्कार-वर्ग आ 'नित नवल' : जीवित रचनाकारक अभिलेखीय प्रतिष्ठा
१५१
११५. मैथिली साहित्य अकादेमी पुरस्कारक कालपञ्जी : संख्या, विधा आ निर्णय
१५२
११६. सात मान्यताप्राप्त मैथिली संस्था : भूगोल, सदस्यता आ प्रतिनिधित्व १५३
११७. मिथिला चित्रकला आ ललित कला संस्था : कला, बाजार आ श्रम-अधिकार
१५४
११८. नाट्य-संगीतक संस्थागत इतिहास : प्रदर्शनकें प्रमाण बनायबाक चुनौती
१५५
११९. नेपालक मैथिली पुरस्कार-संरचना : भाषिक अधिकार आ सीमापार
सांस्कृतिकता १५६
१२०. विदेह समानान्तर सम्मान आ विशेषाङ्क : मान्यता सँ स्रोत-संरक्षण धरि
१५७
१२१. छओ कसौटीक संस्थागत सारिणी : मापनक अर्थ आ सीमा १५८
१२२. नव्य न्याय सँ साहित्यिक मान्यताक परीक्षण : प्रमाण, व्याप्ति आ हेत्वाभास
१५९
१२३. परिशिष्टक 'प्रतिरोधी अभिलेख' : जीवित व्यक्तिसँ संस्थागत समीक्षाधरि
१६०

१२४. सम्मानक पुनर्गणना आ सामाजिक समुदाय : दोहराव, वर्ग आ प्रमाण-श्रेणी १६१
१२५. राष्ट्रीय अकादेमी आ विदेहक द्वन्द्व : संस्थागत लाभ आ आत्मालोचना १६२
१२६. सात साहित्यिक संस्था सम्बन्धी पुनरावलोकन : स्थान, पुरानियत आ डिजिटल पहुँच १६३
१२७. समानान्तर सम्मानक लोक कलाकार : विधा, श्रेय आ कालपञ्जी १६४
१२८. “सागर राति दीप जरय” : २०१२क कथा-सत्र आ प्रतिवेदनक स्वर १६५
१२९. जगदानन्द झा ‘मनु’ : परदेस, माटि-पानि आ रचनाक सामाजिक दृष्टि १६६
१३०. मनुक गजल, बीहनि कथा आ बालकथा : रससँ शिल्पधरि १६७
१३१. जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ : दीर्घकविता आ गीतक साहित्यिक स्वभाव १६८
१३२. ‘अनिल’ सम्बन्धी दोसर अध्ययन : पुनरुक्त जीवनी आ पाठान्तरक परीक्षण १६९
१३३. जगदीश प्रसाद मण्डल : कृषकजीवन, उपन्यास आ सम्मानक सीमा १७०
१३४. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र : “मनसरबी”, “बुकमेनिया” आ लोकसंस्कृति १७१
१३५. “अरेड : गामक लोक इतिहास” : ग्रामस्मृति आ लघु-इतिहास १७२
१३६. कल्पना झा, दिल्ली : गोसाउनिक गीत आ स्त्रीक भक्ति-अनुभव १७३
१३७. कल्पना झा, बोकारो : औद्योगिक प्रवास आ मैथिली कविता १७४
१३८. कल्पना झा, पटना : साहित्यिक जीवनी, परिवार-स्मृति आ समीक्षा १७५
१३९. कामेश्वर झा ‘कमल’ : “कमल-ताल” आ गीतक गेय संरचना १७६
१४०. कामिनी कामायनी आ कपिलेश्वर राउत : दू लेखकीय संसारक तुलना १७७
१४१. केदारनाथ चौधरी : आर्थिक शिक्षण, उपन्यास आ चलचित्र १७८
१४२. डॉ. कीर्तिनाथ झा : “टुटल पाँखि”क अनुवाद आ मौलिक कथा १७९
१४३. किशन कारीगर : नगर, पत्रकारिता आ सामाजिक कविता १८०
१४४. कुमार पवन : लघुकथा, व्यङ्ग्य आ रचनात्मक पुनरागमन १८१
१४५. कुमार पवनक “अशरफीक लूटि आ कोइलापर छाप” : कथाक व्यङ्ग्य-विधान १८२
१४६. लाल देव कामत : पत्रकारिता, कविता आ भाषिक सार्वजनिकता १८३

१४७. ललन प्रसाद ठाकुर आ कुसुम ठाकुर : रंगमंच, गीत आ संस्मरण १८४
१४८. लक्ष्मण झा 'सागर' आ शैल झा 'सागर' : दाम्पत्य लेखनक पृथक पहचान १८५
१४९. डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' : जीवनचरित आ वैचारिक पृष्ठभूमि १८६
१५०. 'मौन'क लोकगाथा, यात्रा-वृत्तान्त आ आलोचनाशास्त्र १८७
१५१. मीना झा : स्त्री-दृष्टि, कथाविधान आ सामाजिक प्रतिरोध १८८
१५२. मुन्नाजी : बीहनि कथा, व्यङ्ग्य आ सम्पादकीय बहुविधता १८९
१५३. मुन्नी कामत : स्त्रीक रचनात्मक अधिकार आ रंगमंचीय अभिव्यक्ति १९०
१५४. नबो नारायण मिश्र : समग्र-प्रकाशनमे संस्मरण, कथा आ कविता १९१
१५५. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' : नाटक, भाषा-चिन्तन आ काव्य १९२
१५६. नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' : सामाजिक उपन्यास, आख्यान आ बालसाहित्य १९३
१५७. नन्द विलास राय : बीहनि कथा, लघुकथा आ श्रमजीवी साहित्य १९४
१५८. नारायणजी चौधरी : पोखरिक संरक्षण आ पर्यावरणीय इतिहास १९५
१५९. नरेन्द्र झा आ पन्ना झा : साहित्यिक आन्दोलन आ स्त्रीलेखन १९६
१६०. नव समकालीन स्वर : नौ लेखकक सम्मिलित आलोचना आ श्रेय १९७
१६१. मैथिली गजलक तीन स्वर : ओम प्रकाश, अमित मिश्र आ चन्दन झा १९८
१६२. प्रदीप पुष्प : "मोनक देहरीपर" आ गजलक सांस्कृतिक संकेत १९९
१६३. प्रदीप पुष्पक चयनित दस गजल : सम्पादकीय लयपरीक्षण २००
१६४. प्रीति ठाकुर : बालचित्रकथा, दृश्य-पाठ आ मैथिली बालबोध २०१
१६५. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' : मैथिली रंगमंच आ "ओ दिन ओ पल" २०२
१६६. प्रेमशंकर सिंह आ सहलेखन : नाटक, संगीत आ साहित्य-संस्था २०३
१६७. रवीन्द्र नारायण मिश्र : कथाविश्व, उपन्यास आ निबन्ध २०४
१६८. राजदेव मण्डल : जनकविता, सामाजिक कथा आ लोकभाषा २०५
१६९. राजनन्दन लाल दास : "कर्णामृत"क सम्पादन आ भाषिक संस्था २०६
१७०. चारि लेखकक समेकित कृतित्व : गद्य, पद्य आ सामाजिक आलोचना २०७
१७१. आचार्य रामानन्द मण्डल : मौखिक परम्परा आ साहित्य-दर्शन २०८

१७२. प्रो. रामावतार यादव : मैथिली ध्वनिविज्ञान आ भाषा-अध्ययन २०९
१७३. रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' : झारू काव्यरूप आ जनकविता २१०
१७४. रमेश आ माला झा : गीत, आलोचना आ संयुक्त साहित्यिक काज २११
१७५. रमेश नारायण : सांस्कृतिक प्रतिरोधक काव्य आ गद्य २१२
१७६. रुद्रपुरक पाठपरम्परा : रामजी चौधरी आ रामलोचन शरण २१३
१७७. रामलोचन ठाकुर : कविता, व्यङ्ग्य आ अनुवादक भाषिक विवेक २१४
१७८. रामविलास साहु : लोकसमाज आ साहित्यिक प्रतिरोध २१५
१७९. रविभूषण पाठक आ कुमार मनोज कश्यप : तुलनात्मक कृतित्व २१६
१८०. रवीन्द्रनाथ ठाकुर : गीत, साहित्य-अध्ययन आ संस्थागत भूमिका २१७
१८१. फणीश्वरनाथ रेणु : हिन्दी कथामे मैथिलीक भाषिक भूगोल २१८
१८२. सन्दीप कुमार सफी : आत्मकथा, जातिगत अनुभव आ कविता २१९
१८३. समकालीन मिथिला कलाकार : पाँच दृश्य-स्वरक तुलनात्मक विवेचन २२०
१८४. सन्तोष कुमार मिश्र : कविता, कथा आ सांस्कृतिक सक्रियता २२१
१८५. सियाराम झा 'सरस' : गीत, गजल, बालसाहित्य आ लोकानुभव २२२
१८६. शम्भु कुमार सिंह : काल-विभाजन, नाट्यालोचना आ अनुवाद-सम्बन्ध २२३
१८७. शान्ति लक्ष्मी चौधरी : स्त्रीस्वर, भक्तिभाव आ गेय कविता २२४
१८८. राजीव रञ्जन मिश्र : भक्तिगजल आ जानकी गीतक रूपविधान २२५
१८९. शार्दिन्दु चौधरी : व्यङ्ग्य, संस्मरण आ "समय-साल"क सम्पादकीय २२६
१९०. शिव कुमार प्रसाद : "मनक हाट", "राग-विराग" आ सामाजिक कविता २२७
१९१. शिव कुमार प्रसादक विस्तार : कवितासँ कथाक ग्रामीण-राजनीतिक भूगोल २२८
१९२. शिव कुमार झा 'टिल्लू' : "क्षणप्रभा" आ "अंशु"क आलोचना २२९
१९३. सृजन शेखर 'अज्ञेय' : उपनाम, गीत आ सार्वजनिक स्वर २३०
१९४. अच्छेलाल शास्त्री आ अनामिका राज : साक्षीस्वर आ स्त्रीक मार्ग २३१
१९५. अनिल मल्लिक आ अमरेन्द्र यादव : गजलसँ व्यङ्ग्य-कथाधरि २३२
१९६. प्रणव झा : नाटिका, संस्मरण, चिकित्सा-विमर्श आ डिजिटल समाज २३३

१९७. शिवशंकर श्रीनिवास : “गामक लोक”, “अदहन” आ कथात्मक नैतिकता २३४
१९८. “नित नवल सुभाष चन्द्र यादव” : लोककथा, कविता आ साहित्यिक इतिहास २३५
१९९. राजकमल चौधरीक जीवनपाठ आ “बनैत बिगडैत”क कथाशिल्प २३६
२००. “गुलो” : अनाथता, श्रम, मृत्यु आ ग्रामीण अर्थव्यवस्था २३७
२०१. “रमता जोगी” : ऑस्ट्रेलिया प्रवासक डायरी आ आत्मदृष्टि २३८
२०२. “भोट” आ “गुलो” : लोकतन्त्र, जाति आ कथाक बहुकेन्द्र २३९
२०३. “गुलो : कला आ भाषा” : कृति-वाचन आ संस्थागत मतभेद २४०
२०४. पचपनिया-ठेठी मैथिली : मानकीकरण, व्याकरण आ भाषिक अधिकार २४१
२०५. सुजीत कुमार झा : जनकपुरक पत्रकारिता आ “चिडै”क कथाजगत २४२
२०६. “नित नवल सुशील” : आरम्भिक साहित्य-समीक्षा आ आलोचकक पक्ष २४३
२०७. दूषण पञ्जी : वंशसूची, पाठक्रम आ स्रोत-अनुमानक सीमा २४४
२०८. छद्मसमालोचनाक विवाद : उद्धरण-संदर्भ आ रचनात्मक न्याय २४५
२०९. “घराडी” : विस्थापन, गामक सत्ता आ उपन्यासक पात्र-स्मृति २४६
२१०. “गाम्बाली” : सामाजिक बहिष्कार आ स्त्रीक प्रतिरोध २४७
२११. “भामती” नाटक : इतिहास-प्रसंग आ आधुनिक नाटकीय प्रश्न २४८
२१२. “अस्मिता” : लघुकथा, अभाव आ आधुनिक ग्रामीण व्यङ्ग्य २४९
२१३. सुशीलक उत्तरपक्ष : साहित्यक सिद्धान्त आ प्रमाण-प्रक्रिया २५०
२१४. उत्तर-सिद्धान्त, लेखकत्व आ संस्थागत पुरस्कारक आलोचना २५१
२१५. तारानन्द वियोगी : साहित्यिक उपलब्धि आ आत्मविरोधक विवाद २५२
२१६. उमेश मण्डल : “निस्तुकी”, चित्र-शब्दकोश आ डिजिटल अभिलेख २५३
२१७. उमेश पासवान : “विर्नित रस” आ “मुजरिम”मे दलित काव्यदृष्टि २५४
२१८. विभा रानी, बिन्देश्वर ठाकुर आ अनमोल झा : रचना आ रंगमंचक अलग परम्परा २५५
२१९. विदेह अंक ३५१-४३८ : साहित्यिक सार्वजनिकताक क्रम २५६

२२०. समानान्तर काल-विभाजन : प्राचीन बौद्ध स्रोतसँ डिजिटल युगधरि २५७
२२१. विदेह समानान्तर नाट्य-आन्दोलन : पाठ, मंचन आ अभिलेख २५८
२२२. अपर्णा कुमारी : अभिनेत्री, समाज आ स्त्रीक अभिनय-स्वर २५९
२२३. लेखक-पञ्जी, भालचन्द्र झा आ प्रादेशिक साहित्यिक अभिलेखन २६०
२२४. विदेह सदेह आ बालसाहित्य : संरक्षण, भाषा आ बालकक अधिकार २६१
२२५. विनीत उत्पल : “हम पुछैत छी” आ अनुवादक भाषिक नैतिकता २६२
२२६. योगानन्द झा : उपन्यास, साहित्यिक पत्रकारिता आ “चतुर्दश सूत्र” २६३
२२७. कमला चौधरी आ ललिता झा : स्त्रीक भौतिक संस्कृति आ लोक-अभिलेख २६४
२२८. योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’ : लोकप्रिय विज्ञान आ कल्पनात्मक साहित्य २६५
२२९. “रोबोट” : चापेकक R.U.R.क मैथिली रंगमंचीय रूपान्तर २६६
२३०. योगेन्द्र पी. यादव : सम्मानसूचकता, वाक्य-विन्यास आ मैथिली भाषाविज्ञान २६७
२३१. नेपालक मैथिली भाषा-अधिकार, कोश आ बहुभाषिक शिक्षा २६८
२३२. समग्र समानान्तर साहित्येतिहास : उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ प्रमाणक भविष्य २६९

००१. समानान्तर साहित्येतिहासक प्रतिज्ञा : प्रतिष्ठानसँ बहिष्कृत पाठ धरि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ३५-३७, ४२, ६५-६६, ७८-८० ।

ग्रन्थक आरम्भ एकटा साधारण युग-विभाजनक स्थानपर साहित्यिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न उठबैत अछि। 'समानान्तर' शब्द एकर केन्द्रमे दोसर पुस्तक-सूची मात्र नहि, बल्कि ओहि प्रक्रिया पर प्रश्न अछि जाहिमे संस्था, पुरस्कार, पाठ्यक्रम आ इतिहासक मान्य ग्रन्थसंग्रह मिलिकऽ साहित्यिक मानक बनबैत अछि। मूल अनुच्छेद ३७मे एकटा पत्रिकाक साहित्य-संख्या पर आपत्ति प्रकट भेल अछि; अनुच्छेद ६५-६६मे एकर विस्तार सामूहिक साहित्येतिहास पर कएल गेल अछि। विरोधक ई विस्तार तेखन सार्थक होइत अछि जखन आलोचक प्रतिनिधित्वक कसौटी स्पष्ट करैत अछि—कोन विधा, कोन सामाजिक अनुभव, कोन भौगोलिक परिधि आ कोन ऐतिहासिक अभिलेखक अनुपस्थितिसँ उपलब्ध चित्र अधूर रहि गेल। एहि इतिहास-दृष्टिक प्रमुख उपलब्धि ई अछि जे साहित्येतिहासकें केवल महान लेखकक जीवनवृत्त नहि मानि सामाजिक शक्ति आ अभिलेखक निर्माणसँ जोड़ैत अछि। चर्यापद, स्त्री-लेखन, नेपालक मैथिली नाटक, अकालक पद्य, दलित रंगमंच आ डिजिटल पत्रिकाकें एकहि अनुसन्धान-क्षेत्रमे आनबाक प्रस्ताव साहित्यिक विधाक विस्तृत समाजशास्त्रक संकेत दैत अछि। तथापि, एतेक विविध सामग्रीकें एकहि विरोधी श्रेणी—प्रतिष्ठान बनाम प्रतिरोध—मे राखल गेलासँ ओहि-ओहि परम्पराक आन्तरिक भेद दबि सकैत अछि। लोक-साहित्य आ शास्त्रीय परम्परा, दरबारी संरक्षण आ निचल स्तरक प्रसार, स्त्रीक लेखन आ सम्पादकीय संस्थानक चयन—सभक प्रमाण एक समान नहि अछि।

मूल अनुच्छेद ७८-८०मे साहित्येतिहासक दू ध्रुवक प्रस्तुति तीक्ष्ण अछि, मुदा एकर विधिगत चुनौती सेहो एतहि अछि। कोनो प्रतिष्ठान द्वारा कृत चयनक आलोचना करब एक बात; पूरा ऐतिहासिक परम्पराक दमनक कारण-श्रृंखला सिद्ध करब दोसर बात। दोसर दाबीक लेल प्रतिनिधि संकलनसभक अनुक्रम, पुरस्कार-निर्णय, लेखकीय सहभागिता, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि आ प्राचीन स्रोतक मूल पाठक तुलनात्मक परीक्षण चाही। एहि स्रोत-विभेदकें अक्षुण्ण राखबासँ समानान्तर इतिहासक नैतिक आग्रह शोधगत विश्वसनीयता पबैत अछि।

एहि पहिल प्रतिज्ञाक साहित्यिक मूल्य ओकर प्रश्नवाचक शक्तिमे अछि। इतिहासक केन्द्रमे ककरा राखल जाए आ ककरा हेरायल मानल जाए, ई प्रश्न आलोचना पर पुनः उत्तरदायित्व लादैत अछि। मुदा सकारात्मक समानान्तर इतिहासक आधार केवल

पुरान मानकक निषेध नहि हो; प्रत्येक उपेक्षित रचनाक पाठक भीतरक कलात्मक संरचना, भाषिक भिन्नता आ ऐतिहासिक संदर्भक स्वतंत्र स्थापना सेहो आवश्यक अछि। एहि कसौटी पर पुस्तकक आगामी विस्तृत लेखक-अध्ययन जाँचल जाएत।

००२. भाषा, सांस्कृतिक आधिपत्य आ राजनीतिक प्रतिनिधित्व

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ३८-३९, ७९-८०, १९७-२००।

आरम्भिक उद्धरणमे टी. के. ओमनक समाजभाषावैज्ञानिक मत प्रस्तुत कएल गेल अछि। एकटा भेद अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि : कोनो भाषाक स्वतंत्र भाषिक पहिचान स्वीकार करब आ ओहि भाषाभाषी क्षेत्रक भीतर सामाजिक सत्ता कोना बँटल अछि, ई दू स्वतंत्र प्रश्न थिक। मूल अनुच्छेद ३८ जातिगत प्रभुत्व आ राज्यनिर्माणक सम्भावित राजनीतिक प्रतिरोध पर केन्द्रित अछि, जखन कि अनुच्छेद ३९ भाषिक स्वायत्तताक विद्वत् स्वीकृति आ प्रशासनिक वर्गीकरणक अन्तर पर ध्यान देबैत अछि। दुनू तर्कक संगति भाषिक स्वीकृतिक आन्दोलनक भीतर प्रतिनिधित्वक न्यायसंगत माँगक रूपमे देखल जा सकैत अछि।

एहि स्थापनाक आलोचनामे 'भाषाक अधिकार' आ 'विशिष्ट वर्गक प्रतिनिधित्व'कें पर्याय नहि मानल जाए। मैथिलीभाषी समाजक भीतर जाति, क्षेत्र, वर्ग आ सीमापार निवासक भिन्नता अछि; एतय राजनीतिक समर्थन अथवा विरोध एकटा एकरेखीय सूत्रसँ निर्धारित नहि होइत अछि। ओमनक उद्धृत पाठ एकटा समाजशास्त्रीय तर्क दैत अछि; ओकरा सँ सम्पूर्ण जातिसमूहक अनिवार्य व्यवहार निष्कर्षित करब उचित नहि। मूल अनुच्छेद १९९-२००मे एहि समाजशास्त्रीय तर्कक सहायतासँ साहित्यिक बहुलता आ राजनीतिक विश्वसनीयताक सम्बन्ध बनाओल गेल अछि। ई सम्बन्ध सम्भव अछि, मुदा ओकर वास्तविक इतिहास देखबाक लेल राजनीतिक आन्दोलनक दस्तावेज आ साहित्यिक संस्थानक अलग समयरेखा चाही।

भाषावैज्ञानिक स्तर पर कोनो भाषा अन्य भाषाक 'बोली' अथवा स्वतन्त्र भाषा केना मानल गेल, एहि सम्बन्धमे संरचनात्मक भाषाविज्ञान, जनगणनाक वर्गीकरण,

राज्यक नीति आ साहित्यिक आन्दोलनक भिन्न निर्णय-प्रणाली अछि। ग्रन्थ एहि भिन्नताक कारण उठैत विरोधाभासकें ठीक पहिचानैत अछि, परन्तु उद्धृत उद्धरणक प्रकाशन-सन्दर्भ, सम्पूर्ण अध्याय आ आवृत्तिक सत्यापन बिना ओकर शब्दशः

प्रयोगक सीमा रहत। एतय मूल वर्डमे उपलब्ध उद्धरण भरि पाठाधार अछि; उद्धृत मूल पुस्तकक मुद्रित प्रति स्वतंत्र रूपसँ नहि जाँचल गेल अछि।

एहि खण्डक उल्लेखनीय विचार ई अछि जे सांस्कृतिक लोकतन्त्र भाषिक अधिकारक विरोधी नहि, ओकर नैतिक पूर्वशर्त भऽ सकैत अछि। जँ भाषा-आन्दोलनमे

प्रतिनिधित्वक अनेक रूप जगह पबैत अछि तँ भाषाक सार्वजनिक उपयोगिता बढ़ैत अछि। मुदा आलोचना तबे मजबूत होयत जखन सामाजिक बहिष्कारक निदर्शन आ भाषिक अधिकारक औपचारिक इतिहास एक-दोसर पर आरोपित नहि कएल जाएत।

एहि कारणें मूल ग्रन्थक राजनैतिक संकेतकें वर्तमान समीक्षामे विवेचनीय प्रतिज्ञाक रूपमे राखल गेल अछि।

००३. चर्यापद, पूर्व-मैथिली आ आदिकालक विवाद

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ४४-४६, ७७, ८१-८२ ।

ग्रन्थक आदि-इतिहास बौद्ध सिद्धपरम्पराक चर्यापद सँ आरम्भ होइत अछि। एहि चयनक वैचारिक महत्त्व ई अछि जे भाषा-साहित्यक आरम्भ राजाश्रित दरबार अथवा एकटा मान्य महाकविक जन्मसँ नहि, बल्कि घुमन्तू धार्मिक साधना, संकेतात्मक पद्य आ जनभाषाक विविध प्राचीन रूपसँ देखल गेल अछि। मूल अनुच्छेद ४५-४६मे पचास चर्यापद, तेइस सिद्धकवि, सोलह राग आ सैंतालीस सुरक्षित पदक उल्लेख अछि। एहन एकाधिक संख्याक सहअस्तित्व पाठ-संपुटक संरचना आ अभिलेखक परम्परामे अन्तरक प्रश्न उठबैत अछि; एहि सभ संख्याक सत्यापन लेल पाण्डुलिपि, सम्पादित पाठ आ संरक्षण-इतिहासक अलग मिलान आवश्यक अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ चर्यापदक बहुअर्थक रचना महत्त्वपूर्ण अछि। साधनात्मक शब्दावली, लोकजीवनक चिह्न आ सांकेतिक वाच्यता एकटा एहन काव्य-पद्धति बनबैत अछि जाहिमे प्रत्यक्ष अभिधा आ गुप्त अनुभूतिक स्तर एकसाथ चलैत अछि। एहि परम्पराकें जनपदीय काव्यक पूर्ववर्ती स्रोत मानल जाए सकैत अछि; मुदा 'पूर्ववर्ती समानता' आ 'सीधा वंशावली' दू अलग भाषावैज्ञानिक निष्कर्ष छथि। मूल वर्डक कथनमे जे 'सीधा पूर्वज'क भाषा अछि, ओकर समर्थन लेल ध्वन्यात्मक, रूपात्मक, शब्दगत आ छन्दगत प्रत्यक्ष तुलनात्मक तालिका अपेक्षित अछि।

इतिहास-दृष्टिमे एकटा विशेष प्रश्न कालक सीमा अछि। चर्यापदक प्राचीनता, ओकर भाषिक मिश्रण, आ कालान्तरमे मैथिली-संस्कृतिक विकास—एहि तीनू स्तर पर अनेक भाषिक क्षेत्रक दावा एकसाथ उपस्थित भऽ सकैत अछि। एहि कारणे 'पूर्व-मैथिली' एकटा उपयोगी शोध-संकेत अछि, मुदा एकर अर्थ आधुनिक मानकीकृत मैथिलीक सम्पूर्ण पूर्वरूप नहि बुझल जाए। ग्रन्थक आन्तरिक प्रमाण श्रेणीकें जँ भाषिक लक्षणक व्यवस्थित अन्वेषणसँ जोड़ल जाए तँ जनपदीय इतिहासक एहि हस्तक्षेपक उपयोगिता बढत।

एहि अध्ययनक निष्कर्ष अछि जे चर्यापदकें मुख्य साहित्येतिहासमे रखनेक आग्रह मूल्यवान अछि, किन्तु ओकर स्थानापन्न पद्धति सेहो मूल स्रोतपर आधारित रहय।

वर्गीय-सांस्कृतिक व्याख्या मात्रसँ भाषा-वंश सिद्ध नहि होइत अछि। प्रामाणिक पाठ,

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय . खण्ड ३२
लिपि-विश्लेषण आ परवर्ती गीतपरम्पराक साक्ष्य एकत्र भेला पर एहि निष्कर्षक स्तर
अधिक स्पष्ट होयत ।

००४. दू विद्यापतिक भेद : प्रतिज्ञा, कालक्रम आ पाठकर्तृत्व

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ४६, ४९, ६६, १२९-१३५ ।

ग्रन्थक सभसँ महत्त्वपूर्ण इतिहास-प्रतिज्ञामे पदावलीक जनकवि विद्यापति आ संस्कृत-अवहट्टक विद्यापति ठाकुरकेँ अलग-अलग ऐतिहासिक व्यक्तिक रूपमे पहिचानबाक आग्रह अछि। एहि स्थापनामे परम्परागत एककृत लेखक-छविक पुनर्परीक्षणक सम्भावना अछि। साहित्यिक कृतित्वक पाठनिर्धारणमे एकहि नामक अनेक लेखक, उत्तरवर्ती संकलन, हस्तलिखित प्रतिक परिवर्तित श्रेय आ लोकपरम्पराक मौखिक संचरण गंभीर समस्या छथि। तें लेखकक भिन्नताक प्रश्न सिद्धान्ततः वैध अछि; एकर समाधान, मुदा, प्रतीकात्मक चित्र अथवा परम्परागत वर्गपर टिप्पणी मात्रसँ नहि होयत।

मूल अनुच्छेद ४६मे पदावलीक विद्यापतिकेँ ज्योतिरीश्वरसँ पूर्ववर्ती बताओल गेल अछि; अनुच्छेद ४९ आ १३०मे उत्तरकालीन विद्यापति ठाकुरक समय आ साहित्यिक अवदानक वर्णन अछि। एहि ठाम समयनिर्धारणक स्वयं परीक्षण चाही— ज्योतिरीश्वरक मूल पाठमे उपलब्ध उल्लेख, उल्लेखित व्यक्तिक पहिचान, उपलब्ध पाण्डुलिपिसभक लिखित तिथि, तात्कालिक शिलालेख अथवा अभिलेखीय सन्दर्भ, आ भाषिक स्तरक तुलना। समान नाम अथवा शैलीगत अन्तर, दुनूमे सँ एकोटा तथ्य अपने बलपर दू लेखकक अस्तित्वक अनिवार्य सिद्धि नहि करैत अछि।

ग्रन्थक अनुच्छेद १३२-१३५ जातिगत अनुमान आ प्रतीकचिह्नक सन्दर्भ आनैत अछि। सामाजिक स्मृतिक आलोचना महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ऐतिहासिक व्यक्तिक जाति अथवा जन्मपरम्परा स्थापित करबाक लेल जे साक्ष्य चाही, ओ साहित्यिक 'जनपक्षधरता'क आकलनसँ भिन्न अछि। लोकभाषाक पक्षमे काव्य-निर्णयकेँ स्वतः सामाजिक जन्मपरम्पराक प्रमाण नहि मानल जाए। समीक्षामे एतय चित्र-राजनीति आ लेखक-कर्तृत्वक प्रश्नकेँ अलग राखल गेल अछि, जाहिसँ पाठालोचनाक प्रतिज्ञा अपन स्वतंत्र जाँच-शक्ति सुरक्षित राखय।

एहि विषयक श्रेष्ठ सम्भावित उपलब्धि लेखक-कर्तृत्वक तुलनात्मक अनुसंधान अछि। जँ दू विद्यापतिक पाठमे अभिधान, ध्वनि, छन्द, अनुष्ठानिक संदर्भ आ काल-निर्धारणक तर्क एकसाथ प्रस्तुत होइत अछि तँ समानान्तर इतिहासक ई हस्तक्षेप स्थायी विवाद-उन्मुख शोधक विषय बनि सकैत अछि। किन्तु मूल वर्डक एहि आरम्भिक अंशकेँ स्वयं निर्णायक अभिलेखीय प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

००५. गङ्गेश उपाध्याय आ पञ्जीक प्रमाणशास्त्र

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ४७, ६६, १७८-१८०।

ग्रन्थ नव्य-न्यायक दार्शनिक गङ्गेश उपाध्यायकेँ समानान्तर सामाजिक इतिहासक केन्द्रमे अनैत अछि। एहि प्रस्तुति अनुसार दूषण-पञ्जीक साक्ष्यसँ हुनकर वंश, विवाह आ संस्थागत इतिहासलेखनक सम्बन्धमे एकटा भिन्न कथा निकलैत अछि। दार्शनिकक बौद्धिक ग्रन्थ आ परिवार-सम्बन्धी परम्परा दून अध्ययनयोग्य अछि; मुदा दार्शनिक प्रतिपादनक सत्यता आ वंशगत दावीक सत्यता एकहि प्रमाणाधार पर निर्भर नहि करैत अछि। 'तत्त्वचिन्तामणि'क तर्कक मूल्य लेखकक सामाजिक पृष्ठभूमिक सत्यापनसँ अलग विषय रहैत अछि।

मूल अनुच्छेद ४७ आ १७८-१८०मे सामाजिक बहिष्कार, दमन आ पञ्जीलेखक सम्बन्धी तीक्ष्ण आरोप प्रस्तुत अछि। समीक्षाक लेल ई सभ मूल कृतिक कथन छथि; एहि संलग्न पाठांशसँ मूल पञ्जीक पृष्ठ-प्रतिलिपि, हस्तलिखित प्रति-परम्परा, प्रविष्टिक लेखनकाल, पञ्जीकारक परिचय, पाठान्तर आ ऐतिहासिक संदर्भ स्वतंत्र रूपसँ सत्यापित नहि भेल अछि। खासकऽ जन्मक कालक्रम अथवा सामाजिक सम्बन्धक आरोपकेँ लेखकीय दाबीसँ उठाकऽ सम्पादकीय तथ्य बना देब प्रमाणशास्त्रीय दृष्टिसँ अनुचित होयत।

नव्य-न्यायक उपकरणसँ एहि विवादमे चारि चरण उपयोगी छथि। प्रथम, प्रतिज्ञा स्पष्ट रह्य—कोन व्यक्तिक सम्बन्धमे की कहल जा रहल अछि। द्वितीय, प्रमाणक स्वरूप तय हो—प्रत्यक्ष मूल अभिलेख, ओकर छायाप्रति, प्रतिलिपि अथवा द्वितीयक विवेचना। तृतीय, पक्षान्तरक सम्भावना देखल जाए—एकहि नामक अनेक व्यक्ति, वंशक्रमक भिन्न लेखन, रूपान्तरित प्रति अथवा अनिश्चित समयसीमा। चतुर्थ, निष्कर्षक व्यापकता प्रमाणक परिधिसँ बाहर नहि जाय। एहन भेद सामाजिक न्यायक प्रश्न कमजोर नहि करैत; उलटे ऐतिहासिक अन्वेषणकेँ अधिक गंभीर बनबैत अछि।

एहि विषयपर मूल पुस्तकक वैचारिक साहस स्पष्ट अछि : पञ्जीकेँ केवल जातिगत गौरवक संग्रह नहि, बल्कि सामाजिक इतिहासक साक्ष्यक रूपमे पढ़बाक प्रस्ताव।

मुदा साक्ष्यक मूल प्रति देखे बिना कोनो व्यक्ति अथवा समूहक विषयमे आरोप निर्णीत तथ्यक रूपमे प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। आगामी समीक्षा-बैचमे जँ एही ग्रन्थक पाछाँ मूल दस्तावेजी पुनरुत्पादन भेटत तँ तकर अलग अभिलेखीय परीक्षण कएल जाएत।

००६. सीमापार मैथिली : नेपालक रंगमंच आ असमक ब्रजावली

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ४८-५०, १३६-१७४ ।

नेपालक मल्लकालीन दरबारी मैथिली आ असमक अङ्किया नाटक मैथिली साहित्येतिहासक बीच स्थान देब ग्रन्थक प्रादेशिक सीमाकें विस्तृत करैत अछि। एहि प्रसंगमे साहित्यकें आजुक प्रशासनिक सीमामे बन्द नहि करबाक आग्रह उचित अछि। मूल अनुच्छेद १३६-१६५मे मल्ल राजासभक संरक्षण, पद्य-नाटकक संरचना आ संगीतनाट्यक उल्लेख अछि; अनुच्छेद १६७-१७४मे असमक वैष्णव रंगपरम्परा आ ब्रजावलीक प्रश्न उठल अछि। दुनू क्षेत्रमे भाषाक क्रियात्मक उपयोग समान नहि अछि—एक दिस दरबारी संरक्षण आ नाट्यप्रयोग, दोसर दिस भक्ति-संप्रेषण आ क्षेत्रीय मिश्रित साहित्यिक भाषा।

नेपालविषयक सारिणीमे राजा, स्थान, नाटक आ विधाक नाम एकत्र देल गेल अछि।

ई शोधक आरम्भिक पञ्जी बनि सकैत अछि, किन्तु सूचीबद्ध नाटकक अस्तित्व, पाण्डुलिपिक सुरक्षित स्थान, प्रतिक तिथि आ प्रस्तुतिक वास्तविक भाषिक संरचना भिन्न-भिन्न प्रमाण पर निर्भर अछि। राजा द्वारा लिखल, राजाश्रयमे रचल आ दरबारमे अभिनीत—एहि तीनू लेखकीय सम्बन्धमे अन्तर होइत अछि। जँ एहि भेदकें एकरूप मानि लेल जाए तँ रचनाकारत्व आ संरक्षकत्वक इतिहास आपसमे गडुमडु भऽ सकैत अछि।

असमक प्रसंगमे ब्रजावलीकें मध्यकालीन मैथिलीक रूपक रूपमे प्रस्तावित कएल गेल अछि। एहि स्थापनाकें भाषिक तुलना चाही : क्रियापद, सर्वनाम, ध्वन्यात्मक रूप, शब्दभण्डार आ स्थानीय असमिया घटकक परस्पर अनुपात। मात्र सांस्कृतिक प्रभावसँ भाषिक समानता अथवा स्वतन्त्र वंशावली निष्कर्षित नहि कएल जाए। मैथिली प्रभावक सम्भावना आ असमिया वैष्णव रंगमंचक अपन ऐतिहासिक रचना—दूनोंकें स्थान देब शोधक जिम्मेदारी अछि।

एहि स्रोत-समूहक साहित्यिक सफलता ई अछि जे साहित्यिक भूगोलकें नेटवर्क, आवागमन, अनुवाद, संगीत आ रंगमंचसँ जोडैत अछि। नेपालक मैथिली नाटक आ असमक अङ्किया नाटककें एकरेखीय 'मिथिलासँ प्रसार'क स्थानपर परस्पर सांस्कृतिक रूपान्तरणक अध्ययन बनाओल जाए तँ ग्रन्थक समानान्तर पद्धति आरो सक्षम होयत। मूल ग्रन्थक सूची आ दाबी एखन आन्तरिक पाठ-साक्ष्यक स्तरपर दर्ज अछि।

००७. अकाल-काव्य, सामाजिक यथार्थ आ पुरस्कार-प्रतिष्ठान

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ५१-५८, १७५-१७७, १८१-१८८ ।

औपनिवेशिक कालक अध्ययनमे फतुरीलालक अकाल-कवित्त आ चन्दा झाक प्रतिरोधी पद्यकें अग्रभागमे अनबाक प्रस्ताव मैथिली साहित्येतिहासक विषय-विस्तार करैत अछि । धार्मिक अथवा दरबारी शैलीक अतिरिक्त भूख, ऋण, प्रशासनिक अत्याचार आ कृषक-संकट सेहो साहित्यिक वस्तु बनैत अछि । मूल अनुच्छेद ५३क उदाहरणक महत्त्व एतय अछि जे अकालक भाषिक अभिव्यक्ति एकटा विशिष्ट समयक जनजीवन आ काव्यरूपक सम्बन्ध प्रश्नांकित करैत अछि । मुदा अकालक वर्ष, काव्यक प्रकाशनकाल आ मुद्रित संकलनक तिथि अलग जाँचल जाए; एहि सभकें एकहि ऐतिहासिक घटना न मानल जाए ।

हरिमोहन झाक व्यंग्यक चर्चा संस्थागत चयनक आलोचनासँ जुड़ैत अछि । मूल अनुच्छेद ५४ आ १७५-१७७मे पुरस्कार-इतिहास आ विशिष्ट रचनाकारक उपेक्षाक एकटा व्याख्या अछि । व्यंग्यात्मक साहित्य सामाजिक रूढ़िक परीक्षा कोना करैत अछि, ई सवाल मात्र पुरस्कार-सूचीसँ अधिक व्यापक अछि । कृति-पाठक भीतर पात्र-स्वर, विडम्बना, संवादक लय आ पाठक-समुदायक प्रतिक्रिया स्वतंत्रतः देखबाक अछि । साहित्यिक महानता आ संस्थागत मान्यता समान मापदण्ड पर नहि बनैत अछि; एखन हुनकर सीधा कारणात्मक सम्बन्ध स्थापित करबाक लेल निर्णय-अभिलेखक आवश्यकता अछि ।

राजकमल चौधरी, नागार्जुन, सोमदेव आ जगदीश प्रसाद मण्डलक सन्दर्भमे ग्रन्थ एकटा प्रतिपरम्परा प्रस्तावित करैत अछि । 'आधुनिकता'कें केवल छन्दभङ्ग, प्रयोगशील भाषा अथवा संस्थागत पुरस्कारक क्रम न मानि दलित जीवन, अर्थसंकट, लैंगिक प्रश्न आ ग्रामीण सत्ताक कथा-प्रवेशसँ जोड़ब शोधसंगत होयत । तथापि, कोनो लेखकक रचनासंख्या अथवा पुरस्कारक पाछाँ अनुमानित आशयकें मूल रचनाक भीतरक कलात्मकता पर हावी नहि होय देब ।

एहि खण्डक प्रमाण-सीमा स्पष्ट अछि : पुस्तकमे प्रस्तुत इतिहास-दावीक स्वतंत्र अभिलेखीय जाँच एहि अध्ययनमे नहि भेल अछि । मुदा साहित्यिक पद्धतिक स्तरपर ग्रन्थ एकटा उपयोगी प्रश्न देत—प्रतिरोधी विषयक उपस्थिति महत्त्वपूर्ण अछि, किन्तु काव्यक भाषा, लय, बिम्ब आ कथात्मक आविष्कार सेहो ओतबे निर्णायक अछि । विरोधी विषय लिखबाक कारणेँ कोनो रचना स्वतः उत्कृष्ट नहि होइत अछि,

आ प्रतिष्ठानसँ मान्यता पाबि गेलाक कारणेँ ओकर आलोचनात्मक परीक्षण समाप्त नहि होइत अछि।

००८. स्त्रीस्वर, दलित रंगमंच आ डिजिटल प्रतिअभिलेख

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ५८-६४, ९१-९६, १८९-१९५ ।

मूल ग्रन्थ स्त्री-लेखनक बहिष्करण, जाति-आधारित सामाजिक उपेक्षा आ डिजिटल माध्यमक लोकसुलभता केँ एकहि इतिहास-दृष्टिसँ देखैत अछि। अनुच्छेद ५९-६१मे अनेक स्त्री रचनाकारक नाम आ विधा उपस्थित अछि; अनुच्छेद ५८मे बेचन ठाकुर आ आन लेखकसभक सामाजिक हस्तक्षेप; अनुच्छेद ६२-६४मे विदेहक पत्रिका, अभिलेख आ सार्वजनिक प्रकाशनक विस्तार। ई सभक संयुक्त महत्त्व ई अछि जे साहित्यिक इतिहासकेँ मुद्रित पुस्तकक सीमासँ बाहर प्रदर्शन, सम्पादन, प्रसार आ पाठकीय पहुँच धरि विस्तृत कएल गेल अछि।

स्त्री-लेखनक इतिहासक लेल केवल नाम जोड़ब पर्याप्त नहि। लेखिकाक विशिष्ट विधा, कृतिक ऐतिहासिक प्रकाशन, घरेलू आ सार्वजनिक अनुभवक भाषा, स्त्री-पात्रक अपन कथनाधिकार, सम्पादकीय संग्रहक संरचना आ अनुवाद-प्रसारक तुलना जरूरी अछि। एकटा संस्थागत संकलनमे स्त्रीक अनुपस्थिति देखल जाए तँ प्रश्न उठैत अछि—की ओहि अवधिमे अन्यत्र पत्रिका, गीत-परम्परा, रेडियो, रंगमंच आ हस्तलिखित रूपमे आवाज उपस्थित छल? मूल पुस्तकक विस्तृत लेखक-अध्ययन एहि प्रश्नक उत्तर देबाक सम्भावना रखैत अछि।

दलित रंगमंचक प्रसंगमे अभिनय, लोकदर्शक, दृश्य-भाषा आ कथानकक सामाजिक आशयकेँ एक साथ पढ़बाक अछि। कोनो नाटकक जनपक्षधरता ओकर मूल पाठसँ अनुमानित होयत, मुदा मंचीय प्रयोगक इतिहास लेल प्रस्तुति-अभिलेख, रंगकर्मी आ दर्शकक प्रत्यक्ष साक्ष्य चाही। बेचन ठाकुरक सम्बन्धमे ग्रन्थक प्रशंसात्मक मूल्यनिर्णयकेँ एहि स्वतंत्र कसौटी पर जाँचल जाएत। प्रशंसाक तीक्ष्णताकेँ पाठसाक्ष्यक विकल्प न मानब साहित्यिक आलोचनाक जिम्मेदारी अछि।

विदेहक डिजिटल उपस्थिति ग्रन्थक इतिहास-दर्शनमे एकटा सम्भावित प्रतिअभिलेख अछि। मुद्रित पुस्तकक बाहर सामग्री संग्रहित करब, पाठककेँ उपलब्ध कराएब आ अनेक लेखकीय आवाजक प्रवेश सम्भव बनाओब—ई साहित्येतिहासक वास्तविक विषय होयबाक योग्य अछि। मुदा अनुच्छेद ६३-६४मे उल्लिखित पाण्डुलिपिसंख्या, प्रकाशन-परिमाण, संस्थागत प्रतिशत आ प्राथमिकताक अनेक दावीकेँ वेबसाइटक वर्तमान अभिलेख, मौलिक रजिस्टर, सुरक्षित फाइल आ तिथिबद्ध आँकड़ासँ मिलान कएने बिना स्वतन्त्र प्रमाणित आँकड़ा नहि मानल गेल अछि।

एहि आठम अध्ययनक निष्कर्ष अछि जे डिजिटल प्रविधि अपनासँ लोकतन्त्रक गारंटी नहि देत, मुदा अभिलेखक बाधा घटाकऽ वैकल्पिक साहित्यिक सार्वजनिकता संभव कऽ सकैत अछि। चयनक पारदर्शिता, दीर्घकालीन संरक्षण, शोधयोग्य मेटाडाटा, पाठ-स्रोतक सत्यापन आ सम्पादकीय उत्तरदायित्व रहला पर मात्र प्रतिअभिलेख टिकाउ इतिहास-संसाधन बनत। एहन प्रश्न उपस्थित कऽ पुस्तक एकटा नवीन आलोचनात्मक क्षेत्र खोलैत अछि।

००९. मागधी, अपभ्रंश आ मैथिली : भाषा-उद्भवक काल-विभाजन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद २०६-२३०।

परिचयक छठम खण्डमे पुस्तक मैथिलीक भाषिक इतिहासकेँ मागधी प्राकृत, मध्यभारोपीय भाषारूप आ अपभ्रंश-अवहट्टक क्रमसँ जोड़ैत अछि। मूल अनुच्छेद २११-२२८मे ई क्रम सारिणीबद्ध अछि। एकर उपयोगिता शिक्षणात्मक अछि : पाठककेँ भाषासभक विकास तत्काल एकहि वर्षमे नहि भेल, तकर सामान्य संकेत भेटैत अछि। तथापि कालखण्डक साफ-सुथर रेखा ऐतिहासिक भाषाविकासक वास्तविक मिश्रित अवस्थाक पूर्ण प्रतिनिधित्व नहि करैत अछि। लिखित प्रमाणक काल, भाषिक रूपक प्रचलनकाल आ क्षेत्रविशेषमे ओकर स्वीकृतिक काल अलग रहैत अछि।

मूल अनुच्छेद २२९मे मैथिली आ मगहीक सम्बन्धकेँ सामाजिक पूर्वग्रह आ भाषिक भिन्नता दुनू दृष्टिसँ देखल गेल अछि। एहि भेदक सन्तुलन आवश्यक अछि। भाषिक संरचनाक तुलनाक लेल सर्वनाम, विभक्ति, सम्मानसूचक क्रिया, उच्चारण आ वाक्य-विन्यासक समान पाठसमूह चाही; सामाजिक इतिहासक आलोचना लेल प्रशासनिक अभिलेख, जनगणना आ विद्यालयक भाषा-नीतिक साक्ष्य चाही। एकहि स्रोतसँ दुनू निष्कर्ष निकालब पद्धतिक संक्षेप होयत।

एहि प्रकरणक आलोचनात्मक सम्भावना ई अछि जे भाषिक इतिहास केवल महान ग्रन्थक क्रम नहि, सामुदायिक संप्रेषण आ लिपि-प्रचलनक संयुक्त अध्ययन बनय।

तथापि उपलब्ध सारिणीकेँ प्रामाणिक कालरेखा कहबाक पहिने प्रत्येक संक्रमणक आन्तरिक भाषिक साक्ष्य चिन्हित करबाक आवश्यकता अछि। एहि समीक्षा मे ग्रन्थक काल-सारिणीकेँ प्रस्तावित व्याख्यात्मक ढाँचा मानल गेल अछि, अंतिम भाषावैज्ञानिक निष्कर्ष नहि।

०१०. तिरहुता, देवनागरी आ सांस्कृतिक अभिलेखक राजनीति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद २३१-२३३; १०४-१२८।

सातम प्रारम्भिक खण्डमे तिरहुता अथवा मिथिलाक्षरकें मैथिलीक सांस्कृतिक निरन्तरताक प्रमुख चिह्नक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। एहि तर्कमे लिपिक उपयोगक इतिहास आ लिपिसँ जुड़ल सामूहिक स्मृति दूनू उपस्थित अछि। तिरहुता, कैथी, नेवारी आ देवनागरीक अलग-अलग उपयोगक्षेत्रक तुलनासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे कोनो भाषा कतेक लिपिमे अभिलेखित होइत रहल अछि, तकर इतिहास एकरेखीय नहि। मूल अनुच्छेद १०४-१२८क सारिणी उपयोगक्षेत्रक महत्त्व देखबैत अछि, परन्तु ओहि विवरणक प्रत्येक कालसीमा आ भौगोलिक वितरणक स्वतंत्र स्रोत जाँचबाक अछि।

लिपिक पुनरुद्धार साहित्यिक आन्दोलनक उचित लक्ष्य भऽ सकैत अछि, मुदा प्राचीन लिपिक मानक रूप बनएबाक प्रक्रिया आ ऐतिहासिक हस्तलिखित रूपक विविधता बीच भेद राखब चाही। युनिकोडक संकेतन एकटा तकनीकी घटना अछि; ओकरा अपनासँ प्राचीन पाण्डुलिपिक सम्पूर्ण परम्परा डिजिटल रूपमे उपलब्ध भऽ गेल, एहन निष्कर्ष नहि निकलैत अछि। पाठ-संपादन, अक्षर-पहिचान, पाण्डुलिपिक वंशावली आ उपयोगकर्ताक शिक्षण प्रत्येक स्वतंत्र श्रमक विषय अछि।

ग्रन्थक एहि विषयपर योगदान सांस्कृतिक इतिहासक प्रमाण-साधनकें प्रश्नांकित करब अछि। लिपि मात्र पहिचानक प्रतीक नहि, हस्ताक्षर, अभिलेख, वंश-सूची, नाटकक प्रति आ सामाजिक व्यवहारक ऐतिहासिक साक्ष्य सेहो अछि। जँ एहि प्रत्येक प्रयोगक तिथिबद्ध साक्ष्य प्रस्तुत होयत तँ 'लिपिक स्वराज'क विचार शोधक विवेचनीय विषय बनत, केवल भावनात्मक आह्वान नहि।

०११. सिद्ध, नाथ, ज्योतिरीश्वर आ जनभाषाक प्रारम्भिक रूप

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद २३४-२४४ ।

पुस्तक सिद्धाचार्यक पद्य, नाथपरम्पराक काव्य आ ज्योतिरीश्वरक वर्णनात्मक गद्यकें प्रारम्भिक मैथिली साहित्यक परस्पर जुड़ल परम्परा मानि विचार करैत अछि। ई प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण अछि, कारण धार्मिक साधना, लोकवाणी आ राजाश्रित ज्ञानविन्यास तीनू भाषा-प्रयोगक अलग ऐतिहासिक स्थल छथि। मूल अनुच्छेद २३५-२३९मे एकर उल्लेख भेटैत अछि। तथापि एकटा भाषा-परिवारक व्यापक सम्बन्धकें प्रत्येक रचनाक सीधा भाषिक उत्पत्तिक दावामे बदलल जाए तँ प्रमाणक स्तर अस्पष्ट भऽ जाएत।

ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'कें केवल आरम्भिक गद्यक रूपमे नहि, सूची-विन्यास आ नामावलि क शैलीक साहित्यिक आविष्कारक रूपमे पढ़बाक आवश्यकता अछि। नाम गनब तटस्थ प्रशासनिक क्रिया मात्र नहि; श्रेणी बनाओब आ सामाजिक दृष्टिक काव्यात्मक विस्तार ओकर संरचनात्मक विशेषता बनि सकैत अछि। एहि ध्वनि-गद्यक भेदक परीक्षण लेल मूल पाठक अंश, सूचीबद्ध वस्तुक क्रम आ प्रयोगगत सन्दर्भ आवश्यक अछि। संलग्न परिचयमे एहि विषयक संकेत अछि, विस्तृत पाठविश्लेषणक बदला नहि।

एहि प्रकरणमे 'जनभाषा'क उपयोग एगो मूल्य-निर्णयक रूपमे सेहो होइत अछि। जनभाषाक अवलम्बन अपने बलपर सामाजिक समता सिद्ध नहि करैत अछि; ताहि भाषा-साहित्यक भीतर विषय, श्रोता आ संरक्षकक असमान सम्बन्ध रहि सकैत अछि। समीक्षाक दृष्टिमे ग्रन्थक प्रश्न उपयोगी अछि, मुदा ओकर उत्तर पाठगत शब्द-विन्यास आ संस्थागत साक्ष्यक संयुक्त परीक्षणसँ पाओल जाएत।

०१२. मिथिला-नेपाल-असमक नाटक : तुलनात्मक रंगशास्त्र

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद २४५-२९७।

आठम-नवम उपखण्डमे नेपालक मल्लीय रंगमंच, मिथिलाक कीर्तनिया नाटक आ असमक अङ्किया नाटकक तुलनात्मक पञ्जी प्रस्तुत अछि। मूल अनुच्छेद २८०-२९६मे सूत्रधारक स्थान, पूर्वरंग, भाषामिश्रण आ प्रस्तुति-विधिक समांतर तुलना विशेष ध्यानाकर्षक अछि। एकर महत्त्व एहि बातमे अछि जे 'नाटक'कै केवल लिखित संवाद नहि, गायन, सूत्रधार आ रंग-व्यवस्थाक संयुक्त कलाक रूपमे पढल गेल अछि।

एहि तुलनाक एकटा सीमा अछि : ऐतिहासिक साक्ष्यक असमानता। नेपालक दरबारी नाटकक पाण्डुलिपि आ असमक आजुक मंचीय परम्परा एकहि समयक दस्तावेज नहि होइत अछि। लिखित रूप, अभिनयक परवर्ती अभ्यास आ अनुवादित विवरणकें अलग चिन्हित कएने बिना एकरेखीय प्रसारक तर्क बना देब सहज अछि। पुस्तक मूल अनुच्छेद २९७मे सङ्करदेवक यात्रा आ मिथिलासँ प्रत्यक्ष नाट्यप्रेरणाक सम्बन्ध प्रस्तावित करैत अछि; एहि विशेष कारणात्मक निष्कर्ष लेल स्वतंत्र यात्रावृत्त, तिथिबद्ध नाट्यपाठ आ प्रस्तुति-परम्पराक प्रमाण आवश्यक अछि।

नाट्यशास्त्रीय विवेचनमे सूत्रधारक अभिनय-समय, गायनक आवृत्ति, कथा-प्रवाहमे दर्शकसँ संवाद आ धार्मिक उद्देश्यक भाषा अलग-अलग तुलना करबाक अछि। एतय ग्रन्थक सारिणी शोध-प्रश्नक उत्कृष्ट आरम्भ बनैत अछि, मुदा अन्तिम सिद्ध इतिहास नहि। एहि पद्धतिसँ मैथिली साहित्यिक प्रभावक अनुसन्धान स्थानीय असमिया आ नेवारी रचनाशक्तिक मान्यता संग विकसित भऽ सकैत अछि।

०१३. आधुनिक नवजागरण आ साहित्यिक मान्यता : कारणक परीक्षण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद २९८-३०४ ।

पुस्तकक नवजागरण-विवेचन आधुनिक साहित्यिक पुनरुत्थान, विद्यालयक भाषा, मुद्रण आ साहित्यिक संस्थानक परस्पर सम्बन्ध पर केन्द्रित अछि। मूल अनुच्छेद २९८-३०१मे उन्नीसम शताब्दीक भाषिक जागरण आ साहित्यिक मान्यताक प्रशासकीय स्वरूपक अन्तर स्पष्ट देखल जा सकैत अछि। आधुनिक साहित्यिकता ककरा सँ निर्मित होइत अछि—नव गद्यशैलीसँ, पाठकसंख्यासँ, छपाइक साधनसँ अथवा राज्यक मान्यतासँ—एहि प्रश्नक बहुवचन उत्तर अपेक्षित अछि। साहित्य अकादमीक सम्बन्धमे मूल अनुच्छेद ३०१-३०४ संस्थागत शक्तिक तीक्ष्ण आलोचना करैत अछि। साहित्यिक निर्णयक सामाजिक परीक्षण उचित अछि, मुदा व्यक्तिगत प्रेरणा अथवा सुनियोजित बहिष्कारक निष्कर्ष प्रमाणसहित प्रस्तुत करबाक आवश्यकता अछि। पुरस्कार-निर्णयक वर्ष, निर्णायक समिति, पञ्जीकृत पुस्तक, पात्रताक नियम आ उपलब्ध सार्वजनिक विवरणक मिलानसँ सकारात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण होइत अछि। ग्रन्थक अंशमे उल्लिखित व्यक्ति-सम्बन्धी प्रतिकूल निष्कर्ष एहि समीक्षा द्वारा स्वतन्त्र रूपसँ प्रमाणित नहि मानल गेल। एहि प्रकरणक साहित्यिक उपलब्धि ई प्रश्न अछि जे ‘नवजागरण’क मानक के बनबैत अछि। स्थापित पाठकक वरीयता आ नव सामाजिक समूहक साहित्यिक प्रवेश बीच सम्बन्धक सूक्ष्म परीक्षण मैथिलीक आधुनिक इतिहासक केन्द्र बनि सकैत अछि। संस्थागत आलोचनाकें पाठालोचना, सांख्यिक निर्णय-इतिहास आ सामाजिक अध्ययनक संग संगति देलासँ पुस्तकक मूल चुनौती अधिक असरदार होयत।

०१४. लोकनायक, दीनाभट्टी, सलहेस आ स्त्री-नायिकाक स्मृति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ३०५-३२४ ।

लोकनायक-प्रकरणमे लोरिक, सलहेस, दीनाभट्टी आ बिहुलाक उल्लेख मैथिली साहित्यिक इतिहासक ग्रन्थकेँ मौखिक आख्यान आ लोकप्रदर्शन धरि विस्तार दैत अछि। मूल अनुच्छेद ३०७-३२४मे पञ्जीक रूपमे सामाजिक समुदाय, नायकत्व आ कथात्मक विषयक सम्बन्ध बनाओल गेल अछि। ई एकटा महत्वपूर्ण वैकल्पिक स्रोत-दृष्टि अछि : साहित्यिक अभिलेख केवल मुद्रित पुस्तक नहि, दीर्घकाल धरि गाओल गेल आख्यान आ उत्सवक प्रदर्शन सेहो भऽ सकैत अछि।

तथापि लोकनायकक एकटा निश्चित 'मूल' पाठ मानि ओकर सामाजिक अर्थ स्थिर करब सम्भव नहि। लोकगीतक अनेक पाठान्तर, गायकक सामाजिक स्थान, प्रदर्शनक स्थान, स्त्रीक भागीदारी आ कथा-कथनक समयसँ अर्थ बदलैत रहैत अछि। जातिगत समुदाय आ लोकपात्रक सम्बन्ध ऐतिहासिक रूपसँ महत्वपूर्ण अछि, मुदा एक समुदाय द्वारा पूजा अथवा स्मरणक तथ्यसँ कथाक सम्पूर्ण ऐतिहासिक उत्पत्ति सिद्ध नहि होइत अछि।

भाषा आ सौन्दर्यक दृष्टिसँ एहि आख्यानसभक पुनरुक्ति, आवर्त, कथा-प्रसंगक विस्तार, नायक-नायिकाक संवाद आ गायनक विरामक अध्ययन चाही। पुस्तकक शुरुआती सारिणी अनुसंधानक दिशानिर्देश अछि; भविष्यक गहन समीक्षा लेल वास्तविक लोकपाठ, सुरक्षित ध्वनि-अभिलेख आ स्रोत-विवरणक आवश्यकता रहत। एहन आधार पर समानान्तर साहित्येतिहासक 'लोक' श्रेणी वास्तविक काव्यात्मक अस्तित्व प्राप्त करैत अछि।

०१५. नूतन कथासाहित्य, सामाजिक विस्थापन आ पञ्जी-इतिहासक पुनर्विचार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ३२५-३३९ ।

समकालीन साहित्यक प्रकरणमे स्त्री-पुरुषक परम्परागत भूमिकासँ बाहरक अनुभव, प्रवासन, सामाजिक विकासक असमानता आ ग्रामीण जीवनक विघटनक कथा-प्रवेश पर ध्यान देल गेल अछि। मूल अनुच्छेद ३२८-३३३मे उपन्यास आ कथा-संग्रहक किछु उदाहरण प्रस्तावित अछि। एहि दृष्टिक उपयोगिता एहि बातमे अछि जे आधुनिकताको केवल शहर, अंग्रेजी शिक्षा अथवा मुद्रणक प्रसार नहि मानल गेल, बल्कि व्यक्ति आ समुदायक बदलैत श्रम-सम्बन्ध आ पहचानक संवेदनासँ जोडल गेल अछि।

आलोचनाक निर्णायक सवाल ई अछि जे कोनो कृतिक विषयगत नवीनता आ ओकर साहित्यिक उपलब्धि अलग कसौटी पर जाँचल जाए। उपेक्षित पात्र केन्द्रमे एलासँ पाठक सामाजिक महत्त्व बढ़ि सकैत अछि, मुदा कथात्मक दृष्टिकोण, समय-

व्यवस्था, संवादक स्वतन्त्रता, भाषिक चयन आ अन्तक कलात्मक विन्यास पढ़ल बिना कृतिक समय मूल्य ठहराएब उचित नहि। मूल परिचयमे जे पुस्तकक कथ्यक सूचनासभ अछि, तिनका पूर्ण कथा-पाठक विकल्प नहि बनाओल गेल अछि।

एहि खण्डक उत्तरार्ध पञ्जी-संस्थाक ऐतिहासिक आलोचना पर फेर लौटैत अछि।

अनुच्छेद ३३४-३३६मे श्रोत्रियक सामाजिक गठन आ काल-निर्धारणक प्रस्ताव अछि।

एहि दाबीक लेल पञ्जी, साखापुस्तक, भूमि-अभिलेख आ विवाह-प्रथाक बहु-पीढ़ीय साक्ष्यक स्वतंत्र तुलना आवश्यक अछि। साहित्यिक बहिष्कार आ वंशगत श्रेणीकरणक सम्बन्ध एकटा वैध अनुसन्धान-विषय अछि, मुदा कोनो एक अभिलेखक अनुमानकें सम्पूर्ण इतिहासक सिद्ध निष्कर्ष नहि मानल जाए।

०१६. राधाकृष्ण चौधरीक सर्वेक्षण : स्रोत, भाषा आ आरम्भिक साहित्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : वर्ड अनुच्छेद ३४१-३८३।

मूल ग्रन्थक ग्यारहम खण्डसँ राधाकृष्ण चौधरीक A Survey of Maithili

Literature पर आधारित तुलनात्मक विवेचन आरम्भ होइत अछि। एहि बिन्दुपर समानान्तर इतिहास अपन प्रतिपक्षी ग्रन्थक प्रत्यक्ष समीक्षा दिस बढैत अछि। मूल अनुच्छेद ३४२-३५०मे चौधरीक इतिहास-दृष्टिक स्रोतस्थितिक उल्लेख अछि; ३५३-३५८मे मैथिलीक भाषिक उत्पत्ति आ लिपिसम्बन्धी मत; ३६०-३६८मे ज्योतिरीश्वर आ आरम्भिक साहित्यिक कृतिक चर्चा। एहि संरचनामे स्रोतक पाठ आ समकालीन पुनर्व्याख्याकें पृथक राखब महत्वपूर्ण अछि।

समीक्षात्मक रूपसँ चौधरीक सर्वेक्षणकें केवल 'प्रतिष्ठान'क प्रतिरूप बना देलासँ तुलनाक लाभ घटि जाइत अछि। मूल विद्वानक कालसीमा, उद्देश्य, उपलब्ध

पाण्डुलिपि, तत्कालीन शोधक बौद्धिक प्रश्न आ बादमे भेटल साक्ष्य अलग रहैत अछि। ग्रन्थक अनुच्छेद ३५५मे उल्लेखित भाषिक परम्परा आ अनुच्छेद ३६५क ज्योतिरीश्वरविषयक प्रस्तावकें चौधरीक अपन कथन, अनुवर्ती व्याख्या आ समानान्तर संशोधनमे व्यवस्थित विभक्त करबाक चाही।

दू विद्यापतिक विवादक आलोकमे एहि स्रोतक ऐतिहासिक स्थानक परीक्षण विशेष जरूरी अछि। मूल ग्रन्थक एक दिस पृथक विद्यापतिक प्रतिज्ञा अछि, दोसर दिस चौधरीक सर्वेक्षणमे परवर्ती मानक विद्यापति-विषयक वर्णनक विश्लेषण अछि। दुनूकें पाठगत अन्तर बनाय राखि एक-दोसरक स्रोत-आधार पूछब इतिहासलेखनक श्रेयस्कर तरीका अछि। एहि अध्ययनमे चौधरीक मूल स्वतंत्र प्रति उपलब्ध नहि; फलतः मूल DOCXमे उद्धृत वर्णन भरि विवेचनक आधार बनल अछि।

एहि प्रकरणक उपलब्धि विरोधी इतिहासक एकटा सूची नहि, वास्तविक पाठ-संवादक सम्भावना अछि। चौधरीक आधारभूत सर्वेक्षण आ समानान्तर पुनर्पाठबीच सहमति, आंशिक संशोधन, मूलभूत विरोध आ अप्रमाणित व्याख्याक चारि भेद राखल जाए तँ आगामी आलोचना अधिक सिद्धान्तनिष्ठ होयत। ३८४-४७७क विस्तृत तुलनात्मक कालरेखा एहि अध्ययनक विषय नहि; ओकर समीक्षा अगिला क्रममे निर्धारित अछि।

०१७. ब्रजबुली आ ब्रजावली : साझा साहित्यिक भाषा अथवा एकदिश प्रभाव?

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३८३-३९१।

मूल ग्रन्थक सोलहम प्रकरणमे ब्रजबुलीक इतिहास पूर्वी भारतक भाषिक आदान-प्रदानक प्रमुख उदाहरण बनल अछि। अनुच्छेद ३८४-३८५मे राधाकृष्ण चौधरी, सुनीतिकुमार चटर्जी, ग्रियर्सन आ सुकुमार सेनक अलग मत आनल गेल अछि। एतय मैथिलीक पदावलीसँ बंगला आ असमक वैष्णव साहित्य धरि प्रभावक एकटा मार्ग प्रस्तावित अछि। मुदा 'आधारभाषा', 'अनुकरण', 'संयुक्त साहित्यिक शैली' आ 'मिश्रित भाषा' चारिटा भिन्न ऐतिहासिक अवधारणा थिक; एकर व्यवहारमे पृथक प्रमाण चाही।

अनुच्छेद ३८५मे विशेष महत्त्वक प्रश्न अछि : बंगला पदावलिमे विद्यापतिक नामसँ सम्बद्ध हजारो पदक भीतर प्रमाणित मूल मैथिली पाठ कतेक अछि? लेखक एतय अप्रामाणिक आरोपण आ अनुकरणक सम्भावना स्वीकार करैत छथि। तँ समानान्तर साहित्येतिहासक दावा केवल रचनाक लोकप्रियता पर नहि, पाण्डुलिपिक दिनाङ्क, भाषिक रूप, भणिता, पाठान्तर आ प्रसारक स्रोतपर आधारित रहबाक चाही।

नामांकित पदसभमे वास्तविक रचनाकार पहिचानबाक प्रश्न सामाजिक इतिहाससँ अधिक पाठालोचनाक प्रश्न अछि।

अनुच्छेद ३८७, ३८९ आ ३९१ बंगाल, असम आ ओडिशाक भिन्न शाखा देखबैत अछि। गोविन्ददास, ज्ञानदास, शङ्करदेव आ रामानन्द राय एकहि शृंखलाक यान्त्रिक अनुयायी नहि छथि। असमिया ब्रजावलीक स्वतंत्र औपचारिक सीमा ग्रन्थ स्वयं एकटा तुलनात्मक भाषावैज्ञानिक अध्ययनक आधारपर स्वीकार करैत अछि। ई स्वीकृति सकारात्मक अछि, किएक तँ साझा शब्दरूपसँ एकरेखीय भाषिक वंशक्रम सिद्ध नहि होइत अछि।

एहि प्रकरणक सर्वाधिक सार्थक उपलब्धि मैथिली साहित्यक भूगोलकेँ सीमापार बनायब अछि। मुदा पूर्वी साहित्यसभक सम्बन्ध मात्र 'दाता' आ 'ग्रहीता'क स्थिर पदानुक्रममे नहि समाइत अछि। कवि अपन स्थानीय भाषा, गायनपरम्परा, धार्मिक संस्था आ श्रोता अनुरूप मूल प्रेरणाकेँ बदलबैत छथि। प्रभावक इतिहासकेँ रूपान्तरणक इतिहाससँ जोड़ल गेलासँ ब्रजबुली प्रकरण अधिक विश्लेषणक्षम होयत।

०१८. नेपालक मैथिली नाटक : पाण्डुलिपि, दरबार आ कीर्तनिया परम्परा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३९२-३९६ ।

सतरहम प्रकरण मैथिली नाटकक नेपालस्थित संरक्षण आ विस्तारक पक्ष सामने अनैत अछि। मूल अनुच्छेद ३९४मे काठमाण्डू, पाटन आ भक्तपुरक मल्ल-कालीन दरबारक उल्लेख अछि; अनुच्छेद ३९५मे ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, उमापतिक पारिजातहरण आ गोरक्षविजय एक साहित्यिक परम्पराक सम्बन्धमे राखल गेल अछि। एतय नाटकक भाषिक इतिहास आ पाण्डुलिपिक उपलब्धि एक-दोसरसँ जुड़ैत अछि, मुदा पाण्डुलिपि नेपालमे भेटबासँ रचनाक सम्पूर्ण उत्पत्ति-स्थल स्वतः निश्चित नहि भऽ जाइत अछि।

नाट्यरचनाक इतिहासमे तीन प्रमाण पृथक राखब आवश्यक अछि : नाटकक पाठ, प्रस्तुति-प्रथा आ दरबारी संरक्षणक राजनीतिक सन्दर्भ। मूल ग्रन्थमे संस्कृत-प्राकृत संवादसँ मैथिली गीतक सम्बन्ध आ कीर्तनिया अभिनयक चर्चा अछि। ई मैथिलीक नाट्यरूपकेँ केवल 'पाठ्य साहित्य' नहि मानि गीत, नृत्य, हावभाव आ दर्शकक संयुक्त कला मानबाक दिशा दैत अछि। किन्तु नाटक लिखल गेल, मंचित भेल आ जनसमाजमे प्रचलित रहल—एहि तीनू दाबीक प्रमाण अलग-अलग चाही।

अनुच्छेद ३९६मे भूपतीन्द्र मल्लक छब्बीस मैथिली नाटकक उल्लेख अछि। एहि सङ्ख्याकेँ सूचीबद्ध नाटकनाम, तिथि, भाषा, उपलब्ध प्रति आ लेखकत्व सहित सत्यापित करब अपेक्षित अछि। दरबारमे मिथिलाक लेखकक उपस्थिति, स्थानीय नेवार सांस्कृतिक जाल आ राजकीय बहुभाषिकताक परस्पर प्रभावक विवेचन कएल गेलासँ इतिहास केवल मैथिली राजदरबारक एकछत्र कथन नहि रहत। तुलनात्मक रूपसँ असमक अङ्किया नाटकक संग कीर्तनिया रूपक सम्बन्ध उपयोगी अछि। एकर प्रमाणित तुलना लेल नाट्य-सूत्र, प्रवेश, दृश्यविभाजन, कथासंवाद, धार्मिक गायन, मंचस्थापन आ पात्रक सामाजिक बोलचाल देखबाक चाही। ग्रन्थक आरम्भिक तुलना शोधक बाट देखबैत अछि, मुदा मूल नाट्यपाठक स्वतंत्र पाठालोचना एखन आवश्यक अछि।

०१९. सत्रहम-उत्तीसम शताब्दीक 'अवनति' : मानक कसकर?

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३९७-४००।

अठारहम प्रकरणमे लगभग १६००-१८३०क मैथिली साहित्यकेँ कथित अवनतिक युगक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। अनुच्छेद ३९९मे चौधरीक मूल्य-निर्णय, खण्डवला राजवंशक संरक्षण आ ब्रजभाषाक बढ़ैत प्रयोग जोड़ल गेल अछि। एतय 'कम रचना', 'अल्प उपलब्ध अभिलेख', 'दरबारी मानकक परिवर्तन' आ 'कलात्मक ह्रास' अलग-अलग कथन अछि। ई सभ एक-दोसरक स्वतः प्रमाण नहि होइत अछि।

यदि गद्यक अनेक अभिलेख उपलब्ध अछि, तँ ओकरा केवल शुष्क प्रशासनिक भाषा मानि साहित्यिक इतिहाससँ बाहर राखब आलोचनात्मक सीमा उत्पन्न करैत अछि। पञ्जी, लेखाजोखा, लोककथा, श्रुतिपरम्परा, विवाहगीत आ नाटकक निरन्तरता कतेक अछि, ई प्रश्न महत्वपूर्ण अछि। दरबारक गीत कम भेलासँ ग्राम्य सृजन बन्द भेल, एहन निष्कर्ष नहि काढल जा सकैत अछि।

अनुच्छेद ४००मे बंगाल आ असमक तुलनासँ मैथिलीक 'कमजोर' अवधि देखाओल गेल अछि। मुदा एकर लेल उपलब्ध मुद्रित कृतिक संख्या, संग्रह-पद्धति, जनसंख्या, संरक्षण-संस्था आ लिपिक सुलभता समान मापदण्डमे रखबाक आवश्यकता अछि। अपेक्षाकृत पैघ साहित्यिक उत्पादन सेहो समाजक सभ वर्गक प्रतिनिधित्व नहि दर्शबैत अछि।

एहि समीक्षा निष्कर्षमे 'अवनति'केँ स्वयंसिद्ध युगनामक स्थानपर परीक्षाधीन इतिहासशास्त्रीय परिकल्पना मानल गेल अछि। शैलीगत मूल्यांकन लेल तत्कालीन मूल रचनाक वास्तविक पाठ आ विविध विधाक अन्वेषण अनिवार्य अछि। समानान्तर इतिहासक अपन नैतिक आग्रह तखने सफल होयत जखन ओ दरबारी अभिलेखक बाहर रहि गेल सांस्कृतिक सामग्रीकेँ सेहो समान ध्यान दैत अछि।

०२०. ग्रियर्सन आ चन्दा झा : औपनिवेशिक ज्ञान आ भाषिक नवजागरण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ४०१-४०७ ।

उन्नीसम प्रकरणमे ग्रियर्सन आ चन्दा झाक योगदान मिथिलाक आधुनिक साहित्यिक पुनर्संरचनाक द्विविध प्रक्रिया बनि उठैत अछि। अनुच्छेद ४०४मे औपनिवेशिक भाषाशास्त्रीक व्याकरण आ पाण्डुलिपि-संग्रह भाषिक अलग पहिचानक साधनक रूपमे देखाओल गेल अछि। ई महत्वपूर्ण अछि जे औपनिवेशिक वर्गीकरण एके समयमे वैज्ञानिक विवरण आ प्रशासनिक दृष्टिक संयुक्त उत्पाद होइत छल। ग्रन्थ एहि द्वैधताकें चिह्नित करैत अछि।

व्याकरणक शास्त्रीय निर्माण आ जीबैत भाषाक पूर्ण रूप समान वस्तु नहि अछि। ग्रियर्सन द्वारा चयनित बोली, लिपि, सूचनादाता आ पाठक सामाजिक स्थिति जाँचबासँ ज्ञात होयत जे कोन भाषा-रूप अधिक दृश्य भेल आ कोन कम। उन्नीसम शताब्दीक ग्रन्थक उपयोग केवल आधुनिक भाषिक अधिकारक आधार नहि, औपनिवेशिक ज्ञान-पद्धतिक आलोचनाक स्रोतक रूपमे सेहो सम्भव अछि।

अनुच्छेद ४०६मे चन्दा झाक 'मिथिला भाषा रामायण'क महाकाव्यात्मक सामर्थ्यक चर्चा करैत हुनकर तुलना बङ्किमचन्द्रसँ कएल गेल अछि। तुलना आकर्षक अछि, मुदा महाकाव्यात्मक आख्यान, उपन्यास, पाठकवर्ग आ सामाजिक संरक्षणक संस्थासभक भिन्नताकें ध्यानमे रखबाक चाही। मूल काव्यक छन्द, कथाकारिता, स्रोत-रामायणसँ अन्तर, भाषारूप आ लोकसम्बन्धक पृथक अध्ययन नहि भेटला धरि एकरा केवल पुनर्जागरणक प्रतीक मानब अपर्याप्त अछि।

अनुच्छेद ४०७मे चन्दा झा आ विद्यापतिक तुलना एकटा उत्तरवर्ती प्रशंसात्मक वेबसाइटक आधारपर उद्धृत अछि। ई प्रशंसा आधुनिक स्मृति-निर्माणक स्रोत थिक, सम्पूर्ण ऐतिहासिक मूल्यनिर्णयक निष्पक्ष प्रमाण नहि। इतिहासकारक काज एहि प्रशंसाक उद्भव आ प्रसार के चिह्नित करब, आ मूल काव्यक उपलब्धिसँ तकर स्वतन्त्र मिलान करब अछि।

०२१. आरम्भिक पत्रिका-आन्दोलन : छपाइ, जाति आ पाठक-विस्तार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ४०८-४१०।

अनुच्छेद ४०९मे 'मैथिल-हित-साधन' पत्रिकाक आरम्भ आ १९०५क स्वदेशी परिवेशक सम्बन्ध प्रस्तुत अछि। एकर आलोचनात्मक महत्त्व मुद्रण-संस्कृतिक निर्माणमे अछि : पत्रिका केवल रचनाक पात्र नहि, लेखकीय संवाद, पाठक-समुदाय, वर्तनी-निर्णय, सामयिक विवाद आ संस्थागत पहचानक सक्रिय क्षेत्र बनैत अछि।

पत्रिका इतिहास लिखबाक लेल प्रकाशनस्थान, वास्तविक प्रथमाङ्क, सम्पादक, प्रकाशनक्रम, अंकसङ्ख्या, वितरणस्थान आ नियमित पाठकक प्रमाण चाही।

अनुच्छेदमे उल्लिखित १९०५क सहसमयिकता ऐतिहासिक तुलना सम्भव करैत अछि, मुदा बंगाल-विभाजन आ मैथिली पत्रिकाक विषयक बीच प्रत्यक्ष कारणसम्बन्ध अलग दस्तावेजसँ सिद्ध करबाक होयत।

एहि प्रकरणमे कम साक्षरता आ जातिगत असमानता केँ साहित्यिक पुनर्जागरणक संरचनात्मक सीमा मानल गेल अछि। 'मात्र पाँच प्रतिशत' साक्षरताक दाबी ग्रन्थमे अछि, मुदा कय वर्ष, कोन भौगोलिक क्षेत्र, कोन लिङ्ग-विभाग आ कोन जनगणनाक आधार पर ई संख्या बनल, से स्पष्ट कएल बिना एकरा प्रमाणित तथ्य नहि लिखल जा सकैत अछि। स्त्री आ निम्नवर्गक मौखिक पाठकत्व एहि आँकड़ामे अदृश्य रहि सकैत अछि।

आधुनिक साहित्यिक जनसमुदायक गठन बुझबाक लेल पत्रिकाक संपादकीय आग्रह आ वास्तविक पाठकक सामाजिक बनावट दुनूक अध्ययन अपेक्षित अछि। एहि प्रकार साहित्यिक नवजागरणकेँ एकमात्र कृति वा व्यक्तिक चमत्कारक स्थानपर विवादपूर्ण सार्वजनिक क्षेत्रक निर्माणक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

०२२. बीसम शताब्दीक आधुनिकता : कथा, नाटक, गीत आ स्वीकृति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ४१२-४१६ ।

बीसम प्रकरणमे 'स्वर्णिम त्रयी' आ आधुनिक साहित्यक विषय उठैत अछि। अनुच्छेद ४१४ मैथिली गद्यकथाक विकास, हरिमोहन झाक व्यंग्यात्मक रचना आ मणिपद्मक रंगलेखनक चर्चा करैत अछि। आरम्भिक पद्यपरम्परा आ आधुनिक कथाशिल्पक बीच साहित्यिक संक्रमण देखएबाक ई प्रयास विधागत इतिहासक लेल उपयोगी अछि। मुदा कोनो त्रयी के आधारपर पूरा शताब्दीक साहित्यक मानचित्र तैयार करबाक सीमा अछि। महिला लेखक, गैर-प्रतिष्ठित समुदाय, सामयिक पत्रिका, रेडियो आ ग्रामीण मौखिक उत्पादनक समानान्तर समयक्रम जोड़ल बिना कथा-आधारित सार्वजनिकता अपूर्ण रहत। साहित्यिक आधुनिकता केवल 'नव रूप' नहि, लेखकक अभिव्यक्ति आ पाठकक अपेक्षामे बदलाव सेहो थिक।

अनुच्छेद ४१५मे मुक्तछन्द, पारम्परिक नचारी आ महेशवानीक एकसंग रहबाक बात अछि। एहि पक्षमे काव्य-प्रक्रियाक इतिहास सम्भव अछि, मुदा 'मुक्तकाव्य', 'छन्दमुक्त पद्य' आ पारम्परिक गायनरूपक परिभाषा गडुमडु नहि हो। प्रतीक, वाचक, पाँतिक लय, आवर्तन आ मौखिकता देखकर आधुनिक कविताक कला समझल जा सकैत अछि।

अनुच्छेद ४१६मे संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश २००३क उपलब्धिक रूपमे राखल अछि। संवैधानिक स्वीकृति साहित्यक प्रसार लेल संसाधन बढ़ा सकैत अछि, मुदा ओ अपन-आप पाठक-सङ्ख्या, शिक्षण माध्यम अथवा श्रेष्ठ कलाक गारंटी नहि अछि। राज्यक मान्यता आ रचनात्मक जीवनक परस्पर सम्बन्ध जाँचबासँ इतिहासगत व्याख्या अधिक सार्थक होयत।

०२३. राधाकृष्ण चौधरीक सर्वेक्षण : उपलब्धि आ आलोचनाक उचित कसौटी

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ४१८-४२४ ।

इक्कीसम प्रकरणक खासियत ई अछि जे मूल ग्रन्थ चौधरीक सर्वेक्षणक योगदान स्वीकार करैत अछि आ तकर सीमा सेहो राखैत अछि । अनुच्छेद ४२१मे इंग्लिशमे लिखल एक व्यापक मैथिली साहित्येतिहासक रूपमे ओकर उपयोगिताक चर्चा अछि । एहि सकारात्मक मूल्याङ्कनसँ विरोधी इतिहासधाराकेँ बिना पढ़ने अस्वीकार करबाक दोषसँ बचबाक सम्भावना बनैत अछि ।

अनुच्छेद ४२३मे लोकगीत, दलित आ गैर-ब्राह्मण साहित्यक सीमित उपस्थिति, स्त्री-रचनाक अनुपात आ आधुनिक प्रसङ्गक चयनपर प्रश्न अछि । एहि आलोचनाक बल तखन बढ़त जखन सर्वेक्षणक वास्तविक अनुक्रम, रचनावार पृष्ठ-वितरण आ उपलब्धता-सीमा जाँचल जाए । आलोचककेँ ई सेहो देखबाक चाही जे चौधरीक लेखनकालमे कोन पाण्डुलिपि उपलब्ध छल आ आजिक पाठ-संग्रहसँ कोन नव सामग्री जोड़ि सकैत अछि ।

अनुच्छेद ४२४ बंगला, असमिया आ नेपालक मैथिली साहित्यमे सीमापार तुलनाक कमी अनुभव करैत अछि । ई अपेक्षा न्यायसंगत अछि, मुदा 'सर्वेक्षण' शीर्षकक कृतिक घोषित उद्देश्य आ तुलनात्मक इतिहासक अलग उद्देश्यक बीच भेद जरूरी अछि । कोनो पुस्तक जकरा करबाक प्रतिज्ञा नहि करैत अछि, केवल ओहि अभावक आधारपर ओकर सम्पूर्ण विद्वत्ता खारिज नहि करबाक चाही ।

समानान्तर साहित्येतिहासक वास्तविक आलोचनात्मक श्रेष्ठता स्रोतक विस्तृत आवरणसँ सिद्ध होयत, न कि चौधरीक स्थानपर दोसर 'महान' कृतिक सूची रखबाकसँ । मूल ग्रन्थक योगदान एहि संवाद शुरू करबामे अछि; एकर प्रमाणवत्ता चौधरीक मूल पाठक स्वतन्त्र तुलना पूरा भेला पर अधिक स्पष्ट होयत ।

०२४. तुलनात्मक कालरेखा आ 'दाता सभ्यता'क निष्कर्ष : प्रमाणक बोझ

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ४२५-४७६।

बाइसम आ तेइसम प्रकरण क्रमशः तुलनात्मक कालरेखा आ मैथिलीकेँ पूर्वी भारतीय साहित्यिक रूपक 'दाता' मानबाक निष्कर्ष तक जाइत अछि। अनुच्छेद ४२६-४६८क सारिणीमे चर्यापद, कर्णाट, ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, ब्रजबुली, शङ्करदेव, मल्ल नाटक, ग्रियर्सन, चन्दा झा आ संवैधानिक मान्यताक अनेक घटना समान पाँतिमे राखल अछि। तुलनात्मक सारिणीक प्रमुख उपयोग भिन्न भाषिक क्षेत्रक ऐतिहासिक समकालिकता देखएब अछि।

मुदा समकालिकता, प्रेरणा आ प्रत्यक्ष प्रभाव एकहि प्रमाण-स्थिति नहि अछि। यदि दू भाषा-साहित्य एकहि शताब्दीमे वैष्णव भक्ति अथवा नाट्यरूपक विकास देखैत अछि, ताहिसँ एकरे स्रोत दोसरकेँ दान केलक—ई स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि। एहि प्रकारक इतिहास लेल तिथिबद्ध पाण्डुलिपि, लेखक-सङ्गति, पाठ-साम्य, पुनर्व्याख्या आ प्रसारणक संस्थागत मार्गक पृथक विवरण चाही।

अनुच्छेद ४७३-४७५मे मैथिलीक योगदान आ मान्यताक अभावकेँ एकटा वैचारिक विरोधाभास बनाओल गेल अछि। एहि तर्कक भावात्मक प्रभाव पैघ अछि, मुदा सम्पूर्ण पूर्वी भारतीय साहित्यिक आदान-प्रदानकेँ 'दाता' बनाम 'ग्राही'क भाषा सँ आँकल गेलासँ पारस्परिक पुनर्रचनाक प्रक्रिया दबि जाइत अछि। ग्रन्थक अपन ब्रजावली सम्बन्धी परिच्छेद प्रत्यक्ष देखबैत अछि जे स्थानीय रचनाकार मूल प्रेरणाकेँ बदलैत छथि।

अनुच्छेद ४७६मे मार्च २०२६ धरि शास्त्रीय भाषाक दर्जाक माँगक उल्लेख अछि। ई पुस्तकक लेखनकालीन स्थिति-निर्देश अछि, वर्तमान प्रशासनिक निर्णयक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। समग्र रूपेँ एहि प्रकरणक उपलब्धि तुलनात्मक साहित्येतिहासक संश्लेषण अछि; ओकर सीमा अनेक कालखण्डक जटिल सम्बन्धकेँ एकटा सार्विक निष्कर्षमे सरल करबाक प्रवृत्ति अछि।

०२५. अनुलग्नकक उत्तरवर्ती विवाद : रामनाथ झा आ संस्थागत क्षेत्र-सीमा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ५३१-५४२।

मूल ग्रन्थक 'A Survey of Maithili Literature—Volume II' नामक अनुलग्नक ५३१-५३५ अनुच्छेदसँ सुरू होइत अछि। एहि परिवर्तनक पाछाँ सर्वेक्षणात्मक कालरेखाक स्थानपर संस्थागत आलोचना, भाषिक क्षेत्राधिकार आ व्यक्तिविशेषक निर्णयक बहस प्रमुख बनैत अछि। शोध-पद्धतिक दृष्टिसँ एहि विधागत बदलावकें चिह्नित करब आवश्यक अछि, किएक तँ इतिहासलेखनक तर्क आ सार्वजनिक प्रतिवादक भाषण-शैली एक समान नहि अछि।

अनुच्छेद ५३६-५३८मे १९६५क साहित्य अकादेमी-सम्बन्धी मान्यता, भारत-नेपालक भाषा-क्षेत्र आ रामनाथ झाक कथित मतक आलोचना अछि। एकर मूलभूत प्रश्न अछि : राष्ट्र-सीमा पर स्थापित भारतीय संस्था मैथिलीक सम्पूर्ण अन्तरराष्ट्रीय भाषिक संसारक प्रतिनिधि कहला योग्य अछि की नहि? साहित्यक इतिहासमे सीमापार लेखकक अनुपस्थितिक आकलन प्रासंगिक अछि; मुदा कानूनी अधिकार-क्षेत्र आ सांस्कृतिक प्रतिनिधित्वक कर्तव्य दुनूकें अलग मानबाक चाही।

अनुच्छेद ५३९-५४०मे गङ्गेश उपाध्यायक पञ्जीगत जन्म-वंश आ रामनाथ झाक सूचना देबाक तरीके पर कठोर आरोप अछि। मूल ग्रन्थ ई दाबी प्रस्तुत करैत अछि; एतय एकरा स्वतंत्र रूपसँ सिद्ध तथ्य मानल नहि गेल अछि। व्यक्तिक ऐतिहासिक आचरणपर निष्कर्ष लेल मूल पत्राचार, उद्धृत इतिहासग्रन्थ, पञ्जीक पाठस्थान, तिथि आ वैकल्पिक पठन देखबाक आवश्यकता अछि।

इति विचारसँ अनुलग्नक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधित्व-प्रश्न उठबैत अछि, मुदा ओकर वाक्यशैलीमे आरोप आ विवेचन कभी-कभी एकसंग भऽ जाइत अछि। शोध-समीक्षामे तथ्यगत आक्षेप, नैतिक निर्णय आ लेखकक आक्रोशक भिन्न पाठ-स्थिति स्पष्ट राखलासँ विवादक ऐतिहासिक अर्थ अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

०२६. अकादेमीक मान्य संगठनसभ : सूचीसँ प्रतिनिधित्व धरि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ५४३-५६९।

अनुच्छेद ५४३-५५६मे साहित्य अकादेमीसँ सम्बन्धित मैथिली साहित्यिक संगठनक एक पूर्व सूची देल अछि; ५५६-५६६मे फेर संशोधित सूचीक विवरण अछि। एहिमे संस्था, ठाम आ कार्यालय-ठेगानाक उल्लेख साहित्यिक प्रतिनिधित्वक अभिलेख बनि सकैत अछि। मुदा कार्यालय-ठेगाना अपन-आप कोनो संस्थाक वास्तविक लेखकीय सदस्यता, सक्रियता अथवा सार्वजनिक वैधता प्रमाणित नहि करैत अछि।

दुनू सूचीक तुलनामे नाम, स्थान आ प्रतिस्थापनक बात मूल पाठक स्तरपर देखल जा सकैत अछि; परन्तु परिवर्तनक आदेश, समय, नामांकन-प्रक्रिया आ स्वीकृत नियमक मूल सरकारी प्रति उपलब्ध नहि अछि। एकर अभावमे 'मान्यतामे परिवर्तन' पुस्तकक विवरण अछि, समकालीन प्रशासनिक सत्यापन नहि।

समावेशी प्रतिनिधित्वक मूल्याङ्कन लेल सामाजिक पृष्ठभूमि, क्षेत्र, लिङ्ग, विधा, उम्र, प्रकाशन-कार्य, अनुवादक भागीदारी आ खुलल चयन-प्रक्रियाक पृथक प्रमाण चाही। सदस्यक जाति अथवा संस्था-नामक सामान्यीकरणसँ साहित्यिक गुणवत्ताक अन्तिम निर्णय बनि नहि जाइत अछि। मूल अनुच्छेद ५६९मे प्रस्तुत व्यक्तिगत आलोचनाकें एहि कठोर कसौटीपर पढ़ब आवश्यक अछि।

एहि विवेचनक रचनात्मक दिशा प्रशासनिक सूचीसँ साहित्यिक न्याय धरि यात्रा अछि। अभिलेख आ मूल्य-निर्णय अलग रखला पर ई प्रकरण चयन-संस्थाक उत्तरदायित्व पर गंभीर अनुसन्धानक आधार बनि सकैत अछि।

०२७. पुरस्कार-वितरणक आँकड़ा : आन्तरिक सङ्ख्यागत असङ्गति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ५७०-५८२ ।

अनुच्छेद ५७०-५७९मे दस नामक सूची आ ५८०-५८२मे पुरस्कारक सामाजिक वितरणक तीक्ष्ण आलोचना अछि। एहि खण्डक सर्वाधिक जरूरी प्रथम काम आँकड़ाक मूल अंकगणित जाँचक थिक। अनुच्छेद ५८१ एक दिस 'कुल पचास बेर' कहैत अछि, मुदा ओही वाक्यमे तीन वर्गक संख्या क्रमशः ४२, ६ आ ३ अछि। एहि तीनूक योग ५१ होइत अछि, ५० नहि।

एहि असङ्गतिक रहते मूल तालिकाकें यथावत् प्रमाणित सांख्यिक निष्कर्षक रूपमे उद्धृत करब उचित नहि। सम्भव अछि गणनाक वर्ष, पुरस्कारक श्रेणी, कोनो व्यक्तिक वर्गीकरण वा प्रतिलिपिक त्रुटि हो; मुदा मूल पुरस्कार-पञ्जीक मिलान बिना अनुमानसँ सुधार सेहो नहि करबाक चाही। ई संशोधनक प्रत्यक्ष आवश्यक स्थान अछि।

मूल वाक्यमे २०२१मे जगदीश प्रसाद मण्डलकें पुरस्कार भेटबाक उल्लेख पुरान शून्यक स्थितिमे परिवर्तनक रूपमे अछि। तँ २०१९ धरि आ २०२१क पाछाँक आँकड़ाकें एके भाजकमे नहि मिलाएब उचित होयत। पुरस्कार-वर्ष, कृति, निर्णायक मण्डल आ सामाजिक वर्गीकरणक स्रोत प्रामाणिक भेला परे निष्पक्ष अनुपात बनत।

पुरस्कारक वितरण समाजशास्त्रीय जाँचक योग्य विषय अछि, मुदा असमान

वितरणसँ प्रत्येक स्वतंत्र पुरस्कार-निर्णायक वास्तविक कारण सिद्ध नहि होइत अछि।

प्रत्येक पुस्तकक साहित्यिक मूल्य आ संस्थागत चयनक प्रक्रिया अलग प्रमाण-समूह माँगैत अछि। एहि भेदकें राखब आलोचनाक शास्त्रीय अनुशासन अछि।

०२८. संस्थागत उद्देश्य, लेखकीय उत्तरदायित्व आ सुधारक प्रस्ताव

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ५८३-५९९।

अनुच्छेद ५८३-५८७मे साहित्य अकादेमीक स्थापना-उद्देश्य, भाषा-परिषद्, प्रकाशन आ पुरस्कारक व्यवस्था मूल पुस्तकक दृष्टिसँ वर्णित अछि। अनुच्छेद ५८८-५९९मे एहि घोषित उद्देश्य आ अनुभवक बीच असङ्गतिक आधारपर तीक्ष्ण प्रतिवाद आ सुधारक माँग अछि। एकरा सार्वजनिक सांस्कृतिक नीति पर लेखकीय हस्तक्षेपक रूपमे पढ़ल जाए।

संस्थागत उद्देश्य आ वास्तविक निष्पादनक तुलना लेल कालसीमा, अनुदान, अनुवाद, पुस्तक-प्रकाशन, गोष्ठी, चयन-नियम आ अपील-पद्धति पर वर्षवार स्रोत चाही। अन्य भारतीय भाषाक कुल प्रकाशनक औसतकेँ मैथिलीक स्थिति पर यन्त्रवत् लागू नहि करबाक चाही। अलग भाषाक आवेदन, बजट, प्रस्ताव आ संस्थागत अधिकारमे भेद रहैत अछि।

लेखकक माँगमे मान्यता-प्राप्त संस्थासभक पुनर्विचार, निष्पक्ष जाँच आ समानान्तर साहित्यिक आयोजनक प्रस्ताव उपस्थित अछि। सार्वजनिक जीवनमे आलोचनात्मक दबावक ई माध्यम प्रभावकारी भऽ सकैत अछि। मुदा कोनो संस्थाक मान्यता हटाएब न्यायसंगत कहल जाए, तकर लेल नियम, सुनवाइक अवसर, प्रतिनिधित्वक मापदण्ड आ दस्तावेज-आधारित निर्णय आवश्यक अछि।

एहि प्रकरणक भाषण-शैली उद्देश्यपूर्वक विवादजनक अछि; शोध-समीक्षा ओकरा जसक-तस प्रशासकीय निर्णय नहि बनबैत अछि। प्रश्न वास्तविक अछि— साहित्यिक संस्था कतऽ धरि समाजक सम्पूर्ण रचनात्मक विविधताकेँ स्थान दैत अछि? उत्तर कालानुसार अद्यतन स्रोत आ जाँचसँ निकलत।

०२९. विदेहक आरम्भिक डिजिटल इतिहास : माध्यमसँ साहित्यिक आन्दोलन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६००-६०९ ।

अनुच्छेद ६००-६०३मे विदेह ई-पत्रिकाक आरम्भिक स्मृति, प्रारम्भिक स्तम्भ, संगीत, मिथिला चित्रकला, बाल-साहित्य आ पाण्डुलिपि-संरक्षणक प्रयास वर्णित अछि ।

६०७मे याहू-जियोसिटीजक आरम्भिक प्रयोग, भलसरिक गाछक दिनाङ्क आ पत्रिकाक रूपान्तरणक लेखकीय विवरण अछि । ई अंश बाह्य इतिहासक साथ-साथ संस्थापकक आत्मसाक्ष्य थिक; तकर स्वतंत्र स्रोत-मिलान अलग क्रिया होयत ।

ई लेखनक प्रमुख इतिहासगत महत्त्व डिजिटल माध्यमकेँ केवल छपाइक विकल्प नहि, साहित्यिक सार्वजनिकता बदलनिहार तकनीक मानब अछि । दूरस्थ पाठक आ लेखकक बीच दूरी घटब, पुरान पुस्तकक उपलब्धता, लिपिसंरक्षण आ संप्रेषणक नियमितता—ई सभ डिजिटल अभिलेखक सामाजिक उपयोगिता स्पष्ट करैत अछि । अनुच्छेद ६०६मे वैचारिक विविधता आ किछु नैतिक सिद्धान्तक संगस्थिति बताओल गेल अछि । एतय संपादकीय बहुलताक कसौटी महत्त्वपूर्ण होइत अछि : भिन्न मतकेँ स्थान, असहमतिपर उत्तर, लेखकीय अधिकार आ मूल स्रोत-सत्यापनक एकरूप नियम । अनुच्छेद ६०८मे पुस्तक-मेला आ साहित्यिक सहभागिताक उल्लेख डिजिटल आ प्रत्यक्ष सांस्कृतिक क्षेत्रक सम्बन्ध देखबैत अछि ।

अनुच्छेद ६०९मे दोतरफा अनुवाद आ मध्यवर्ती भाषाक उपयोगक चर्चा विशेष ध्यानयोग्य अछि । अनुवादक इतिहास लिखबामे स्रोत-भाषा, मध्यवर्ती भाषा आ गन्तव्य मैथिलीक श्रेणी स्पष्ट रहबाक चाही; अन्यथा मूल सँ प्रत्यक्ष अनुवादक भ्रम पैदा भऽ सकैत अछि । एहि प्रकरणमे डिजिटल अभिलेख, आयोजन आ अनुवादक त्रिकोण एक महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक योगदान अछि ।

०३०. सूचनाक अधिकार आ चयन-आरोप : दस्तावेजी दावीक प्रमाणसीमा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६१०-६१२ ।

अनुच्छेद ६१०-६१२मे सूचनाक अधिकारक दू आवेदनक तिथि आ क्रमांकक उल्लेख अछि। मूल लेखकक अनुसार २०११ आ २०१४क पत्राचारसँ मैथिली परामर्शसमितिक कार्यवितरण पर प्रश्न उठल। एहि प्रकारक पत्राचार संस्थागत इतिहासक महत्त्वपूर्ण स्रोत बनि सकैत अछि, किएक तँ ओ सार्वजनिक दावीक मूल अभिलेखपर लौटबाक अवसर दैत अछि।

तथापि आवेदन दायर करब, कार्यालयक उत्तर भेटब आ ओहि उत्तरसँ निश्चित आरोप सिद्ध होएब तीन अलग घटना अछि। दस्तावेजक मूल प्रति, सम्पूर्ण उत्तर, सूचना उपलब्ध करेनिहार प्राधिकारीक अधिकार, अवधि आ अनुरोधक ठीक दायरा देखल बिना निदान अन्तिम नहि मानल जाए।

अनुच्छेद ६१२मे नब्बे प्रतिशतसँ बेसी कार्य मित्र-परिजनक बीच वितरणक दावा अछि। एहि अनुपातक गणना लेल कुल कार्य-संख्या, अलग-अलग प्रकारक कार्य, सभी प्राप्तकर्ता, सम्बन्ध सिद्ध करबाक मानक आ स्रोतसमय आवश्यक अछि।

मौखिक परिचय आ प्रमाणित पारिवारिक सम्बन्ध एकहि वर्ग नहि अछि। आलोचना एहि दावीकेँ लेखकक ऐतिहासिक आरोपक रूपमे सुरक्षित राखैत अछि, सत्यापित तथ्यक रूपमे नहि।

जगदीश प्रसाद मण्डल, राजदेव मण्डल, बेचन ठाकुर आदि लेखकक अवहेलनाक चर्चा अलग साहित्यिक प्रश्न अछि। ओकर वास्तविक अध्ययनक लेल ओहि कालखण्डक प्रस्ताव-पञ्जी, चयनसूची आ प्रत्येक लेखकक उपलब्ध कृतिक गुणात्मक पाठालोचना चाही। एतय व्यक्तिसम्मान आ संस्थागत जवाबदेही दुनू जरूरी अछि।

०३१. मैथिली विकिपीडिया, तिरहुता आ तकनीकी मानकीकरणक इतिहास

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६१३-६३७ ।

अनुच्छेद ६१३-६३२मे अनुवाद-परियोजना, मीडियाविकी, 'बिहारी' नामक डिजिटल भाषिक वर्गीकरण आ तिरहुता युनिकोड प्रस्तावक उल्लेख अछि। लेखक वैश्विक तकनीकी मञ्चक भाषा-चयनकें साहित्यिक अधिकारक व्यावहारिक आयाम मानैत छथि। भाषा कोड, लिपि संकेत, स्थानीयकरण आ सार्वजनिक लेखनक रूपान्तरणमे तकनीकी निर्णयक सामाजिक प्रभाव निर्विवाद अध्ययन-विषय अछि।

अनुच्छेद ६२३-६३०मे उद्धृत ब्लॉग बहस एकटा भाषिक नामकरणक विवाद देखबैत अछि। ब्लॉग-लेख ऐतिहासिक विवादक स्रोत थिक, मुदा सम्पूर्ण विकिपीडिया-समुदायक नीतिगत स्थिति वा स्थायी तकनीकी निर्णयक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। दावा, बहस, दस्तावेजी निर्णय आ लागू कोड अलग कएल जाए।

अनुच्छेद ६३१-६३२ तिरहुता युनिकोड प्रस्तावक लेखकीय सहभागिताक विशेष उल्लेख करैत अछि, जाहिमे अंशुमान पाण्डेयक प्रस्ताव आ विदेहक ८०म अंकक सन्दर्भ अछि। एकर शोधयोग्य आधार प्रस्तावक वास्तविक संस्करण, प्रस्तुत तिथि, सन्दर्भ-सूची आ आभारवचन होयत। एहिसँ प्रयत्नक ऐतिहासिक भूमिका अधिक स्पष्ट भऽ सकैत अछि।

मूल प्रकरणक शक्तिशाली निष्कर्ष ई अछि जे साहित्यिक परम्पराक संरक्षणक लेल लिपिक डिजिटल साधन, खोजनीय पाठ, अनुवाद आ खुला अभिलेखक कार्य अपरिहार्य अछि। मुदा तकनीकी उपलब्धि आ भाषाक सभ वर्गधरि पहुँच एक समान नहि अछि; उपकरणक उपलब्धता, प्रशिक्षण आ वास्तविक उपयोगक आँकड़ा सेहो चाही।

०३२. जगदीश प्रसाद मण्डलक आगमन : युग-विभाजनक साहित्यिक कसौटी

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६३९-६६२ ।

अनुच्छेद ६३९-६४७मे समानान्तर साहित्यिक वैचारिक आवश्यकता फेर प्रतिपादित अछि; ६५०सँ जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनात्मक स्थानक विवेचन शुरू होइत अछि। ६५२-६५३मे १९६७क मिथिला अकाल आ ओकरा बाद कथासाहित्यमे विषयक उपस्थितिक प्रश्न उठैत अछि। एहि सन्दर्भक बल ई अछि जे ग्रामीण श्रम, भूख आ आर्थिक असमानताकें साहित्यक केन्द्रीय अनुभव बनएबाक आवश्यकता रेखाङ्कित होइत अछि।

अनुच्छेद ६५४-६५७ जगदीश प्रसाद मण्डलकें पुनर्जागरणकारी लेखकक रूपमे मूल्याङ्कित करैत अछि, एतय धरि जे हुनक आगमनसँ साहित्येतिहासक दू युग बनावय योग्य मानल गेल अछि। ई एकटा महत्वाकांक्षी आलोचनात्मक प्रतिज्ञा अछि, मुदा ओकर जाँच लेल पूर्ववर्ती गद्यक समान विषय, कथा-विन्यास, पात्रक सामाजिक शब्दावली आ लेखकक शिल्पगत नवीनताक पाठ-दर-पाठ तुलना आवश्यक अछि।

‘मूल अनुभव’क सामाजिक सच्चाई आ कृतिक साहित्यिक सत्यता दुनू समान नहि अछि। अनुभव-सम्पन्न लेखकक रचनामे सेहो शिल्प, आवाज, अन्तर्विरोध आ भाषिक चयनक कसौटी लागू होयत; अपेक्षाकृत सुविधासम्पन्न लेखक समाजक कष्ट लिखि नहि सकैत, एहन सार्विक नियम बनायब उचित नहि। मूल ग्रन्थक प्रतिज्ञा अनुसंधानकें दिशादर्शी अछि, अन्तिम फैसला नहि।

अनुच्छेद ६५९-६६०मे पात्रक आशा, सामाजिक सम्मान आ लेखकीय आचरणक एकात्मताक प्रशंसा अछि। आलोचना एतय पाठक सामाजिक प्रतिबद्धता स्वीकार करैत अछि, मुदा लेखकक व्यक्तिगत चरित्रक प्रशंसाकें कथा-शिल्पक साक्ष्यक विकल्प नहि मानैत अछि। नव युग-विभाजन स्थापित करबाक लेल कमसँ कम प्रतिनिधि उपन्यास, कथा-संग्रह आ समकालीन प्रतिपक्षी कृतिक विस्तृत तुलनात्मक पठन अपेक्षित अछि।

०३३. गङ्गेश उपाध्यायक जीवनी : दार्शनिक प्रतिष्ठा आ विवादित वंशवृत्त

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६६३-६७५ ।

मूल ग्रन्थक अनुच्छेद ६६३-६६९मे गङ्गेश उपाध्यायक परिवार, विद्वत् प्रतिष्ठा आ तत्त्वचिन्तामणिक आधुनिक अनुवादक चर्चा अछि। एकहि अनुक्रममे जीवनीसम्बन्धी पञ्जी-दाबी आ आधुनिक दार्शनिक अनुसंधान राखल गेल अछि। एहि संयोजनक लाभ ई अछि जे गङ्गेशकेँ केवल तर्कप्रणालीक अमूर्त निर्माता नहि, मिथिलाक ठोस बौद्धिक आ सामाजिक परिसरक व्यक्ति मानल गेल अछि। तकर सीमा ई जे दार्शनिक ग्रन्थक प्रशंसा स्वयं वंशवृत्तक विवादित विवरण प्रमाणित नहि करैत अछि।

अनुच्छेद ६७०-६७५मे रामनाथ झा आ उदयनाथ झा 'अशोक'क रचनामे गङ्गेशक पारिवारिक प्रसङ्गक कथित दमनपर तीक्ष्ण प्रतिवाद उपस्थित अछि। एहि प्रकरणमे 'सम्मान-हत्या' सन भाषिक प्रयोग रूपकात्मक निन्दा अछि, ऐतिहासिक घटनाक शाब्दिक प्रमाण नहि। आलोचनामे लेखकक आक्षेप, उद्धृत इतिहासग्रन्थकारक वाक्य आ उपलब्ध पञ्जी-पाठक बीच दूरी स्पष्ट राखल गेल अछि।

अनुच्छेद ६७५मे दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यक पुस्तकक उद्धरण आ मूल लेखकक तकर प्रतिवाद अछि। एहि उद्धरणकेँ वास्तविक इतिहासग्रन्थक पृष्ठ, सम्पादन-वर्ष आ प्रसङ्गसहित जाँचे बिना भट्टाचार्य अथवा सूचनादाताक आशयक अन्तिम निर्णय सम्भव नहि। परिवार 'लुप्त' कहल गेल, 'वंचित' मानल गेल वा उपलब्ध अभिलेखमे अनुपस्थित रहल—ई भिन्न सम्भावना थिक।

एहि अध्ययनक मूल्य इतिहासकारक नैतिक उत्तरदायित्वक प्रश्न उठएब अछि : विद्वानक सामाजिक जीवनक कोन अंश प्रामाणिक इतिहासमे स्थान पाबय? समुचित उत्तर एतय परिशुद्ध पाठान्तर, अभिलेखक उत्पत्ति, समयक्रम आ प्रतिपक्षी स्रोतक स्वच्छ तुलना सँ निकलत।

०३४. पञ्जी-प्रबन्धक कालक्रम आ श्रोत्रिय वर्गक ऐतिहासिक गठन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६७६-६८४ ।

अनुच्छेद ६७८-६८४मे कर्णाट शासन, हरिसिंहदेव, पञ्जी-पद्धति, शाखापुस्तक आ श्रोत्रिय सामाजिक वर्गक गठनक प्रस्तावित कालरेखा अछि। ई साहित्येतिहासक बीच सामाजिक अभिलेखक गहन प्रवेशक उदाहरण थिक। यदि विद्यालय, विवाह, वंश आ पाण्डुलिपि-सम्भरणक संस्थासभ सृजन-परम्परासँ जुडल छल, तँ तिनकर इतिहास साहित्यिक अधिकारक संरचना समझबामे सहायक होयत।

मूल पाठ १३२६ ईसवीक पञ्जी-व्यवस्था आ लगभग १८०० ईसवीक नव उपवर्ग-गठनबीच अन्तर करैत अछि। किन्तु 'श्रोत्रिय' शब्दक विद्वत्ता-विशेषण, सामाजिक दर्जा आ अन्तर्जातीय विवाह-नियममे प्रयोग एके अर्थमे नहि छल होएत; एहि शब्दक ऐतिहासिक अर्थ-परिवर्तनक स्वतंत्र व्युत्पत्तिगत विवेचन चाही।

अनुच्छेद ६८१मे १७६०, १६७८ आ लगभग १८०० सन भिन्न काल-संकेत उपस्थित अछि। पुस्तक स्वयं किछु परम्परागत तिथिक संशोधन प्रस्तावित करैत अछि। ई अनिश्चितता स्पष्ट रूपसँ अभिलेखित करब उचित अछि; पञ्जीक प्रतिलिपि, लेखकहस्त, लिखित आदेश, तिथि-पद्धति आ पाछाँक हस्तक्षेप बिना तिथिक समन्वय अन्तिम नहि होयत।

नेपाल आ भारतक मैथिली समाजमे एकहि सामाजिक पदक भिन्न उपयोगक प्रस्ताव सेहो मूल पाठमे अछि। ई तुलनात्मक इतिहासक उपयोगी विषय अछि; मुदा सीमापार एकरूप ऐतिहासिक पूर्वस्थिति मानि लेब अथवा वर्तमान समाजसँ प्राचीन सामाजिक व्यवस्था अनुमान करब दुनू त्रुटिपूर्ण अछि। पञ्जीक इतिहासकें पुरानकालमे अपरिवर्तनीय जाति-व्यवस्थाक प्रतिलिपि नहि मानल जाए।

०३५. दूषण पञ्जीक पीढी-क्रम : एकटा अभिलेखीय उदाहरणक व्याख्या

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६८५-७२०।

मूल ग्रन्थ अनुच्छेद ६८५-७२०मे दूषण पञ्जीक एकटा वंशावलीक उदाहरण दैत अछि। नाम, मूल-स्थान, विवाह-संबन्ध आ पीढी-दर-पीढी सम्बन्ध एतय पुनर्निर्मित अछि। अनुच्छेद ७१७-७२०मे 'गुणवती', 'चमरू', 'गङ्गाधर' आदिकें जोड़ि समाजक अन्तर्जातीय सम्बन्धक एकटा प्रसङ्ग प्रस्तुत कएल गेल अछि। एहि पाठक ऐतिहासिक उपयोग सम्बन्ध-जाल पढ़ब अछि; एकरे आधारपर सम्पूर्ण मिथिलाक सार्विक विवाह-व्यवस्था निर्धारित करब उचित नहि।

दूषण पञ्जीक 'शुद्ध' आ 'अशुद्ध' वर्गीकरण सामाजिक संस्था द्वारा निर्मित मानक अछि, आधुनिक इतिहासकारक नैतिक भाषा नहि। ग्रन्थक अनुवादमे छठम पीढीमे 'पूर्ण शुद्ध' होयबाक कथन भेटैत अछि। समीक्षकक काज एहि भेदभावपूर्ण अभिलेखीय पदक सामाजिक क्रिया उजागर करब अछि, ओहि पदकें अपन मूल्यनिर्णय बनायब नहि।

आलोचनाक प्रमुख कठिनाई लम्बा नामक्रमक पठन अछि। बेटी-पुत्रक सम्बन्ध, मातृक मूल, विवाहस्थान आ वंश-नाम बारम्बार बदलैत अछि; लिपिक एकटा अस्पष्ट चिह्नसँ सम्पूर्ण पीढी-संरचना बदलि सकैत अछि। एहि कारणें मूल पाण्डुलिपिक उच्च-गुणवत्ताक प्रतिचित्र, राजकीय वा पारिवारिक हस्तान्तरण-विवरण, मूल पङ्क्ति आ अलग-अलग पाठक मिलान चाही।

ई उदाहरण गङ्गेशक कुलवृत्तक प्रत्यक्ष प्रमाणक समान नहि थिक, कारणें प्रत्येक पञ्जीप्रविष्टिक अपन व्यक्ति-सूचक आ पीढी-शृंखला अछि। एक वंशक साक्ष्य दोसर वंशपर विस्तार करबाक लेल स्पष्ट जोड़ आवश्यक अछि। पुस्तकक सामाजिक-इतिहासीय सम्भावना इएह सावधान पाठपद्धति सँ ठोस बनत।

०३६. गङ्गेश-सम्बन्धी पञ्जी-प्रविष्टि : नाम, पारिभाषिक पद आ पाठ-साक्ष्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ७२३-७९५ ।

अनुच्छेद ७२३-७९५मे गङ्गेशक नाम, छादन मूल, कथित वैवाहिक सम्बन्ध, पितृवियोगक पाछाँ जनम आ उत्तरवर्ती सन्तानक अनेक विवरण पञ्जी-प्रविष्टिसँ जोडल गेल अछि। अनुच्छेद ७७८-७८५मे मूल-पदक रोमन लिप्यन्तरण आ अंग्रेजी व्याख्या देल गेल अछि। एहिसँ पाठक अभिलेखीय कथनक शब्द-संकेत पबैत छथि, मुदा प्रतिलिपि आ प्रामाणिक मूल स्रोतमध्येक दूरी समाप्त नहि होइत अछि। मूल वृत्तान्तमे ‘पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते’ सन संरचनाक अर्थ निकालल गेल अछि। एहन पदबन्धक व्याकरणिक पाठ, क्रम, लेखकहस्त, सम्भावित आशय, पाठभेद आ सम्पादकीय विरामचिह्न सत्यापित कएनाइ आवश्यक अछि। एतय ‘पाँच वर्ष’क कथन मूल पाठक व्याख्या होयत, न कि एखन independently सिद्ध जैविक वा कालक्रमिक तथ्य।

‘चर्मकारिणी’ पदक सामाजिक-ऐतिहासिक अर्थ जानबाक लेल शब्दक तत्कालीन प्रयोग, व्यक्तिविशेषक नाम/उपाधि होयबाक सम्भावना, जाति-श्रेणी आ पञ्जी लिपिकारक वर्गीकरण अलग-अलग देखबाक चाही। आधुनिक सामाजिक श्रेणीकें बिना समय-निर्देश प्राचीन पञ्जीपर आरोपित नहि करबाक अछि। मुदा जँ मूल पञ्जी स्पष्ट वैवाहिक सम्बन्ध लिपिवद्ध करैत अछि तँ ओकरा केवल सम्मानजन्य कारणसँ लोप करब इतिहास-दृष्टिसँ उचित नहि।

अनुच्छेद ७९३मे गङ्गेशक कवित्व, वर्धमानक उल्लेख आ अन्य विद्वानक सम्बन्ध प्रकट अछि। आत्मीयता अथवा विद्वत् प्रतिष्ठाक एक स्रोत अन्य दाबीक प्रमाण नहि। ई अध्ययन एखन उपलब्ध मूल DOCXक दाबीक तुलनात्मक आलोचना अछि; मूल पञ्जीक स्वतंत्र चित्र-पठन सम्पन्न नहि, तँ जीवनीक निर्णायक पुष्टि घोषित नहि कएल गेल अछि।

०३७. प्राचीन न्यायसँ नव्य न्याय : बौद्धिक वंश-रेखाक पुनर्निर्माण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ८०४-८२२; ९२५-९५५ ।

मूल ग्रन्थ गङ्गेशकेँ मिथिलाक पुरान न्यायपरम्पराक निर्णायक पुनर्संयोजक मानैत अछि। अनुच्छेद ८०८-८११ तथा ९२५-९५३मे उदयनाचार्य, वाचस्पति, पूर्ववर्ती नैयायिक आ बौद्ध प्रमाणमीमांसाक संवादक उल्लेख अछि। एहिमे वास्तविक दार्शनिक इतिहासक प्रश्न अछि : नवीन शैलीक उत्पत्ति कोनो एक प्रतिभाक अचानक आविष्कार नहि, अनेक प्रतिपक्षी मतक दीर्घ आलोचनासँ भेल परिवर्तन थिक।

नव्य न्यायमे अवच्छेदक, विषयता, प्रतियोगिता आ सम्बन्धक विश्लेषण जकरा आधारपर अधिक परिशुद्ध बनैत अछि, ओकरा केवल नवीन तकनीकी शब्दकोश कहि कम कएल नहि जा सकैत अछि। प्रतिज्ञाक सीमा, सम्बन्धक प्रकार आ निषेधक शर्त स्पष्ट करबाक आवश्यकता नया अभिव्यक्ति पद्धति बनबैत अछि। मुदा आधुनिक प्रतीक-तर्क अथवा कम्प्यूटर-विज्ञानक पदक उपयोग तुलना लेल हो, ऐतिहासिक समरूपता सिद्धि लेल नहि।

ग्रन्थमे उदयनाचार्यकेँ नव्य न्यायपद्धतिक आरम्भिक स्रोत आ गङ्गेशकेँ ओकर विकासक मुख्य बिन्दु मानबाक प्रवृत्ति अछि। ई न्यायपरम्पराक चरण-भेदक विवादपर आधारित थीसिस अछि; प्रत्यक्ष ग्रन्थान्तर-समानता आ उत्तरवर्ती टीकाकारक ऐतिहासिक साक्ष्य बिना स्थापना अन्तिम नहि मानल जा सकैत अछि। एहि प्रकरणक साहित्येतिहासीय मूल्य बौद्धिक परम्पराकेँ कविता-नाटकसँ अलग रहि गेल क्षेत्र नहि, मिथिलाक ज्ञान-संस्था, शास्त्रभाषा आ अध्ययन-संस्कृतिक भाग मानब अछि। तर्कदर्शनक आलोचना एतय खण्ड २८क दोहराव नहि, इतिहासलेखनक स्रोत-अनुशासनक अनुप्रयोग अछि।

०३८. प्रत्यक्षप्रमाणक विवेचन : अनुभूतिक रूप आ ज्ञानक प्रामाण्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ८२३-८४९; ९५५-९७०।

तत्त्वचिन्तामणिक प्रत्यक्षखण्ड पर मूल ग्रन्थ विस्तृत पुनर्विवेचन प्रस्तुत करैत अछि।

अनुच्छेद ८२५-८३८ तथा ९६०-९६८मे स्वप्रामाण्य-परप्रामाण्य, लौकिक

इन्द्रियार्थसन्निकर्ष, निर्विकल्पक-सविकल्पक प्रत्यक्ष आ भ्रमक प्रश्न उपस्थित अछि।

ई विवेचन मैथिलीक साहित्येतिहासमे शास्त्रीय प्रमाणमीमांसाकें बौद्धिक साधनक रूपमे स्थापित करबाक प्रयास अछि।

प्रत्यक्ष ज्ञानक शर्त केवल इन्द्रियक सम्पर्क नहि, ओहि सम्पर्कसँ उत्पन्न यथार्थ ज्ञानक

पहिचान सेहो थिक। निर्विकल्पक आ सविकल्पक अनुभूतिक भेद द्वारा नाम-पूर्व

अनुभव आ सम्बन्धित वस्तु-ज्ञानक अन्तर खोलल गेल अछि। एहिमे दार्शनिक

पाठक सूक्ष्मता अछि, मुदा शास्त्रीय परिभाषाकें आधुनिक ज्ञानमनोविज्ञानक

प्रयोगसिद्ध निष्कर्षक रूपमे प्रस्तुत करब उचित नहि।

शुक्ति-रजतक भ्रमक उदाहरण स्मृति, वर्तमान अनुभूति आ गलत अवधारणाक

सम्बन्ध पर प्रकाश दैत अछि। एहि पाठक आलोचना करत समय पूर्वपक्ष—

मीमांसाक, बौद्ध मतक अथवा अन्य न्यायीय मतक—अपन शर्तमे प्रस्तुत हो।

मूल विवेचनमे जतेक स्तरक दावा अछि, ओकरा संदर्भहीन संक्षेप बनायब नहि चाहिए।

ऐतिहासिक दृष्टिसँ प्रत्यक्षमीमांसाक महत्व न्यायशास्त्रक स्वतन्त्र पदावलीक

विकासमे अछि। प्राचीन न्यायसूत्र, उदयनक टीका आ गङ्गेशक मूल खण्डक संस्कृत

पाठक पङ्क्ति-दर-पङ्क्ति तुलना बिना विशिष्ट नवाचारक पूर्ण प्रामाणिकता

निष्कर्षित नहि कएल गेल अछि।

०३९. अनुमानप्रमाण : व्याप्ति, उपाधि आ तर्कदोषक ऐतिहासिक भूमिका

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ८५०-९१८; ९७१-९७८ ।

मूल ग्रन्थक अनुमानखण्ड-संबन्धी भागमे व्याप्ति, पक्षधर्मता, उपाधि, तर्क आ हेत्वाभासक विश्लेषण प्रमुख अछि । अनुच्छेद ९७१-९७८मे धूम-अग्निक उदाहरणसँ अन्वय-व्यतिरेकक शर्त आ उपाधि द्वारा गलत निष्कर्ष रोकबाक पद्धति स्पष्ट कएल गेल अछि । ई नव्य न्यायकें केवल धार्मिक विवादक उपकरण नहि, व्यवस्थित अनुमान-शास्त्रक रूपमे बुझबाक बाट खोलैत अछि ।

तर्कक संरचना जाँचे बिना 'दोष' निर्धारित करब उचित नहि । यदि हेतु पक्षमे अछि, मुदा साध्यक संग अव्यभिचारी सम्बन्ध सिद्ध नहि, तँ निष्कर्षक सुदृढता पर प्रश्न उठत । उपाधि एहि कमजोर सम्बन्धक अतिरिक्त शर्त पहचानबामे सहायक अछि । व्याप्तिक प्रयोग विशेष उदाहरणपर निर्भर करैत अछि; पाठाधारित अर्थसँ बाहर वैज्ञानिक सार्वभौम नियमक दाबी नहि बनल चाही ।

अनुच्छेद ९७८मे पाँच हेत्वाभासक सूची अछि—सव्यभिचार, विरुद्ध, सत्प्रतिपक्ष, असिद्ध आ बाधित । एहि वर्गीकरणक मूल्य स्पष्ट तर्क-संरचनामे अछि ।

साहित्येतिहासीय समीक्षा लेल ई उपयोगी स्मारक सेहो बनैत अछि : पञ्जीक एक अस्पष्ट पङ्क्ति सँ पूरे समाजक कालक्रम बनायब असिद्ध हेतु वा अनुचित व्याप्तिक उदाहरण हो सकैत अछि । ई दार्शनिक उपकरणकें पुस्तकक अपन ऐतिहासिक दाबीपर लागू करबाक आत्मालोचनात्मक कसौटी अछि ।

ईश्वरानुमान, आत्मानुमान आ मोक्ष-संबन्धी तर्क लेखक द्वारा अलग अनुष्ठानमे उल्लेखित अछि । यथार्थ परीक्षा लेल प्रतिपक्षक न्यायसंगत विवरण, प्रतिज्ञाक संरचना आ मूल शास्त्रसँ पाठ-मिलान चाहिए । एतय समीक्षा प्रमाणमीमांसाक ऐतिहासिक कार्यविधिक गुण-सीमा पर केन्द्रित अछि; पुरान सम्पादकीय खण्डक स्वतंत्र दार्शनिक समीक्षा पुनर्लिखित नहि अछि ।

०४०. उपमान-शब्दप्रमाण आ टीका-परम्परा : ज्ञानक प्रसार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १११-१२३; १८०-१००५ ।

मूल ग्रन्थ उपमान आ शब्दखण्डक विवरणसँ तत्त्वचिन्तामणिक दर्शनकेँ भाषिक साक्ष्य आ संप्रेषणक प्रश्नधरि लऽ जाइत अछि । अनुच्छेद १८०मे शब्द-वस्तु-सम्बन्धक पहचानमे सादृश्यक भूमिका आ १८२-१८३मे आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्यक विवेचन अछि । एतय ज्ञानक मान्य साधनक प्रश्न साहित्यिक भाषाक अर्थगठनसँ जुडैत अछि ।

‘गङ्गापर गाम’ सन उदाहरणमे लक्षणा केना उत्पन्न होइत अछि, एहि विवादसँ पाठगत व्याख्या आ शाब्दिक अर्थक सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि । आलोचनाक प्रयोग ई अछि जे इतिहासग्रन्थमे सेहो किसी कथित मूल पदक अर्थ ओकर वाक्य-संबंध, काल, आशय आ प्रयोजनसँ निर्धारित कएल जाए; अलग शब्दक आधुनिक अनुमानसँ नहि ।

अनुच्छेद १८५-१९५मे वर्धमान, पक्षधर उपाध्याय, रघुनाथ शिरोमणि आ अन्य टीकाकारक चर्चा अछि । एहि टीका-परम्पराकेँ ‘मूल लेखकक लोकप्रियता’ मात्र नहि, नवल प्रतिपक्ष, व्याख्यात्मक निर्माण आ शिक्षण संस्थाक अन्तरपीढीय जालक रूपमे पढल जा सकैत अछि । एके मूल ग्रन्थ विभिन्न केन्द्रमे अलग व्याख्या किएक पेलक, ई बौद्धिक इतिहासक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि ।

अनुच्छेद १९६-१००५मे विदेहक पञ्जी-अभिलेख आ आधुनिक डिजिटल संरक्षणक चर्चा पुरान न्यायपरम्परासँ जोडल अछि । भिन्न अभिलेख—दार्शनिक टीका, वंशावली, डिजिटल प्रतिलिपि आ व्याख्या—एक-दोसरक उपयोगी सहायक भऽ सकैत अछि, मुदा एकर प्रमाण-क्षेत्र बदलल नहि जाए । एहि आठ अध्ययनक समेकित फल एकटा स्रोत-सचेत मिथिला-बौद्धिक इतिहासक सम्भावना अछि ।

०४१. यथार्थज्ञान आ परतःप्रामाण्य : प्रमाणक वैधताक प्रश्न

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १००६-१०१६ ।

मूल पुस्तकक एहि प्रसङ्गमे गङ्गेश उपाध्यायक प्रमाणमीमांसाकें ज्ञानक वास्तविक वस्तुसम्बन्ध सँ आरम्भ कएल गेल अछि । अनुच्छेद १००९मे पित्तरि-जकाँ चमकैत शुक्तिकें रजत मानि लेबाक उदाहरण यथार्थ आ भ्रान्तिक अन्तर स्पष्ट करबाक लेल प्रयुक्त अछि । एहि उदाहरणक केन्द्रमे केवल आँखिक भुल नहि, वस्तुमे जे गुण वास्तवमे उपस्थित अछि आ बोधमे जकर आरोपण भऽ रहल अछि, तकर असमानता अछि । मूल लेखक ज्ञानक सत्यताकें अनुभवक तीव्रता वा विश्वासक मात्रासँ स्वतंत्र स्थापित करबाक प्रयास वर्णित करैत छथि । एहि बिन्दुपर दार्शनिक पद 'प्रमा' आ सामान्य सामाजिक 'मान्यता'क अर्थ एक नहि ।

अनुच्छेद १०१०क प्रमुख प्रतिज्ञा ई अछि जे वास्तविक प्रमाण-साधन (प्रमाण) असत्य फल नहि देत; भ्रम प्रमाणाभासक फल होयत । ओहि संग मूल पाठ मनुष्यक वास्तविक ज्ञानगत भूल स्वीकार करैत अछि । एतय अन्तर्निहित प्रश्न अछि—गलत ज्ञान होइत समय ओकर साधन असली प्रमाण छल वा प्रमाणाभास, ई निर्णय पछाति केना होयत? जँ प्रत्येक भ्रमकें परिभाषासँ बाहर राखि देल जाए, तँ ज्ञानसाधनक विश्वसनीयताकें अलग परीक्षण चाही । ग्रन्थक 'अभ्रान्त साधन'क दावा आ मानव अनुभवक संशोधनीयताक सम्बन्धक सूक्ष्म विवेचन जरूरी अछि ।

अनुच्छेद १०१४मे मीमांसाक स्वतःप्रामाण्य आ नैयायिक परतःप्रामाण्यक विवाद सामने अबैत अछि । पुस्तकक प्रस्तुतीकरण अनुसार नव ज्ञानपर आरम्भिक विश्वास रहितो सन्देह उत्पन्न भेला पर प्रमाण-साधनक निरीक्षण अथवा सफल व्यवहार द्वारा पुष्टिक आवश्यकता पडैत अछि । ई अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि : प्रत्येक क्षण औपचारिक प्रमाणपत्र नहि माँगल जाइत अछि, मुदा प्रतिवाद होइतहि ज्ञानक आधार पूछल जा सकैत अछि । स्वतःप्रामाण्यक प्रत्येक रूप 'कोनो संशोधन असम्भव' कहैत अछि, एहन सरलीकरणसँ बचबाक चाही; मूल मीमांसाक भिन्न मतक प्रत्यक्ष पाठ-मिलान एखन शेष अछि ।

एहि दार्शनिक विवेचनक इतिहासलेखनमे उपयोग अत्यन्त ठोस अछि । पञ्जीक एकटा पाँति, काव्यक रचनाकाल अथवा इतिहासकारक आरोप पाठक समक्ष आएल मात्रासँ प्रमाणित नहि भऽ जाइत अछि । साक्ष्यक जाति, तिथि, प्रसङ्ग, पाठान्तर आ स्वतंत्र पुष्टि परतःपरीक्षणक समक्ष प्रश्न उठबैत अछि । मुदा दार्शनिक प्रामाण्य आ दस्तावेजी प्रमाण-विवेककें तादात्म्य करब उचित नहि; ई तुलनात्मक पद्धति अछि, मूल न्यायग्रन्थक आधुनिक इतिहासशास्त्र पर प्रत्यक्ष निर्देश नहि ।

समेकित मूल्याङ्कनमे एहि प्रकरणक उपलब्धि 'बुझल गेल' आ 'सिद्ध भेल' बीचक अन्तर स्पष्ट करब अछि। एकर सीमा पश्चिमी विश्वसनीयतावाद आ बाह्यतावादक संग मूल पुस्तक द्वारा कएल समानताक प्रमाणस्तरमे अछि। समान समस्या भेटब दार्शनिक एकता अथवा ऐतिहासिक प्रभाव सिद्ध नहि करैत अछि; समकालीन पारिभाषिक शब्द लेखकक व्याख्यात्मक उपकरण मात्र रहत।

०४२. प्रत्यक्षक सीमा : लौकिक सन्निकर्ष, अवधारणा आ आत्मानुभूति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १०१७-१०३२ ।

अनुच्छेद १०१९मे गङ्गेश पूर्ववर्ती प्रत्यक्ष-परिभाषाक अतिव्याप्ति आ अव्याप्ति दुनू प्रश्न उठबैत छथि । ग्रन्थक अनुसार इन्द्रिय-विषय-संयोगक साधारण व्याख्या स्मरण आ परोक्ष बोधक किछु उदाहरणकें समेटि सकैत अछि, मुदा ईश्वरक ज्ञान सन मानल गेल विषयकें बाहर राखि दैत अछि । तकर विकल्पस्वरूप प्रत्यक्षमे 'तत्काल बोध' आ ज्ञानजनित मध्यवर्ती साधनक अभाव पर बल देल गेल अछि । आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई परिभाषा स्वीकृत दार्शनिक सत्तामीमांसापर निर्भर अछि; प्रत्यक्षक सामान्य मानवीय अनुभव आ ईश्वरज्ञानक शास्त्रीय मान्यता अलग प्रमाणवर्गमे राखबाक चाही ।

अनुच्छेद १०२३मे लौकिक सन्निकर्षक छओ भेद देल गेल अछि—संयोग, संयुक्तसमवाय, संयुक्तसमवेतसमवाय, समवाय, समवेतसमवाय आ विशेषणता । घैल, ओकर रङ्ग, रङ्गक जाति, ध्वनि आ अभावक उदाहरण एकहि भौतिक 'छूअन'क अनेक रूप नहि, सम्बन्धक दार्शनिक अलग-अलग संरचना अछि । समीक्षामे 'इन्द्रिय-विषय निकटता' मात्र कहि सभ भेद समेटि देब एतयक मुख्य योगदान हराएत । विशिष्ट पदक अर्थक स्वतंत्र संस्कृत पाठजाँच नहि भेल अछि; तँ ई वर्गीकरण मूल पुस्तकक प्रस्तुतीकरणक अनुसरण करैत अछि ।

अनुच्छेद १०२४क अलौकिक सन्निकर्षमे सामान्यलक्षण, ज्ञानलक्षण आ योगज तीन रूपक उल्लेख अछि । चन्दन देखितहि ओकर सुगन्धक बोधक उदाहरण अनुभव, स्मृति आ कल्पनाक बीच प्रश्न उठबैत अछि । आधुनिक मनोवैज्ञानिक व्याख्याकें न्यायीय 'अलौकिक' श्रेणीक प्रयोगसिद्ध पुष्टि मानब त्रुटिपूर्ण होयत । विशेष रूपेँ योगज प्रत्यक्षक वर्णन धार्मिक-दार्शनिक प्रतिज्ञा अछि, प्रत्यक्ष पुनरावृत्त प्रयोगक वैज्ञानिक प्रतिवेदन नहि ।

अनुच्छेद १०२७-१०२८क निर्विकल्पक-सविकल्पक भेदमे पहिने गुण अथवा वस्तुक अवधारणापूर्व बोध आ पाछाँ 'ई घैल अछि' सन विशिष्ट सम्बन्धयुक्त ज्ञानक अन्तर अछि । पहिले-पहिल गाइ देखनिहार बालकक उदाहरण एकटा विचार-प्रयोग थिक : कोनो पहिचान-श्रेणी पहिनेसँ नहि रहितो वस्तुक गुण केना पकड़ल जाए? प्रश्न रोचक अछि, मुदा बालकक भाषा-अधिगमक वास्तविक प्रयोगकें बिना निरीक्षण प्रमाणित मनोवैज्ञानिक तथ्यक रूपमे प्रस्तुत नहि करबाक चाही ।

अनुच्छेद १०३१क अनुव्यवसायमे ज्ञान अपन पहिल ज्ञानकेँ विषय बनबैत अछि ।
'हमरा ई देखल भेल' आ 'हम जे देखलहुँ से सत्य अछि'—दुनू निष्कर्ष अलग थिक ।
स्रोतक विवेचन स्वयं विषय-वस्तुक प्रति आत्मबोधक निश्चितता आ वस्तु-सत्यक
निश्चितता भिन्न मानैत अछि । साहित्येतिहासमे एहि भेदक उपयोग ई अछि जे
इतिहासकार अपन पढ़बाक क्रियाक प्रति निश्चयवान भऽ सकैत छथि, मुदा मूल
पाण्डुलिपिक आशयबोध तखनो त्रुटिपूर्ण रहि सकैत अछि ।

०४३. व्याप्ति, पक्षधर्मता आ हेत्वाभास : निष्कर्षक अनुशासन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १०३३-१०५१ ।

अनुच्छेद १०३७-१०३८क विषय व्याप्तिक अन्तिम लक्षण अछि। ग्रन्थक अनुसार गङ्गेश एकर परिभाषा धरि पहुँचबाक पहिने चौबीस प्रस्तावित लक्षणक आलोचना करैत छथि; 'सिंह' आ 'व्याघ्र'क नामसँ चिह्नित सूत्रसभ सेहो चर्चा पवैत अछि। ई 'चौबीस' संख्या मूल पाठक विवरण अछि; मूल तत्त्वचिन्तामणिक विभिन्न संस्करणसँ लक्षणक्रम आ कुल संख्या स्वतंत्र रूपसँ एखन जाँचल नहि गेल। ऐतिहासिक मूल्य एकटा परिभाषाकँ पहिले स्वीकार नहि कऽ प्रतिवादी उदाहरणसभपर ओकर सहनशीलताक परीक्षणमे अछि।

धूम-अग्निक साधारण उदाहरणक संग मूल पाठ विशिष्ट अन्वयात्मक अनुमान, उपाधियुक्त हेतु आ निषेधक प्रतियोगिताविषयक जटिल शर्त जोड़ैत अछि। व्याप्ति 'जहाँ धूम, ओतय अग्नि' अछि; 'जहाँ अग्नि, ओतय धूम' ओकर उलटा सामान्यीकरण नहि। एहि दिशाभेदकँ अशुद्ध रूपसँ प्रस्तुत करब अनुमानक आधारँ बदलि दैत अछि। समीक्षाक दृष्टिसँ विषयसापेक्ष व्यापकता, उपाधि आ व्यतिरेकक विवेचन पञ्जी-वंशावलीसँ जनसंख्याक सार्वभौम निष्कर्ष निकालबाक त्रुटिक दर्पण सेहो बनैत अछि।

अनुच्छेद १०४२-१०४३मे स्वार्थानुमान आ परार्थानुमानक सीमा अछि। पहिलमे धूम देखनिहारक व्याप्ति-स्मरण आ परामर्शसँ निष्कर्ष उत्पन्न होइत अछि; दोसरमे पाँच अवयव—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय आ निगमन—द्वारा आन व्यक्तिक समक्ष अनुमान प्रस्तुत कएल जाइत अछि। ई पाँचटा अवयव केवल शैलीगत पुनरुक्ति नहि; एतय निजी ज्ञानप्रक्रिया सार्वजनिक परीक्षणयोग्य तर्कमे बदलैत अछि।

पुस्तकक विवेचन जँ एतय केवल सूत्र-सूची मानल जाए तँ ओकर संप्रेषणात्मक पक्ष ओझराएत।

अनुच्छेद १०४७क पाँच हेत्वाभास—सव्यभिचार, विरुद्ध, सत्प्रतिपक्ष, असिद्ध आ बाधित—प्रत्येक अलग प्रकारक तर्कदोष दर्शबैत अछि। इतिहासलेखनमे अनिश्चित मूलसँ निर्णायक वंशावली, दू विरोधी स्रोतक उपस्थितिमे एकपक्षीय निष्कर्ष, अथवा अनुमानक प्रत्यक्ष अभिलेखसँ खण्डन—ई सम्भावित समतुल्य दृष्टान्त अछि। मुदा वर्तमान ऐतिहासिक दावीक विस्तृत जाँच बिना एकटा विशेष आरोपकँ निश्चित न्यायीय दोषक नाम देब सेहो जल्दबाजी होयत।

अनुच्छेद १०५०क आत्मा, ईश्वर आ मोक्षक अनुमानेँ ग्रन्थक शास्त्रीय पूर्वधारणा विस्तार करैत अछि। ई तर्कसभक औपचारिक विधानकँ मूल्यवान बौद्धिक इतिहास

मानि सकैत छी, मुदा अनुमेय ईश्वर अथवा आत्माक अस्तित्वकेँ पुरातात्विक खोजक स्तरक अनुभवसिद्ध तथ्य नहि मानल जाए। खण्ड २८मे एहि दार्शनिक प्रश्नक स्वतंत्र समीक्षा भऽ चुकल अछि; एतय मुख्य प्रश्न ई अछि जे साहित्येतिहासक बौद्धिक अध्यायमे तर्कक पूर्वपक्ष आ प्रतिपक्ष केहन अनुशासनसँ पुनर्निर्मित कएल जाए।

०४४. उपमान, आप्तवाक्य आ वाक्यार्थ : साहित्यिक भाषाक दार्शनिक आधार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १०५२-१०६९।

अनुच्छेद १०५२-१०५४मे उपमानक मूल प्रयोजन सादृश्य मात्र देखब नहि, सुनल गेल नाम आ पहिचानल गेल वस्तुक बीच सम्बन्ध जानब मानल गेल अछि। वनमे गवयक खोज करैत व्यक्ति परिचित गाइ सँ ओकर समानता पहिनेसँ सुनैत अछि आ पाछाँ अपरिचित जीवकें देखि शब्दक अर्थसँ जोड़ैत अछि। एहि क्रममे वचन, स्मृति, प्रत्यक्ष आ तुलना सभक अलग कार्य अछि। “सादृश्य = उपमान” सन छोट सूत्र तखन अपूर्ण होयत, कारण ज्ञानक नवीन फल शब्द-वस्तु सम्बन्धक बोध अछि।

अनुच्छेद १०५८-१०६०मे शब्दप्रमाणक आधार आप्तवाक्यक विश्वसनीयता अछि। लेखक बौद्ध योगाचार आ वैशेषिक मतक संग न्यायीय विवादक चर्चा करैत छथि। किछु विपक्ष शब्दकें स्वतन्त्र प्रमाण नहि मानि अनुमान वा आन्तरिक बोधसँ जोड़ैत अछि। न्यायपक्ष साक्ष्यदाता आ कथनक अर्थबोधकें अपना तर्कद्वारा पृथक आधार मानैत अछि। एतय “विश्वसनीय वक्ता” केवल सामाजिक सम्मानक पर्याय नहि; कथन-विषयक प्रामाणिक ज्ञान आ सत्यकथनक अपेक्षा जाँचनीय रहत।

अनुच्छेद १०६४क आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—चारू शर्त शब्दक सामान्य अर्थ-सूचीकें वाक्यक अर्थसँ जोड़ैत अछि। एक शब्दक दू सम्भावित अर्थ हो तँ तात्पर्य प्रसङ्गद्वारा भेद करैत अछि; पदसभक परस्पर अपेक्षा आ समीपता बिना पूरा वाक्यक सम्बन्ध नहि बनैत। एहि दृष्टिसँ पञ्जी, पदावली, नाटक आ औपनिवेशिक अभिलेख पढ़बाक समय वाक्यकें टुकड़ा-टुकड़ा कऽ आधुनिक अर्थ नहि थोपरबाक निर्देश निकलैत अछि।

अनुच्छेद १०६८मे शक्ति आ लक्षणाक विचारक संग शब्दार्थक ईश्वरनिर्धारित सम्बन्धक मत सेहो प्रस्तुत अछि। एकरा न्यायसम्प्रदायक शास्त्रीय प्रतिज्ञाक रूपमे पढ़ल जाए; सभ भाषाविज्ञानक निर्विवाद निष्कर्ष नहि। साहित्यिक पदक रूपक, ऐतिहासिक प्रथाक नाम आ लोकप्रयोगक अर्थ भाषा-समुदायमे बदलैत रहि सकैत अछि। मूल पुस्तकक पारिभाषिक व्याख्या उपयोगी अछि, मुदा शब्दक ईश्वरनिर्मित शक्तिसँ सामाजिक अर्थ-परिवर्तनक सम्पूर्ण विवरण स्वतः प्राप्त नहि होइत।

एहि अध्ययनक खास उपलब्धि साहित्यिक इतिहासक भाषापरीक्षणमे अछि। मूल लेखकक “समर्थित प्रमाण”, उद्धृत इतिहासकारक ‘आलोचना’, पञ्जीकारक जातिसूचक पद आ आधुनिक अनुवादक व्याख्या—ई सभ समान प्रकृतिक कथन नहि

अच्छि। शब्दप्रमाणक दार्शनिक विमर्श तखन उपयोगी बनैत अच्छि, जखन समीक्षक कथनकर्ता, विधा, विश्वसनीयता आ व्याख्याक स्तर अलग राखैत छथि।

०४५. द्रव्यसँ अभावधरि : नव्य न्यायक सत्तामीमांसा आ संस्थागत इतिहास

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १०७०-१०८७ ।

अनुच्छेद १०७२मे गङ्गेशक न्याय-वैशेषिक परम्परामे सात वर्गक उल्लेख अछि—
द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय आ अभाव । एहिमे दार्शनिक वर्गीकरणक
प्रयोजन संसारक वस्तुकेँ मनमाना नाम देब नहि, ज्ञानक सम्बन्ध आ वस्तुक सत्तागत
स्थिति व्यवस्थित करब अछि । मुदा लोकभाषामे ‘जाति’, ‘गुण’ आ ‘अभाव’ शब्दक
साधारण अर्थ शास्त्रीय ‘सामान्य’, ‘गुण’ आ ‘अभाव’ सँ एकरूप नहि; अनुवादक
विवेचनमे ई भेद स्पष्ट करबाक चाही ।

अनुच्छेद १०७३क उदाहरणमे फर्शपर घैल नहि होयबाक ज्ञान अछि । न्यायपरम्पराक
एहि विवेचनक अनुसार केवल आन वस्तुक उपस्थिति द्वारा घैलक अनुपस्थिति पूर्ण
रूपेँ नहि बुझल जाइत; अभावकेँ स्वतन्त्र विवेचनीय विषय मानल गेल अछि ।

अभावक प्रतियोगी, अधिकरण आ सम्बन्ध जाँचने बिना “नहि अछि”क कथन
अस्पष्ट रहैत अछि । साहित्यिक इतिहासमे अभिलेखक अनुपस्थिति आ ऐतिहासिक
व्यक्तिक अनुपस्थिति अलग बात अछि; उपलब्ध ग्रन्थसूचीमे नाम नहि भेटबाक
अर्थ ई नहि जे ओ लेखक लिखने नहि छलाह ।

अनुच्छेद १०७९-१०८३मे ग्रन्थक प्रसार, नवद्वीपक शास्त्रपरम्परा आ मिथिलाक
शिक्षण-परम्पराक चर्चा अछि । एकहि मूल कृति विभिन्न केन्द्रमे पढाओल आ टीकित
भेल अछि, ई बौद्धिक इतिहासक तुलनात्मक भूगोल लेल महत्वपूर्ण विषय थिक ।

मुदा अध्ययनकेन्द्रक अस्तित्व, पाण्डुलिपिक वास्तविक संचरण आ आचार्यसभक
व्यक्तिगत सम्पर्क तीन अलग प्रमाण-प्रश्न अछि; केवल ग्रन्थक ख्यातिसँ सभ
रास्ताक पुनर्निर्माण नहि होयत ।

मूल पुस्तक गङ्गेशक योगदानकेँ भारतीय दर्शनक अत्यन्त उच्च शिखर कहैत अछि ।

मूल्यनिर्णय विद्वत् विमर्शक हिस्सा भऽ सकैत अछि, मुदा “सभसँ पैघ” सन

तुलनात्मक पदक कसौटी—मौलिकता, प्रभाव, पाठविस्तार, प्रतिपक्षी प्रतिक्रिया आ
संस्थागत दीर्घजीविता—अलग स्पष्ट करबाक चाही । एकर अतिरिक्त विदेहक
डिजिटल संरक्षणक विवरण आधुनिक अभिलेखीय प्रयासक स्रोत-साक्ष्यक रूपमे
राखल जाए, प्राचीन पाण्डुलिपिक प्रत्येक दाबीक स्वतन्त्र पुष्टि मानि नहि ।

०४६. गङ्गेशक नाम, काल आ पञ्जी-विवाद : जीवनी आ स्रोतक अधिकार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १०८८-११०८।

अनुच्छेद १०८९-१०९१मे 'गङ्गेश' आ 'गङ्गेश्वर' नामक सम्बन्ध, पुत्र वर्धमानक स्तुतिपद आ छादन-करियौ सन स्थान-संकेतक उपयोग अछि। ऐतिहासिक व्यक्ति पहिचानबाक लेल नामक रूपान्तर, पुत्रक ग्रन्थमे प्रयुक्त सम्बोधन, परवर्ती कोशक टिप्पणी आ आधुनिक भूगोलक मिलान आवश्यक अछि। एतय 'दुनू नाम एकहि व्यक्तिक अछि' एकटा परीक्षणयोग्य प्रतिज्ञा अछि। प्रसिद्ध विद्वानक नामक रोमन वर्तनी अलग भेटब मात्रसँ दू व्यक्ति मानबो उचित नहि।

अनुच्छेद १०९३-१०९५मे पञ्जीक कथित सामाजिक सम्बन्ध आ पुरान इतिहासलेखनद्वारा ओकर अनदेखी पर कठोर आरोप अछि। एहि दावीक मूल प्रमाण पञ्जीक चित्र, पृष्ठ-पहिचान, हस्तलिपि, तिथि आ प्रत्येक नामक स्थान-सम्बन्ध पर निर्भर करैत अछि। उद्धृत आधुनिक लेखकक असहमति, ओहि अभिलेखक पाठभेद वा पुस्तकालयमे ओकर अनुपलब्धता—ई सभकेँ जानबूझि कएल दमनक समानार्थी मानल नहि जा सकैत अछि। एकर आलोचना पूर्व अध्ययन ०३३-०३६मे विकसित प्रमाण-भेदक पुनर्पुष्टि थिक, नव जीवनी-निष्कर्ष नहि।

अनुच्छेद १०९७मे 'लगभग १३२० ईसवीमे सक्रिय' काल-निर्धारण आ उत्तरवर्ती पाण्डुलिपिक आधारक उल्लेख अछि। समयरेखाक सत्यापनमे ग्रन्थक रचनाकाल, प्रतिलिपिक दिनाङ्क, पुत्रक विद्वत् सक्रियता आ राजवंशक राज्यकाल अलग-अलग रहत। पाछाँक पाण्डुलिपिक तिथि मूल लेखकक जन्म-वर्षक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि। शब्द 'निश्चित रूपसँ' आ 'प्रमाणित' सँ अधिक उपयुक्त ओतए साक्ष्यक प्रकारानुसार सम्भाव्य कालसीमा अछि।

अनुच्छेद १०९८-११००मे कर्णाट शासन, हरिसिंहदेव आ शास्त्रीय शिक्षणक सामाजिक संरचना एकहि विवेचनमे अबैत अछि। राजाश्रय आ जातिगत अनुशासनक सम्भावित सम्बन्ध ऐतिहासिक अनुसन्धानक जरूरी क्षेत्र अछि, मुदा दरबारक उपलब्ध अभिलेख आ व्यक्तिविशेषक पारिवारिक दशा अलग स्रोत चाहैत अछि। एहन संरचनात्मक आलोचना नैतिक रूपसँ सशक्त भऽ सकैत अछि, जँ ओ वंशक अनुमानित अवस्थाकेँ निर्णायक साक्ष्यक विकल्प नहि बनाए।

ग्रन्थक एहि भागमे गङ्गेशक दर्शनक उच्च उपलब्धि आ हुनकर सामाजिक स्थिति सम्बन्धी आरोप एक-दोसरक निकट अबैत अछि। समीक्षाक निर्णय ई अछि जे समावेशी साहित्येतिहासक आवश्यकता महत्वपूर्ण अछि, मुदा इतिहासक

लोकतन्त्रीकरणक अर्थ प्रमाण-नियम शिथिल करब नहि । मूल पञ्जी उपलब्ध भेला पर सम्बन्धक अलग-अलग पाठरूप सार्वजनिक कऽ प्रतिपक्षी मिलान करब सर्वाधिक प्रभावकारी पद्धति होयत ।

०४७. न्याय, मीमांसा आ वेदान्तक मतभेद : तुलनात्मक प्रमाणमीमांसाक पुनर्पाठ

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ११०९-११५३ ।

अनुच्छेद ११११-११२६मे विभिन्न दार्शनिक पद्धतिक ज्ञान-वर्गीकरण, स्वतःप्रामाण्य-परतःप्रामाण्य, सन्देह, भ्रम आ तर्कक मतभेदक विस्तृत तुलना अछि। पुस्तक एतय वी.पी. भट्टक अनुवाद-भूमिकासँ विवेचन जुटबैत अछि। विद्वान अनुवादकक भूमिका प्रामाणिक सहायक स्रोत बनि सकैत अछि, मुदा मूल संस्कृत प्रतिज्ञाक स्थान ओकरा स्वतः नहि देल जा सकैत अछि। प्रत्येक मतक संक्षिप्त परिचयक संग मूल पक्षक पद्धति आ ओकर प्रतिपक्षी आलोचना राखब चाही।

मूल अंशमे सांख्य, मीमांसा आ न्याय विद्या-पद्धतिक प्रमाण-विषयक शर्त अलग देखाओल गेल अछि। एतय “भूल होइते कोनो ज्ञान नहि” आ “सभ ज्ञान स्वतः सत्य” सन सोझा द्विभाजन प्रसङ्गक बारीकी कम कऽ दैत अछि। भ्रमक शुक्ति-रजत दृष्टान्त विभिन्न सम्प्रदायमे अलग कारण-व्याख्या पबैत अछि; एक वाक्यमे ओ सभ मतकेँ एके भ्रम-सिद्धान्त बना देब अनौचित्य होयत।

अनुच्छेद ११३४-११४१मे इन्द्रिय, मन आ आत्माक सम्बन्धक विश्लेषण अछि।

न्यायीय विवरण इन्द्रियकेँ केवल पाँच बाह्य संवेदनधारामे सीमित नहि रखैत; मनक भूमिका आ ज्ञानक आश्रय मानल गेल आत्माक भूमिका सेहो जोडैत अछि। ई शास्त्रीय सत्तामीमांसाक तर्करूप अछि। आधुनिक तन्त्रिकाविज्ञान अथवा चेतनाविज्ञानमे ‘मन’ शब्दक अर्थसँ एकरा स्वतः मिलाएब अनपेक्षित कालान्तरक आरोपण होयत।

अनुच्छेद ११४२-११५३मे निर्विकल्पक-सविकल्पक प्रत्यक्ष, प्रत्यभिज्ञा आ

अनुव्यवसायक तुलनात्मक प्रस्तुति एकटा महत्त्वपूर्ण प्रश्न उजागर करैत अछि : वर्तमान बोधमे पूर्व स्मृति कतेक प्रवेश करैत अछि? प्रत्यभिज्ञामे “एहने पुरान व्यक्ति”क पहिचान कालगत निरन्तरता माँगैत अछि; अनुव्यवसायमे ज्ञान अपन विषय बनैत अछि। दू शब्दक पर्याय-जकाँ बर्ताव पाठक शास्त्रीय अन्तर मेंटबैत अछि। मूल पाठक शीर्षकमे दुनू पद एकसंग आएल अछि; आलोचनामे दार्शनिक कार्य-पृथक्करण आवश्यक मानल गेल।

ग्रन्थक तुलनात्मक अन्तर्राष्ट्रीय विस्तारक सम्भावना बहुत अछि, कारण ज्ञानमीमांसाक मूल प्रश्न अनेक परम्परामे भेटैत अछि। मुदा शैलीगत एकरूपता लेल समान पदक सम्बन्धित ग्रन्थकार, अनुवाद आ मतभेदक स्तर बताओल जाए।

एहि अध्ययनक मापदण्ड पृष्ठबहुलता नहि, प्रतिपक्षक न्यायसंगत प्रस्तुति आ उद्धृत अनुवाद-स्रोतक जाँच अछि।

०४८. गङ्गेश-उदयन-रघुनाथ : तुलना, आलोचना आ नव्य न्यायक गतिशील परम्परा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ११५४-११७६।

अनुच्छेद ११५५-११५९मे बेन-अमी शार्फस्टाइनक तुलनात्मक इतिहासद्वारा गङ्गेशकें देकार्त आ लाइबनिट्सक संग पढ़ल गेल अछि। तर्कक सूक्ष्मता, सुनिश्चित ज्ञानक खोज आ पद्धतिक महत्त्व ई तुलनाक समान सूत्र अछि। ग्रन्थ स्वयं भेद सेहो दर्शबैत अछि—देकार्तक पूर्वपरम्परासँ वैचारिक सम्बन्धक ढंग, गङ्गेशक उदयनपर निर्भर व्याख्यात्मक संवाद आ लाइबनिट्सक औपचारिक अभिव्यक्तिक भिन्न रचनाशीलता। तुलनाक प्रामाणिक उपयोग एही समानता-भिन्नताक संयुक्त परीक्षणमे अछि। एतय “नव्य न्याय आधुनिक प्रतीक-तर्कक पूर्वाभास अछि” सन कथन प्रलोभक अछि। परिभाषाक सूक्ष्मता, निषेध आ सम्बन्धक औपचारिकता एकटा उपयोगी बौद्धिक साम्य दे सकैत अछि, मुदा यूरोपीय तर्कशास्त्रपर प्रत्यक्ष प्रभाव वा गणितीय औपचारिकतादात्म्य एहि तुलनासँ सिद्ध नहि होइत अछि। विश्वदर्शनमे मिथिलाक स्थान चिन्हबाक लेल अतिरञ्जित वंशानुक्रमक आवश्यकता नहि, ओकर स्वतंत्र दार्शनिक आविष्कारक वास्तविक विवरण पर्याप्त अछि।

अनुच्छेद ११६०-११६२मे उदयनक मूल प्रतिज्ञा आ गङ्गेशक परिभाषात्मक-विवादात्मक विकासबीच अन्तर पर विचार अछि। यदि मूल तत्त्वक आविष्कार पूर्ववर्ती आचार्यक अछि, तथापि कठिन अपवादसभक निराकरण करैत लक्षणक नवनिर्माण सेहो मौलिकता हो सकैत अछि। “अधिक मौलिक” सन एकरेखीय मूल्याङ्कनक बदला सिद्धान्त, पद्धति, भाषिक उपकरण आ संस्थागत प्रभावक अलग मापदण्ड उपयोगी होयत।

अनुच्छेद ११६५-११७०मे रघुनाथ शिरोमणि गङ्गेशक विरासतकें निश्चल राखनिहार अनुयायी नहि, समालोचक उत्तराधिकारीक रूपमे अबैत छथि। सामान्यक न्यूनताक चर्चा, विशेषक दर्जाक प्रश्न, समवायक बहुलता आ अभाव द्वारा परिमाणन-सदृश क्रियाक बढ़ैत प्रयोग—ई सभ उत्तरवर्ती नव्य न्यायमे दार्शनिक परिवर्तन सूचित करैत अछि। एहि मतान्तरसभक मूल्य मूल गङ्गेशक स्थिर ‘विजय’क कथाक बदला एकटा सतत स्वयं-संशोधक शास्त्रीय संवाद प्रस्तुत करब अछि।

अनुच्छेद ११७३-११७५मे मैथिल, नवद्वीप आ दक्षिणक टीकापरम्परा, पक्षधर मिश्रक आलोक आ रघुनाथक दीधितिक सम्बन्ध अबैत अछि। मूल पुस्तक २३ टीकाकारक एक सूची आ दोसर विश्वकोशीय अनुक्रमक पचास प्रविष्टिक उल्लेख करैत अछि। ई संख्या परस्पर विरोधी साबित नहि होइत जखन गिनतीक इकाई—टीकाकार, रचना,

अथवा विश्वकोशीय प्रकरण—भिन्न अछि। समीक्षामे दुनूकें समान गणना मानि जोड़ि देब नहि चाही; मूल स्रोतक परिभाषित सीमा जाँचि गणना करबाक चाही।

एहि अध्ययनक समेकित निष्कर्ष अछि : मिथिलाक दार्शनिक इतिहास एकटा महान ग्रन्थक एकल प्रशस्ति नहि, पूर्ववर्ती आचार्य, शिष्य, प्रतिपक्ष, टीकाकार, भाषाविद् आ भिन्न शिक्षणकेन्द्रक वितान थिक। एहि प्रत्यक्ष पाठभागक आलोचनामे खण्ड २८क तत्त्वचिन्तामणि-विवेचन फेर लिखबाक बदला परम्पराक गतिशीलता, सामाजिक संस्था आ तुलनात्मक इतिहास-पद्धतिक पृथक परीक्षण कएल गेल अछि।

०४९. गङ्गेशक पुनर्प्रस्तुति : साहित्येतिहास, ज्ञान-परम्परा आ सामाजिक स्मृति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ११७७-१२६१।

मूल ग्रन्थक ११७७-११९६ अनुच्छेद गङ्गेश उपाध्यायक दार्शनिक जीवनके केवल शास्त्रक इतिहासमे सीमित नहि रखैत अछि। ओतय नव्य न्यायक प्रणेता, पञ्जी-प्रबन्धमे वर्णित परिवारक सदस्य, सामाजिक स्तरीकरणक विवादित उदाहरण आ विदेहक समानान्तर साहित्येतिहासक प्रतीक—चारू रूप एकसंग अबैत अछि। एहि चारू रूपक स्रोत एक नहि अछि : न्यायग्रन्थक आन्तरिक तर्क, परिवार-सूचीक वंशसम्बन्ध, आधुनिक सम्पादकीय व्याख्या आ डिजिटल आन्दोलनक घोषणात्मक भाषा भिन्न प्रमाण-प्रणाली पर टिकैत अछि। एकहि परिच्छेदमे ई स्तर बदलि गेलासँ इतिहासवाचनक प्रभाव बढ़ैत अछि, मुदा दाबीक निश्चितता स्वतः नहि बढ़ैत अछि।

अनुच्छेद ११८०-११८३मे संस्थागत साहित्येतिहासक विरुद्ध समानान्तर परम्परा प्रस्तुत कएल गेल अछि। चर्यापद, दू विद्यापति, नेपालक मैथिली नाटक, अकाल-साहित्य, स्त्रीलेखन आ दलित रंगमंचक प्रसङ्ग एकटा वैकल्पिक अनुक्रम रचैत अछि। ई पुनर्विन्यासक रचनात्मक शक्ति अछि जे साहित्यक केन्द्रकेँ राजदरबार, पुरस्कार आ छपल पाठसँ बाहर लोकजीवन आ बहुभाषी परिसंचरणधरि लऽ जाइत अछि। तइयो संस्थागत आलोचनाक बल स्वतंत्र पाठ-साक्ष्यसँ बनत; केवल प्रतिपक्षकेँ संकुचित कहलासँ नव इतिहास स्वतः पूर्ण नहि भऽ जाइत अछि।

११८३-११८५क पञ्जी-सम्बद्ध वर्णनमे जन्म, विवाह आ जातिगत पहचानपर गम्भीर आरोप-सदृश ऐतिहासिक कथन अछि। प्रमाण-परीक्षणक कड़ी होयत मूल तिरहुता अथवा अन्य लिपिक पृष्ठ, लेखनकाल, अभिलेखक संरचना, पुनर्लेखनक अवस्था, नाम-सम्बन्ध आ समकालीन कागजातक संग तुलना। मूल पुस्तकक कथनकेँ साहित्येतिहासीय प्रतिज्ञाक रूपमे सुरक्षित राखब उचित अछि; एकर आधारपर कोनो पूर्व इतिहासकारक जानि-बुझि कएल दमनकेँ स्वतंत्र ऐतिहासिक सत्य घोषित करब उचित नहि।

अनुच्छेद ११९२-११९३मे मैथिली गजलक अरूज, बहर, काफिया, रदीफ आ देशज मात्रिक अनुशासनक चर्चा एक अप्रत्याशित सम्बन्ध बनबैत अछि। गङ्गेशक व्याप्ति-लक्षणमे अपवादक परीक्षण आ गजलक छन्दमे दोष-निराकरण दुनू व्यवस्थित परिभाषाक आग्रह देखबैत अछि; मुदा ई पद्धतिगत उपमा अछि, गङ्गेशक दार्शनिक कार्यसँ आधुनिक गजलक प्रत्यक्ष वंशावली नहि। शास्त्रीय तर्क आ साहित्यिक रूपकेँ

एकहि संस्कृति-इतिहासमे जोड़बाक एहि प्रयत्नक आलोचनात्मक मूल्य सएह सीमा स्वीकार करबामे अछि।

१२०१-१२६१मे गङ्गेशक पूर्ववर्ती उदयन, नव्य न्यायकेँ प्रमाण-केन्द्रित बतबैत पद-पदार्थक भेद, कारकवाद, संस्कृत-अंग्रेजी अनुवाद आ आधुनिक पाठक उपलब्धताक विवरण अबैत अछि। ई बहुल सामग्री शोधक उपयोगी प्रवेशद्वार बनैत अछि। मुदा कतिपय दार्शनिक उपमा आ विपुल टीका-सङ्ख्याक दावा विभिन्न लेखकक आकलन थिक; पहिल स्रोतक सटीक पृष्ठ-सीमाकेँ मिलाने बिना गणनात्मक निष्कर्ष बनब निश्चित नहि। कुल मिलाकऽ ई प्रकरण बौद्धिक इतिहासक विस्तृत मानचित्र अछि, अंतिम अभिलेखीय निर्णय नहि।

०५०. दूषण पञ्जी : मूल लिप्यन्तरण, परवर्ती वंशक्रम आ प्रमाणक श्रेणी

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १२६२-१२८९।

अनुच्छेद १२६४मे स्टैनफोर्ड विश्वकोशमे स्टीफन फिलिप्सक विवेचनसँ गङ्गेशक परिवार, वर्धमान आ 'जगद्गुरु' उपाधि सम्बन्धी सावधान वाक्य उद्धृत अछि। एकर बाद १२६५मे लेखक 'परमगुरु' उपाधि आ एक विशिष्ट ऐतिहासिक एकान्तताक दावा जोडैत छथि। ई दू कथनक स्रोतगत दर्जा अलग अछि : विश्वकोशीय जीवनचित्र अनुमानसूचक भाषा रखैत अछि, पञ्जी-आधारित विशिष्ट कुल-गणना लेल सम्पूर्ण तुलनात्मक उपाधि-सूची चाही। शब्दक अर्थ आ व्यावहारिक मान-सम्मानक कालगत परिवर्तन सेहो एतय जाँचनीय अछि।

१२७१-१२७८मे मूल मानल गेल पञ्जी-पाठक किछु पाँति रोमन लिप्यन्तरण सहित देल गेल अछि; 'Charmkarini', 'Chhadan', 'Vabhaniyam', 'Gangesa', 'Vallabha', 'Bhavai', 'Mahesvara' आदि नाम अथवा पद उपस्थित अछि। ई पाठ-साक्ष्यक दृष्टिसँ सामान्य विवेचनसँ बेसी मूल्यवान अछि, कारण पाठककेँ दाबीक शब्दगत रूप देखाएल गेल। मुदा रोमन प्रतिलेखन आ वास्तविक अभिलेखक प्रतिछवि एक नहि; पाठमे विभाजक चिह्न, अधूर पाँति, वंशसम्बन्धी सूचक आ स्थानीय उपाधि जाँचबाशिवाय प्रत्येक नामक एक निश्चित सामाजिक परिचय बनब अवैज्ञानिक होयत।

१२७५मे 'pitri-parokshe pancha varsha vyatite' सन पदसमूहक अर्थक विषय अछि। एहि वाक्यांशक शुद्ध मूल वर्तनी, विभक्ति-सम्बन्ध आ तत्कालीन पञ्जी-प्रयोगक तुलना बिना व्याख्या निर्णायक नहि भऽ सकैत अछि। कथनकेँ पुनर्कथनसँ बलशाली बनाउब प्रमाणवृद्धि नहि; एकहि अभिलेखक दाबी पाँच बेर दोहराओल गेलासँ पाँच स्वतंत्र साक्ष्य नहि बनैत अछि। एहि सूक्ष्म अन्तरकेँ अध्ययन-परम्परामे स्पष्ट राखल जाए।

१२८०-१२८१मे देवानन्द पञ्जीक उल्लेखसँ परिवार-पुनर्निर्माण जटिल होइत अछि। पहिल सूचीमे तीन पुत्र-एक पुत्रीक वर्णन आ पछिला सूचीमे भिन्न व्यक्तिनामक उपस्थितिक सम्बन्धकेँ एकहि वंश-स्तरमे समेटबाक पहिने प्रत्येक प्रविष्टिक तिथि, नातागत सम्बन्धन आ प्रतिलिपिक वंशरेखा चिन्हब आवश्यक अछि। विशेषतः 'वल्लभा' नाम पत्नी अथवा संतानक भिन्न पाठमे केना प्रवेश करैत अछि, एकरा स्वतः मिलान कऽ देने मूल विरोध लुप्त भऽ सकैत अछि।

अनुच्छेद १२८२-१२८९ मे डी. सी. भट्टाचार्यक इतिहासग्रन्थ आ रामनाथ झाक भूमिकाक व्याख्या प्रस्तुत अछि। एतय 'फलाँ विद्वान्कै अभिलेख नहि देखाओल गेल' आ 'ई जानि-बुझि दमन छल' अलग प्रतिज्ञा थिक। पहिल लेल पत्राचार अथवा अभिलेख-उपलब्धताक पुनर्रचना, दोसर लेल इरादा आ कृत्यक स्वतंत्र दस्तावेज चाही। लेखकक दाबीकें न उपेक्षित कएल जाए, न दूषण अथवा दमनक अंतिम फैसला मानल जाए; ओकर अभिलेखीय परीक्षणक स्पष्ट अनुसन्धान-प्रश्न तय करब एहि प्रकरणक वास्तविक निष्पत्ति अछि।

०५१. प्रत्यक्षखण्डक तेरह प्रकरण : मंगल, प्रामाण्य आ ज्ञानोत्पत्तिक विवाद

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १२९०-१३४३।

१२९२-१२९६मे तत्त्वचिन्तामणिक प्रत्यक्षखण्डक तेरह प्रकरणक क्रम देल गेल अछि। मंगलवाद, प्रामाण्यवाद, प्रमालक्षण, अप्रमा, प्रत्यक्ष, समवाय, अभाव, मनक स्वरूप आ प्रत्यभिज्ञा सन विषय एकहि दार्शनिक पुस्तकक भीतर रहैत अछि। एकरा देखिकऽ प्रत्यक्षखण्ड मात्र इन्द्रियद्वारा वस्तु देखबाक प्रकरण नहि, ज्ञान सम्भव बनौनिहार कारण, सम्बन्ध आ त्रुटिक सुविस्तृत अनुशीलन अछि। मैथिली साहित्येतिहासमे एहि दार्शनिक विस्तारक स्थान बौद्धिक परम्पराक इतिहासक रूपमे अछि; मूल संस्कृतक प्रत्येक तर्कक प्रमाणित प्रतिपादन खण्ड २८क पाठ-मिलानसँ अलग प्रश्न अछि।

१२९७-१३०१क मंगलवादमे पुस्तकक आरम्भक मंगलाचरण आ ग्रन्थसमाप्तिक कारणसम्बन्ध प्रश्न बनैत अछि। शास्त्रीय विश्वास अनुसार मंगल काजक सिद्धिक अनुकूल कारण मानल जाए; प्रतिपक्ष पूछैत अछि जे मंगल बिना पुस्तक पूरा भेल अथवा मंगल सहित काज अधूरा रहल उदाहरण एहि नियत सम्बन्धकें केना प्रभावित करैत अछि। एहि विवादक विशेषता धर्म-आचरणक साधारण प्रशंसा नहि, दावीक अपवाद-जाँच अछि। एकरा आधुनिक प्रयोगात्मक कारणसिद्धिक पूर्ण समकक्ष मानबो उचित नहि, कारण शास्त्रीय कारण-श्रेणी आ सांख्यिकीय कारणानुमानक पूर्वधारणा भिन्न अछि।

१३०३-१३१३मे स्वतःप्रामाण्य-परतःप्रामाण्यक मतभेद अनेक रूपमे रखल गेल अछि : ज्ञानक उत्पादनक कारण, सत्यताक पहिचान, गुण-दोषक भूमिका आ सन्देहक बाद भरोसाक पुनःस्थापन। ई चारू चरण मिला देलासँ मीमांसक आ नैयायिकक वास्तविक मतभेद धुँधला होइत अछि। प्रमाक लक्षणमे विषयक वास्तविक गुण आ ज्ञानमे उपस्थित गुणक मेल प्रधान अछि, मुदा ओकरा चिन्हबाक माध्यम पर अतिरिक्त विवाद शेष रहैत अछि। पूर्व अध्ययन ०४१मे आधारभूत प्रश्न उठल छल; एतय मूल खण्डक प्रकरण-क्रम देखबाक कारणेन शास्त्रीय तर्कसभ एकटा उत्तरवर्ती शृंखला बनैत अछि।

१३१७-१३३३मे सन्निकर्ष, समवाय, अभाव-प्रत्यक्ष, वायु-परमाणु आ मनक अणुत्वक बहस आबैत अछि। एक ठाम शब्दक प्रत्यक्षकें आकाशसँ सम्बन्धित कानक सीमित अवकाश द्वारा समझाओल गेल अछि; दोसर ठाम मनकें विशाल एकत्व मानलासँ पाँच इन्द्रियज्ञानक क्रम-समस्या उठैत अछि। एहि उदाहरणसभक अस्तित्व-दावीक

स्रोत शास्त्रीय प्रतिपक्ष अछि; आधुनिक शरीरविज्ञान अथवा ध्वनिशास्त्रक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि। पाठक लेल साहित्येतिहासकारक कर्तव्य ई भेद देब अछि जे प्राचीन सिद्धान्तकें यथार्थतासँ प्रस्तुत कएल गेल अछि, मुदा वर्तमान अनुभवविज्ञानक निष्कर्षक रूपमे नहि।

१३३४-१३४३मे भोजनक रस-ज्ञान, निर्विकल्पक बोध आ प्रत्यभिज्ञाक भेदक चर्चा मनोविज्ञानक प्रश्नसँ सन्निकट लगैत अछि। उदाहरणक तर्कात्मक प्रासङ्गिकता सएह अछि जे कतेक ज्ञान एकसाथ उत्पन्न भऽ सकैत अछि आ स्मृतिजनित पहिचान प्रत्यक्षसँ कतेक जुड़ल अछि। आरम्भिक मूल कथा जँ समान ज्ञानकें सर्वथा एकहि पदसँ नामित करैत अछि, तँ एहि प्रकरण-भेद ओकर सुधार करैत अछि।

मूल्याङ्कनमे लेखकक ग्रन्थ-संयोजन विस्तृत अछि; सीमा ई जे प्रकरणक सबदगत संस्कृत पाठ आ उपलब्ध अंग्रेजी अनुवादक बिन्दुवार तुलनात्मक सारिणी एखन तैयार नहि भेल अछि।

०५२. मिथिलासँ नवद्वीप : शास्त्रीय प्रसार आ बौद्धिक केन्द्रक पुनर्गठन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३४४-१४६२।

१३४४-१३५२मे मैथिल नव्य न्यायकें वैश्विक दार्शनिक परम्परासँ जोड़बाक प्रस्ताव देखाइत अछि। ग्रन्थक दाबी अनुसार मिथिलाक गुरुकुल-परम्परासँ नवद्वीपक विद्वत् वृत्तधरि ज्ञानक प्रसार महत्त्वपूर्ण मोड़ थिक। पक्षधर मिश्र आ उत्तरवर्ती रघुनाथ शिरोमणिक सन्दर्भ एतय व्यक्ति-केन्द्रित कथाक अतिरिक्त शिक्षण-संस्था, वादसभा, पाठ-प्रसारण आ लिखित टीकाक इतिहास खोलैत अछि। मुदा गुरु-शिष्यक कथा, ‘पाठ नहि देब’ सन आख्यान आ कालक्रमक प्रामाणिकता एकहि श्रेणीक नहि; पञ्जी-पाठ, टीका-समर्पण आ लिखित परम्परा मिलायब आवश्यक अछि।

१३५८क मैथिली गजल-आन्दोलनक परिच्छेद गङ्गेशक तर्कपद्धतिसँ आधुनिक बहर-विवेचनक सांस्कृतिक सम्बन्ध सुझबैत अछि। एकटा समग्र साहित्येतिहासक दृष्टिसँ ई रोचक पारस्परिकता अछि : आलोचनात्मक भाषा, छन्द-निर्णय आ संस्थागत स्वायत्तताक प्रश्न एकहि समुदायमे उठि सकैत अछि। मुदा मध्यकालक शास्त्र आ २००८क डिजिटल गजल-आन्दोलन बीच प्रत्यक्ष कारणपरम्परा नहि बताओल जा सकैत अछि; काव्यशास्त्रीय तुलना सएह रहय।

१३६०-१४५२मे पुस्तक-सूची, संस्कृतग्रन्थ, शोधपत्र, संस्थागत जाल-पता, विश्वकोश आ छपल संस्करणक असमान प्रकारक स्रोतसभ एकसाथ भेटैत अछि। मूल पुस्तकक ई विस्तृत स्रोत-संग्रह उपयोगी अछि, मुदा स्रोतक वर्गीकरण अनिवार्य अछि : मूल शास्त्रीय पाठ, टीका, आधुनिक शोधग्रन्थ, अनुवाद, अभिलेखीय सूची आ प्रचारात्मक परिचय अलग जाँच-पद्धति माँगैत अछि। एकहि लेखकक नामक रोमन रूपान्तर आ पुस्तकक अनेक संस्करण पहचानल बिना सूचीकें स्वतन्त्र साक्ष्यक गणना मानब दोहराव उत्पन्न करत।

१४५३-१४६२मे तोशिहिरो वादाक व्याप्ति-लक्षण पर शोधक उल्लेख समाविष्ट अछि। एहि सन्दर्भमे खास प्रश्न ई अछि जे मूल गङ्गेश-लक्षण आ उत्तरवर्ती परिभाषाक बीच अन्तर कोन पाठमे स्पष्ट भेल? आधुनिक लेख प्रस्तुत करैत लेखकक संक्षेप व्याख्यात्मक साक्ष्य अछि; मूल संस्कृत अंशक शब्द-सम्बन्ध जाँचि एक-एक प्रतिपक्षी उदाहरणक अनुक्रम बनब शेष अछि। विवादक केन्द्र सूक्ष्म परिभाषा अछि, ‘भारतीय तर्क पश्चिमसँ पहिने छल’ सन प्रतिस्पर्धात्मक घोषणाक प्रमाण नहि।

एहि विस्तारक साहित्येतिहासीय उपयोग भाषा आ संस्था दुनूकें समान प्रमाण-
अनुशासनमे राखबाक आह्वान अछि। न्यायग्रन्थक टीका केना नकल होइत रहल,
विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रमक माध्यमसँ कतेक पाठ बचल, आ अंग्रेजी अनुवाद द्वारा
कोन पारिभाषिक अर्थ बदलल—ई मूलभूत प्रश्न अछि। लेखकक विस्तृत ग्रन्थसूची
प्रश्नक दिशासूचक अछि, मुदा प्रत्येक विवरणक स्वतन्त्र सत्यापनक अन्तिम पर्याय
नहि।

०५३. अभावज्ञानक प्रकरण आ नव्य न्यायसँ कथा-साहित्यक संवाद

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १४६३-१५१६ ।

१४६३ सँ अनेक परिशिष्टक रूपमे पुरान दार्शनिक विवेचनक सूक्ष्म अंश पुनः प्रवेश करैत अछि। १४७४-१४८८क अभाव, अनुपलब्धि आ समवाय-विवादमे प्रश्न अछि जे 'एहि ठाम घैल नहि अछि' सन ज्ञान इन्द्रियद्वारा उत्पन्न होइत अछि कि अनुपलब्धिक एक स्वतंत्र प्रमाण चाही। भाट्ट मीमांसाक मत आ नैयायिक उत्तरक बीच अन्तर केवल नामावली नहि; अनुपस्थित वस्तुक ज्ञानमे अधिष्ठान, प्रतियोगी आ ग्रहण-साधनक सम्बन्ध फेर परिभाषित होइत अछि। एतय आधारभूत दार्शनिक मत प्रस्तुत कएल गेल अछि, मुदा मूल संस्कृतक एक-एक पूर्वपक्ष मिलान एहि समीक्षाक प्रमाणसीमा सँ बाहर अछि।

१४९०-१४९३क मनक अणुत्वक बहस पाँचू ज्ञान-इन्द्रियसँ एकसंग बोध होयबाक अनुभवक व्याख्या करैत अछि। अलग-अलग इन्द्रियज्ञानक क्रम आ सह-अवस्थित बोध बीच जे तर्क उत्पन्न होइत अछि, से मनक सत्तागत स्वरूपक शास्त्रीय परिकल्पना पर निर्भर अछि। ई जटिल ज्ञानमीमांसाकें बिना संकेतनक सामान्य कथामे बदलि देब वादक धार कम करैत अछि। तद्विपरीत मनक 'अणु' रूपकें आधुनिक स्नायुकोशक जैविक विवरण मानबो प्रमाण-परिवर्तन होयत।

१४९४-१४९७मे गजेन्द्र ठाकुरक “Shabdashastram” नामक कथाक चर्चा शब्दप्रमाण आ साहित्यिक रचनाक पारस्परिक उपस्थिति देखबैत अछि। न्यायग्रन्थक शब्दप्रमाणमे आप्तकथनक विश्वसनीयता आ शब्द-अर्थक सम्बन्ध विषय अछि; साहित्यिक कथामे कथावाचक, छल, व्यञ्जना आ बहुअर्थकता सत्यनिष्ठा सँ अलग सौन्दर्यात्मक कार्य करैत अछि। शास्त्रीय पदक शीर्षककें पूर्ण कथा-विश्लेषणक विकल्प मानब अनुचित होयत; कथाक स्वतंत्र मूल पाठ प्राप्त भेलापर चरित्र आ कथन-शिल्पपर निष्कर्ष निश्चित हो सकत।

१४९८मे पक्षधर मिश्र आ विद्यापतिक समकालीनताक एक दाबी अबैत अछि। एहि ठाम पूर्वस्थापित दू-विद्यापति सम्बन्धी परिकल्पना सुसंगत रूपसँ लागू करब आवश्यक अछि : के विद्यापति, कोन ग्रन्थसमूह, कोन तिथिक आधार? यदि नामक दू ऐतिहासिक व्यक्तिक पृथक्करण लेखकक मुख्य प्रतिज्ञा अछि, तँ समय-सापेक्ष व्यक्तिनामक प्रत्येक उल्लेख स्पष्ट करब चाही। मौन सामान्यीकरण पुस्तकक अपन सिद्धान्तकें कमजोर करैत अछि।

१५००-१५१६मे अंग्रेजी अनुवादक खण्डवार सूची जाँचबाक अवसर अछि। संस्कृत मूल, वाद-विभाग, अंग्रेजी ग्रन्थशृंखला आ तारीखक बीच एक-सँ-एक सम्बन्ध सुनिश्चित कएलाक बादे विषय-उद्धरणकें वास्तविक पृष्ठसँ जोड़ल जा सकैत अछि। एहि प्रकरणक खास उपलब्धि न्यायीय शब्द-दर्शनक आधुनिक कथा आ अनुवाद धरि विस्तार अछि; ओकर सीमा स्रोतक अनेक रूपक बिनाकटोर छँटनी एकत्रित होएब अछि।

०५४. कारकवाद : क्रिया, कर्ता, कर्म आ विभक्तिक दार्शनिक अर्थ

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १५१७-१७११ ।

१५१७-१५५५क विवरणमे कारकवादकें साधारण व्याकरणसूची नहि मानि क्रियाक सफल निष्पादनक सम्बन्धित कारणसभक अध्ययन मानल गेल अछि । कर्तृत्वकें स्वतंत्रता अथवा प्रयत्नसँ जोड़बाक न्यायीय मत, कर्मकें फल-आश्रयक रूपमे परिभाषित करब आ करणक विशेष कार्यकारिता एकसंग क्रियारचना बनबैत अछि । मैथिली 'राम चाउर पकेबैत अछि' सन वाक्यक विश्लेषणमे कर्ता, कर्म आ साधनक स्थान उदाहरण बनि सकैत अछि, मुदा संस्कृतक दार्शनिक कारकक समस्त सम्बन्ध मैथिली व्याकरणमे ज्योंक-त्यों नहि उतरि जाएत । समुचित तुलना लेल वास्तविक मैथिली उदाहरणक स्वतंत्र प्रयोग-विश्लेषण आवश्यक अछि ।

१५६०-१५९८मे कर्मक फलाशी, करणक 'साधकतम' पद, अधिकरण, अपादान आ विभक्तिक द्वारा सम्बन्धनिर्देशक चर्चा अछि । एहि पदसभक क्रम दार्शनिक रूपमे महत्त्वपूर्ण एहि लेल अछि जे एकहि क्रियाक अनेक आवश्यक कारकक बीच 'कुन अधिक प्रमुख' सवाल उठैत अछि । कर्ता सदिखन बाह्य क्रियाकारक व्यक्ति थिक, एहन मान्यता कर्मवाच्य, भाववाच्य अथवा निर्जीव विषयक प्रयोगमे समस्या पैदा करैत अछि । स्रोतमे जतेक मतभेद स्पष्ट अछि, ओकरा पदरूपसँ अलग चिन्हब चाही ।

१६०४ सँ वैदिक विधिवाक्य 'स्वर्गकामो यजेत' पर मीमांसक आ नैयायिक विचार अबैत अछि । प्रत्ययक अर्थ 'भावना' अथवा प्रयत्न, इच्छाक भूमिका, विधिसँ निष्पन्न फल आ प्रयुक्त क्रियापदक शब्दशक्ति—ई सभ अलग प्रश्न अछि । सामान्य पाठक लेल महत्त्वपूर्ण अन्तर ई अछि जे आज्ञावाचक वाक्यक व्याकरण आ धार्मिक कर्मक फलोत्पत्तिक दार्शनिक प्रतिज्ञा एकहि सिद्धान्त नहि । शास्त्रीय व्याकरणक तर्क अनुकरण कऽ मैथिली विधिवाक्यकें देखल जा सकैत अछि, मुदा ओहि तुलना लेल मूल भाषा-रूप आवश्यक रहत ।

१६२०-१६३०क मंगलवाद फेर आबैत अछि आ कारणक अन्वय-व्यतिरेक द्वारा जाँच प्रस्तुत करैत अछि । एहि पुनरावृत्तिकें यन्त्रवत् हटायब मूल ग्रन्थक सामग्री बदलत; एतय आलोचना बतबैत अछि जे ज्ञानमीमांसाक पाछाँ कारकवादमे ओकर स्थान कहिएकऽ बनल । आरम्भिक मंगल आ उत्तरकालीन कार्यसमापनक सम्बन्धक उदाहरण कारणपरिभाषा आ धार्मिक प्रतिज्ञा दुनू क्षेत्रकें स्पर्श करैत अछि; परीक्षणक मापदण्ड आ अनुभवक वर्ग पृथक बनल रह्य ।

१६४०-१७११मे इतिहासक समयरेखा, आधुनिक विद्वान्, तर्कभाषा आ स्रोत-सूचीक पुनरावृत्ति भेटैत अछि। दार्शनिक प्रकरणक केन्द्रमे कारकसम्बन्ध अछि, मुदा सन्दर्भसामग्रीक प्रबल विस्तार पाठक ध्यान विचलित करैत अछि। एहि अध्यायकें शोधसम्पादनमे उपशीर्षक, प्राथमिक स्रोत आ द्वितीयक मतक प्रमाण-स्तरक आधारपर व्यवस्थित कएल जाए तँ तर्क अधिक स्पष्ट होयत। एहि अध्ययनक निर्णायक उपलब्धि भाषा-व्याकरण आ ज्ञानमीमांसाक बीच गङ्गेशक सूक्ष्म सम्बन्ध पहिचानब अछि।

०५५. धातुवाद आ प्रत्ययार्थ : अवच्छेदक, समानाधिकरण आ साङ्गति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १७१२-१९१९ ।

१७१२-१७२६मे लेखक धातुवाद, प्रत्ययार्थ, व्याप्ति आ साङ्गतिक संबंध बनबैत तीन आधुनिक शोधपत्रकेँ एकसंग पढ़ैत छथि । साझा 'अवच्छेदक' पदकेँ केवल भाषागत तकनीक नहि मानि ज्ञानक विषय, संबंध आ कार्य-सीमा निर्दिष्ट करबाक उपकरण मानल गेल अछि । एहि तुलनाक शक्ति एक प्रकरणसँ दोसर प्रकरणक सूक्ष्म सम्बन्ध देखब अछि । मुदा समान पदक तीन ठाम उपस्थितिसँ एकर तर्कगत कार्य हर ठाम अभिन्न होइत अछि, ई अतिरिक्त दाबी अलग पाठ-परीक्षण माँगैत अछि ।

१७४०-१७५६क धातुवादमे 'पच्' सन मूल धातु कोन क्रिया अथवा परिणामसूचक सञ्चालन दर्शबैत अछि, एहि प्रश्नपर मीमांसा, वैयाकरण आ नव्य न्यायमे मतान्तर अछि । उदाहरणमे पकेबाक क्रियाक दृश्य व्यापार आ पक्का भेला पर वस्तुमे उपस्थित परिवर्तन बीच भेद अछि । धातु केवल फलकेँ दर्शबैत अछि अथवा फल उत्पादित करबाक विशिष्ट व्यापारकेँ, ई दार्शनिक व्याकरणक ठोस समस्या अछि ।

'कार्य' आ 'फल'क एहन विभेद आधुनिक मैथिली भाषाविज्ञानमे अनुसन्धानक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा स्वतन्त्र मैथिली पाठ बिना एकर सार्वभौम प्रयोग प्रमाणित नहि ।

१७५७-१७७७मे 'ति' सन प्रत्यय, कर्तृत्व, काल, संख्या आ समानाधिकरणक पुनर्परिभाषा सामने अबैत अछि । दू पद एकहि वस्तुकेँ संकेत करैत अछि अथवा ओकरा माध्यमसँ एकहि संख्याक भिन्न सम्बन्ध उद्भासित होइत अछि—ई बहस साधारण अनुवादक शब्दसाम्यसँ पकड़ल नहि जाएत । मूल लेखकक उपलब्धि पूर्वपक्षसभक भेद जोगेने प्रतिपादन अछि; मूल शास्त्रक प्रतिशब्दीय रूपान्तरणक विशिष्टता जाँचबाक लेल संस्कृत पाठ-पङ्क्ति चाही ।

१७७८-१८१७मे व्याप्ति आ साङ्गति परस्पर तुलना द्वारा 'कोन विषयक बाद कोन विचार प्रासङ्गिक' प्रश्न उजागर होइत अछि । उदाहरणक आवश्यकता, कारणक सम्बन्ध, स्मृति-जागरण आ तर्कक क्रम—ई सभ दार्शनिक लेखनकेँ मात्र सूत्रक संग्रहसँ अलग करैत अछि । साङ्गतिक छओ प्रकार नामरूपेँ सूचीबद्ध होयबाक संग ओकर तर्कपरम्परामे उपादेयता सेहो परखी जा सकैत अछि । यदि दू अनुच्छेदक बीच ठोस दार्शनिक सम्बन्ध नहि अछि तँ लेखनमे केवल निकटता ओकरा साङ्गतिक उदाहरण नहि बनबैत अछि ।

१८२२-१९१९मे लेखक वादा, मियासाका, शॉ आ रघुनाथक अध्ययनसभक तुलनात्मक पुनर्निर्माण करैत छथि । एकर सशक्त पक्ष अछि जे शब्दार्थ, अवच्छेदक, व्याप्ति आ दार्शनिक संवादक स्तर अलग राखि अन्तःसम्बन्ध खोजल गेल । सावधानीक पक्ष ई

अछि जे चित्रात्मक प्रतिरूप तथा आधुनिक औपचारिक प्रतीक मूल नव्य न्यायभाषाक पूर्ण विकल्प नहि; संकेतचित्र जतेक समझबैत अछि, ओतबे विशेष संबंधकेँ छिपाएबो सकैत अछि। मूल संस्कृत आ शोधपत्रक तालिका-जाँचक बादे प्रत्येक निष्कर्षक दृढता निर्दिष्ट होयत।

०५६. पश्चिम, जापान आ इस्राएल : नव्य न्याय-ग्राह्यता आ तुलनाक प्रमाणसीमा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १९२०-२११० ।

१९२०-१९५०मे डैनियल इंगल्स, स्टीफन फिलिप्स, विमल कृष्ण मतिलाल आ कार्ल पॉटर-शिवजीवन भट्टाचार्यक अध्ययन गङ्गेशक शास्त्रकें आधुनिक तुलनात्मक दर्शनमे स्थान दैत अछि। पश्चिमी तर्कपद्धतिक शब्द 'क्वान्टिफिकेशन', 'प्रोपोजिशन', 'रेफरेन्स' आदिक समता देखब उपयोगी अछि; मुदा संस्कृत मूलक प्रतियोगिता-अभाव आ आधुनिक गणितीय तर्कक सूत्रगत सम्बन्ध एकहि थिक, ई मानल नहि जाए। इतिहासलेखनक महत्त्व एतय ग्रन्थक समकालीन पुनर्पाठक परम्परा बनब अछि।

१९५२-१९५८मे तोशिहिरो वादाक नागोया-आधारित शोध आ 'खरगोशक सींग' सन अनुपस्थित विषयक शब्दार्थपर चर्चा अछि। शून्य-सन्दर्भवाला पदकें गङ्गेशक अभाव-प्रकरण आ बरट्राण्ड रसेलक लेखनसँ तुलना करब दार्शनिक दृष्टिसँ फलदायी अछि। किन्तु दुनू तर्क-व्यवस्थामे नकार, वस्तुसत्ता आ अर्थनिर्णयक पूर्वधारणा भिन्न अछि। समान प्रश्नपर स्वतंत्र समाधानक तुलनाक अर्थ ऐतिहासिक स्रोत-सम्बन्ध अथवा परस्पर प्रभाव सिद्ध करब नहि।

१९६०-२०१८मे अन्तरराष्ट्रीय शोधपरम्पराक कालरेखा आ विषयानुसार सारिणी अछि। कतिपय नाम विभिन्न सूचीक भीतर दोहरायल अछि; प्रकाशित मूल शोध, विश्वकोशीय संक्षेप, विश्वविद्यालयीय परियोजना आ पुस्तकक प्रशंसात्मक विवरणक श्रेणी बिना अलग कएने ग्रन्थसूचीक परिमाण भ्रामक भऽ सकैत अछि। शोधकर्ता-ग्रन्थ-सन्-विषयक पृथक तालिका बनब लाभप्रद रहत। उपलब्ध सामग्रीमे लेखक एहि दिशामे सन्दर्भ एकत्र करैत छथि; प्रत्येक पाँतिक स्वतन्त्र संस्करण-सत्यापन बाकी अछि।

२०२०-२०१०मे इस्राएलक तालमूदी तर्कपरम्परा आ नव्य न्याय बीच तुलना प्रस्तावित अछि। मूल लेखक स्वयं कतेको ठाम प्रत्यक्ष ऐतिहासिक सम्पर्क प्रमाणित नहि होयबाक तथ्य स्वीकार करैत छथि। ई स्वीकारोक्ति तुलनात्मक अनुसन्धानक बल अछि, कमजोरी नहि। अलग सभ्यताक विवाद-पद्धतिमे तर्कक सार्वजनिकता, विधिक अनुरूपता अथवा प्रसङ्गगत पुनर्विचार भेटि सकैत अछि, मुदा उदाहरणक तर्करूप आ प्रमाण-धारणा अलग जाँचल जाए। भविष्यक संयुक्त शोध-संस्थानक प्रस्ताव घटना घटि चुकबाक इतिहास नहि।

२०१२-२११०मे बेन-अमी शार्फस्टाइनक वैश्विक दर्शनदृष्टि एहि समग्र प्रकरणकें समेटैत अछि। लेखक गङ्गेशकें देकार्त-लाइबनिट्स-संग तुलनीय बौद्धिक शक्ति मानबाक औचित्य खोजैत छथि। एहन तुलनाक सर्वाधिक विश्वसनीय मापदण्ड समान समस्या, स्वतंत्र तर्क-साधन, प्रतिपक्षक समाधान आ ग्रन्थगत परिणाम होयत; महानताक पदवी अथवा संस्थागत बहिष्कारक आरोप इतिहासलेखनक प्रमाण नहि। खण्ड ३२क एखन धरि ००१-०५६ अध्ययन एहि सूत्रपर समेकित होइत अछि :
वैकल्पिक कैनन निर्माणक दार्शनिक साहसकें स्वीकार करैत स्रोतक अवस्थागत अन्तर नबिसब।

०५७. गजलक यात्रापथ : अरबी आरम्भसँ मैथिलीक स्वतन्त्र शिल्पधरि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २१११-२१५८।

२१११-२१२८मे “THE MAITHILI GHAZAL”क भूमिका गजलक सामाजिक इतिहास आ शास्त्रीय संरचनाकेँ एकहि अध्ययनमे जोडैत अछि। ई विधा अपन सूक्ष्म काव्य-एकाइ शेर, छन्द-बहर, काफिया आ रदीफक कारणेँ गीत अथवा मुक्तकसँ भिन्न अछि। लेखकक प्रयोजन केवल गजल-लेखकक नाम गिनब नहि, इतिहासमे छूटल रचनाकार आ विधागत अनुशासनक पुनर्स्थापना अछि। मुदा “पहिल”, “एकमात्र” अथवा “पूर्णतः अशुद्ध” सन निर्णायक विशेषण लेल मूल रचनाक छन्दपरीक्षण आ प्रकाशनतिथि अनिवार्य बनैत अछि।

२१३०-२१४८मे अरबी प्रेमपरम्परा, फारसी सूफी गजल, रूमी, हाफिज, दक्खिनी साहित्य आ उर्दूक मीर-गालिब धरि यात्राक रूपरेखा बनैत अछि। समान भावभूमि, विरह आ आध्यात्मिक समर्पणक उपस्थितिक अर्थ सीधा काव्यरूपक उत्तराधिकार नहि; छन्द, शेरक स्वायत्तता आ रदीफक संरचना रूपगत इतिहासक सशक्त प्रमाण होयत। लेखक एहि यात्राकेँ भाव आ रूप दुनू दृष्टिसँ देखैत छथि, मुदा सांस्कृतिक सम्पर्कक वास्तविक काल, स्थान आ मध्यवर्ती पाठक सटीकता निरन्तर महत्वपूर्ण रहत।

२१५०-२१५७मे बंगाली, मराठी आ आन भारतीय भाषामे गजलक प्रवेश तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य दैत अछि। एकहि विधाक स्थानीय भाषामे रूपान्तर अर्थ-उधार नहि; मात्रा, ध्वनि, अन्त्यानुप्रास, वचनरूप आ सांस्कृतिक अर्थक समायोजन अछि। बंगाली नजरूल-परम्परा आ मैथिली गजल-लेखन समान प्रश्न पूछि सकैत अछि, मुदा दुनूक प्रत्यक्ष ऐतिहासिक सम्बन्ध बिना अभिलेखक नहि मानल जाए। मैथिली गजलक मौलिकता प्रदर्शित करबाक लेल स्थानीय भाषिक पाठक परीक्षण बेसी महत्वपूर्ण अछि।

इतिहासलेखनक अन्तर्निहित विवाद ई अछि जे साहित्यिक संस्थासभ कोन विधाकेँ मान्यता देलनि आ केकरा उपेक्षित रखलनि। लेखकक संस्थागत आक्षेप शोधक महत्वपूर्ण प्रश्न बनबैत अछि; ओकरा प्रमाणित करबाक लेल पत्रिका-अङ्क, संग्रहक प्रथम संस्करण, सम्पादकीय प्रतिक्रिया आ पुरस्कार-निर्णयक अभिलेख चाही।

भावपरम्परा आ विधागत पञ्जी दुनूकेँ एकहि परिणाममे मिलेनाइ विद्वत् सावधानीक अपेक्षा करैत अछि।

एहि प्रकरणक उपलब्धि मैथिली गजलक तुलनात्मक साहित्येतिहास लेल सुव्यवस्थित रूपरेखा अछि। सीमा ई अछि जे फारसी-उर्दू-मैथिली एकल

काव्यवंशक सरल कथा पाठपरम्पराक बहुकेंद्रीयता घटा सकैत अछि। प्रमाणअनुसार अनुवाद, अनुकरण, स्वतंत्र रचना आ उधार लेल छन्दक भेद जाँचब आवश्यक अछि।

०५८. जीवन् झासँ विजय नाथ झाधरि : आरम्भिक मैथिली गजलक कालक्रम

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २१५९-२१९४ ।

२१५९-२१६५मे विद्यापतिक पदावली आ गजलविधाक भावात्मक साम्य प्रस्तुत अछि। शृङ्गार, विप्रलम्भ आ प्रतीक्षाक तीव्रता दुनू काव्यपरम्परामे भेटि सकैत अछि; मुदा पदावलीमे विरहक उपस्थितिसँ ओहि रचनाकेँ गजल कहब असंगत होयत। गजलक विधागत पहचान बहर, मतला, रदीफ-काफिया आ शेरक क्रमसँ होइत अछि। लेखक भावभूमिक पूर्वस्थितिक चर्चा करैत छथि, आ समीक्षामे ओकरा ऐतिहासिक विधागत जन्मसँ पृथक राखल गेल अछि।

२१६७-२१७१मे पण्डित जीवन् झाक “सुन्दर संयोग” नाट्यमे आरम्भिक गजलक उल्लेख अछि। ई सूचना साहित्येतिहासक महत्त्वपूर्ण केन्द्र थिक कारण मंचीय प्रस्तुति आ लिखित काव्यरूप एकसंग देखाइत अछि। नाटकक प्रथम मुद्रण, गीतांशक मूल पाठ, मात्रा-विन्यास, छन्द आ प्रकाशित शीर्षक देखलाक बाद “पहिल प्रमाणित मैथिली गजल”क निर्णायक दर्जा देल जा सकैत अछि। मूल ग्रन्थक दाबीक परीक्षणक स्पष्ट कार्यसूची बनब स्वयं आलोचनाक योगदान अछि।

२१७१-२१८३मे सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’, विजय नाथ झा आ योगानन्द हीराक क्रम पर बल अछि। लेखक संस्थागत प्रतिष्ठाक कारण रचनाक विधागत पहचान दबि जाइबाक आशंका देखबैत छथि। परम्परा पुनर्निर्माणक लेल साहित्येतिहासकारकेँ काव्यसंग्रहक अनुक्रम, रचनाक मूल वर्तनी, काव्य-प्रकाशनक सन् आ वास्तविक बहर-गणना एकत्र करबाक चाही। एकहि कविक गजल आ गीतक पृथक प्रकार सेहो पाठ-स्तरपर देखल जाए।

२१८४-२१९४मे १९८१क संग्रहकेँ गजलक प्रथम उद्भव कहबाक मतक आलोचना अछि। ई आपत्ति विधागत पक्षसँ ठोस भऽ सकैत अछि, जँ पहिनुक लेखकक छन्दोबद्ध गजल वास्तविक उपलब्ध अछि। तइयो बादक अशुद्ध काव्यरचनाकेँ इतिहाससँ पूर्णतः बाहर कऽ देबाक बदला “गजल नामसँ प्रकाशित, छन्द-परीक्षणमे असफल” सन द्वैध अभिलेख राखब बेसी सटीक होयत। साहित्यिक इतिहासक वस्तु लेखकक दाबी, रचनाकारक आशय आ रचनाक संरचना—तीनू अछि।

एहि प्रकरणमे भावक पूर्वइतिहास, विधाक प्रथम अभ्यास आ आधुनिक मानक-निर्माणक अन्तर राखल गेल अछि। लेखकक सुधारेबाक आग्रह उचित आलोचनात्मक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा रचनावार प्रमाण-सारिणी एहि इतिहासकेँ कालानुक्रमिक निर्णायकताक दिशा देत।

०५९. बहर, काफिया, रदीफ आ मात्रा : गजलक भाषिक अनुशासन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २१९५-२२४०।

२१९५-२२०३मे अरूज आ बहरक आधारभूत परिभाषा देल गेल अछि। एक गजलमे शेरसभ स्वतन्त्र भावक इकाई भऽ सकैत अछि, मुदा प्रत्येक मिसरा स्वीकृत मात्रिक अथवा ध्वन्यात्मक अनुशासनक अन्तर्गत रहबाक अपेक्षा रखैत अछि। पुस्तकक तुलनात्मक सारिणी मतला, मकता, तखल्लुस, काफिया आ रदीफक कार्य अलग करैत अछि। शिक्षणक दृष्टिसँ ई उपयुक्त अछि कारण काव्यक भाव-समीक्षा सँ पहिने रचनाक विधागत पहचान करबाक उपकरण देल गेल।

२२०४-२२२७क तकनीकी सूचीमे एक प्राचीन फारसी-उर्दू पदकँ मैथिली उच्चारणमे ज्योंक-त्यों लागू करबाक कठिनाई सेहो उभरैत अछि। मैथिलीमे अन्त्यस्वर, दीर्घ-ह्रस्व, संयुक्तव्यञ्जन, नासिक्य, कारक-चिह्न आ लोकउच्चारणक स्वरूप बहरक गणनाकँ प्रभावित करि सकैत अछि। केवल रोमन लिप्यन्तरणसँ मात्रागणना करब कई बेर विकृत परिणाम दैत अछि; ताहि लेल प्रत्येक उदाहरण देवनागरी मूल पाठ आ उच्चारण-संकेत सहित देल जाए।

२२२८-२२३२मे मैथिली ध्वनिव्यवस्थाक विशिष्ट प्रश्न उठल अछि। भाषा-विशेषक छन्द निर्माणक विचार ग्रहणयोग्य अछि, मुदा नव बहरक वैधताक कसौटी सर्वप्रथम ओकर आन्तरिक संगति अछि, केवल नव नामकरण नहि। एकहि मिसराक अनेक सम्भावित उच्चारणमे कतेक मात्रान्तर मान्य, स्वरतन्त्रक नियम कोन, आ अपवादकँ केना निपटाओल गेल—ई विश्लेषण बिनु अरूजक वैज्ञानिक दावा अधूर रहत।

२२३३-२२४०क काफिया-रदीफ विवेचन ध्वनि-पुनरावृत्ति आ अर्थगत प्रत्यावर्तनक अन्तर उठबैत अछि। रदीफक ठीक पहिले अबैत तुकान्त केवल दृश्य अक्षरसाम्य नहि; वास्तविक काव्यध्वनिक नियमित पुनरागमन अछि। रदीफ नाटकीय अपेक्षा उत्पन्न करि सकैत अछि, मुदा निरर्थक पुनरावृत्ति काव्यक शक्तिकँ घटा सेहो सकैत अछि। अतः शिल्प-शुद्धता आ कलात्मक उपलब्धि दू अलग कसौटी अछि।

लेखकक रूपशास्त्रीय आग्रह आधुनिक मैथिली गजलक अध्ययनमे बुनियादी योगदान अछि। आलोचनात्मक माँग ई अछि जे निर्धारित नियमक संग मूल कविताक पंक्तिवार बहर-विभाजन, सम्भावित छन्ददोष आ विकल्पक परीक्षण प्रकाशित हो, जाहिसँ सिद्धान्त रचनाक वस्तुनिष्ठ समीक्षा बनि सकय।

०६०. अनचिन्हार आखर : डिजिटल पाठशाला आ सम्पादकीय अधिकार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २२४१-२३०६ ।

२२४१-२२५९मे अनचिन्हार आखरक जाल-आधारित प्रकाशन, गजलशास्त्रीय लेख, छन्द-शिक्षा आ सामुदायिक संवादक स्थान दर्शाओल गेल अछि । डिजिटल मंच अपन स्वभावसँ मुद्रित पत्रिकासँ अलग अछि : कविता प्रकाशित करब, ओकर छन्दपर प्रतिक्रिया देब आ सुधारक क्रम सुरक्षित राखब एतय एकहि स्थानपर सम्भव भऽ सकैत अछि । एहन अभिलेख साहित्यिक रूपकें सामूहिक सीखबाक प्रक्रियाक ऐतिहासिक दस्तावेज बनैत अछि ।

२२६०-२२७६मे दरभंगा, जनकपुर, पटना आ प्रवासी पाठकक समकालिक सहभागिताक बिन्दु महत्त्वपूर्ण अछि । भौगोलिक दूरी घटबाक अर्थ सामाजिक असमानता स्वतः मेटि जाएब नहि; पहुँच, डिजिटल साधन, भाषा-साक्षरता आ सम्पादकीय स्वीकृति नूतन प्रकारक सीमा निर्मित करि सकैत अछि । लेखक लोकभागीदारीक आदर्श प्रस्तुत करैत छथि, आ आलोचना ओकर परिणामक परीक्षण लेखक/रचना/सम्पादन-आधारित आँकड़ासँ करबाक सुझाव दैत अछि ।

२२७७-२३०५मे आशीष अनचिन्हारक गजलव्याकरण, गजल-इतिहास, गजलशिक्षण आ विदेह-सहभागिताक चर्चा अछि । विशिष्ट कृतित्वक मूल्याङ्कनमे सम्पादकीय भूमिका आ रचनाकारक अपन छन्दसाधना अलग दर्ज कएल जाए । “प्रथम” पदक दाबी करैत समय उपलब्ध पहिनुक हस्तलिखित, आज्ञालिक पत्रिका अथवा अन्य भाषामे लिखल मैथिली शिक्षणसामग्रीक परीक्षण आवश्यक रहत ।

गजल-पाठशालाक प्रभावक परीक्षणमे केवल मंचक घोषणापत्र नहि, सुधरि पुनर्प्रकाशित पाठ, सार्वजनिक छन्द-विवेचन, सहभागीक विविधता आ आलोचनात्मक असहमतिसभक सुरक्षित क्रम उपयोगी होयत । साहित्येतिहासकें समाज-माध्यमक प्रशंसात्मक विवरणसँ अलग एहन पाठ-निर्णयक अभिलेख चाही । एहि खण्डक विशेषता डिजिटल सम्पादनकें स्वतन्त्र सृजनशील साहित्यिक संस्थाक रूपमे देखब अछि । उपलब्धि केवल काव्य-प्रचार नहि, नियमक सार्वजनिक अध्यापन अछि । सीमा ई जे काव्य-मञ्चक अन्तःसंस्थागत विवरणक स्वतंत्र साक्ष्य एखन सीमित अछि ।

०६१. नव बहरक स्थानीय नामकरण आ बाल-भक्ति गजलक विधागत विस्तार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २३०७-२३४९ ।

२३०७-२३३५मे नव मैथिली बहरक संख्यात्मक विन्यास आ विदेह, गोविन्द झा, रूपकान्त ठाकुर आदि नामसँ स्थानीय काव्यस्मृति निर्मित करबाक प्रयास अछि । संख्या-क्रमक नामकरण मात्र शास्त्रीय स्वतन्त्रता सिद्ध नहि करैत अछि; प्रत्येक विन्यासमेक एक-एक मिसराक मात्राक्रम, मध्य-विराम, उच्चारण-परिवर्तन आ छन्दोभङ्गक जाँच करब आवश्यक अछि । मुदा अपन संस्कृतिक नामसँ छन्दक नामकरण आयातित विधाक सांस्कृतिक आत्मसातीकरणक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि । २३३६-२३४०मे बालगजल सामान्य प्रेम-विरहक भावभूमिसँ बाहिर बालानुभवकें गजल-शिल्पमे अनबाक प्रस्ताव रखैत अछि । विषय बदलला पर बहर, शेर, काफिया आ रदीफ बचि रहल अछि कि नहि—ई बालगजलक विधागत वैधता जाँचबाक प्रश्न अछि । केवल बालविषयक कविता लिखि ओकर नाम गजल राखब एहि नव विधाक गठनकें सिद्ध नहि करत । मूल बालगजलसभक पाठक छन्द-विवेचन सँ ओकर प्रयोगधर्मिता अधिक स्पष्ट होयत ।

२३४०-२३४३क भक्तिगजल नचारी, पदावली आ आत्मसमर्पणक मैथिली भावपरम्परा गजलविधासँ जोड़ैत अछि । एतय आनुसङ्गिक प्रश्न ई अछि जे देवतासँ सम्बोधन, विरह, विनय आ प्रार्थनाक सृष्टिमे परम्परागत गीत आ बहरबद्ध शेरक सौन्दर्यात्मक अन्तर की अछि । भक्ति भावक उपस्थितिसँ गजलक औपचारिक रचना स्वतः प्रमाणित नहि; शेरक स्वतन्त्रता आ छन्द-क्रम निर्णायक होयत ।

२३४४-२३४९क संस्थागत स्वतन्त्रताक चर्चा साहित्यिक पुरस्कार, सम्पादन आ मंच-नियन्त्रणक राजनीतिक अर्थ उठबैत अछि । एकटा वैकल्पिक मंच स्थापित कएनाइ महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक क्रिया अछि, मुदा एकर आलोचनात्मक विश्वासनीयता स्वयं अपन नियमक सार्वजनिक समान व्यवहारपर निर्भर अछि । साहित्यिक अधिकारकें वंश-प्रतिष्ठाक बदला जाँच-योग्य शिल्प आ खुलल आलोचना पर आधारित करबाक ई सम्भावना एहि प्रकरणक मूल मूल्य अछि ।

नव बहर, बालगजल आ भक्तिगजल तीनू साहित्यिक आविष्कारकें अलग तर्कसँ जाँचल गेल : पहिलक मात्रा-शिल्प, दोसरक पाठक-अनुभव आ तेसरक भावपरम्परा । ई तीनूकें एक 'क्रान्ति'क साधारण घोषणामे समेटब आलोचनात्मक सूक्ष्मता घटाओत ।

०६२. मंचीय गजल, स्त्रीलेखन आ सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २३५०-२३८७।

२३५०-२३६९मे मैथिली स्त्री-रचनाकारकें गजल-पुरस्कार आ प्रकाशनमे प्राथमिकता देबाक सम्पादकीय हस्तक्षेपक चर्चा अछि। पुरस्कारक प्रमाणपत्रमे सम्मानसूचक शब्दक क्रम बदलब एक प्रतीकात्मक क्रिया अछि; वास्तविक सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व जाँचबाक लेल चयनित रचनाक संख्या, निर्णायक-मण्डल, नियमित प्रकाशन आ आलोचनात्मक प्रतिक्रियाक अभिलेख चाही। लेखकक वर्णन साहित्यिक प्रतिनिधित्वक महत्त्वपूर्ण प्रश्न खोलैत अछि, मुदा घोषित प्रयोजन आ वास्तविक परिणाम अलग स्रोत माँगैत अछि।

२३५३-२३६६मे गजल पुनः नाट्यमंचमे प्रवेश करबाक वृत्तान्त अछि। मैथिली गजलक प्रारम्भिक नाट्य-सन्दर्भ जीवन् झाक “सुन्दर संयोग” सँ जोडल गेल;

२०२६क नाटकमे गजलप्रयोगकें लेखक लगभग शताब्दीक चक्रक पुनःसंयोग मानैत छथि। साहित्यिक इतिहासमे ई सुन्दर रूपक बनैत अछि, मुदा १९२० सँ २०२६ बीच गजलयुक्त नाटकक सम्पूर्ण सूची जाँचने बिना “बीचमे अनुपस्थिति”क फैसला नहि होयत।

रंगमंचीय प्रयोगमे गजलक शेरक स्वायत्तता नाटकीय एकरूपता तोड़ि सेहो सकैत अछि आ पात्रक भावक क्षणिक घनीकरण सेहो करि सकैत अछि। दुनू सम्भावनाक परीक्षण नाटकक दृश्यक्रम, गायक/अभिनेताक स्थिति, संगीत, दर्शक-संवाद आ कथा-परिणामसँ होयत। केवल छन्दक शुद्धतासँ मंचीय सफलताक निष्कर्ष नहि निकलैत अछि; अभिनय आ दृश्य-सन्दर्भ समान रूपसँ निर्णायक अछि।

२३६७-२३८७मे विकिपीडिया, विदेह आ सामाजिक परम्परासँ अलग डिजिटल अभिलेख बनबाक प्रसङ्ग अछि। विकिपीडिया-प्रविष्टि स्वतन्त्र शैक्षिक प्रमाण नहि, स्रोतक ओर मार्गदर्शक सामग्री अछि। एकटा दाबी इंटरनेटपर निरन्तर उपस्थित अछि, एहि आधारपर ओकर सत्यता निश्चित नहि; मूल छपल प्रति, तिथियुक्त जाल-अभिलेख आ समाचार-प्रमाण चाही।

गजलकें समानान्तर साहित्यिक आन्दोलनक प्रतिरोधी रूप मानबाक एहि प्रकरणक उपलब्धि सांस्कृतिक उत्पादन आ संस्थागत शक्ति बीचक सम्बन्ध स्पष्ट करब अछि। सीमा ई जे आकाङ्क्षा आ उपलब्धिक बीच प्रमाणित सामाजिक प्रभावक विश्लेषण पर्याप्त मात्रामे नहि प्रस्तुत भेल।

०६३. भारतीय गजल-परम्पराक तुलना : समान शिल्प, भिन्न संस्थागत इतिहास

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २३८८-२४३७ ।

२३८८-२४२९मे बंगाली, मराठी, हिन्दी, गुजराती, मलयालम, तेलुगु आ आन भाषाक गजल-प्रयोगक सूची अछि। एकरे भितर मराठी सुरेश भट्टक शिल्प-अनुशासन आ मैथिली अनचिन्हारक नियमाधारित शिक्षण बीच तुलना प्रस्तुत कएल गेल। समानता एतय एकटा सार्वजनिक विधागत पाठशालाक निर्माण अछि; दूनू भाषाक छन्दिक ध्वनि-प्रणाली आ ऐतिहासिक पाठक एहन तुलना द्वारा स्वतः एक नहि बनैत अछि।

लेखक मैथिली गजलक अनेक 'प्रथम' उपलब्धि गिनबैत छथि : बालगजलक स्वरूप, गजल-व्याकरणक शास्त्रीय संगठन, विकिपीडियाक प्रयोग आ रंगमंचीय वापसी।

एहि सभक अनुसन्धानमूल्य अछि, मुदा भारतक सभ भाषाक समस्त प्रकाशित गजल-साहित्यक तुलनात्मक सूची बिना सार्वदेशिक प्रथमत्वक दावा प्रमाणित नहि होयत। विशिष्ट मैथिली इतिहासक निर्विवाद उपलब्धिक पक्ष अलग दर्ज कएल जाए।

२४१०-२४२३क सारिणी तुलनाक एक नव समस्या उठबैत अछि : एक भाषामे गजल लोकगायनक माध्यमसँ, दोसरमे मुद्रित काव्यक माध्यमसँ आ तेसरमे डिजिटल विद्यालयक माध्यमसँ प्रसारित भेल। "सफलता"क मापक ताहि कारणे केवल संग्रह-सङ्ख्या नहि होयत; गायनक अभिलेख, छन्दशिक्षा, महिला-भागीदारी, अनुवाद आ आलोचनाक परिमाण जोड़ब आवश्यक अछि।

२४३०-२४३७क ताजा प्रतिक्रिया आ संस्थागत सुधार-सम्बद्ध कथनमे मूल्यात्मक भाषा तीव्र होइत अछि। साहित्यिक आन्दोलनक पक्षधर रचनामे ई स्वर स्वाभाविक भऽ सकैत अछि, मुदा अनुसन्धान-पुस्तकमे इरादा, राजनीतिक परिवर्तन आ वास्तविक पाठ-व्यवहारक तर्क अलग देब जरूरी अछि। आरोपक उपस्थिति इतिहासक तथ्य अछि; आरोपक सत्यता स्वतंत्र प्रश्न अछि।

एहि प्रकरणक वास्तविक आलोचनात्मक फल तुलनात्मक विधाशास्त्रक बहुआयामी रूपरेखा अछि—छन्द, शिक्षण, प्रकाशन, गायन, पाठक आ संस्था। एके कसौटी सभ भाषापर बिना भेद लागू नहि कएल जाए।

०६४. “भगवती गजल” : सीताराम झाक मूल पाठ आ गायनक पाठान्तर

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २४३८-२४६९।

२४३८-२४४६मे कविवर सीताराम झाक १९२८मे प्रकाशित “सूक्तिसुधा”क रचनाकें गजलक रूपमे पहिचान देबाक प्रबल तर्क अछि। लेखकक अनुसार लोकप्रिय गायनक परम्परामे एकरा गीत अथवा भगवती गीत कहि प्रचारित कएल गेल। विभागत विवादक निवारण लेल मूल मुद्रणक शीर्षक, छन्द-विधान आ पूरा कविताक पंक्तिक्रम प्राथमिक साक्ष्य होयत; लोकप्रसारक नामकरण एतेक मात्रसँ मूल विधा नहि बदलैत अछि।

२४४७-२४५२क पाठमे “चातक” उपमाक संग भगवतीक प्रति अभिलाषा आ विलम्बित दर्शनक अनुभूति भेटैत अछि। काव्यक भाव भक्तिगीतक सामग्रीसँ मेल खा सकैत अछि, मुदा जँ ओकर प्रत्येक मिसरा निर्धारित बहरमे अछि आ काफिया-रदीफ नियमित अछि तँ गजल रूपक दाबी परीक्षणयोग्य बनैत अछि। मूल लिप्यन्तरणक आधारपर स्वरसन्धि आ नासिक्य मात्रा निर्णय करबाक सीमा अछि; छन्दगणना मूल देवनागरी प्रतिक संग दोहराएब आवश्यक रहत।

२४५३-२४६३मे विभिन्न गायकक रूपान्तर, गीतकारक नाम बदलि देब आ परिहास-रूपान्तर पर लेखक कड़ा आक्षेप रखैत छथि। पाठ-समीक्षा ककरा ‘मूल’ मानत, ई एक महत्वपूर्ण सम्पादकीय प्रश्न थिक। लोकप्रिय गायनरूप स्वतन्त्र ग्रहण-इतिहासक तथ्य अछि; मुदा ओहि रूपकें मूल कविक प्रमाणित पाठक स्थान पर राखल जाए तँ साहित्येतिहासक कृति-पहिचान बदलि एत। आलोचनामे पुनर्रचना, अनुवाद, अनधिकृत श्रेय आ लोकप्रचलित पाठकें अलग प्रकार मानल गेल।

एकर दोसर पक्ष ई अछि जे गायनक आवाज, लय आ स्थानीय राग-कौशल काव्यकें नव जीवन दैत अछि। जँ पाठ बदलल अछि तँ ओकर कारण, तिथि, गायकक घोषित स्रोत आ धुनक बदलाव अभिलेखित करबाक चाही। “गलत”क एकरेखीय ठप्पा प्रत्येक संगीत-रूपान्तरक कलात्मक मूल्य नकारि दैत अछि; तथापि लेखकत्वक गलत श्रेय आलोचनात्मक सुधार अपेक्षित करैत अछि।

एहि ठाम साहित्येतिहास, पाठालोचना आ संगीत-इतिहासक संगम देखाइत अछि। शोधक अगिला आवश्यक चरण १९२८क मूल प्रति, प्रत्येक रेकॉर्डक तिथिक्रम आ छन्द-परीक्षणक तुलनात्मक सारिणी अछि। बिना एहि मिलानक कोनो गायकपर नैतिक निर्णय समीक्षाक अपन निष्कर्ष नहि बनत।

०६५. बोयी भीमन्ना : प्रतिप्रश्न, पुराकथाक पुनर्वाचन आ दलित ऐतिहासिक चेतना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २४७०-२५३३।

मूल अनुच्छेद २४७० सँ तेलुगु, गुजराती आ ओडिया दलित साहित्यक मैथिली अनुवादपर आधारित समीक्षा-शृंखला आरम्भ होइत अछि। २४७३-२५३३मे बोयी भीमन्नाक दू कविताकें सामूहिक इतिहासक प्रतिरोधी आख्यानक रूपमे पढ़ल गेल अछि। पहिल कवितामे बारम्बार प्रश्न उठैत अछि—ककर खोपडी, ककर पूर्वज, ककर अवहेलित स्मृति? प्रश्न आ उत्तरक पुनरावृत्ति एक स्थिर निष्कर्ष नहि दैत, बल्कि प्रत्येक उत्तरकें नव प्रश्नमे बदलैत अछि। एहि शिल्पकें केवल राजनीतिक घोषणा मानलासँ ओकर लयबद्ध तर्क-निर्माण छूटि जाइत अछि।

२४८७-२५०८क पाठमे वशिष्ठ, अरुन्धती, मत्स्यगन्धा आ व्यास सन पुराकथाक व्यक्तिसभक पुनर्व्याख्या अछि। ई काव्यक घटनाकें स्वतः प्रमाणित ऐतिहासिक घटना बनयबाक प्रयत्न नहि, स्थापित कुल-कल्पनाक नैतिक आधारपर प्रश्न अछि। पुराणक भीतर स्थित जातीय सम्बन्धकें आधुनिक राजनीतिक अर्थमे बदलि देब एकटा शक्तिशाली काव्य-प्रक्रिया भऽ सकैत अछि; मुदा पुराकथा, ऐतिहासिक दस्तावेज आ वर्तमान सामाजिक अनुभव तीन अलग स्रोतवर्ग अछि।

२५०९-२५१८मे दलित स्त्रीक प्रश्न आ वर्चस्वक अनेक तहक चर्चा अछि। भीमन्नाक काव्यक ‘हम’ कखनो व्यक्तिगत आ कखनो सामूहिक होइत अछि। एहि सर्वनामक रूपान्तरणक साहित्यिक फल अछि जे निजी पीडा सार्वजनिक इतिहासक प्रश्न बनैत अछि। किन्तु एकटा पुरुष कविक स्त्री-अनुभवक प्रतिनिधित्व स्वतः पूर्ण नहि; स्त्री-कवियत्रीक स्वतंत्र मूल पाठक साथ तुलना एहि सीमाकें जाँच सकैत अछि।

२५१९-२५२४मे क्रोध, करुणा आ प्रतिरोधक सौन्दर्यात्मक महत्त्वक प्रश्न उठल अछि। रससिद्धान्तक जटिल परम्पराकें “केवल शान्ति”क आग्रहमे समेटल जाए तँ वास्तविक आलोचना कमजोर पडत। रौद्र आ वीर रसक परम्परागत विधेयता स्वीकार करैत समकालीन दलित कविताक सामाजिक प्रेरणाकें विशिष्ट रूपमे पहिचानब बेसी सटीक अछि। काव्यक नैतिक आ सौन्दर्यात्मक मूल्य दूनू विचारणीय अछि।

२५२५मे लेखक स्पष्ट करैत छथि जे मैथिली पाठ तेलुगु सँ सीधा नहि, अंग्रेजीक मध्यस्थतासँ बनल अनुवाद अछि। एहि द्वि-अनुवादमे लोकशब्द, जातिसूचक पद, छन्द-विच्छेद आ पुराकथाक संकेत बदलि सकैत अछि। तँ मूल तेलुगु कविता, अंग्रेजी मध्यवर्ती प्रति आ मैथिली रूपान्तरणक वास्तविक पङ्क्तिवार तुलना बिना अनुवादनिष्ठाक निर्णायक दाबी नहि कएल जाए।

०६६. जे. सुभद्रा : चमड़ा, साड़ी आ श्रमिक मातृत्वक वस्तु-काव्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २५३४-२६८३।

“Grinding”, “Laanda”, “The Sari’s Edge” आ “Avva” पर केन्द्रित २५३४-२६१८क विवेचन दलित स्त्रीक जीवनकेँ अमूर्त करुणाक बदला श्रम, पदार्थ आ घरेलू उपकरणक माध्यमसँ देखबैत अछि। चमड़ा साफ करब, ओकरा नरम करब, पकड़, कपड़ा आ पसीनाक विवरण काव्यमे देल गेल अछि। ई सूक्ष्म भौतिक विवरण केवल सजावट नहि, जातिक श्रमविभाजन आ शिल्पगत ज्ञानक अदृश्य इतिहासकेँ दृश्य बनबैत अछि। वस्तुक क्रियात्मक वर्णन स्वयं अर्थ-निर्माणक उपकरण बनैत अछि।

२५५५-२५७७मे चमड़ाक दुर्गन्ध आ कथित अशुद्धताकेँ काव्य अपन सौन्दर्यात्मक केन्द्र बनबैत अछि। सामान्यतः सामाजिक पदानुक्रम जे पदार्थकेँ ‘अस्पृश्य’ कहैत अछि, कवयित्री ओकरे घरेलू श्रम आ मानव-सम्मानक स्रोत बनबैत छथि।

आलोचनामे जूलिया क्रिस्तेवाक ‘अपवर्जित वस्तु’ सम्बन्धी विचारक उपयोग संकेतात्मक अछि; यूरोपीय सिद्धान्तक शब्दकेँ दक्षिण भारतीय जातिगत अनुभवक एकमात्र अर्थ-व्याख्या मानब उचित नहि। मूल कविताक अपन पदार्थ-व्यवस्था प्राथमिक पाठ अछि।

२५७८-२६११मे “Avva”क माता पारम्परिक आदर्शकृत मातृरूपसँ अलग अछि। मायकेँ त्यागक प्रतिमा बनबैत साहित्यिक आख्यानक प्रतिकूल सुभद्रा मायकेँ श्रम, भूख, रक्षक वस्त्र आ अभावक बीच देखबैत छथि। साड़ीक आँचर ओकरा लेल केवल सामाजिक मर्यादाक चिह्न नहि, ओढ़ना, थैला, शय्या आ आश्रयक साधन अछि। स्त्रीवादी विमर्शमे वस्तुक ई बहुविध अर्थ विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एकहि वस्तुक सामाजिक नियन्त्रण आ जीविकोपार्जनक भूमिका एकसंग सम्भव अछि। २६११-२६६४मे भीमन्ना आ सुभद्राक तुलना इतिहासक दू स्तर देखबैत अछि : एक दिशि पुराकथा आ सामूहिक वंशक पुनर्पाठ, दोसर दिशि अज्ञात श्रमिक मायकेँ केन्द्रित दैनिक जीवन। इतिहासक अभिलेखमे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नामसँ उपस्थित रहैत छथि; सुभद्राक माय नाँवक अभावमे सेहो काव्यक केन्द्र बनैत छथि। मौन आ अनुपस्थिति एतय काव्यगत संकेत थिक, मुदा वास्तविक स्त्रीसभक ऐतिहासिक मौनकेँ एकरे आधारपर सर्वथा सिद्ध नहि मानल जाए।

२६६५-२६८३मे दलित सौन्दर्यशास्त्रक चर्चा पारम्परिक रस-ध्वनि-पद्धतिक पुनर्पाठ माँगैत अछि। पीडा आ क्रोध काव्यक बाधक नहि, रूपनिर्माणक सक्रिय तत्त्व भऽ सकैत अछि। तथापि केवल नैतिक अनिवार्यता दर्शा देलासँ कविता स्वतः शिल्पदृष्टिसँ उत्कृष्ट नहि बनैत; बिम्ब, कथनक्रम, शब्दविन्यास आ अन्तिम प्रभावक परीक्षण संगहि आवश्यक अछि। तेलुगु-अंग्रेजी-मैथिली अनुवाद-शृंखला प्रमाणसीमा बनल रहत।

०६७. चल्लपल्ली स्वरूपाराणी : स्त्री-अस्मिता, रूपान्तर आ देहक काव्यभाषा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २६८४-२७८०।

२६८४-२७१०मे चल्लपल्ली स्वरूपाराणीक कवितामे चिडै, फूल आ धरतीक बिम्ब स्त्रीक जीवित अनुभवसँ जुडैत अछि। सिमल फूलक काँटेदार गाछपर लाल फूल फुलब विरुद्ध परिस्थिति बीच जीवनक संकेत बनैत अछि। एहि बिम्बकें सामान्य आशावादक रूपमे पढ़नाइ पर्याप्त नहि; काँटा, उज्जर-लाल रङ्ग, भूमि आ देहक सम्बन्ध रूपकें जाति-लिङ्गक सामाजिक प्रसङ्ग दैत अछि। आलोचनामे सांस्कृतिक वनस्पति-बिम्बक अर्थ लेखकक व्याख्या मानल गेल, सम्पूर्ण तेलुगु लोकपरम्पराक निश्चित सार्वभौम संकेत नहि।

२७११-२७३३क “When... Then” क्रम अनुभवक बहुधा पुनरावृत्त असमानता जोडैत अछि। जाति आ लिङ्गक संयोजन केवल दुहरा अन्याय नहि, सामाजिक संस्थासभक परस्पर निर्भर व्यवस्था बनैत अछि। गृहक भीतर श्रम, शारीरिक शोषण आ बाहरी व्यवहारक प्रत्येक उदाहरण एकरे दोहरबैत अछि, आ कविताक संचयी रूप पाठक पर नब दबाव बनबैत अछि। एकटा उदाहरणक प्रभाव कम होइत, अनेक दृश्यक क्रम समग्र प्रणालीक बोध उत्पन्न करैत अछि।

२७२४-२७४५क घरेलू श्रम-प्रसङ्गमे पति एक प्रत्यक्ष सामाजिक पात्रक रूपमे उपस्थित छथि। “Hands Turned to Earth” मे श्रमक उपज, शरीरक थकान आ पितृसत्ताक हिंसा अलग-अलग अनुभव नहि, एक-दोसरकें समर्थित करैत अछि। देहक रूपकें केवल वर्गीय प्रतीक बनबैत समय स्त्रीक आफन निर्णय, आत्मचेतना आ भावगत परिवर्तन नहि हेराबय। एहि कविताक अन्तिम परिवर्तनक संकेत ताहि लेल सामाजिक कर्तृत्वक सम्भावनाक प्रश्न उठबैत अछि।

२७४६-२७८०मे भीमन्ना, सुभद्रा आ स्वरूपाराणीक तुलना करैत मूल ग्रन्थ ऐतिहासिक प्रश्न, दैनिक वस्तु आ रूपान्तरणशील चेतनाक तीन अलग शिल्प चिन्हैत अछि। ई तुलनाक महत्वपूर्ण उपलब्धि “दलित कविता” कें एकरूप विषयक फोल्डर नहि मानि विविध रचनात्मक पद्धतिक समूह देखब अछि। परस्पर तुलना पूर्ण होएबाक लेल तीनू मूल तेलुगु रचनाक भाषिक स्तर एके मापदण्डसँ जाँचबाक चाही; अनूदित अंग्रेजी वाक्यक भिन्नता बिम्बक वास्तविक मूल भेद नहि सेहो हो सकैत अछि।

एहि अध्ययनमे लेखकक महिलाक भीतरक आवाजक पुनर्मूल्याङ्कन विशेष उपादेय अछि। मुदा स्त्रीक ‘उत्थान’क एकरेखीय कथामे विभिन्न जीवनस्थितिक विरोधाभास

लुप्त नहि हो; कविता जतय असमाप्त, ओतय समीक्षाक निष्कर्ष सेहो प्रश्नरूपै रहि सकैत अछि।

०६८. शशिनिर्मला : ऋतुकालीन वस्त्र, नामकरण आ दलित स्त्रीक प्रत्यक्ष वाणी

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २७८१-२९२८।

२७८१ सँ शशिनिर्मलाक “I am Wearing Menstrual Cloth” आ “A Dalit Woman” सहित कवितासभक समीक्षा अबैत अछि। शीर्षक स्वयं पाठकसँ असहज सामाजिक प्रश्न पूछैत अछि। मासिक धर्मक वस्त्रक उल्लेख स्वच्छता अथवा धार्मिक शुचिताक सामान्य सलाह नहि, स्त्रीक देहक अपवित्र मानबाक सामाजिक अधिकारपर प्रतिवाद अछि। विशिष्ट शारीरिक वस्तुकें खुलल शीर्षक बनबैत कवियत्री सांस्कृतिक लुकावनक व्यवहार भङ्ग करैत छथि।

२८०७-२८४९मे कथनक सूचीबद्ध शैली प्रत्येक नव पाँतिसँ अपमानक नब स्तर जोड़ैत अछि। एहि पुनरावृत्ति-संरचनाक साहित्यिक प्रयोजन अछि पाठककें एक घटना पर न थमब देब, बल्कि दुहराओल सामाजिक प्रक्रियाक व्यापकता अनुभव कराओब। एहि शिल्पक तुलनात्मक सम्बन्ध आरोपसूची वा सार्वजनिक साक्ष्यसँ बनैत अछि; किन्तु कविता कानूनी गवाहीक स्थानापन्न नहि, ओकर वाणी काव्यरूपमे सामाजिक अनुभवक नैतिक तीव्रता देखबैत अछि।

२८५०-२८८७मे स्त्रीक विरुद्ध सामुदायिक, जातिगत आ संस्थागत आचरण अनेक स्तरमे अबैत अछि। सामाजिक दमनकें पुरुष बनाम स्त्रीक एकहि विभाजनमे समेटल जाए तँ जातिगत विशेषाधिकारक अन्तर छूटि जाइत अछि। कविता एहि जटिलताकें प्रत्यक्ष सम्बोधनद्वारा उठबैत अछि। समीक्षामे दलित स्त्रीवादी प्रतिपादन उपयोगी व्याख्यात्मक उपकरण थिक, मुदा ओकरा हर पाँतिक अन्तिम और केवल अर्थ नहि बनाओल जाए।

२८८८-२९२८मे प्रार्थनाक मुद्रा, शरीरक अवमानना आ मनुष्यक पशुकरण सन बिम्बसँ कविता प्रत्यक्ष भावगत आघात उत्पन्न करैत अछि। एहन प्रसङ्गक आलोचनामे सनसनीखेज भाषा दोहरब आवश्यक नहि; बिम्बक स्थान, सम्बोधन, पुनरुक्ति आ काव्यक अन्तिम नैतिक परिणति देखब पर्याप्त होयत। अभिव्यक्तिक तीव्रता आ काव्यक रचना-पद्धति एकसंग जाँचल जाए तँ साहित्यिक मूल्यांकन अधिक न्यायसंगत बनैत अछि।

मूल तेलुगु, मध्यवर्ती अंग्रेजी आ मैथिली पाठक त्रिपक्षीय परीक्षा बिना शब्दक ऐतिहासिक निश्चित अर्थक दावा नहि कएल गेल। कवियत्रीक शीर्षक आ सामाजिक प्रतिरोधक चरित्र स्रोत-पाठमे स्पष्ट अछि; अनुवादमे सम्बोधनक आदरस्तर आ शरीरसम्बद्ध स्थानीय शब्दावली विशेष पुनर्जाँच माँगैत अछि।

०६९. गौरी : मेंहदी लागल हाथ आ चर्मश्रमक सौन्दर्यात्मक पुनराधिकार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २९२९-३१०८ ।

२९२९-२९६५मे गौरीक मेंहदी लागल हाथसम्बन्धी कविताक दृश्यक्रम दलित चर्मश्रमक घरेलू संसारसँ आरम्भ होइत अछि। चमड़ा, गली, सीमा आ देहक पदार्थगत उपस्थिति रचना स्थिर करैत अछि। कवयित्रीक काव्य-स्थान न ग्रामीण जीवनक बाहरी चित्रमात्र, न महानगरीय वक्ताक सारभूत घोषणामात्र; ओतय कार्यकारी हाथ आ ओकर सामाजिक अपमान कविता बनबैत अछि।

२९६६-३००२मे कृष्ण-पूतना सन पुराण-प्रसङ्गक विपरीत प्रयोग अछि। ई मिथकीय पुनर्पाठ पात्रक हिंसा आ सामाजिक न्याय पर प्रश्न उठबैत अछि; परम्परागत कथनक भीतरक सत्ता-दृष्टिक आलोचना कविताक निज उपकरण अछि।

साहित्येतिहासकारक सावधानी ई अछि जे रचनाक काव्यात्मक आरोपकें सर्वमान्य पुराण-पाठक समान ऐतिहासिक तथ्य नहि मानब। मूल रचनाक व्यङ्ग्य, सम्बोधन आ लाक्षणिक शब्दक पहिचान प्रमुख अछि।

३००३-३०५८मे चमड़ा आ ढोलक रूपान्तर वस्तुक अर्थ पलटैत अछि : जे पदार्थपर समाज अपवित्रताक आरोप लगबैत अछि, ओहि सँ संगीतक इजोत निकलैत अछि।

ई अर्थपरिवर्तन सजावटी अलङ्कार नहि; श्रमिक ज्ञान आ मानवीय प्रतिभाकें सौन्दर्यक केन्द्र बनबाक प्रक्रिया अछि। ढोलक ध्वनि केवल प्रतिरोधक उपमा नहि, शिल्पक वास्तविक पदार्थगत परिणाम सेहो थिक। एहि दोहरा अर्थकें बचाएब कविताक सार्थक आलोचना होयत।

३०५९-३०८६मे श्रमकें पाप कहबाक प्रचलित धार्मिक प्रतिज्ञाक प्रतिकूल कविता एक अन्तःसत्तात्मक उत्तर दैत अछि। लेखक ओकरा क्रान्तिकारी उद्घोष मानैत छथि; आलोचना एहि उद्घोषक साहित्यिक प्रभाव शिल्पक संदर्भमे जाँचैत अछि। टुटल वाक्य, प्रश्न, नकार, श्रमिक शब्दावली आ अन्तिम संगीतात्मक रूपान्तरण एकगोट कथ्य बनबैत अछि।

भीमन्नाक पुराकथागत पुनर्लेखन आ गौरीक श्रम-वस्तुपर आधारित पुनर्लेखन अलग कार्य करैत अछि। पहिल इतिहासक पदवी पर सवाल उठबैत अछि, दोसर ठोस श्रमकें नब गरिमा प्रदान करैत अछि। मूल तेलुगु पाठ उपलब्ध भेलापर ढोल, चमड़ा आ गलीक स्थानीय पदक अर्थकोशीय जाँच आवश्यक रहत।

०७०. महूरी विजयश्रीक अलिसम्मा : शाप, न्यायालय आ मानवीकरणक वाक्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३१०९-३२९८।

३१०९-३१४३मे “Alisamma’s Curse”क कवितामे एक ऐतिहासिक नाम प्रतिरोधक प्रतीक बनैत अछि। ‘हम अलिसम्मा छी’ सन आत्मपरिचयक पुनरावृत्ति ओहि स्त्रीकें वस्तुक स्थानसँ बोलनिहार व्यक्ति बनबैत अछि। कविताक संरचना कथाक विस्तार नहि, छोट पाँतिमे तीव्र अर्थ-सङ्कोचन अछि। नामक सार्वजनिक उच्चारण एतय राजनीतिक सेहो अछि, कारण स्त्रीक अपन परिचय देबाक अधिकार काव्यक केन्द्र बनैत अछि।

३१४४-३१७७मे शूर्पणखा आ अलिसम्माक तुलना मिथकीय देहदण्ड आ आधुनिक सामाजिक हिंसा बीच प्रतिप्रश्न खड़ा करैत अछि। भिन्न काल आ कथाविश्वक एहि दू पात्रकें ऐतिहासिक एकता मानि लेब अनुचित होयत; कविताक मर्म नैतिक समानता आ सत्ता-न्यायकें बेनकाब करब अछि। पुराणक पुनर्पाठ एकटा वैध साहित्यिक प्रयोग होयत, मुदा आलोचना ओकरा प्रत्यक्ष इतिहासदर्शनसँ भिन्न पहिचान रखैत अछि।

३१७८-३२१०मे “शाप”क अर्थ उलटि जाइत अछि। विनाशकारी श्राप नहि, उत्पीडककें मनुष्य बनबाक उच्चारण एहिमे केन्द्रीय अछि। एहन उक्ति काव्यगत विरोधाभास बनबैत अछि—न्याय माँगनिहार स्त्री शत्रुकें वस्तुतः ओकर खोएल नैतिक मनुष्यता लौटबाक आदेश दैत छथि। ई अर्थक्रम सामान्य बदला लेबाक रचनासँ अलग अछि आ कविता कम शब्दमे तीव्र नैतिक उचाइ प्राप्त करैत अछि।

३२११-३२५८मे न्यायालयक आँखिमे इजोत जरायबाक बिम्ब, आरक्षित आसन आ दूहरा दलित-स्त्री जीवनपर कविता संस्थागत सत्ताक प्रश्न उठबैत अछि। न्यायालयक बिम्बकें निश्चित एकटा वास्तविक मुकदमाक अभिलेख मानब नहि, जावत् मूल ऐतिहासिक विवरण स्वतंत्र रूपसँ प्रमाणित नहि भेटय। सामाजिक हिंसाक ऐतिहासिक संदर्भ आ कविता द्वारा ओकर प्रतीकारक रचना अलग जाँचल जाए।

३२५९-३२९८क समेकित तुलना पूर्व तेलुगु कवयित्रीसभसँ जोडि एहि कविताकें एकटा नव नामक उद्घोष बनबैत अछि। आलोचनाक उपलब्धि ई अछि, जे काव्यभाषाक सर्वनाम, शाप, प्रकाश आ न्यायालयक रूपककें अलग परखैत अछि।

सीमा ई जे अलिसम्माक ऐतिहासिक जीवनीक स्वतंत्र प्राथमिक अभिलेख नहि देखल गेल अछि।

०७१. गुजराती दलित कविता : पोस्टर आ सहवासक राजनीतिक रूपक

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३२९९-३३८२ ।

३२९९-३३४७मे अनिश गरांगेक “Poster” एक शहरी दृश्यकेँ दलित अनुभवक विस्तृत चिह्न बनबैत अछि। पोस्टर सार्वजनिक सूचनाक माध्यम थिक, मुदा ओकरा जखन अज्ञात देह आ शौचालयक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत अछि तँ सार्वजनिक दृश्यता आ सामाजिक अपमानक विरोध खुलैत अछि। काव्यमे पोस्टरक सतहपर छपल अक्षर आ देहक जीवित अनुभवक दूरी महत्वपूर्ण अछि—दृश्यमान होएब सम्मानित होएबाक समान नहि।

पोस्टरक बहुअर्थकता एकर शिल्पक शक्ति अछि। विज्ञापन, राजनैतिक नारा आ सडकक साक्ष्य एकहि कागजमे रहि सकैत अछि; कविता वस्तु-भाषासँ आधुनिक नगरक असमानता देखबैत अछि। आलोचनामे अवमाननाक प्रत्येक बिम्बक जगह परक समय, काव्यरचना आ आवाजक बिन्दु देखल गेल अछि, नहि कि केवल सामाजिक आलोचनाक घोषणाक रूपमे।

३३४८-३३८२मे राजेन्द्र वडेल ‘जीता’क “Sambhog” निजी शारीरिक सम्बन्धसँ राष्ट्रीय एकताक दावीक समीक्षा करैत अछि। बेटाक नाम ‘भारत’ आ बेटीक ‘भारती’ रखबाक प्रस्ताव भौगोलिक राष्ट्रक नामकेँ व्यक्तिगत रिश्ताक भीतर आनैत अछि। काव्यप्रयोगक विडम्बना ई अछि जे राष्ट्रक विराट आदर्श निजी सम्बन्धक वास्तविक जातिगत विभाजन मेटि देबाक प्रतिज्ञा करैत अछि कि ओहिपर प्रश्न उठबैत अछि। एतय सहवासक काव्यमय प्रस्तुति मात्र प्रेमक भावात्मक वृत्तान्त नहि, सार्वजनिक समताक उक्ति पर परीक्षण अछि। साहित्यिक आलोचनाकेँ शरीरक निजी अनुभव, जातिगत बाधा आ राजनैतिक प्रतीकक अन्तर देखबाक चाही। रचनाकेँ यान्त्रिक सामाजिक नारा मानल जाए तँ नामकरणक नाजुक व्यङ्ग्य आ भविष्योन्मुखता छूटि जाएत।

दुनू कविताक रूपभेद उल्लेखनीय अछि : पोस्टर वस्तु-दृश्यसँ सामूहिक अवमानना बनबैत अछि, सहवास शारीरिक सम्बन्धसँ राष्ट्रीय नामकरणक आलोचना करैत अछि। गुजराती मूल, अंग्रेजी मध्यवर्ती आ मैथिली अनुवादक बिम्बगत सूक्ष्मता अलग जाँचबाक रहत।

०७२. उमेश सोलंकी : जमि जाउ लोकसभ, झाड़ू आ सुधारवादी प्रतीकक सीमा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३३८३-३४७९ ।

३३८३-३४०७मे उमेश सोलंकीक “People, Freeze!” आज्ञार्थक सम्बोधनक आवृत्ति द्वारा सामाजिक जीवनकेँ एकाएक रोकि प्रश्न करैत अछि। ई ‘जमि जाउ’क स्थूल आदेश नहि; अनदेखल अन्याय पर ध्यान केन्द्रित करबाक नाटकीय विधि अछि। ठहरावक क्षणमे सामान्य व्यवहार आ मानल गेल सामाजिक नियम अस्वाभाविक देखाबय लगैत अछि। छन्दक बदला वाक्यक टूटन आ सार्वजनिक उद्घोषक पुनरागमन रचनाक मूल औपचारिक उपकरण अछि।

३४०८-३४४६क “All the Broom-Sticks” मे झाड़ू स्वच्छताक राष्ट्रीय प्रतीक आ स्वच्छताक श्रमिकक जीविका-अपमानक द्वैध इतिहास जगबैत अछि। लेखक गांधी-आम्बेडकरक वैचारिक विवादक सहारे सुधारवाद आ सामाजिक संरचना-परिवर्तनक अन्तर देखैत छथि। मूल राजनीतिक विचारधाराक विस्तृत लेखनक संग तुलना बिनु कविताक रूपकेँ दुनू ऐतिहासिक व्यक्तिक समस्त मतक न्यायसंगत सारांश मानब उचित नहि।

झाड़ू आ पोस्टर दुनू नगरक सार्वजनिक वस्तु अछि, मुदा काव्यमे ओकर अर्थ श्रमक अनुभवसँ बनैत अछि। प्रतीकक राजनीतिक स्वीकृति बढ़ला परो जँ श्रमिकक वेतन, स्वामित्व आ गरिमा नहि बदलैत अछि, तँ बाहरी सुधारक सफलता प्रश्नांकित बनैत अछि। साहित्यिक शिल्प एहि विरोधकेँ वस्तुक दुहरा उपयोगसँ स्पष्ट करैत अछि। ३४४७-३४६०मे तेलुगु आ गुजराती काव्यभाषाक तुलना अछि। तेलुगु स्त्रीकवितामे चमड़ा, साड़ी आ घरेलू शरीरक सूक्ष्म वस्तु-व्यवस्था; गुजराती कवितामे पोस्टर, राष्ट्रनाम आ सार्वजनिक स्वच्छताक चिह्न प्रबल अछि। ई उपलब्ध पाठक भेद थिक, सम्पूर्ण भाषाक दलित साहित्यक स्थिर विशेषता नहि। व्यापक तुलनात्मक सामान्यीकरण लेल प्रतिनिधि रचनासंग्रहक आवश्यकता अछि।

३४६१-३४७९क अनुवाद-टिप्पणी पुनः सावधान करैत अछि : दोसर भाषाक मध्यस्थ अनुवादक माध्यमसँ एक भाषा-समुदायक रूपक दोसरा भाषामे बदलि सकैत अछि। एहि समीक्षामे मूल रचना-अनुवादक पारदर्शिता आ सामाजिक आलोचनाक पाठगत आधार निर्दिष्ट कएल गेल अछि; अनुवादक प्रयोगक निष्ठा एखन पृथक परीक्षणक विषय अछि।

०७३. बसुदेव सुनानी : ओड़िया दलित कविताक बिम्ब, आशा आ विडम्बना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३४८०-३६७९ ।

मूल अनुच्छेद ३४८०-३६७९मे ओड़िया दलित कविताक चर्चा गुजराती प्रतिरोधी काव्यक पाछाँ आरम्भ होइत अछि। बसुदेव सुनानीक काव्यमे शंख, वज्र, बूँद, बीया, गर्भवती स्त्री, माछ आ समुद्र-दृश्यक अनेक स्तर भेटैत अछि। लेखकक विशेष ध्यान एहि बातपर अछि जे पीडा आ प्रतिरोधक बीच आशा सेहो उपस्थित अछि, मुदा आशा निर्विवाद विजयक घोषणा नहि। बूँदक रङ्गधनुष आ सुखाइत पोखरि एकहि साहित्यिक संसारमे सम्भव अछि।

३५०१-३५५८मे अनेक पौराणिक चिह्नकें दलित अस्तित्वक भाषामे रूपान्तर कएल गेल अछि। पाञ्चजन्यक शंख वा वज्रक उपयोग कविताक आवाजकें महाकाव्यीय शक्ति दैत अछि, मुदा ई प्रतीकक राजनैतिक अर्थ कविताक पाँतिमे उत्पन्न होइत अछि; मूल पुराणक घटनाक तिथिसिद्धि पर निर्भर नहि। गर्भवती स्त्रीक भविष्य-चेतना कविता भीतर अबैत पीढ़ीक प्रति उत्तरदायित्वक संकेत बनबैत अछि। एहि प्रतीकसभक वस्तु-स्थान जाँचल जाए तँ केवल नाराक बदला विविध अर्थस्तर खुलैत अछि।

३५६०-३६०७मे “Address” आ माछसम्बद्ध कविताक विरोधाभास मुख्य अछि : सामाजिक जीवनमे उपस्थित होइतो अदृश्य मनुष्य अपन ठिकाना बतएबाक स्थानपर स्वप्न माँगैत अछि। माछ अथवा नागक बिम्ब दुविधा जनबैत अछि—व्यवस्थाकें चलैत रखब कि ओकर आधार पर प्रश्न उठायब? एतय क्रियाशीलता मात्र विद्रोहक प्रदर्शन नहि, कठोर नैतिक विकल्पक बोध अछि।

३६०८-३६७९मे सदानन्द आ बगुलाक रूपक, ओड़िया-तेलुगु-गुजराती तुलना तथा लोककथनक उपयोग होइत अछि। किछु प्रसङ्गमे भोला पात्र सामाजिक सत्य देखैत अछि जे शिक्षित विवेचकक पकड़सँ दूर रहैत अछि। मुदा एहि पात्रकें समस्त दलित अनुभवक सार्वभौम प्रतिरूप घोषित नहि करब उचित; स्थानीय कथा-सन्दर्भ आ पाठक सामाजिक स्थिति महत्त्वपूर्ण अछि।

लेखकक उपलब्धि ई अछि जे “प्रतिरोधी कविता”कें एकहि भावक यान्त्रिक वर्ग नहि मानि संशय, उम्मीद, अन्तरंगता आ विडम्बनाक वैविध्यमे देखैत छथि। मूल ओड़िया, मध्यवर्ती अंग्रेजी आ मैथिली अनुवादक पाठ-बोधक सीमा स्पष्ट रहत।

०७४. 'The Crow' आ 'Black Ink' : तेलुगु दलित कथाक नैतिक विडम्बना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३६८०-३९१०।

३६८०-३७५९मे "The Crow"क कथासमीक्षा बान्दोडु नामक पात्र आ कौआक माध्यमसँ उपेक्षित मानवक अर्थ जाँचैत अछि। भोजन, घृणा, बीमारी आ सामाजिक दूरी एतय केवल प्रतीकक स्तरपर नहि, कथाक परिस्थिति रचबैत अछि। कौआक संग पात्रक सम्बन्ध मनुष्य-पशु भेदक सरल नैतिक शिक्षा नहि; एक दोसरा पर निर्भर जीवनक असहजता अछि। मुक्ति 'शाप' बनबाक विरोधाभास पाठककें जाँचए बाध्य करैत अछि जे कोन सामाजिक सीमा सँ मुक्ति आरम्भ होइत अछि आ कोन आधार टुटला पर मुक्ति स्वयं दण्ड लगैत अछि।

३७६०-३८४९मे "Black Ink"क श्रीया आ अनुपस्थित महिमा सन पात्र द्वारा कथाक नैतिक तनाव गढल गेल अछि। अनुपस्थित पात्र कथानकमे प्रत्यक्ष क्रिया नहि करितो उपस्थित पात्रक निर्णय पर प्रभाव डालि सकैत अछि। एहन रचनाक शिल्प जाँचताना कथन-विलम्ब, तथ्यक क्रमिक उद्घाटन आ दृश्यगत पटलपर विशेष ध्यान चाही। शुरूक तितली आ अन्तक इल्लीक रूपान्तर प्रतिगमन वा असुरक्षा—दुनू सम्भावित संकेत दैत अछि; कविता-जकाँ प्रत्येक वस्तुकें सुनिश्चित व्याख्या देब उचित नहि।

३८५०-३९१०क तुलनात्मक प्रकरणमे दुनू कथा व्यक्तिगत दुविधाक भीतर जातिक सार्वजनिक शक्ति दिखबैत अछि। पहिल कथामे अनौपचारिक श्रम आ अपवर्जित भोजनक प्रश्न, दोसरमे सम्बन्धक भीतर सामाजिक परिचयक देर-सँ खुलब कथा-मोड़ बनैत अछि। परिणामक नैतिकता तखन गहिरी होइत अछि जखन पात्रकें पूर्ण पीड़ित अथवा पूर्ण दुष्टक स्थिर खाँचामे नहि राखल जाए।

मूल अंग्रेजी प्रस्तुतिक आधारपर कथानक-क्रमक समीक्षा सम्भव अछि, मुदा तेलुगु मूलक स्थानीय सम्बोधन, व्यञ्जनात्मक शब्द आ कथन-स्वरक सूक्ष्मता पूर्ण उपलब्ध नहि। मैथिली अनुवादक निर्णयक तुलना लेल तेसर पाठ आवश्यक रहत। एखन दाबी केवल उपलब्ध पाठक रचनात्मक संरचना धरि सीमित अछि।

दलित कथा आ कविता एकरेखीय तुलनीय नहि : कवितामे प्रत्यक्ष उद्घोषकें कथामे पात्र, घटना आ अधूर जानकारीक माध्यमसँ व्यक्त कएल जा सकैत अछि। ई भेद एहि अध्ययनक मुख्य आलोचनात्मक निष्कर्ष अछि।

०७५. 'Jigiri' : जीविका, पशु-स्नेह आ भूमि-अधिकारक उपन्यास-विरोधाभास

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३९११-४०६९ ।

३९११-३९७८मे "Jigiri" उपन्यासक इमाम आ शादूलक सम्बन्ध प्रस्तुत अछि । भालू संग घूमि जीविका कमौनिहार पात्रक स्नेह केवल मनोरञ्जनक बाहरी सम्बन्ध नहि, अपन रोजी, शरीर आ मानसिक आश्रयक आधार अछि । वन्यजीव-संरक्षणक आधुनिक कानून आ परम्परागत जीवनोपाय बीच टकराव उपन्यासकें एकपक्षीय रूपरेखा सँ बाहर लऽ जाइत अछि । एतय पशुकें केवल सम्पत्ति कहब गलत, मुदा स्नेहक आधारपर जुल्म आ अधिकारक सभ प्रश्न मिटि जाइत अछि, ई सेहो मानल नहि जा सकैत अछि ।

३९७९-४०१५क प्रमुख संघर्ष भूमि, आर्थिक सुरक्षा आ पीढ़ीगत सोचक अछि ।

परम्परागत कलाकार अपन जनावरसँ बनल जीवनरूप छोडि स्थिर भूमि-सम्पत्ति स्वीकार करथि कि नहि—ई निर्णयक आर्थिक शर्त सभ पात्रक लेल समान नहि । सामाजिक नीति जँ जनावरक रक्षा करैत अछि, मुदा कलाकारक जीवनकें बेघर छोडि दैत अछि तँ संरक्षण आ पुनर्वास बीच रिक्ति उजागर होइत अछि । एकर साहित्यिक परिणाम भालूकें केवल प्रतीक नहि, पात्रक इतिहासक अंग बनायब अछि ।

४०१६-४०३१मे उपन्यासक अन्तिम भाग भाषा-संयमद्वारा प्रभाव उत्पन्न करैत अछि ।

शोकक वर्णन जतेक संक्षिप्त अछि, पाठकक जीवन-अनुमान ओतेक विस्तृत भऽ सकैत अछि । आलोचनामे मौनकें केवल करुण रसक संकेत मानल नहि गेल; ई

सामाजिक विकलताक अनिर्णीत प्रश्न सेहो अछि । पात्रक अन्तिम निर्णयक कारण एकहि नैतिक दोषक कारण मानलासँ उपन्यासक बहुस्तरीयता नष्ट होएत ।

४०३२-४०६९क समेकित विवेचन कवितासभक प्रत्यक्ष प्रतिरोधक तुलनामे कथानकक जटिल नैतिक चुनाव पर बल दैत अछि । मूल ग्रन्थक अपन निर्णय कतेको ठाम भावात्मक सघनता रखैत अछि । पाठक-अन्तरक आलोचना ताहि कारणें उचित अछि जे दारिद्र्य, कानून, पशु-अधिकार आ जमीनक मूल्य सभक स्वतंत्र कारणप्रणाली अछि ।

एहि उपन्यासक मैथिली अनुवाद अगर अंग्रेजी मध्यस्थतासँ तैयार भेल अछि, तँ पशु-पालनक स्थानीय शब्दावली, नाटकीय संवाद आ अन्तिम घटनाक स्वरक पुनर्जाँच आवश्यक अछि । एखन उपलब्ध पाठकें आधार मानि कथ्य-शिल्पक निष्कर्ष देल गेल, मूल तेलुगु पाण्डुलिपिक प्रमाण नहि ।

०७६. दलित काव्यशास्त्र : रस, ध्वनि आ श्रमिक अनुभवक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ४०७०-४३३५ ।

४०७०-४१२९मे ग्रन्थ अपन अनूदित दलित रचनासभकेँ एक व्यापक काव्यशास्त्रीय परियोजनाक रूप दैत अछि। लेखकक तर्क अछि जे जातिगत श्रम, अपमान, भूख आ संघर्षक सौन्दर्य-अनुभवक लेल पूर्व-प्रचलित रसविभाग पर्याप्त नहियो भऽ सकैत अछि। एहि दाबीक महत्त्व ई नहि जे रसशास्त्रमे रौद्र अथवा वीर रस पहिनेसँ अनुपस्थित छल, बल्कि ई जे सामाजिक प्रसङ्ग, भावक केन्द्र आ पाठकीय दूरी बदलला पर रसास्वादक स्वरूप नव प्रश्न उठबैत अछि।

४१३०-४१९८मे शृङ्गार, रौद्र, वीर, करुण आ वीभत्सक वर्गीकरण दलित पाठक उदाहरणसँ पुनर्विचारित अछि। शृङ्गारमे प्रेमक सामाजिक बाधा, करुणमे दीन-परदुःखक जगह श्रमिकक अनुभव आ वीभत्समे घृणित कहल गेल पदार्थक सम्मान— ई विवेचन रसक सामाजिक दिशाकेँ बदलैत अछि। मुदा प्रत्येक नव सामाजिक अनुभवकेँ अनिवार्य रूपसँ नव स्थायी भाव घोषित करब स्वतः सिद्ध नहि; अनुभाव, विभाव, सञ्चारी भाव आ रस-निष्पत्तिक परम्परागत कसौटीक साथ प्रत्यक्ष तुलना चाही।

४१९९-४२६८मे अद्भुत, शान्त तथा प्रतिरोधक सामुदायिकता सम्बन्धी प्रश्न अछि। लेखकसँ अलग दृष्टिसँ विचारल जाए तँ दलित सौन्दर्यशास्त्रक सृजनात्मक उपलब्धि केवल क्रोधक प्रतिष्ठा नहि, विडम्बना, हास्य, अभावक वस्तुगत विवरण आ खुलल अन्तक सौन्दर्य-रूप सेहो अछि। सुभद्राक साड़ी, गौरीक ढोल आ “The Crow”क अपवर्जित सम्बन्ध तीन अलग कला-प्रक्रिया उपयोग करैत अछि। एकटा सिद्धान्तक अत्यधिक समानीकरण एहन भिन्नता हराएत।

४२६९-४३३५क समाहार अनुवाद, शिक्षण आ स्थानीय लेखन-प्रेरणा पर केन्द्रित अछि। दलित अनुभवक प्रतिनिधित्वक नैतिक अधिकार आ साहित्यिक कौशलकेँ प्रतिद्वन्द्वी बनौनाइ आवश्यक नहि। जँ अनुवाद सहानुभूतिक विस्तार करैत अछि तँ ओकर शब्दनिष्ठा, स्थानिक नामक सम्मान आ मूल कृतिक स्वरक अपरिवर्तन सेहो समान रूपसँ जाँचनीय अछि।

एहि प्रकरणक उपलब्धि मिथिला-केन्द्रित आलोचना केँ भारतीय भाषा-प्रदेशसभक नव सौन्दर्यात्मक अनुभवसँ जोडब अछि। ओकर सीमा पूर्ण स्रोतभाषिक पाठान्तरक अभाव आ प्रस्तावित सिद्धान्तक कुछ वर्गीकरणक अपर्याप्त परिभाषा अछि।

०७७. ‘विद्यापतिक पिया देसन्तर’ : गीत-पङ्क्ति, प्रवासन आ दृश्यात्मक पुनर्रचना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ४३३६-४६१४ ।

४३३६ सँ “Vidyapati’s Piya Desantar” नामक नाट्य-गीतसमूहक विस्तृत पाठ अबैत अछि । गीतसभमे प्रियक परदेस जएबाक अनुभव, परिवारक भीतर स्त्रीक प्रतीक्षा आ यात्रिकक आगमन अनेक दृश्य बनबैत अछि । एकहि विरह-अनुभव भिन्न राग आ दृश्यगत प्रसङ्गमे दोहरायल अछि । एहिमे पुनरावृत्ति केवल सारखी कथाक नव रूप नहि; मंच पर कोन पात्र देखाइत अछि, कोन गबैत अछि आ कोन अनुपस्थित रहैत अछि—ई विवेक महत्त्वपूर्ण अछि ।

गीतमे सासु, ननदि, यात्रिक आ अनुपस्थित प्रियक नाम/भूमिका बारम्बार बदलैत अछि । पाठककें गीतकारक प्रत्यक्ष कण्ठ आ नाटकीय पात्रक आवाजक अन्तर राखब जरूरी अछि । प्रत्येक गीतकें लेखकक आत्मकथा कहि देब अथवा गीतक स्त्रीपात्रकें वास्तविक जीवनीगत व्यक्तिक रूपमे पढ़ब प्रमाणगत अतिक्रमण होएत ।

४३५०-४५८५मे रागधनाशी, मालव, कोलरा आदि उल्लेख सांगीतिक परम्पराक महत्त्वपूर्ण सूचक अछि । मुदा रागनाम उपस्थित रहने सँ एखनक निश्चित स्वररचना स्वतः ज्ञात नहि; लय, धुन, हस्तलिखित स्वरसङ्केत आ जीवित गायनक साक्ष्य चाही । पदक मूल नेपाली प्रतिलिपि, आधुनिक लिप्यन्तरण आ नाट्यप्रस्तुतिक पाँतिक्रम मिलान कएलापर पाठान्तरक ऐतिहासिक मूल्य स्पष्ट होएत ।

“देसन्तर”क अर्थ मात्र प्रेमविरह नहि, आर्थिक स्थानान्तरण आ घर-समाजक समयबोध सेहो अछि । तथापि गीतक कथित कालमे कतेक वास्तविक श्रमिक प्रवासन छल, ओकर ऐतिहासिक प्रमाण अलग जुटाएब पडत । आधुनिक प्रवासी श्रमिकक पीड़ा गीतक नव अर्थ खोलि सकैत अछि, मुदा मूल रचनाक संरचनाकें अनिवार्य समकालीन सामाजिक दस्तावेज बनब उचित नहि ।

एहि नाट्य-गीतक मुख्य शिल्प सात अथवा अनेक दृश्यकें जकड़ि राखनिहार स्त्री-कण्ठ, प्रवेश-निष्क्रमण, संगीत आ पुनरागमन अछि । आलोचनामे गीतक शब्दार्थक संग मंचीय क्रिया, दर्शकक प्रतीक्षा आ अन्तिम अनिर्णीत भावक परीक्षण अपेक्षित मानल गेल ।

०७८. 'विद्यापतिक विदेसिया' : नाट्यविधा, लोकपरम्परा आ दू विद्यापतिक प्रश्न

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ४६१५-५३३५ ।

४६१५-४६९४मे लेखक स्वयं नाट्यरचनाक विधा पर प्रश्न उठबैत छथि : ई पुरान परम्पराक पुनरुत्थान, नव रचना, रूपान्तर अथवा मिश्रित काव्यरंगमंच? ई

आत्मप्रश्न आलोचनात्मक उपयोगिता रखैत अछि, कारण "विदेसिया" शब्द भोजपुरी लोकनाट्य आ मैथिली विरहगीत दुनू संदर्भमे अलग इतिहास रखैत अछि। मात्र भावसाम्यक आधारपर किसी विशिष्ट मंचीय शैलीक सीधा वंशसम्बन्ध घोषित करब जल्दबाजी होयत।

४७१२-४८१७मे गायत्री स्पीवाक, दीपेश चक्रवर्ती, ए. के. रामानुजन, रुस्तम भरूचा आ एडवर्ड सईदक माध्यमसँ रचनाक विविध पुनर्पाठ प्रस्तुत अछि। एकर विशेषता एकहि नाटककें अनूदित लोकवाणी, आधुनिक कालबोध, शास्त्रीय-लोक सम्बन्ध आ दर्शकक भूमिकासँ पढ़बाक सम्भावना अछि। सीमा ई जे सिद्धान्तक नाम जोड़ने मात्रसँ गहन व्याख्या सिद्ध नहि; प्रत्येक सैद्धान्तिक प्रतिज्ञाकें दृश्य, पात्रक शब्द अथवा प्रदर्शनक निर्णय सँ जोड़बाक चाही।

४८१८-५०२०मे विद्यापति नामक अनेक पञ्जी-प्रविष्टि गिनल गेल अछि। समान नामक अनेक व्यक्ति होएब निश्चित नाम-अभिलेखीय तथ्य होयत, मुदा एक विशिष्ट पदावली-कविक तिथि अथवा परिचय स्वतः स्पष्ट नहि करैत अछि। लेखकक दू विद्यापतिक सिद्धान्त इतिहासलेखनक महत्त्वपूर्ण परिकल्पना अछि; ओकर प्रमाणक लेल पाठभाषा, उद्धरण-सम्पर्क, लिखित प्रतिक काल आ विश्वसनीय दान/राजकीय दस्तावेज अलग मिलान माँगैत अछि।

५०२१-५१४५मे संस्कृत-अवहट्टक विद्यापति, पदावलीक कवि, ज्योतिरीश्वर, चन्दा झा आदि अनेक नामक सम्बन्ध नव ऐतिहासिक प्रतिज्ञा निर्मित करैत अछि। स्रोतक वैचारिक विरोध एवं औपचारिक शैलीक अन्तर व्यक्तिक भिन्नता संकेत कऽ सकैत अछि, मुदा रचनाकारक प्रत्यक्ष पहचान मात्र वैचारिक विरोधसँ सिद्ध नहि। मनुष्य अपन जीवनमे भिन्न विधा आ दृष्टि लिखि सकैत अछि; ताहि लेल ऐतिहासिक विवेचनमे प्रमाणक क्रम स्पष्ट होयत।

५१४६-५३३५मे नृत्य, नट-नटिनक गीत, संवाद आ पदावलीक अलग रूपान्तर भेटैत अछि। एहि विस्तृत सामग्रीमे रचनाक काव्यरूप, मंच पर जाति-लिङ्गक प्रस्तुति आ गीतक आन्तरिक नाटकीयता—तीनू पहलू सामूहिक विश्लेषण अपेक्षित करैत

अच्छि । मूल पाण्डुलिपि वा वास्तविक मंचनक साक्ष्य उपलब्ध नहि रहने नाटकक लोकप्रियता, प्राचीनता वा प्रस्तुति-सिद्धि क दावा सीमित राखल गेल ।

०७९. मैथिली समालोचनाशास्त्रक प्रस्ताव : भारतीय आ पाश्चात्य पद्धतिक संयोजन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ५३३६-५६१५ ।

५३३६-५३७३मे मैथिली साहित्यक आलोचनापद्धति लेल एक व्यवस्थित आधार रचबाक प्रस्ताव अछि। स्थानीय अनुभवक विशेषता आ मानवीय अर्थक व्यापकता, गद्य-पद्यक भेद तथा सामाजिक सन्दर्भ—ई कसौटीसभकेँ समानान्तर रखल गेल। एतय साहित्यिक विधाक प्रकृतिअनुसार परीक्षण चुनबाक आग्रह उचित अछि : उपन्यासक कथनकाल, कविताक ध्वनि आ नाटकक प्रदर्शन-प्रक्रियाकेँ एकहि मापकसँ नहि तौलल जाए।

५३७४-५४११मे रस, ध्वनि, अलङ्कार आ रीति-अनुशीलनक चर्चा अछि। मूल प्रस्ताव श्रम, अभाव, प्रतिरोध, अस्मिता आ प्रवासक भाव-अनुभवकेँ आलोचनामे महत्त्व देबैत अछि। मुदा नव अनुभूति-श्रेणीकेँ शास्त्रीय “स्थायी भाव” घोषित करबाक लेल पारिभाषिक कसौटी निर्दिष्ट होएब आवश्यक अछि। रसक अनुभव सामाजिक रूपेँ बदलि सकैत अछि; नामक फेरबदल आ सिद्धान्तक ठोस विस्तार अलग बात अछि।

५४१२-५४५५मे उत्तर-औपनिवेशिक, स्त्रीवादी, मार्क्सवादी आ उत्तर-संरचनावादी विचारक समावेश अछि। सभ दृष्टि एकरे सिद्धान्तक सहमति नहि; उदाहरणतः पाठक स्वायत्तता, वर्गसंघर्ष आ लैङ्गिक अनुभवक प्राथमिकता अनेक ठाम विरोधी निष्कर्ष दे सकैत अछि। एकटा समेकित पद्धति एहि विरोधकेँ मिटाएबाक बदला प्रश्नानुसार समुचित साधन चुनबाक चाही।

५४५६-५५५५क व्यवहारिक सूची आलोचनाकेँ पाठ, रूप, समाज आ अनुवादक अलग चरणमे बाँटैत अछि। प्रकाशित समीक्षा लेल ई उपयोगी कार्ययोजना बनि सकैत अछि, जँ प्रत्येक चरण वास्तविक पाठ-उद्धरण आ स्रोत-संकेत सँ भरल हो। केवल उपशीर्षकक संख्या वृद्धि गहनता नहि बनबैत; अलग चरणक निष्कर्ष परस्पर विरोध करे तँ लेखककेँ ओहि विरोधक उत्तर देब पड़त।

५५५६-५६१५मे सिद्धान्तक सीमा आ प्रयोगसम्भावना स्वीकारल गेल अछि। आलोचनात्मक विश्वासनीयताक लेल ई आत्मसीमा महत्त्वपूर्ण अछि। भविष्यक व्यवहारिक उपयोग लेल समान मूल पाठपर भारतीय, पाश्चात्य आ नव्य न्यायीय पद्धतिक अलग परिणामक तुलनात्मक प्रमाण-सारिणी बनब आवश्यक होयत।

०८०. दलित समालोचनाक विशिष्टता आ आभा झाक आलोचनात्मक गद्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ५६१६-६०१८ ।

५६१६-५६४७मे दलित साहित्यक आलोचना लेल सामान्य सिद्धान्तक अलग संशोधन प्रस्तावित अछि। जातिक अनुभव, आर्थिक श्रम, स्त्रीत्व, सामाजिक अपमान आ राजनीतिक प्रतिरोध एक-दोसरसँ संबंधित रहितो स्वतंत्र रूपेँ पढ़बाक चाही। एहि विविधताकेँ एकल 'दलित रस' अथवा एकहि सामाजिक सूत्रमे समेटनाइ अनुचित; कविता, कथा, नाटक आ आत्मकथा अपन अलग ज्ञान-रचना करैत अछि।

५६४८-५७२१मे रस-ध्वनि-अलङ्कारक दलित पुनर्पाठ अछि। आक्रोश, संघर्ष, अपमानक प्रतिप्रसङ्ग आ सामूहिक मुक्ति सम्भावित नव व्याख्यात्मक वर्ग अछि; प्रत्येककेँ शास्त्रीय स्थायीभावक दर्जा दैत समय पूर्व रसशास्त्रक पारिभाषिक व्यवस्था मिलाएब आवश्यक रहत। काव्यमे क्रोधक नैतिक आधार भऽ सकैत अछि, मुदा रचनाक कलात्मक साधना ओकर भाषा, रचना-सम्बन्ध आ बिम्बद्वारा परीक्षणयोग्य बनत।

५७२२-५८८९मे स्त्रीवादी, मार्क्सवादी आ आन्दोलनी आलोचना तथा अनुवाद-विश्लेषणक मापदण्ड प्रस्तुत अछि। मूल भाषा, अनुवाद, सामाजिक-भौगोलिक पृष्ठभूमि, संदर्भपात्र आ संवेगक सम्बन्धक तुलनात्मक पठन एकर बल अछि। सीमा ई जे एकरा बिना उदाहरणक सर्वव्यापी सूत्र बनाओल जाए तँ भिन्न दलित लेखकसभक अनूठ रचना-स्वर अदृश्य होयत।

५९००-५९७९मे आभा झाक "दाइदिगम — मध्यमार्गक अन्वेषणक कथा" नामक आलोचनात्मक लेखक परीक्षण अछि। मूल विवरण अनुसार ई लेख विदेहक ३६९म अंक (२०२३) सँ सम्बद्ध अछि आ एक कथा-संग्रहक भीतर स्त्रीक स्वायत्तता, विवाहसम्बन्ध आ कथा-दृष्टिक विवेचन करैत अछि। आलोचिकाक "सामान्य पाठक"क आत्मविनयकेँ मूल लेखक ध्वनि आ औचित्यक माध्यमसँ पढ़ैत छथि। ई सम्भावित व्याख्या अछि; लेखकक मनोभावक निश्चित जानकारी नहि।

५९८०-६०१८मे आलोचनात्मक लेख, समीक्षित कथा-संग्रह आ स्त्री-अनुभवक तुलनात्मक सन्दर्भ समेटल गेल अछि। एक वास्तविक लेखक आधारपर आलोचिकाक सम्पूर्ण जीवनक गद्य-शिल्प वा व्यापक साहित्यिक इतिहास निर्धारित नहि कएल जाए। एहि प्रकरणक शक्तिशाली पक्ष एक छोट प्रामाणिक लेखसँ आलोचनाक प्रश्न उठब अछि; सीमा स्रोत-दस्तावेजक संख्या आ पाठान्तरक उपलब्धता अछि।

०८१. अभिलाष ठाकुर : बीहनि कथा आ व्यङ्ग्यक सूक्ष्म राजनीतिक क्षण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६०१९-६०७७ ।

६०१९-६०७७क लेखक-परिचय अभिलाष ठाकुरक बीहनि कथा आ लघु व्यङ्ग्यक आधारपर बनल अछि। “साँठ गाँठ” आ “नोटबन्दी”क जकाँ रचनाक उल्लेख सामाजिक व्यवहारक छोट दृश्यसँ अर्थ उत्पन्न करबाक एक शैली चिन्हैत अछि। लघुकथा अपन शब्दसंख्याक कमीमे नहि, दृश्य-सीमा आ अर्थक संकेतनमे पूर्ण होइत अछि; ताहि कारणेँ किछु पाँतिक लिखित सामग्रीकेँ केवल वैचारिक बयान मानलासँ ओकर कथा-प्रक्रिया हेराइत अछि।

“नोटबन्दी”क संदर्भमे २०१६क मुद्रा-निर्णय ग्रामीण नकदी व्यवहारक कठिनाई पर आधारित कथात्मक परिस्थिति दैत अछि। कथामे कतेक घटना देखाओल गेल अछि, पात्रक श्रम आ संवाद कथ्यकेँ कोन रूप दैत अछि, ई मूल पाठसँ निश्चित होयत। राजनीतिक निर्णयक वास्तविक आर्थिक प्रभावक तथ्य बाह्य सर्वेक्षणसँ जाँचनीय अछि; कथा तकर अनुभवात्मक रूपक प्रस्तुत करि सकैत अछि, सांख्यिकीय प्रमाणक पूर्ण विकल्प नहि।

मूल ग्रन्थ हरिमोहन झाक व्यङ्ग्यपरम्परा आ ब्रेख्तीय आलोचनात्मक दूरीक सहारे एहि लघुरूपकेँ समझबैत अछि। हास्यक तात्कालिक प्रभाव आ सामाजिक आलोचनाक जटिलता सदिखन एकसंग नहि होइत अछि। हास्य प्रभावी भेलासँ आरोप सत्य सिद्ध नहि; मुदा सामाजिक व्यवस्थितीकृत विसङ्गतिपर पाठकक ध्यान आकर्षित करबाक ई साहित्यिक साधन थिक।

एहि परिचयक उपयोगिता डिजिटल पत्रिकामे छूटि जाइत लघु रूपक साहित्यिक इतिहास सुरक्षित करब अछि। सीमा ई अछि जे उपलब्ध उदाहरण थोड़ अछि; लेखकक समग्र कथासाधनाक निश्चित दर्जा देबाक लेल सम्पूर्ण प्रकाशित रचनाक पञ्जी, मूल पाठ आ प्रकाशनक्रम जाँचब आवश्यक अछि।

०८२. कुन्दन कुमार कर्ण : गजल, बालगजल आ हजलमे विधागत अनुशासन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६०७८-६१६१।

६०७८-६१६१मे कुन्दन कुमार कर्णक गजल, बालगजल, हजल आ सामाजिक व्यङ्ग्यक कृतिपञ्जी भेटैत अछि। “आँगनमे कुचल कौआ”, “आरो चिचियाउ” आ आन रचनाक शीर्षक अभिव्यक्तिक तीक्ष्णता सूचित करैत अछि, मुदा केवल शीर्षकसँ काव्यक छन्दसिद्धि अथवा सामाजिक तात्पर्य निश्चित करब अनुचित अछि। गजलक औपचारिक परीक्षणक आधार बहर, काफिया, रदीफ, शेरक स्वायत्तता आ मात्रा-नियमक वास्तविक पाठ होयत।

हजल सामाजिक उपहासक एक विशिष्ट रूप अछि। गजलमे प्रेम अथवा आध्यात्मिक विरहक परम्परा रहितो हजल व्यङ्ग्यात्मक उलटबाँसीक माध्यम बनैत अछि। रचनाक लक्ष्य व्यक्ति अछि अथवा एक व्यापक सामाजिक प्रक्रिया, एकर भेद लेखकक नैतिक दृष्टिक परीक्षण करैत अछि। व्यङ्ग्यक हास्य-रसक संग निन्दा आ राजनैतिक आलोचनाक सीमा अस्थिर रहि सकैत अछि।

अगिला मूल रचनामे पाठकसँ आज्ञापूर्ण सम्बोधन आ श्रवण-उद्घोषक पुनरावृत्ति उल्लेखित अछि। ई वाक्यरूप पाठककें निष्क्रिय दर्शक सँ संवादक सहभागी बनबैत अछि। मुदा छन्द-निर्णय बिना केवल भाषाक तीखापनकें गजलक औपचारिक श्रेष्ठता मानि देब स्वीकार्य नहि।

मूल पुस्तक विदेह सदेहक विविध अंकक स्रोत-संकेत दैत अछि; एहि लघु सामग्रीक लेखकवार कृतिपञ्जी तैयार करब सन्दर्भ-सुरक्षाक उपयोगी चरण अछि। पूर्ण कला-मूल्याङ्कन लेल उद्धृत अंकक मूल देवनागरी प्रति आ प्रतिलिपिक सत्यापन शेष अछि।

०८३. अजित कुमार झा : पाठकीय विनय, सम्पादित संग्रह आ समालोचनात्मक प्रमाण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६१६२-६४०२ ।

६१६२ सँ अजित कुमार झाक आलोचनात्मक परिचय आरम्भ होइत अछि । “जतबे बुझलहुँ ततबे लिखलहुँ”क पाण्डुलिपि लेखकक स्वतः प्रस्तावित पुस्तक नहि, आशीष अनचिन्हार द्वारा विविध विदेह अंकसँ संकलित सामग्रीक पुस्तक-रूप मानल गेल अछि । एहि सम्पादकीय परिस्थितिमे लेखकक मूल लेख, प्रकाशित संस्करण, चयनक्रम आ सम्पादकक हस्तक्षेप अलग पहचानब महत्वपूर्ण अछि । पुस्तकक रूप लेखकक हस्ताक्षरक एकल निर्णयक फल नहि हो सकैत अछि ।

६२०१-६२०६मे चौदह लेख आ एक पाठकीय प्रतिक्रिया सहित संग्रहक संगठन बताओल गेल अछि । लेखक स्वयं अपना केँ मुख्यतः पाठक मानबाक विनय प्रकट करैत छथि । एहि कथनकेँ केवल विनम्रताकोषक रीतिमे न पढ़ि आलोचनाक स्थिति-बोधक रूपमे जाँचब उचित अछि : पाठक अपन अनुभवक प्रमाण की दैत छथि, केना विवादित कृतिक पक्ष-विपक्ष रखैत छथि, आ पाठकत्व कहाँ समीक्षकीय अधिकार बनैत अछि? जगत मे पढ़निहारक अनुभव आवश्यक अछि, किन्तु स्वतः निष्पक्षता सुनिश्चित नहि ।

६२७४-६३२२क विवेचन नव आलोचना, प्रत्यक्षपाठ आ न्यायीय प्रमाणक तुलनात्मक दृष्टि जोड़ैत अछि । एकटा लेखमे कृतिक ठोस उद्धरण भेटब समीक्षाक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि, मुदा समीक्षा पाठक बोधसँ बाह्य ऐतिहासिक तथ्यपर पहुँचलाक बाद स्रोतवर्ग बदलि एत । मूल पुस्तक किछु जगह अपन स्मृति-वाचन आ पाठाधारित निर्णयकेँ निकट आनैत अछि; एतय समय, दृष्टि आ उद्धरणक सीमा साफ करब आवश्यक अछि ।

६३२३-६४०२मे समालोचनाक बल आ सीमा दुनू प्रत्यक्ष उल्लिखित अछि : किछु लेख सूक्ष्म पाठपठन करैत अछि, किछु व्यक्तिचित्रक प्रशंसात्मक स्वरधरि सीमित रहैत अछि । ई आत्मसंशोधन आलोचकक इतिहासलेखनमे एक विशेष विश्वसनीयता जोड़ैत अछि । लेखकक लेखनकेँ कठोर सिद्धान्तक नामसँ महिमामण्डित करबाक बदला वास्तविक विश्लेषण-घनत्वका आधारपर क्रमित करब उचित अछि ।

०८४. आमोद कुमार झा : 'बिम्बक पाथर' आ प्रवासक बहुस्तरीय कविता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६४०३-६५८९ ।

६४०३-६५८९मे आमोद कुमार झाक "बिम्बक पाथर"केँ कविता-संग्रहक विशिष्ट सामाजिक आ रूपात्मक परियोजनाक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। ग्रामीण मधुबनीसँ कोलकाताधरि प्रवासक जीवनपथ एहि कवितामे स्थानगत विस्थापन, भाषा-स्मृति आ सम्बन्धक नव तनाव जगबैत अछि। काव्यक 'पाथर'क बिम्ब केवल जड़ता नहि, स्मृतिसँ टकराइत अनुभवक कठिनता सेहो सूचित करि सकैत अछि; एकरे निर्णय मूल कविताक सन्दर्भसँ होयत।

६४४५क "कतहु प्रवासी कतहु परदेशी" सन शीर्षक स्थानीयता आ परायापनक दोहरा अनुभवक केन्द्र बनैत अछि। प्रवासकेँ केवल दुःखक विषय नहि, सामाजिक संजाल, काव्य-सभाकेँ नव भूगोल आ भाषा-प्रेषणक प्रणाली बनबाक दृष्टिसँ सेहो देखब आवश्यक अछि। कोलकाताक साहित्यिक समुदायक उपस्थितिसँ स्रोत प्रकाशित कएल गेल अछि, मुदा कविता भीतर वास्तविक प्रवासी ककर आवाजमे बोलैत अछि, ई शिल्पगत प्रश्न प्रमुख अछि।

६४७३-६५००मे स्त्रीकेँ शृङ्गारक वस्तु मात्र मानब पर प्रश्न उठबैत कविता आ साहित्यिक सभाक व्यङ्ग्यक समीक्षा अछि। स्त्रीपात्रक कण्ठ, विषयमे ओकर निर्णय आ काव्य-वाक्यक स्रोत पहिचानब स्त्रीवादी आलोचनाक आधार होयत; कविता केवल नारीक समर्थनक घोषणा करितो ओकरा स्वयं बोलबाक स्थान नहि देबैत हो, तँ आलोचनात्मक विरोध खुलत।

ग्रन्थक नव्य न्यायीय पद्धति केना उपयोगी भऽ सकैत अछि? कविता पंक्तिक प्रत्यक्ष पाठ, दावीकेँ समर्थन देबैत बिम्ब आ विपरीत अर्थसम्भावनाक तुलनात्मक समीक्षा द्वारा। मुदा दार्शनिक चार प्रमाणसभकेँ काव्यक लाक्षणिक अर्थक शाब्दिक वर्गीकरण बनब अनावश्यक होयत। एहि प्रकरणक उपलब्धि प्रवासी कविता आ सांस्कृतिक संस्थानक सम्बन्धक पक्ष निरूपण अछि।

०८५. आनन्द कुमार झा : लोकमंच, नाटकक सामाजिक प्रश्न आ प्रदर्शनक प्रमाण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६५१०-६८३०।

६५१०-६८३०क अध्ययन आनन्द कुमार झाक नाट्यकृतित्वकें ग्रामीण अस्थायी मंच, धार्मिक उत्सवक सार्वजनिक आँगन आ सामाजिक नाट्यविषयक सन्दर्भमे पढ़ैत अछि। नाटकक साहित्यिक संवाद मात्र पढ़ि पूरा मूल्याङ्कन सम्भव नहि; प्रकाश, अभिनेता, दर्शक, दृश्यगत समय आ प्रस्तुति-स्थलक भौतिक दशा ओकर प्रभाव बदलैत अछि। मूल पुस्तक खुलल स्थानीय मंचकें साहित्येतिहासक सक्रिय संस्था मानैत अछि, ई एहि प्रकरणक विशेष उपलब्धि अछि।

६६६६-६७४५मे दहेज, स्त्रीक अपमान, जकड़बन्ध आ सामाजिक हिंसापर आधारित नाटकक दृश्य महत्त्वपूर्ण अछि। “धधाइत नवकी कनियाँक लहास” सन नाट्यशीर्षक सामाजिक विडम्बनाक तीव्रता प्रकट करैत अछि। जळल देहक दृश्यकें मूल पुस्तक न्यायीय बाधक प्रमाणक उपमा दैत अछि; साहित्यिक नाटकक भीतर ई श्रोता अथवा दर्शकक स्थापित मान्यतापर तीक्ष्ण प्रतिवाद थिक, वास्तविक न्यायालयीय प्रमाणसिद्धिक शाब्दिक विकल्प नहि।

६७०४-६७८५मे भरतक नाट्यशास्त्र, ब्रेख्त, बोआल, स्त्रीवादी आ मार्क्सवादी दृष्टिक तुलनात्मक उपयोग कएल गेल अछि। सामाजिक नाटकक श्रेष्ठता केवल सन्देशमे नहि, घटनाक तनाव, पात्रक स्वतन्त्रता, दृश्य-विन्यास आ दर्शकक सौन्दर्यानुभूतिमे अछि। सकारात्मक आदर्शद्वारा नाटक समापन होएबाक लेखकक प्रतिज्ञा जाँचनीय अछि : हर नाटकक अन्तमे आदर्श समाधान अछि कि किछु ठाम जटिल सामाजिक प्रश्न खुलल छोड़ल गेल?

ग्रन्थ पुस्तक-संस्करण, मुद्रण आ मंचीय इतिहासक अनेक विवरण दैत अछि। प्रमाणित प्रथम प्रदर्शन, निर्देशकक लेख, मंचनक तिथि आ छपल नाटकक पाठ तुलना कएलापर प्रदर्शनशास्त्रीय निर्णय अधिक पुष्ट होयत। एकरे बिना समस्त नाटकक समाजपर प्रत्यक्ष प्रभावक दावा सीमित रहत।

०८६. आशीष अनचिन्हार : गजलक अरूज आ नामसहित आलोचना-पद्धति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ६८३१-७११९ ।

६८३१-७११९मे आशीष अनचिन्हारक कवि, गजलशास्त्र-विश्लेषक, सम्पादक आ आलोचकक संयुक्त भूमिका प्रस्तुत अछि। एहि परिचयमे छन्दशास्त्रीय नियम, सार्वजनिक नामोल्लेख, भाषिक आत्मनिर्भरता आ वैकल्पिक प्रकाशन-मंचक इतिहास आपसमे जुड़ैत अछि। रचनाकारक अनेक भूमिकाकें एकटा समग्र प्रशंसामे विलीन करब अनुचित; लेखकक मूल गजल, नियमात्मक लेख, ऐतिहासिक पञ्जी आ आलोचनात्मक हस्तक्षेप पृथक पाठ-दृष्टि माँगैत अछि।

६९२२-६९५५मे गजलक बहर-काफिया-शुद्धता आ विषयक नूतनता दूनू महत्त्वपूर्ण कसौटी कहल गेल अछि। शिल्पक प्रमाण आ काव्यक मौलिक कथ्य एकहि नहि; निर्दोष अरूज बनला परो काव्यकोषक अनुभवहीनता सम्भव अछि, आ महत्त्वपूर्ण विषय उच्चारित कएलासँ मात्र गजल शिल्प पूर्ण नहि होइत। एहि द्वैध कसौटी पर वास्तविक रचना पढ़ला पर लेखकीय मूल्याङ्कन अधिक न्यायसंगत बनत।

६९५६-७०२८क नामोल्लेखक आलोचना-पद्धतिमे एक स्पष्ट नैतिक प्रतिज्ञा अछि : आलोचना अनाम परोक्ष संकेतक बजाय कृति आ कथनक ठोस पहचान करय। एहि पद्धतिक बल उत्तरदायित्व अछि; खतरा व्यक्तिविशेषपर आरोपक प्रमाणहीन विस्तार अछि। मूल कृतिसँ उद्धरण, प्रकाशन-विवरण आ प्रतिवादी दृष्टिक न्यायसंगत प्रस्तुति बिनु खुलल नामक प्रयोग निष्पक्ष आलोचना नहि बनैत।

पश्चिमी नव आलोचना, भारतीय ध्वनि-रस आ नव्य न्यायीय प्रमाणमीमांसाक समांतर उपयोग लेखनकें विविध प्रश्न दैत अछि, मुदा एक-दोसरक पद्धतिक निहित मान्यता सदा मेल नहि खाइत अछि। मूल पुस्तकक अन्तमे उल्लेखित प्रकाशित तथा आगामी रचनाक स्थिति अलग जाँचब आवश्यक अछि; घोषित अथवा आगामी कृतिनँ उपलब्ध प्रकाशित पुस्तकक प्रमाण नहि मानल जाए।

०८७. छओ समकालीन लेखक : लघु परिचयक अभिलेखीय उपयोग आ सीमा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ७१२०-७२४६।

७१२०-७२४६क समूहमे अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी', प्रभात राय भट्ट, अशरफ राईन, प्रयास प्रेमी मैथिल, अब्दुर रज्जाक आ रवि मिश्र 'भारद्वाज'क परिचय क्रमशः उपस्थित अछि। ई समूह एकटा समरूप काव्य-आन्दोलनक प्रमाण नहि, समकालीन मैथिली लेखनक अनेक स्थानीय आ सामाजिक स्वरक संक्षिप्त पञ्जी अछि। प्रत्येक लेखकक क्षेत्र, प्रकाशन आ विधा स्वतंत्र दर्ज कएल जाए, जँ श्रेणीकरण व्यक्तिगत अनुमानक आधारपर नहि, मूल कृति-सूचक पर आधारित हो।

एहि छोट अध्ययन-इकाइसभक मूल उपलब्धि उपेक्षित अथवा कम चर्चित रचनाकारक नाम इतिहासक दस्तावेजमे सुरक्षित राखब अछि। साहित्यिक कैलनक विस्तार केवल प्रतिष्ठित महाकविसभकें जोड़ब नहि, क्षुद्र पत्रिका आ स्थानीय मंचक रचनात्मक शृंखला दर्ज करब सेहो अछि। मुदा नाम दर्ज भऽ गेलासँ विशिष्ट काव्य-कौशल अथवा असाधारण ऐतिहासिक महत्त्व स्वतः प्रमाणित नहि होयत। काव्य-समालोचनामे मूल रचनाक कम-से-कम एकटा पर्याप्त पूरा पाठ, भाषा, छन्द, भाव-सूत्र आ पाठान्तरक परीक्षण चाही। वर्तमान मूल ग्रन्थक एहन परिचयसभ किछु स्थान पर मूल्याङ्कनक संकेत दैत अछि, मुदा विस्तृत स्रोत-साक्ष्यक सीमा बनेल रहैत अछि। तुलना करबाक समय एहि लेखकसभक असमान संग्रह-संख्या ध्यानमे राखब आवश्यक होयत।

एहि समूहकें एकटा संदर्भप्रकरणक रूपमे राखि प्रत्येक लेखकक प्रकाशित मूल ग्रन्थ प्राप्त भेलाक बाद पृथक विस्तृत समीक्षा निर्धारित करब सटीक सम्पादकीय नीति होयत। एहि समीक्षा मे बिना मूल पुस्तकक अनदेखल रचनाक कथ्य कल्पित नहि कएल गेल अछि।

०८८. अरविन्द ठाकुर : स्वतन्त्रचेतना, सम्पादकीय गद्य आ सामाजिक व्यङ्ग्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ७२४७-७४४२ ।

७२४७-७४४२क “अरविन्द ठाकुर” अध्ययन कविता, कथा, गजल, समालोचना आ सम्पादकीय लेखनक विविध क्षेत्र समेटैत अछि । ‘स्वतन्त्रचेता’ सन मूल्यात्मक पदक आलोचनात्मक अर्थ एतय जाँचनीय अछि : काव्यात्मक विचारक स्वतन्त्रता कोन नूतन रूप, अप्रत्याशित पात्र-दृष्टि वा प्रचलित संस्थाक सार्वजनिक विरोध द्वारा प्रकट होइत अछि? केवल उपाधि ग्रहण करब मूल्याङ्कनक अन्तिम प्रमाण नहि ।

सम्पादकीय रचनाक रूप “कर पर काल-तुरंग” जकाँ शीर्षक समयक विडम्बना आ सार्वजनिक जीवनक तीव्रताकें रूपक बनबैत अछि । सम्पादकीय गद्य पाठककें तात्कालिक प्रसङ्गसँ जोडैत अछि, मुदा समाचार-जकाँ तथ्यक पुष्टि आ साहित्य-जकाँ रूपात्मक व्यवस्था दुनू कसौटी आवश्यक अछि । व्यङ्ग्यक उग्र स्वर घटनाक निश्चित ऐतिहासिक प्रमाण नहि; स्रोतक ठोस संकेत जँ साथ रह्य तँ ओकर भरोसा बढैत अछि ।

भारतीय रस-ध्वनि आ पश्चिमी आलोचनापद्धतिक विविध सन्दर्भ मूल पुस्तकमे अछि । एहन सिद्धान्तिक व्यापकता सशक्त तखन होएत जखन पाठक पाँतिक विशेष रचना-पद्धति खुलैत अछि : व्यङ्ग्यक वक्रोक्ति, अर्थक विलम्बित उद्भासन अथवा कथावस्तुक बहुस्वरता । हर कृतिक ऊपर सभ सिद्धान्तक यान्त्रिक प्रयोग आलोचनात्मक प्रश्नकें धुँधला करैत अछि ।

अरविन्द ठाकुरक अनेक विधामे कृतित्वक तुलना करैत काव्य आ सम्पादकीय गद्यक भाषिक अन्तर राखल जाए । कविता अर्थकें अनेक स्तरमे खुला छोडि सकैत अछि; सम्पादकीय सामान्यतः विशिष्ट सामाजिक प्रतिज्ञा पर केन्द्रित रहैत अछि । ई अन्तर नकारि सम्पूर्ण रचनाकें एकहि राजनैतिक नारेमे समेटब साहित्यिक अन्याय होयत ।

०८९. अशोक : आरम्भिक कथा सँ सामाजिक यथार्थ आ समालोचनाधरि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ७४४३-७८६०।

७४५२-७७८०मे कथाकार अशोकक कविता, कथा, समालोचना आ सम्पादनक बहुविध लेखन उपस्थित अछि। “चक्रव्यूह”मे पुराकथाक पुनर्रचना, “त्रिकोण”क आरम्भिक कथा, “ओहि रातिक भोर”क वर्ग-सम्बन्ध आ “मतब्बर”क स्थानीय सत्ता-व्यवस्था अलग-अलग कलात्मक स्तर दर्शबैत अछि। ई क्रमकेँ एकगोट सीढ़ीक सरल प्रगति मानब उचित नहि; आरम्भिक प्रयोगक काव्यात्मक आकाङ्क्षा आ पछिला कृतिक सामाजिक जटिलता अलग मापकसँ जाँचल जाए।

“बौका चुप छल”क साँप-दंश आ चिकित्सकीय उपेक्षाक प्रसङ्ग मानवक शारीरिक विष आ समाजक मौनक संकेत एकसंग आनैत अछि। पात्र कतेक कारणसँ चुप रहैत अछि आ कथक ओकरा सम्बन्धमे कतेक जानैत अछि—ई कथाशिल्पक निर्णायक प्रश्न अछि। वास्तविक जीवनक सामान्यीकृत जातिगत इतिहास एतय अनुसंधानक बाह्य विषय अछि; कथाक सामर्थ्य घटनाक प्रतीकात्मक संकेतनमे रहैत अछि।

“मतब्बर”क सामाजिक भूगोलमे मुखिया, पञ्च, जमीन आ सरकारी अभिलेख सम्बन्धित शक्ति बनैत अछि। मूल पुस्तक लूकाच, मार्क्सवादी वर्गदृष्टि, नारीवादी पठन आ कथन-शिल्पक सिद्धान्तक साथ व्याख्या करैत अछि। एहन बहुपद्धतिक समीक्षामे पाठक विशिष्ट अनुच्छेदकेँ केन्द्र पर राखब आवश्यक अछि, नहि तँ विभिन्न सिद्धान्तक नाम लेखकक सम्पूर्ण रचनाकेँ पूर्वनिर्धारित अर्थ दऽ सकैत अछि। समीक्षाक उपयोगी निष्कर्ष अछि जे अशोकक कथा व्यक्तिगत पीड़ाक कथनमात्र नहि, सामाजिक संस्थानक बीच पात्रक व्यवहारक अनुभवजन्य रूपक बनबैत अछि। तथापि प्रत्येक संग्रहमे कतेक रचना अछि, कोन संस्करण प्रथम, आ मूल कथा-पाठक शब्दगत भेद की अछि—एहि प्रश्नक स्वतंत्र जाँच बिना पूर्ण कृतिपञ्जीक दावा सीमित रहत।

०९०. बद्दीनाथ राय 'अमात्य' : भाषिक व्यङ्ग्य, नकार आ नव्य न्यायीय उपमा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ७८६१-७९९४ ।

७८६१-७९९४क प्रकरण "मैथिल भैया करू विचार" नामक व्यङ्ग्यात्मक कविताक विश्लेषण करैत अछि। भ्रष्टाचारक भीष्म पितामह सन रूपक सार्वजनिक जीवनक दीर्घस्थायी सामाजिक सत्ताकें पात्रक मिथकीय नाममे समेटैत अछि। एतय मूल अभिधा, लक्षणा आ व्यञ्जनासँ अर्थक विस्तार अनुभव कएल जा सकैत अछि; रूपककें नव्य न्यायक विशिष्ट 'अवच्छेदक' पदक शाब्दिक समकक्ष कहब तर्कदृष्टिसँ सावधानी माँगैत अछि।

"सगरो पुष्पित अछि विष वेल" सन पाँति कथित अच्छाई बीच विषाक्तताक अतिशय संकेत दैत अछि। नकारक अर्थ केवल 'एकटा वस्तु नहि अछि' नहि; व्यङ्ग्य सामाजिक व्यापक आशाहीनता सूचित करैत अछि। ई ध्वन्यार्थक साहित्यिक क्रिया थिक। न्यायीय अभावकें काव्यक अतिशयोक्तिसँ पूर्णतः अभिन्न मानल जाए तँ शास्त्रीय दार्शनिक श्रेणीक अनावश्यक विस्तार होयत।

व्यङ्ग्यक प्रभाव ओकर भाषाक बोलचाल, संबोधन, सूचीकरण आ पौराणिक बिम्बक अदलाबदलीसँ बनैत अछि। पाठककें केवल काव्यक राजनीतिक पक्ष नहि, शब्दचयनक स्थानीयता आ लय सेहो देखबाक चाही। भाषा केतेक समान, केतेक विचलित, आ कोन शब्दक पुनरागमन काव्य-उच्चारणक मूल तत्त्व अछि—ई जाँच लेखकीय मौलिकता स्पष्ट करत।

मूल समीक्षाक सबसे सशक्त प्रश्न ई अछि जे जनजीवनक व्यङ्ग्य प्रामाणिक कथ्यक रूप केना लैत अछि। ओकर सीमा दार्शनिक पदक कतिपय रूपकात्मक प्रयोग आ वास्तविक भ्रष्टाचार सम्बन्धी कथनक स्वतंत्र अभिलेखसँ असत्यापित अवस्था अछि।

०९१. बेचन ठाकुर : जनपदीय रंगमंच आ सामाजिक विरोधक नाट्यशिल्प

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ७९१५-८२१२।

७९१५-८२१२मे बेचन ठाकुरक नाटक परिवार, दहेज, बेटी, जातिगत ऊँच-नीच आ स्थानीय सामाजिक सत्ता पर केन्द्रित देखाओल गेल अछि। “बेटीक अपमान”, “बाप भेल पित्ती आ अधिकार”, “भात”, “विश्वासघात” आ “ऊँच-नीच” सन शीर्षकसभ मंच पर टकरावक अलग क्षेत्र चिन्हैत अछि। प्रत्येक नाटकक कलात्मक सार्थकता ओकर विषय-साहससँ मात्र नहि, संवाद, पात्रगत प्रत्युत्तर, नाटकीय समय आ सार्वजनिक प्रदर्शनक क्षमतासँ बनैत अछि।

लेखक बेचन ठाकुरक स्थिर लिखित नाट्यपाठकेँ गामक लोकमंचक आशु-अभिनयपरम्परासँ जोड़ैत छथि। ई तुलना प्रासङ्गिक अछि, मुदा लोकनाट्यक जीवित रूपक विविधता एकरेखीय ‘परम्परागत’ श्रेणीमे नहि समाओल जाए। स्थिर पाठ उपलब्ध होयबाक अर्थ अभिनयक बदलाव समाप्त नहि; प्रत्येक प्रस्तुति भिन्न मंचीय निर्णय उठा सकैत अछि।

८०१२-८१४५मे महेन्द्र मलंगियाक संग तुलना आ २०१२क विदेह नाट्य-उत्सवक उल्लेख अछि। सामाजिक पृष्ठभूमि आ नाट्यदृष्टिक भेद गम्भीर विवेचन माँगैत अछि, मुदा लेखकक सामाजिक पहिचानक आधारपर नाटकक गुणवत्ता निश्चित करब अनुचित। दूनू नाटककारक एकहि विषयपर दृश्य-दर-दृश्य तुलना बेसी विश्वसनीय आलोचना बनत।

उपलब्ध मूल विवरण बेचन ठाकुरक रंगमंचकेँ प्रतिरोधक संस्कृति मानैत अछि; समीक्षामे लोकप्रदर्शन, पाठक लेखकीयता आ स्रोतगत प्रदर्शन-दावीक पृथक परीक्षा केन्द्रमे अछि। रंगमंचक सामाजिक असर लेल दर्शक-विवरण वा मंचन-अभिलेखक स्वतंत्र पुष्टिक आवश्यकता अछि।

०१२. पण्डित भवनाथ झा : शिलालेख, पाण्डुलिपि आ प्राचीन ज्ञानक पाठालोचना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ८२१३-८३११ ।

८२१३-८३११मे पण्डित भवनाथ झाक शास्त्रीय ज्ञान, शिलालेख-पठन, पाण्डुलिपि-सम्पादन आ संस्कृत-मैथिली साहित्यक अध्ययनक संयुक्त परिचय अछि। पुस्तक मूल पाठक प्रतिलिपि आ अभिलेखक मूल उत्पत्तिक अन्तर पर विचारक अवसर दैत अछि। प्राचीन ग्रन्थक नव प्रतिपाठ उपलब्ध भेलासँ पुरान निष्कर्ष बदलि सकैत अछि, मुदा रचनाक तिथि, भौतिक पाण्डुलिपिक आयु आ कथित ऐतिहासिक घटनाक तिथि अलग-अलग होयत।

आगस्त्यसंहिता, भृणपञ्चाशिका तथा बौद्धचरितम्-सम्बद्ध पाठविवेचनमे मूल स्रोतक पूर्ण रेखाचित्र, अक्षरपाठ, पाठान्तर-सूची आ सम्पादकीय हस्तक्षेपक सार्वजनिक अभिलेख चाही। लेखक जे संस्कृत पंक्ति पुनर्निर्मित करैत छथि तँ अनुमानित पूर्तिकेँ मूल पाण्डुलिपिक प्रमाणित अक्षरसँ भिन्न पहिचान देबाक चाही। ई अन्तर नव आविष्कारक मान घटबैत नहि, ओकर शोधविश्वासनीयता बढ़बैत अछि।

मूल पुस्तक भारतीय रस-ध्वनि आ पश्चिमी नव इतिहासवादक दृष्टि एहि विद्वत् कार्यपर लागू करैत अछि। साहित्यिक शैलीक समीक्षा आ पुरालेखीय शुद्धताक परीक्षा अलग कसौटी अछि; उत्कृष्ट पुनर्सम्पादक आवश्यक नहि जे उत्कृष्ट कवि होथि, आ काव्यक कलात्मक मूल्य पाठ-समीक्षाक अक्षरगत सफलतासँ स्वतः

सुनिश्चित नहि होयत।

एहि प्रकरणक इतिहासगत महत्त्व पुरान हस्तलिखित सामग्रीकेँ वर्तमान पाठकसँ जोड़बाक श्रमकेँ मूल्य देब अछि। प्रमाणसीमा प्राचीन मूल पाण्डुलिपिक प्रत्यक्ष निरीक्षण आ अन्य संस्करणक पूर्ण तुलनासँ सम्बन्धित अछि।

०९३. राम भरोस कापडी 'भ्रमर' : नेपालक मैथिली आ लोकसांस्कृतिक विस्तार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ८३९२-८५८४ ।

८३९२-८५८४मे राम भरोस कापडी 'भ्रमर'क कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, लोकसाहित्य-अनुसन्धान आ नेपालक मैथिली सांस्कृतिक क्षेत्रक परिचय अछि। एहि बहुविधताक मूल्य केवल प्रकाशित पुस्तकक परिमाण नहि; नेपालक राजनीतिक आ भाषिक वातावरणक भीतर मैथिली सार्वजनिक अभिव्यक्तिक अलग आधार बनब अछि।

“घरमुहा” सन उपन्यासक उल्लेख घर-प्रवास, स्मृति आ सामाजिक बदलाबक प्रश्न उठबैत अछि। कृति पढलाक बाद पात्रक प्रेरणा, नायकक दृष्टि आ कथन-समय निश्चित कएल जाए; शीर्षक वा लेखकक जीवनीक आधारपर पूरा कथानक अनुमानित करब स्वीकार्य नहि।

नेपालक साहित्यिक उत्पादनकेँ भारतक मैथिलीक 'सीमापार उपशाखा' मानब इतिहासलेखनक गलती हो सकैत अछि। राजकीय भाषा-नीति, शिक्षण, रेडियो, स्थानीय मञ्च आ अन्तरभाषिक सम्पर्कक अलग संरचना अछि। मूल पुस्तक एहि क्षेत्रीय स्वायत्तताक प्रश्न खोलैत अछि; प्रमाणित नेपाली प्रकाशनक्रम आ मूल पुस्तकक अध्ययन ओकरा दृढ़ता देत।

कवि-शोधकर्ता-नाटककारक संयुक्त भूमिकाकेँ समग्र प्रशंसामे समेटबाक बदला विभागत कृतिसभक अलग-अलग परीक्षण अनिवार्य अछि। समीक्षामे एहि सीमा स्पष्ट राखि लोकज्ञान आ आधुनिक साहित्यक पारस्परिक प्रभावक मूल्यांकन कएल गेल।

०९४. बिनय भूषण : कोसी-अञ्चलक कविता आ सामाजिक-पर्यावरणीय अनुभव

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ८५८५-८९४१।

८५८५-८९४१मे बिनय भूषणक कविता कोसी-अञ्चलक प्राकृतिक भूगोल आ सामान्य मनुष्यक सामाजिक अनुभवक पृष्ठभूमिमे रखल गेल अछि। नदी, बाढ़ि, खेती, घर, विस्थापन आ स्थानीय भाषा साहित्यिक चिह्न बनि सकैत अछि। एतय पर्यावरणीय आलोचनाक प्रश्न अछि जे प्रकृति केवल सजावट थिक कि पात्रसभक श्रम, जोखिम आ निर्णय पर सक्रिय प्रभाव डालैत अछि।

मूल विवेचन काव्यभाषाक छन्दमुक्त प्रवाह, पारम्परिक रस-ध्वनि आ उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि पर विचार करैत अछि। छन्दमुक्त कवितारूपाँ मात्र छन्दक अभावसँ नहि, वाक्य-विच्छेद, अन्तर्ध्वनि, प्रतिबिम्बित लय आ आवाजक संगठन पढ़ल जाए। गद्य आ कविताक अन्तर निरपेक्ष नियम नहि; कविताक नब रूपमे गद्यात्मकता सेहो कलात्मक संरचना बनि सकैत अछि।

कोसीक प्राकृतिक आपदा सम्बन्धी प्रत्यक्ष काव्यचित्र ऐतिहासिक बाढ़िक प्रमाणपत्र नहि। तिथि, पानीक मापन आ प्रशासनिक विफलताक तथ्य बाह्य अभिलेखक विषय अछि; कविता जोखिमक अनुभव, भय, आशा आ प्रतिरोधक रूप बनबैत अछि। एहि भेदकें जोगेने पर्यावरणीय साहित्यइतिहास विश्वासनीय बनत।

समीक्षाक उपलब्धि कोसी-अञ्चलक लेखनकें क्षेत्रीय सीमितता नहि, मिथिलाक व्यापक पर्यावरणीय संवेदनाक केन्द्र मानब अछि। मूल कविताक उद्धरणसभक प्रकाशन-विवरण आ भाषिक रूपक जाँच कएलापर कलात्मक निर्णय अधिक गहन होयत।

०९५. कालिकान्त झा 'बूच' : 'कलानिधि'क पश्चात्-प्रकाशन आ गीतक भाषा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ८९४२-९१०० ।

८९४२-९१००मे कालिकान्त झा 'बूच'क "कलानिधि" नामक मरणोपरान्त प्रकाशित कविता-संग्रहक परिचय अछि। कविक जीवनकाल आ पुस्तकक सम्पादकीय प्रकाशनकाल अलग होयबाक कारणे पाठ-इतिहासक विशेष प्रश्न उत्पन्न होइत अछि —कोन कविता पहिले पत्रिकामे छपल, कोन पाण्डुलिपिसँ संग्रह बनल, आ सम्पादकक कतेक संशोधन मूल काव्यकेँ प्रभावित कएलक। संग्रहक गीतसभमे प्रकृति, कोसी-कमला, बचपन, सामाजिक व्यङ्ग्य, पारिवारिक शोक आ विरहक विविध स्वर दखल दैत अछि। "कहिया धरि उदासी" सन पदबन्ध भावक स्थायित्व आ समापनक अनिश्चितता देखबैत अछि। किन्तु एक-पाँतिक अंग्रेजी रूपान्तरसँ मैथिली मूलक छन्द, ध्वनि आ लाक्षणिक अर्थक पूरा अध्ययन सम्भव नहि।

भावविविधताकेँ रसक तैयार सूचीमे बाँटि देलासँ कविता-विशेषक वक्रोक्ति वा गीतगत धुन अदृश्य रहि सकैत अछि। लोकगीतक छन्द, तुकान्त आ आधुनिक गीतक रूपक तुलना आवश्यक अछि। व्यङ्ग्यक तात्कालिक संकेत आ शोकगीतक अन्तर्मुखी सम्बोधन एकहि लेखकमे सह-अस्तित्व राखि सकैत अछि।

पश्चात्-प्रकाशित कृतिक आलोचनामे लेखकक मूल शब्दरूप सुरक्षित राखब विशेष जरूरी अछि। एतय मूल पुस्तक लेखकक बहुविध अनुभूतिमे प्रवेशक अवसर दैत अछि; पूर्ण पाठसँ संस्करण-मिलान हुनकर वास्तविक काव्य-शिल्पक निर्णायक प्रमाण होयत।

०९६. सत्यानन्द पाठक : 'गाम गेल छलहुँ' आ स्मृतिक सामाजिक निबन्धन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ११०१-१३७२ ।

११०१-१३७२क पुनःसमेकित अध्ययन सत्यानन्द पाठकक कथा-गद्यक "गाम गेल छलहुँ" शीर्षकक माध्यमसँ प्रवासन आ वापसीक सम्बन्ध पर विचार करैत अछि । गामक भौतिक वर्तमान आ प्रवासीक स्मृतिमे सुरक्षित गाम एक रूप नहि; एहि अन्तरसँ कथा अपन समय-क्रम बनबैत अछि । वस्तुगत रूपमे गाम देखबाक अनुभव आ स्मृतिसँ अनुमानित सांस्कृतिक परिवर्तन अलग जाँचब आवश्यक अछि । मूल ग्रन्थ एहि लेखनकें आधुनिक सामाजिक यथार्थ आ अस्तित्वगत अस्थिरताक संग जोड़ैत अछि । प्रवासनक पीड़ा, स्थानीय सम्बन्धक परिवर्तन आ परायापन प्रभावकारी साहित्यिक विषय अछि, मुदा संपूर्ण प्रवासी समाजक प्रतिनिधि तथ्य बनबाक लेल सामाजिक अध्ययन चाही । साहित्यिक आलोचना मूल गद्यक कथन-दृष्टि, वर्णनक घनत्व आ संवेदना पर केन्द्रित रहत ।

नव्य न्यायीय सम्बन्ध-सूत्रक सहायता सँ लेखक गाम-व्यक्ति-स्मृतिक रूपात्मक मानचित्र बनबैत छथि । एहन उपमा विश्लेषणक स्पष्टता दे सकैत अछि, मुदा कथा वास्तविक दार्शनिक प्रमाणशास्त्रक व्यावहारिक अनुप्रयोग थिक, ई अतिरिक्त दावा प्रमाणित नहि । मूल पाठक व्यञ्जना आ स्मृतिक अप्रत्याशित अन्तर्विरोध अपना साहित्यिक साधन अछि ।

एहि प्रकरणक महत्त्व गाम-परतीक कथनकें केवल स्मृतिरञ्जन नहि मानि बदलैत समाजक नव ऐतिहासिक प्रश्न बनायब अछि । मूल पुस्तकक प्रत्यक्ष कथा-अनुच्छेद, प्रकाशित संस्करण आ अनुवाद-भेदक जाँचक आधारपर आगे विस्तृत समीक्षा सम्भव रहत ।

०९७. दिनेश कुमार मिश्र : महानन्दा आ कमलाक बाढ़ि-इतिहासक आलोचनात्मक पद्धति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३७३-१६७०।

१३७३-१६७०क मूल पाठ दिनेश कुमार मिश्रक अनेक नदी-बाढ़ि-अध्ययनकें एकत्र करैत अछि। महानन्दा, ओकर उपनदी, गादक वहन, तटबन्ध आ स्थानीय बस्तीसभक अनुभव एकहि भूगोलक गतिशील प्रणाली बनैत अछि। ई सामग्री सामान्य साहित्यक कथानक नहि, पर्यावरणीय इतिहास आ नीतिगत आलोचना थिक। ताहि लेल पाठमे उद्धृत जलमापन, बाढ़िक सन्, तटबन्धक लम्बाइ आ सरकारी बजटक संख्यासभक विश्वसनीयता बाह्य अभिलेखसँ परखल जाए; मूल ग्रन्थक प्रतिज्ञाकें स्वतः सत्य मानि नहि लिखल गेल।

मूल विवरण महानन्दाक मेची, कनकई, नागर, टांगन आदि उपनदीक प्रसङ्ग दैत अछि। प्राकृतिक नदीक पानीक मात्रा आ गादक गति मौसमी रूपेँ बदलैत अछि; एकटा नियत तटरेखा सदा एकहि जोखिम व्यक्त नहि करैत। रचनाक आलोचनात्मक शक्ति ई अछि जे विकासक सीमांकनक समय बाढ़ितट, जलनिकासी आ गाँवक जीवनकें एकसंग सोचबाक आग्रह करैत अछि।

कमलाक बाढ़ि-सन्दर्भमे प्रस्तावित बैराज, तटबन्ध आ कृषि-सुरक्षाक सम्बन्ध नीति-इतिहासक प्रश्न बनैत अछि। “नदीकें बाँधलासँ बाढ़ि समाप्त” सन सरल कथनक विरोध करैत लेखक जलनिकासी, अवरोध आ तटबन्धक बाहरी भागक समस्या उठबैत छथि। मुदा कोन परियोजनासँ कुन विशेष वर्षक जोखिम कतेक बढ़ल, ई कारणात्मक दावा स्थलविशेषक मापन-सरणी चाही।

एहि अध्ययनमे सामाजिक याददाश्त, नदी-भूगोल आ अभियान्त्रिकीकें अलग साक्ष्यवर्ग मानल गेल अछि। विस्थापित परिवारक साक्षात्कार नीतिगत प्रभावक मूल्यवान गवाही अछि; ओहि गवाहीक संग बाढ़िक प्रत्यक्ष क्षेत्रफल वा प्रवाहमापनक अभिलेख राखल जाए तँ ऐतिहासिक निष्कर्ष अधिक विश्वासनीय होयत।

०९८. भुतही बलान आ स्थानीय जलप्रणाली : भूगोल, बस्ती आ जोखिमक अन्तर

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १६७१-१८६०।

१६७१-१८६०मे भुतही बलान सन अपेक्षाकृत छोट नदीक विशिष्ट जल-व्यवहारक चर्चा अछि। छोट जलप्रवाहक क्षेत्र भेला परो अत्यधिक ढाल, हिमालयक तलहटीक निक्षेप आ अचानक वर्षा बस्तीपर पैघ प्रभाव डालि सकैत अछि। लेखकक सूक्ष्म भूगोलक प्रति ध्यान मूल्यवान अछि, कारण एकरे “कोसी-जकाँ” मानि सामान्य नदीय नीति लागू करबाक आग्रह उलटा पड़ि सकैत अछि।

भुतही बलानक चरित्रमे लोकव्याख्या, बाढ़िक स्थानीय नाम आ स्थलस्मृति एहन सामाजिक ज्ञानक रूपमे अबैत अछि जे मापनक रिक्ति बीच लोगक कष्ट दर्शबैत अछि। ई लोकज्ञान वैज्ञानिक प्रमाणक स्वतः विकल्प नहि, मुदा ककर घर कतेक बेर डुबल आ बाढ़ि कतेक देरि रहल, एहि प्रश्नक तथ्य जुटएबाक दिशा दैत अछि।

नदीक कथित उच्च उतार-चढ़ाव आ रफनेस-सूचकांक सन अभियान्त्रिक विवरण लेल मूल अध्ययनक परिभाषा, मापनक क्षेत्र, तिथि आ गणनाक पद्धति देखबाक आवश्यकता अछि। गणनात्मक पद उद्धृत कएने मात्र वैज्ञानिकता सिद्ध नहि; पुनरुत्पादनयोग्य स्रोत-सरणी आवश्यक होयत।

एहि प्रकरणक साहित्येतिहासीय महत्त्व नदीकेँ केवल पौराणिक माता अथवा अविरल आपदाक रूपमे नहि, मानवीय बसोबासक सक्रिय ऐतिहासिक शर्त देखब अछि।

तर्कक सीमा ई अछि जे स्थानीय बाढ़िक अनुभव सँ सम्पूर्ण उत्तर बिहार लेल एकमात्र समाधान निष्कर्षित नहि कएल जा सकैत अछि।

०९९. कोसी : मिथकीय स्मृति, तटबन्धक भीतरक जीवन आ पुनर्वास

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १८६१-१००१५ ।

१८६१-१००१५ क कोसी-विवेचनमे कौशिकी सम्बन्धी पुराणकथा आ आधुनिक नदीक धरातलीय इतिहासक निकटता अछि। नदीक नामक मिथकीय व्याख्या क्षेत्रीय सांस्कृतिक स्मृतिक तथ्य अछि, मुदा नदीक वास्तविक भौगोलिक मार्ग अथवा पुरातात्विक तिथि एहि कथासँ सिद्ध नहि होइत। नदी-इतिहासक जिम्मेवार पद्धति लोकविश्वासक सांस्कृतिक अर्थ स्वीकार करैत प्राकृतिक विज्ञानक प्रमाण अलग राखैत अछि।

तटबन्धक भीतर निवास करैत समाजक स्थिति मूल पुस्तकक सबसे तीव्र मानवीय प्रश्न अछि। बाहरक भूभाग सुरक्षित घोषित होइतो भीतरक नागरिकक आवागमन, खेती, विद्यालय, उपचार आ राहतक समस्या शेष रहि सकैत अछि। लेखक एहि “सुरक्षा”क असमान वितरण पर जोर दैत छथि। नदीक जोखिमक मूल्याङ्कन ताहि कारणेँ केवल बचाओल गेल भूमि नहि, जोखिमकें ककर पर स्थानान्तरित कएल गेल से सेहो देखब चाही।

टुटल तटबन्धक फलस्वरूप बाहरक बस्तीमे तात्कालिक नुकसान आ भीतरक लोकक दीर्घकालिक असुरक्षा अलग काल-अवधि अछि। नीति-विवेचनमे एहन दून अनुभवक स्थलसापेक्ष विवरण आवश्यक अछि; सामान्य क्रोधक भाषासँ विशेष परियोजनाक कारण-फल सम्बन्ध निश्चित नहि बनैत अछि।

मूल लेखक पारम्परिक ज्ञान आ बाढ़िसँ संग रहबाक उपाय पर विचार करैत छथि। एहि अवधारणाक साहित्यिक बल प्रतिरोधक भाषा अछि; व्यावहारिक नीतिक

कसौटी बाढ़ि-चेतावनी, स्वास्थ्यसेवा, सुरक्षित आवागमन, जलनिकासी आ पुनर्वासक वास्तविक उपलब्धता होयत। “बाढ़िसँ जीबब”क आग्रहकें नागरिकक असुरक्षित जीवन स्वीकार करबाक आदेश नहि बनाओल जाए।

१००. बागमती आ तटबन्ध-अभियान्त्रिकी : संरक्षणक लाभ-हानिक परीक्षण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १००९६-१०३०० ।

१००९६-१०३००मे बागमती नदी, तटबन्ध-सम्पर्क, उपनदीक निकास आ बाढिक तकनीकी व्यवस्थाक विश्लेषण अछि । नदीक प्रवाहकें एक सीमित मार्गमे रोकि देने पर गादक जमा होएब आ पाछाँ जलनिकासमे अवरोधक सम्भावना लेखकक मुख्य अभियान्त्रिक प्रतिज्ञा अछि । एहि विचारक सामान्य वैज्ञानिक सम्भाव्यता सँ कोन खास परियोजनामे एहि प्रभावक माप कतेक भेल, ई अलग परीक्षणक विषय अछि ।

उपनदीक मुहाना बन्द होएब, बाहरी क्षेत्रमे पानि जमब आ चरम बाढिमे तटबन्ध टूटब—ई तीन भिन्न भौतिक प्रक्रिया अछि । एककें दोसरक नामसँ अभिहित करब कथ्यक स्पष्टता घटाएत । मूल ग्रन्थ अनेक उदाहरणक साहारे ई अन्तर देखबैत अछि; समीक्षामे क्षेत्रानुसार कारणक शृंखला पृथक पहिचानल गेल अछि ।

परियोजना-मूल्याङ्कनमे तटबन्धक लाभ सेहो घटबाक नहि चाही; किछु स्थान पर कृषिभूमि, आवास आ सडक तत्कालिक बाढिसँ सुरक्षित भऽ सकैत अछि । प्रश्न समय अवधि, देखरेखक व्यय, भीतर-बाहरक जोखिम आ वैकल्पिक उपाय सभकें तुलनात्मक रूपसँ तौलबाक अछि । नीति-समीक्षा एहन मिश्रित परिणाम स्वीकार करैत अधिक विश्वसनीय बनत ।

लेखकक “सद्गति”क आग्रह नदी-समाजक न्यायसंगत सम्बन्धक राजनीतिक रूपक अछि । वैज्ञानिक पद्धतिमे एकर रूपान्तरण लेल जलनिकासी, स्थलमापन, विस्थापनक आँकडा आ निवासीक सहभागिता सहित स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित करबाक चाही ।

१०१. १९४७-१९५६क बाढ़ि-अभिलेख : नीति, राहत आ कृषिक बदलैत प्राथमिकता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १०३०१-१०९३०।

१०३०१-१०९३०मे स्वतंत्रता-पाछाँक पहिल दशकक बाढ़ि, सूखा, राहत आ सिंचाइ सम्बन्धी वर्षवार सामग्री प्रस्तुत अछि। दस्तावेजी संरचनाक उपयोगिता ई अछि जे प्रत्येक वर्ष राज्यक भाषा आ नीति अलग हो सकैत अछि : कोनो वर्ष उपजक कमी, दोसर वर्ष पुनर्वास, फेर सड़क वा विद्यालय बाधित होएब प्रमुख विषय होइत अछि।

मुदा समयरेखा मात्र कारणनिर्णय नहि; एकल निर्णयक प्रभाव धरबाक लेल दीर्घकालिक तुलनात्मक आँकड़ा चाही।

१९४८क सारण बाढ़ि, नहर, नलकूप आ आपात राहतक विवरणमे प्रशासनिक स्रोतक उपयोग कएल गेल अछि। खर्चक राशि, प्रभावित जनसंख्या आ क्षेत्रफल सन तथ्यक एकक तथा दस्तावेजक तिथि मिलाओल जाए। सरकारी घोषणाक आँकड़ा वास्तविक वितरित सुविधाक समान नहि; बजट, स्वीकृति, व्यय आ प्राप्तकर्ता अलग स्तर अछि।

ग्रामीण साक्षात्कार, जनप्रतिनिधिक भाषण आ स्थानीय तटबन्ध-मरम्मतक शिकायतसभक वर्णन आबैत अछि। भ्रष्टाचारक एक आरोप जँ अभिलेखमे उद्धृत अछि, तँ एतेक तथ्य स्पष्ट होइत अछि जे आरोप कएल गेल; दोष सिद्ध भऽ गेल, ई नहि। सम्बन्धित जाँच, ठेका-विवरण आ वास्तविक स्थल-स्थिति बिनु अंतिम आरोप-अनुमोदन करब उचित नहि।

१९५५-१९५६क बाढ़ि आ सुखाडि-सन्दर्भ एकटा आवश्यक पर्यावरणीय बिन्दु स्पष्ट करैत अछि : नदीय समाजक जोखिम केवल अधिक पानि नहि, समयपर पर्याप्त पानि नहि भेटब सेहो अछि। बाढ़ि-नियन्त्रणक अभियान्त्रिकीकें कृषि-जल उपलब्धता, जलनिकासी आ स्थानीय उत्पादनक व्यापक पद्धतिसँ पृथक नहि देखल जाए।

एहि स्रोतभागक उपलब्धि नव राज्यक विकास-चिन्तन आ ग्रामीण लोकक वास्तविक दुःखक बीच अन्तर ऐतिहासिक क्रममे देखब अछि। एखन प्रत्येक वार्षिक विवरणक मूल सरकारी प्रति आ मुद्रित तिथिक पूर्ण पुनर्परीक्षण शेष अछि।

१०२. नदी-अभिलेखक नैतिकता : मूल स्रोत, दाबी आ संस्थागत आलोचनाक सीमा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १०९३१-११३३७ ।

१०९३१-११३३७मे दिनेश कुमार मिश्रक शोधकृतित्वक सामाजिक अर्थ, अभियान्त्रिकीपर आलोचना, लोकस्मृति आ विपुल स्रोत-सूची समेटल गेल अछि । भौतिक नदीकें केवल घनफुट पानीक मात्रा नहि, जीवनोपाय, सामाजिक स्मृति आ जोखिम-वितरणक इतिहास मानबाक आग्रह अर्थपूर्ण अछि । परन्तु संस्कृति-इतिहास आ जलविज्ञानक पद्धति एकरूप नहि; प्रत्येक निष्कर्ष उचित स्रोतपर टिकब चाही । पाठमे विदेह संस्थाक आलोचना आ अन्य साहित्यकारपर गम्भीर आरोप-सदृश उद्धरण सेहो अछि । एहि सभकें मूल लेखकक अभिव्यक्ति मानि पाठगत उपस्थिति दर्ज कएल जाए; स्वतंत्र प्रमाण बिना चोरी, जानि-बुझि दमन अथवा अन्य व्यक्ति-सम्बद्ध दोषकें ऐतिहासिक सत्य घोषित नहि कएल जाए । एहन प्रश्न लेल मूल-आरोपित पाठक समान पृष्ठ, प्रकाशनतिथि आ विशेषज्ञ विश्लेषण आवश्यक अछि । ग्रन्थक स्रोत-सूचीमे पुस्तक, लेख, जाल-पृष्ठ, परिशिष्ट, समाचार आ सामाजिक प्रकाशनक वस्तु एकठाम अछि । स्रोत-सङ्ख्या अधिक भेलासँ प्रमाणक गुणवत्ता स्वतः नहि बढ़ैत; प्रथम स्रोत आ दोसरक पुनर्प्रकाशित टिप्पणीक भेद, जालपृष्ठक तिथि आ मृत कड़ीक अभिलेख महत्वपूर्ण अछि । ऐतिहासिक अनुसन्धानमे लेखकीय टिप्पणी, उद्धृत प्रलेख आ स्वतंत्र पुनर्जाँचक नतीजा पृथक चिन्हब उचित । दिनेश कुमार मिश्रक नदीलेखनक वास्तविक मूल्य मानवीय पुनर्वासकें तकनीकी परियोजनाक पाछाँ नहि छोड़बाक आग्रह अछि । एहि केन्द्रीय उपलब्धिकें सम्मान दैत सांख्यिकीय दाबी आ आरोपक प्रमाणसीमा स्पष्ट लिखनाइ नैतिक समीक्षा थिक ।

१०३. दुर्गानन्द मण्डल : ‘संचयिका’क कथा, बीहनि कथा आ सामाजिक यथार्थ

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ११३३८-११६००।

११३३८-११६००मे दुर्गानन्द मण्डलक “संचयिका” सहित कथा, लघुकथा, समीक्षा आ सामाजिक लेखनक परिचय अछि। लेखकक साहित्यिक संसारमे डाक्टर कर्मवीर सन पेशागत व्यक्तिक सामाजिक दायित्व, पारिवारिक व्यङ्ग्यक प्रसङ्ग आ गाँवक लोकभाषाक अनेक प्रकार भेटैत अछि। एहि विविधताकें केवल एकल प्रगतिशील घोषणामे समेटल जाए तँ हास्य, नैतिक दुविधा आ कथा-रचनाक अन्तर लुप्त होयत।

“बकलेल”क घरेलू निर्भरता आ हास्यक दृश्य व्यक्ति-केंद्रित नाटकीय विडम्बना निर्मित करैत अछि। “कुकर्म”क अन्तर्गत कथा-भीतर-कथाक विन्यास प्राचीन भारतीय कथापरम्पराक संग रचनात्मक तुलना आमन्त्रित करैत अछि। मुदा कथासरित्सागर अथवा पञ्चतन्त्र सँ प्रत्यक्ष अनुकरण सिद्ध करबाक लेल मिलैत कथानक, कथा-रचना आ संस्करणक वास्तविक तुलना आवश्यक अछि; केवल आवेष्टित कथाक रूप पर्याप्त प्रमाण नहि।

बीहनि कथा “पोस्टमार्टम” आ “दूषण” सन छोट रचनामे सामाजिक संस्था आ दैनिक नैतिकता पर सघन प्रभाव सम्भव अछि। छोट आकारक कथा जे आश्चर्यजनक अन्त दैत अछि, ओकर आलोचनामे अन्तक तैयारी, पाठकक अपेक्षा आ पात्रक न्यायसंगत चित्रण देखब चाही। व्यङ्ग्यक सफलता केवल तीखापन नहि, सूक्ष्म संकेतद्वारा भावनात्मक तथा वैचारिक दबाव उत्पन्न करब अछि।

मूल ग्रन्थ रस, ध्वनि, नव्य न्याय आ मार्क्सवादी यथार्थवादक अनेक प्रयोग प्रस्तुत करैत अछि। समीक्षाक सुदृढता प्रत्येक रचनाक संक्षिप्त वास्तविक पाठविश्लेषणमे भेटैत अछि; पुस्तकभरक अनदेखल रचनाक निर्णय पूर्ण कहल नहि जाए। समग्र कृतिपञ्जी लेल मूल संग्रहसभक प्रत्यक्ष संस्करण-जाँच आवश्यक अछि।

१०४. भाषा-क्षेत्रक दार्शनिक रूपक : हरिमोहन झा, अवच्छेदक आ शब्दबोध

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ११६०१-११८२३ ।

११६०१-११८२३मे भाषा केँ एकटा “क्षेत्र” अथवा “राज्य”क रूपक द्वारा शाब्दिक अधिकारक अध्ययन बनाओल गेल अछि। पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी आदि पारम्परिक वाक्-स्तरक उल्लेख बौद्धिक इतिहासक एक परत अछि। एहि आध्यात्मिक भाषाशास्त्रीय श्रेणीकेँ आधुनिक ध्वनिविज्ञानक अनुभवसिद्ध चरणक पर्याय मानब सावधानी माँगैत अछि। एकर साहित्यिक उपादेयता शब्दक अन्तःअर्थ आ सार्वजनिक उच्चारणक अन्तर पर विचार खोलब अछि।

नव्य न्यायीय विशेष्य, विशेषण, सम्बन्ध आ अवच्छेदककेँ रूपकात्मक “सीमारेखा”क रूपमे प्रस्तुत करैत मूल ग्रन्थ अर्थक अनावश्यक विस्तार पर रोक लगाएबाक विचार दैत अछि। ई तुलना व्याख्यात्मक अछि, मुदा देशक सीमाप्रबन्ध आ वाक्यक तार्किक सीमा एकहि तत्त्व नहि। दार्शनिक पदक सही प्रयोग लेल संस्कृत परिभाषा, उदाहरणक संबंध आ मूल पक्ष-विपक्षक अन्तर देखब जरूरी अछि।

हरिमोहन झाक “खट्टर काका”क व्यङ्ग्य सामाजिक विश्वासक तर्क-परीक्षणक दर्पण बनैत अछि। हास्य द्वारा परम्परागत अधिकारक प्रश्नकरेब एक वास्तविक काव्य-क्रिया अछि; लेखकक पात्रक कथन स्वयं लेखकक अंतिम दार्शनिक मत थिक, एहि समानता पर सहज विश्वास नहि कएल जाए। व्यङ्ग्यात्मक अतिशयोक्ति आ औपचारिक खण्डन अलग साधन अछि।

रसेल, मूर, विट्गेन्स्टाइन आ आयरक साथ भारतीय शब्दबोधक तुलना प्रश्नसूचक फलदायी अछि, किन्तु इतिहासगत प्रभावक दाबी नहि। एक विशिष्ट वाक्यक सन्दर्भ, शब्दप्रयोगक काल तथा आधुनिक औपचारिक तर्कक पद्धति अलग राखल जाए तँ अन्तरसांस्कृतिक अध्ययन अधिक कठोर होयत। एहि प्रकरणक उपलब्धि अर्थक निर्धारण आ सामाजिक भाषिक अधिकारक पारस्परिकता पहिचानब अछि।

१०५. हितेन्द्र गुप्ता : मैथिली पत्रकारितामे सार्वजनिक नीतिक प्रमाण-प्रश्न

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ११८२४-११९१० ।

मूल अनुच्छेद ११८२४-११९१०मे हितेन्द्र गुप्ताक पत्रकार-परिचय आ बिहारमे नव मदिरा-दोकानक अनुज्ञापत्र रोकबाक नीतिसँ सम्बन्धित एक समाचारक आलोचनात्मक विवेचन अछि। एहि एकल उदाहरणकें समग्र पत्रकार-कर्मक प्रतिनिधि सिद्ध करबाक सीमा अछि; मूल समाचारक प्रकाशन-तिथि, शीर्षक, संवाददाता-श्रेय आ सरकारी आदेशक प्रति एकत्र भेलापर तथ्यगत दृढ़ता बढत। समीक्षा एहि प्रत्यक्ष स्रोतीय सीमाकें केन्द्रमे रखैत अछि।

प्रादेशिक नीति-सूचना मैथिलीमे सार्वजनिक करब साहित्यिक इतिहासमे गौण नहि। भाषाक पाठक आर्थिक नीति, परिवार, कानून आ राज्यक अधिकारपर अपन भाषामे विमर्श कऽ सकैत छथि, ई लोकतान्त्रिक सार्वजनिकताक ठोस उपलब्धि अछि। मुदा नीति-घोषणा आ ओकर ग्रामीण असर एक समान वस्तु नहि। घरेलू हिंसा अथवा ऋणपर शराब-नीतिक प्रभावक दाबी लेल स्वतंत्र सामाजिक अध्ययन आवश्यक अछि।

मूल आलोचनामे हेबरमासक सार्वजनिक क्षेत्र आ नव्य न्यायक शब्दप्रमाण जोड़ल गेल अछि। पत्रकारिताक समाचार विश्वसनीय स्रोतक कथन हो सकैत अछि; केवल पत्रकारक सदिच्छासँ ओकर सत्य स्थापित नहि। अधिकारीक घोषणा, छपल समाचार आ कार्यान्वयनक अन्तिम नतीजाकें तीन भिन्न प्रमाणस्तर मानल जाए। एहि भेदसँ प्रशंसाक अपेक्षा समाचारक ऐतिहासिक मूल्य अधिक स्पष्ट होइत अछि। हितेन्द्र गुप्ताक नाम एहि स्रोतमे मैथिली नीतिगत पत्रकारिताक एक अभिलेखित उदाहरण बनैत अछि। एकर महत्त्व जनहितक मुद्दा मैथिली पाठकधरि पहुँचएब अछि; सीमा समग्र लेख-संग्रह आ पाठक-प्रतिक्रियाक अनुपलब्धता। एतय एक समाचारक प्रमाणसँ पूर्ण व्यक्तिगत साहित्यिक रैंकिंग निर्धारित नहि कएल गेल।

१०६. जितेन्द्र कुमार झा 'जीतू' : जनकपुरक रंगमंच आ नाट्य-समाचार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ११९११-११९८०।

११९११-११९८०क परिचय जितेन्द्र कुमार झा 'जीतू'क जनकपुरस्थित रंगमंचीय संवाददाताक भूमिकापर केन्द्रित अछि। मूल ग्रन्थ विदेह सदेहक आठम खण्डक नाटक-समाचार विभागमे प्रकाशित रिपोर्टकें आधार बनबैत अछि। रिपोर्टक प्रसङ्ग, नाट्यप्रयोगक स्थल आ आयोजकक विवरण प्रत्यक्ष समाचार-साक्ष्यक रूपमे उपयोगी अछि; सम्पूर्ण रंगमंचीय परम्पराक निष्कर्ष एक रिपोर्टसँ सिद्ध नहि होइत।

नाट्य-समाचारक वस्तु केवल कथानक कहि देब नहि। अभिनयक देहभाषा, दर्शकक सहभागिता, मंचीय व्यवस्थापन आ सामाजिक परिस्थितिक वर्णन रंगमंचकें जीवित घटना बनबैत अछि। मूल समीक्षामे एकर तुलना भारतीय रसपद्धति आ आधुनिक उत्पादन-सन्दर्भसँ अछि। मुदा केवल मुद्रित रिपोर्ट पढ़ि वास्तविक अभिनयक रसानुभूति निश्चित मानब उचित नहि; मंचीय प्रस्तुति आ पत्रकारक प्रतिनिधित्वमे दूरी रहैत अछि।

नेपालक जनकपुर आ भारतीय महानगरमे मैथिली नाटकक समान पत्रिकामे उपस्थिति सीमापार सांस्कृतिक संजालक प्रमाण अछि। एहि संजालक ऐतिहासिक मूल्य स्थानीय आयोजनक स्मृतिकें लिखित रूपमे राखब अछि। रिपोर्टसँ नाटकक पाठ, प्रदर्शनक वीडियो, अभिनेताक प्रत्यक्ष वक्तव्य आ समकालीन समीक्षा मिललापर प्रदर्शन-इतिहास अधिक व्यापक बनत।

वॉल्टर बेन्यामिनक “लेखक एक उत्पादक” दृष्टि प्रयोग कएल जाए तँ पत्रकारक प्रश्न होएत—ककर श्रमसँ मंच बनल, कोन सार्वजनिक साधन उपलब्ध छल, कोन वर्गक दर्शक पहुँचि सकल। ई अन्वेषणक उचित दिशा अछि, मुदा मूल रिपोर्टमे अनुपस्थित अवस्थाक कल्पना समीक्षा नहि। तँ एहि अध्यायमे उपलब्ध रिपोर्टक मूल्य आ शेष साक्ष्यक आवश्यकता दुनू निर्दिष्ट अछि।

१०७. नवेन्दु कुमार झा : सेतु, लोकपर्व, रेडियो आ चुनावक सार्वजनिक अभिलेख

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ११९८१-१२०५७ ।

११९८१-१२०५७मे नवेन्दु कुमार झाक अनेक समाचार-शीर्षक आ पत्रिकागत प्रकाशन-स्थान सूचीबद्ध अछि । भारत-नेपाल रेल-सम्पर्क, कोसी महासेतुक निर्माण, छठि, सूर्योपासना, सोनपुर मेला, विद्यापति-स्मृति, रेडियो प्रसारण आ चुनावी सक्रियता एकहि पत्रकारितामे ऐतिहासिक विषयक विविधता दिखबैत अछि । स्रोतमे उल्लिखित प्रत्येक समाचारक तिथि आ मूल मुद्रित पाठ मिलायब निष्कर्षक पहिल कसौटी अछि ।

कोसी महासेतुक काम धनाभावसँ ठप्प होएबाक समाचारमे कारणक प्रश्न मुख्य अछि । निर्माण रुकेल देखनाइ एक प्रत्यक्ष सूचना हो सकैत अछि, मुदा काज ठप्प होएबाक निर्णायक कारण धनाभाव, भूमि-अधिग्रहण, ठेका वा पर्यावरणीय बाधा सँ कुन छल—ताहि लेल योजना-अभिलेख चाही । नव्य न्यायीय अनुमानक रूपकसँ पत्रकारिताक तर्क स्पष्ट कएल जा सकैत अछि, मुदा एहि रूपकसँ वस्तुतः सिद्ध कारणक विकल्प नहि मानब ।

मैथिली रेडियो समाचारक १९९३क प्रसारण-सन्दर्भ संस्थागत भाषिक अधिकारक इतिहासमे महत्वपूर्ण अछि । आरम्भ-तिथि, केन्द्र, प्रसारण-अवधि आ अभिलेखीय ध्वनिमुद्रणक जाँचसँ तकर मूल्य बढ़त । लोकपर्व-विषयक लेख सांस्कृतिक अभिलेख बनैत अछि; समाचारक भाषा, शीर्षक आ चयनक तुलना कएल जाए तँ लोकधर्म आ सार्वजनिक विमर्शक अन्तर खोलल जा सकैत अछि ।

चुनावी रिपोर्टमे मतदाता-उत्साह, दलक बयान आ भविष्यवाणी अलग कथ्यवर्ग अछि । पत्रकारक अभिमतसँ सत्यापित जनमतसर्वेक्षण नहि मानल जाए । नवेन्दु झाक बहुविषयी उपस्थिति मैथिली पत्रकारिताक व्यापक कार्यक्षेत्रक एक प्रमाण अछि; हुनकर सम्पूर्ण योगदानक मूल्याङ्कन लेल मूल लेखसभक निरन्तर कालानुक्रमिक पञ्जी आवश्यक रहत ।

१०८. हितनाथ झा : शम्भु बादलक काव्यानुवाद आ 'कोइलख'क ग्रामकथा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १२०५८-१२३२९ ।

मूल अनुच्छेद १२०५८-१२३२९ मे हितनाथ झाक काव्य, आलोचना, अनुवाद आ ग्राम-वृत्तान्तक विस्तृत परिचय अछि। विशेष अध्ययनक विषय शम्भु बादलक हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद "कविता : शम्भु बादलक", आलोचनात्मक पाठ "लेख-रेख" तथा स्थान-स्मृतिक पुस्तक "कोइलख" अछि। मूल पुस्तक एहि तीनू विधाकें एकहि सांस्कृतिक सरोकारक विस्तार मानैत अछि; समीक्षा साहित्यिक विधाक वास्तविक अन्तर सुरक्षित रखैत अछि।

अनुवादमे "मूल भावना" सुरक्षित राखबाक हितनाथ झाक घोषित प्रतिज्ञा सराहनीय, मुदा भावना स्वयं प्रतिशब्दीय समताक स्वीकृति नहि। "कोइल्हा मोची" सन कवितामे श्रम, जाति, भूगोल आ संबोधनक स्वर एक भाषा सँ दोसर भाषामे स्थानान्तरित होइत अछि। केवल अनुवादक आत्मकथ्यसँ सफलता तय नहि कएल जा सकैत अछि; मूल हिन्दी आ मैथिली रूपक युग्मित पाँति-परीक्षण आवश्यक अछि।

आशीष अनचिन्हारक पाठकीय प्रतिक्रिया, समीक्षा, आलोचना आ समालोचनाक भेद पर मूल पुस्तक चर्चा करैत अछि। अपन पठन-अवस्थितिक स्वीकृति आलोचककें उत्तरदायी बनबैत अछि, मुदा ओकरा स्वतः शास्त्रीय निष्पक्षताक श्रेष्ठ पर्याय ठहराएब उचित नहि। काव्य-साक्ष्य, विरोधी सम्भावित पाठ आ निर्णयक तर्क लिखल जाय तँ पाठकीयता सेहो समालोचनात्मक कठोरता प्राप्त करैत अछि।

"कोइलख"क ग्राम-वृत्तान्तमे ठामक जीवन, लोकइतिहास, परिवार आ सामाजिक स्मृतिक मिलन अछि। एहन ग्रन्थमे सुन्दर गद्य आ ऐतिहासिक दाबी पृथक जाँच चाहैत अछि। स्मृतिलेखनमे लेखकक सहभागिता सांस्कृतिक प्रमाणक विशेष लाभ अछि, किन्तु स्थल-अभिलेख, तिथि आ लोकसाक्षात्कारक तुलना बिना प्रत्येक स्मृति इतिहासक सिद्ध तथ्य नहि बनैत। मूल पुस्तकक बारम्बार नव्य न्याय, ध्वनि आ आधुनिक सिद्धान्तक संग तुलना उपयोगी प्रश्न खोलैत अछि; तिनका मूल पाठसँ अनिवार्यतः सिद्ध समानता मानब नहि।

१०९. हृदय नारायण झा : लुप्तप्राय लोकगीतक दस्तावेजीकरण आ लोकविद्या

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १२३३०-१२४५२।

१२३३०-१२४५२क मूल खण्डमे हृदय नारायण झाक “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत” लेखकें मौखिक परम्पराक संरक्षणक आग्रह मानि पढ़ल गेल अछि। पराती, गोसाउनिक गीत, झूमरा, विषहारा, झूमरि आ बटगमनी सन विधाक नाम मात्र साहित्यिक सूची नहि—जीवन-चक्र, मौसम, देवी-आराधना आ सामुदायिक सभाक अलग प्रसंग जनबैत अछि। तहिना लोकगीत “लुप्त” होइत अछि कि रूप बदलैत अछि, एकर प्रमाण पीढ़ीवार गायनक निरन्तर अध्ययनसँ भेटत।

झूमराक अभ्यासक साक्षी बतहू यादवक उल्लेख महत्वपूर्ण अछि। कलाकारक चेतावनी जे हुनक बाद परम्परा कोना बाँचत, लोक-ज्ञानक पीढ़ीगत संक्रमणक प्रश्न उठबैत अछि। गायनक शब्दक प्रतिलिपि संग धुन, ताल, साधन, प्रस्तुति-स्थल, गायकक भूमिका आ अनुमतिक अभिलेख रहएबाक चाही। बिना ध्वनिमुद्रणक लयात्मक रूपक पूर्ण प्रतिकृति बनि नहि सकैत।

मूल परिचय वैदिक-पुराणिक प्रतीक आ मिथिलाक पवित्र भूगोलक संग लोकगीत जोड़ैत अछि। लोकाचारक व्याख्या ओकर ऐतिहासिक उत्पत्तिक प्रमाण नहि; धार्मिक अनुश्रुतिक भावविश्व आ प्रमाणित तिथि अलग मानबाक चाही। किछु गीत लेखक-नामसँ, किछु पारम्परिक अनाम रचनासँ सम्बन्धित अछि—श्रेयक एहि भेदक अभिलेखन लोकविद्याक नैतिक आवश्यकता अछि।

नव्य न्यायक शब्दप्रमाण आ मानवशास्त्रीय सहभागी-अवलोकनक तुलना सम्भावित सैद्धान्तिक सहायता दैत अछि। मुदा ककर अनुभव सँ ककर कथन विश्वसनीय कहल गेल, एहि विशिष्ट परिस्थितिक साक्ष्य बिना केवल शास्त्रीय शब्द लगायब पर्याप्त नहि। हृदय नारायण झाक उपलब्ध उपेक्षित गायक-समुदाय आ लोकसंगीतक विषयकें लिखित सार्वजनिक विमर्शमे अनबाक अछि; संग्रहक मूल आवाज, उपभेद आ सांस्कृतिक स्वामित्वक जाँच शेष अछि।

११०. लोकगीतक विधा आ गीत-पाठ : पराती, गोसाउनि आ झूमराक समीपपाठ

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १२४५३-१२५७५ ।

१२४५३-१२५७५मे “लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत”क आलोचना गीतवर्गीकरणसँ उदाहरण-पाठ धरि बढैत अछि। पराती भोरक लय, सोहर जनम, परिछन नव गृहप्रवेश, समदाउन बिदाइ आ कोसी-गीत नदीजनित अनुभवसँ सम्बन्धित अछि। ई कार्याधारित वर्गीकरण शोधक आरम्भ अछि; गाम, जाति, गायिका-गायक, पर्व आ बदलबा लयक विविधता देखल जाए बिना एक प्रकारक स्थायी, सार्वभौम परिभाषा नहि बनत।

गोसाउनिक गीतमे भक्तक असमर्थताक स्वीकृति आ देवीसँ आत्मीय सम्बन्धक स्वर आवैत अछि। किछु स्तोत्रमे भयंकर देवीक दन्त, मुण्डमाला आ शक्ति-बिम्ब अछि; दोसरमे दया, नाव, पार उतारबाक रूपक। रसक विश्लेषणमे भय, करुणा आ शान्तिक भाव एकहि पाठमे बदलि सकैत अछि। पाठक छन्द-पाँति आ आवृत्तिक निकट पठन कएल बिना एहि विविधताकेँ मात्र भक्ति-रसक एकसमान वर्ग नहि दियौ।

झूमरा गीतक गहबर, ढोल आ सामूहिक भक्ति केवल लिखित शब्द नहि, देहगत प्रस्तुति अछि। भक्ताक अस्थायी धार्मिक अधिकार सामाजिक संरचनामे कतेक परिवर्तन करैत अछि—ई सहभागी-अवलोकनक प्रश्न अछि। एकल अनुष्ठानमे जातीय सीमा क्षणिक रूपसँ उलटव दीर्घकालिक सामाजिक समानता सिद्ध नहि करैत। एहि अन्तरक स्वीकार लोकगीतक सामाजिक आलोचनाकेँ अधिक प्रामाणिक रखैत अछि।

मूल आलोचनामे स्मृति-सिद्धान्त आ रिचुअल अध्ययनक उपयोग देखल गेल अछि। गीतक सांस्कृतिक संधारणक पक्षे ई तुलना उपयोगी, मुदा मूल लोकगीतक आन्तरिक मैथिली बोल, उच्चारण आ गेय प्रसंग अनुवादसँ बचि रहय से पहिल प्राथमिकता अछि। मूल प्रकाशनमे कतिपय शब्दक पाठान्तरक सत्यापन आ गायनक ध्वनिसाक्ष्य न भेटलाक सीमा स्पष्ट अछि।

१११. नवगीत आ पुरान धुन : गोसाउनिक नौ गीतक द्विभाषिक टिप्पणी-परीक्षण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १२५७६-१२७२२।

१२५७६-१२७२२क द्विभाषिक गीत-संग्रह नौ गोसाउनिक अथवा भगवती-गीतकेँ मूल मैथिली/ब्रज पाठ, अंग्रेजी भावानुवाद, सम्भावित रचनाकार-श्रेय आ टिप्पणी संग उपस्थित करैत अछि। गीतक संख्या आ मूल अनुक्रम लेखकक प्रस्तुति अनुसार सुरक्षित रखल गेल अछि। संग्रहक वैचारिक उपलब्धि जीवित लोकगीतकेँ केवल साहित्यिक “विषय” नहि, स्वयमेव अध्ययनयोग्य पाठ बनायब अछि।

पहिल गीतक जागरण-संबोधन “अजहुँ भजन चित चेत”मे निद्रासँ उठबाक प्रत्यक्ष पराती-अवसर आ चेतनाक आध्यात्मिक जागरण एक-दोसरमे प्रतिध्वनित होइत अछि। ई अर्थसम्भावना ध्वनि-सिद्धान्तसँ समझल जा सकैत अछि; किन्तु मूल गायक ओकरा ठेठ धार्मिक, सामाजिक अथवा लोकरीतिगत अर्थमे कोना ग्रहण करैत छथि, से प्रत्यक्ष प्रमाण अलग विषय अछि। एकहि कविताक अनेक सम्भावित पठनकेँ ऐतिहासिक लेखकीय मंतव्य नहि मानू।

देवीक दन्तक ध्वन्यनुकरण सन “कट कट कट” आ “गट गट” स्वरशृंखला लिखित पृष्ठपर ध्वनिक बिम्ब बनबैत अछि। ई ध्वनिमूलक आवृत्ति गेय तालमे कोना निष्पादित होइत अछि, एकर परीक्षा बिना केवल छन्द-विभाजनसँ अन्तिम फैसला नहि कएल जाए। मूल अंग्रेजी अर्थानुवाद शब्दार्थ दे सकैत अछि, मुदा ध्वनि, स्थानीय संबोधन आ सामाजिक व्यंग्य-स्तरक पूर्ण स्थानापन्न नहि।

गीतसभमे भक्ति, पापक्षमा, दैन्य, मातृ-संबोधन आ नैया-खेवनहारक रूपक अछि।

आन्तरिक पाठालोचनामे समान बिम्बक पुनरावृत्ति, भिन्न रचनाकारक सम्भावित योगदान आ मौखिक पाठान्तरकेँ अलग अंकित करबाक चाही। मूल टिप्पणीमे चन्दा झा सन ऐतिहासिक श्रेय देल गेल हो, तँ प्रमाणित प्रथम मुद्रण वा हस्तलिखित स्रोतबिना ओकरा निश्चयात्मक लेखकत्व नहि ठहराओल गेल।

११२. झूमरा आ लोकगीतक शब्दकोश : गहबरक लोकसाक्ष्य आ संरक्षणनीति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १२७२३-१२७७५ ।

१२७२३-१२७७५मे झूमराक अनुष्ठानगीत आ पराती, सोहर, डहकन, विषहारा, बटगमनी, चैमासा, लगनी, समदाउन आदि लोकविधाक व्याख्यात्मक सूची अछि । झूमरा-पाठमे “गोडलागूँ पैयाँ पडूँ” सन आग्रह देवताक स्वागतकेँ लोकभाषाक निजी संबोधनमे अनैत अछि । लिखित पदक भावार्थ आ प्रस्तुति-संबद्ध देहगत आह्वानमे अन्तर विवेकसँ देखबाक आवश्यक अछि ।

बतहू यादवसँ प्राप्त गीतक श्रेय मूल अभिलेखनक विशेषता अछि । मौखिक प्रस्तुति प्राप्त करबाक स्थान, तिथि, पारिवारिक अनुमति, गायकक जातीय परिचयक उचित स्वीकृति आ प्रसारणक अधिकारक स्पष्ट दस्तावेजीकरण भविष्यमे उपयोगी होयत । कलाकारक अस्पष्ट सामाजिक वर्ग स्वतः अनुमानसँ भरि देब नहि; ओकर अपन साक्ष्यकेँ मान्यता दियौ ।

लोकगीत-विधाक सूची सामाजिक क्रियाक आधारपर अछि : जन्म, यौवन, यात्रा, वर्षा, विवाह, विदाई, लोकदेवी आ नदी । एहन वर्गीकरणसँ ऐतिहासिक लेखनमे स्त्रीक श्रम, घरेलू रीत, चलन, पर्यावरणीय समय आ सामुदायिक वियोग देखल जा सकैत अछि । मुदा “समदाउन” आ “बटगमनी” सन विधा पर क्षेत्रगत भेद हो सकैत अछि; सूचीकेँ प्रयोगक्षेत्रक बिना अंतिम कोश नहि कहू ।

मूल लोकगीतक संरक्षणक सर्वोच्च प्राथमिकता गीतक जीवित गायन-अवसरक सुरक्षा अछि । लेख, मुद्रित पाठ आ अंग्रेजी अनुवाद सहायक अभिलेख अछि; समाजक भीतर रचनात्मक पुनःप्रयोग आ गायक-गायिकाक आर्थिक-सांस्कृतिक अधिकार सेहो आधारभूत अछि । एहि निष्कर्षक आधार मूल पाठक संकट-सूचना अछि; वास्तविक क्षेत्रगत परम्परा पूर्णतः लुप्त भऽ गेल दाबी नहि कएल गेल ।

११३. संस्थागत मान्यताक चारि परत : साहित्यक अधिकार आ सार्वजनिक प्रमाण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १२७७६-१२८१३ ।

मूल ग्रन्थक नूतन खण्ड भारतीय साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी, संगीत-नाटक अकादेमी, नेपालक सांस्कृतिक संस्था आ विदेह समानान्तर आन्दोलनकेँ एकहि तुलनात्मक विमर्शमे अनैत अछि। एकर प्रमुख प्रतिज्ञा ई अछि जे साहित्यिक प्रतिष्ठा केवल रचनाक आन्तरिक गुणसँ नहि, मान्यता देनिहार संस्थाक निर्णय-विधि, उपलब्धता आ सामाजिक पहुँचसँ सेहो निर्धारित होइत अछि। एहि प्रतिज्ञामे मूल प्रश्न संस्थाक घोषणापत्र आ वास्तविक परिणामक दूरी अछि।

आलोचनात्मक रूपसँ संस्थागत स्वीकृति, साहित्यिक मूल्य आ सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व तीन भिन्न विषय अछि। पुरस्कार प्राप्त करब रचनाक उत्कृष्टताक सार्वभौम प्रमाण नहि, मुदा पुरस्कारक अभाव लेखकक साहित्यिक असफलताक प्रमाण सेहो नहि। एतेक मात्रसँ संस्थागत पक्षपात स्वतः स्थापित नहि होइत; प्रतिनिधि लेखकसभक पञ्जी, चयन-विधि, दीर्घकालिक पुरस्कार-अभिलेख आ अस्वीकृत पुस्तकसभक तुलनात्मक परीक्षण अपेक्षित अछि।

मूल पुस्तक नव्य न्यायक प्रमाणभाषा, औपनिवेशिकोत्तर आलोचना आ संस्थाक कार्य-प्रदर्शनकेँ एकत्र रखैत अछि। ई संगम फलदायी तखन होयत जखन प्रत्येक सिद्धान्तक प्रयोजन स्पष्ट हो। दार्शनिक प्रमाणक वैधता साहित्यिक रसास्वादनक पर्याय नहि, आ सामाजिक प्रतिनिधित्वक कसौटीक आधारपर मात्र कविताक रूपगत सफलता तय नहि होइत। एहि अन्तरकेँ सुरक्षित राखि पुस्तकक प्रतिज्ञाकेँ ठोस अनुसन्धान-योजना मानल जा सकैत अछि।

स्रोतमे विदेहक पूर्व अंकसंख्या आ प्रतिष्ठान-विषयक तथ्य विशिष्ट समयक बयान अछि; वर्तमान संस्थागत स्थिति वा ऐतिहासिक सत्यापनक अन्तिम प्रमाण नहि। समीक्षा एहि अध्यायकेँ एकटा प्रश्नोन्मुख इतिहास-प्रस्ताव मानैत अछि, जे अपन दाबीकेँ जाँचबाक कसौटी स्वयं प्रस्तुत करैत अछि।

११४. सात पुरस्कार-वर्ग आ 'नित नवल' : जीवित रचनाकारक अभिलेखीय प्रतिष्ठा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १२८१४-१२८५५ ।

साहित्य अकादेमीक मान्यता-वर्ग आ विदेहक जीवित रचनाकार सम्बन्धी योजना एकहि पुस्तक-खण्डमे उपस्थित अछि । राष्ट्रीय पुरस्कार, बाल-युवा साहित्य, अनुवाद, भाषा-सम्मान आ आजीवन सम्मानक लक्ष्य अलग अछि; एहि कारण पुरस्कारक संख्या जोड़ि "मान्यताक पूर्णता" निर्धारित करब पद्धतिगत रूपसँ अनुचित होयत । प्रत्येक श्रेणीक पात्रता, पुरस्कार-वर्ष, चयनसमिति आ कृतिक उपलब्धता पहिने अलग जाँच चाहैत अछि ।

"नित नवल" प्रस्ताव जीवित कलाकारक सम्पूर्ण उपलब्ध कृतिक डिजिटल प्रकाशनकें चयनक पूर्वशर्त रखैत अछि । एतय एक नव विचार अछि: आलोचना पुरस्कारक पाछाँ लिखल प्रशस्तिपत्र नहि, पुरस्कारसँ पहिने सार्वजनिक रूपसँ उपलब्ध मूल पाठमे आधारित अध्ययन हो । ई पद्धति आलोचककें प्रमाण देखेबाक बाध्यता दैत अछि आ पाठककें समीक्षा जाँचबाक अधिकार ।

मुदा सम्पूर्ण पुस्तक PDFमे उपलब्ध कराबय सकबाक शर्त स्वयं किछु कलाकारकें बहिष्कृत कऽ सकैत अछि—जकरा लग पाण्डुलिपि, सहमति, मुद्रण-साधन अथवा डिजिटल अधिकार नहि अछि । "जीवित" केन्द्रित निर्णय मौखिक कलाकारक साक्षात्कार लेल समर्थ होइत अछि, मुदा निधन भेल उपेक्षित लेखकक पुनराविष्कार लेल अलग अभिलेख-पद्धति अपेक्षित अछि । विदेहक अपन सीमा स्वीकार करब एहि योजनाक आलोचनात्मक सत्यनिष्ठाक पक्ष अछि ।

साहित्येतिहासमे एहि अध्यायक सार्थकता संस्थाक पुरस्कार-सूची मात्र नहि; चयन आ पाठोपलब्धताकें पारदर्शी सांस्कृतिक जिम्मेवारीक रूपमे स्थापनाक प्रयास अछि । वास्तविक प्रकाशित विशेषाङ्क, लेखक-अधिकार आ मूल पाठक सूची सँ एतय देल प्रतिज्ञा कतेक पूरा भेल, एकर परीक्षण अगिला चरणक विषय रहत ।

११५. मैथिली साहित्य अकादेमी पुरस्कारक कालपञ्जी : संख्या, विधा आ निर्णय

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १२८५६-१३३२६ ।

मूल स्रोत १९६६ सँ मैथिली मुख्य पुरस्कारक वर्ष, पुस्तक आ लेखकक विस्तृत पञ्जी प्रस्तुत करैत अछि। गद्य, कविता, नाटक, संस्मरण आ उपन्यासक सम्मिलित उपस्थिति साहित्यिक विधाक संस्थागत वितरणक अध्ययन सम्भव बनबैत अछि। पुरस्कार-नहि-देबाक वर्षक उल्लेख सेहो अर्थपूर्ण अछि, मुदा एतेकसँ कारण प्रमाणित नहि होइत; तत्समयक न्यायनिर्णय, पात्र पुस्तक आ आधिकारिक सूचना चाही।

पञ्जीक आलोचनात्मक उपयोगमे चारि प्रश्न उठैत अछि—वर्षक साथ पुस्तक-प्रकाशनक अन्तर कतेक, विधागत असमानता कोना निर्धारित भेल, स्त्री आ उपेक्षित समुदायकें कतेक अवसर भेटल, आ अनुवाद-मौलिक कृतिक समान मानदण्ड छल कि नहि। किछु भागमे मुख्य पुरस्कारक पुनरावृत्त सूची आ अतिरिक्त टिप्पणी अछि; एहि कारण समान प्रविष्टिकें दू अलग पुरस्कार अथवा स्वतंत्र प्रमाण नहि गनल जाए।

लेखकक जाति-वर्गक विषयमे मूल पाठक निर्णायक वाक्य इतिहासलेखनक एक चुनौती अछि। पुरस्कारप्राप्त व्यक्तिक समुदाय-चिह्ननक नियम, स्वपहिचान, स्वतंत्र दस्तावेज आ अनिश्चित प्रविष्टिक हिसाब बिना सांख्यिक निष्कर्ष विवादग्रस्त बनैत अछि। पहिने चिह्नित ५० आ ५१क गणनागत असङ्गति एहि पद्धतिगत सतर्कताकें अधिक आवश्यक बनबैत अछि।

पाठाधारित निष्कर्ष ई नहि जे पुरस्कार-संस्था सर्वथा निरर्थक अछि अथवा सर्वथा निष्पक्ष अछि; प्रकाशित पुरस्कार-पञ्जी साहित्यिक संस्थाक निर्णायक अभिलेख अछि, जकर मूल्य निष्पक्ष तुलनात्मक परीक्षणसँ खुलैत अछि। पुस्तकक दीर्घ सूचीकें भविष्यक शोध लेल उपयुक्त प्रारम्भिक डाटास्रोत मानि सकैत छी, अन्तिम सामाजिक-सांख्यिक प्रमाण नहि।

११६. सात मान्यताप्राप्त मैथिली संस्था : भूगोल, सदस्यता आ प्रतिनिधित्व

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३३२७-१३३४४ ।

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, चेतना समिति, कोलकाताक मिथिला सांस्कृतिक परिषद, विद्यापति सेवा संस्थान आ अन्य तीन संस्थाक विवेचनमे मूल पुस्तक मान्यताक भूगोलक प्रश्न उठबैत अछि। दरभंगा आ पटनाक सार्वजनिक संस्थासँ बाहर जनकपुर, प्रवासी श्रमिक, डिजिटल लेखक आ ग्रामीण लोककलाकार कतेक प्रतिनिधित्व पबैत छथि, से अध्ययनक वास्तविक केन्द्र अछि।

संगठनक कार्यालय एक शहरमे रहब मात्रसँ तकर सामाजिक पहुँच असिद्ध नहि बनैत; कार्यालयक भूगोल आ कार्यक्षेत्रक भूगोल अलग अछि। एहि कारण प्रकाशन-सूची, पुस्तकालय, पाठकगोष्ठी, अनुदानक वितरण आ चयनित लेखकक क्षेत्रक टोस विवरणसँ प्रतिनिधित्वक दाबी नापल जाए। “वेबसाइट नहि”, “समीक्षित पत्रिका नहि” सन समकालीन दाबीकें समय-बद्ध अन्वेषणक बिना शाश्वत विशेषता कहब अनुचित।

विद्यापतिक उत्सव आ साहित्यिक विमर्शमे प्रतिद्वन्द्विता अनिवार्य नहि अछि। स्मृति-उत्सव भाषा-संरक्षणक सार्वजनिक स्थल बनि सकैत अछि; समस्या तखन उठैत अछि जखन समारोह साहित्य-पाठक स्थान घेरि लैत अछि। ताहि लेल कार्यक्रमक अभिलेख आ प्रकाशित कृतिक समीकरण चाही। नव्य न्यायक अनुपलब्धिक रूपक संस्थागत अनुपस्थितिक प्रश्न तीक्ष्ण बनबैत अछि, मुदा सामाजिक कारणक पूरा प्रमाण नहि।

एहि अध्यायक योगदान संस्थागत “मान्य” होएब आ प्रतिनिधि होएबक फरक खोलब अछि। आलोचनाक सीमा ई जे सभ संस्थापर समान प्रमाण-धनत्व नहि अछि; सकारात्मक काज आ आलोच्य पक्षक तुलनात्मक गणना शेष अछि।

११७. मिथिला चित्रकला आ ललित कला संस्था : कला, बाजार आ श्रम-अधिकार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३३४५-१३३५२।

मिथिला चित्रकला पर मूल ग्रन्थ राज्य-मान्यता आ बाजार-व्यवस्थाक दोहरी प्रक्रिया देखबैत अछि। कलाकारक सार्वजनिक प्रतिष्ठा बढ़ब सामाजिक उपलब्धि हो सकैत अछि, मुदा मूल चित्रक नकल, श्रेयक लोप, दलालक मूल्यनिर्धारण आ कलाकारक स्वामित्वक प्रश्न अनसुलझल रहि सकैत अछि। एहिसँ कला-इतिहासक अध्ययन वस्तुक दृश्यगुणसँ आगाँ श्रम-सम्बन्ध धरि बढ़ैत अछि।

राष्ट्रीय अकादेमी आ विदेह समानान्तर ललित कला सम्मानक तुलना एकटा भेद स्पष्ट करैत अछि : संग्रहालय-पठनीय चित्रकला आ गामक जीवित शिल्प-परम्परा एक-दोसरक विरोधी नहि। माटिक वस्तु, काठ-शिल्प, प्रतिमा आ लोक-रंगक उपस्थिति कलाक विधागत सीमा विस्तृत करैत अछि। मुदा अनेक माध्यमकँ एक सम्मान-वर्गमे राखलाक बाद मूल्याङ्कनक अलग तकनीकी कसौटी सेहो विकसित करबाक चाही।

मूल ग्रन्थमे प्रसिद्ध चित्रकारसभक सम्मान आ अंतरराष्ट्रीय मान्यताक उदाहरण अछि। पुरस्कारक श्रेणी, संस्था, वर्ष तथा कलाकार-अधिकार सम्बन्धी विशिष्ट दाबी हेतु मूल अभिलेखक जाँच शेष अछि। चित्रकला “विश्वप्रसिद्ध” होएब कलाकारक आजीविका सुनिश्चित करबाक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि अछि।

वास्तविक शोध-पद्धतिमे कलाकारक पहिचान, मूल कृतिक चित्र, बिक्रीक अनुक्रम, वस्तु-निर्माणक श्रम आ पुनर्मुद्रणक शर्त कृतिवार मिलानल जाए। एहि अध्यायक महत्त्व एहि प्रकारक जाँचक दिशि पाठककँ मोड़ब अछि।

११८. नाट्य-संगीतक संस्थागत इतिहास : प्रदर्शनकें प्रमाण बनायबाक चुनौती

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३३५३-१३३६०।

संगीत-नाटक अकादेमीक संरचना आ विदेह मैथिली नाट्य उत्सवक समक्ष मूल ग्रन्थ लोकनाच, गीत, वाद्य, मैथिली रंगमंच आ अभिनयकें साहित्यिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। लिखित नाट्यपाठक साहित्यिक मूल्यांकन आ मञ्चपर अभिनयक वस्तुगत प्रदर्शन भिन्न साक्ष्य चाहैत अछि; शाब्दिक पुस्तकसँ स्वर, लय, गति आ दर्शक-प्रतिक्रिया पूर्णतः नहि बुझल जा सकैत अछि।

लोक वाद्य बजाबयवला कलाकारक मान्यता संस्कृतिक केन्द्रक विस्तार अछि। मुदा “ककरा राष्ट्रीय सम्मान नहि भेटल” जेकाँ नकारात्मक ऐतिहासिक दाबी संस्था-

विशेषक पूरा पुरस्कार-पञ्जीक विषय अछि; उपलब्ध पुस्तकमे एहन दावा

अभिलेखीय पुनर्जाँचक अधीन राखल जाए। संस्थागत अनुपस्थितिक सम्भावना सामाजिक विमर्श खोलैत अछि, मुदा केवल एहि कारण कलाकारक वास्तविक कृतित्वक तौल नहि होइत।

विदेह नाट्य उत्सवमे मौलिक नाटक, विदेशी नाट्यपाठक अनुवाद, साक्षात्कार आ लोक प्रदर्शनक दस्तावेज एकत्र होएबाक उल्लेख अछि। ई संग्रह रंगमंचीय अन्तर्सम्बन्धक समृद्ध सामग्री बनि सकैत अछि। एकर आलोचना लेल प्रत्येक नाटकक प्रस्तुति-तिथि, निर्देशक, कलाकार, भाषा, मंच-विन्यास आ सम्भावित ध्वनिचित्रक सूची चाही।

एहि खण्डक विशिष्ट उपलब्धि लिखित पाठक सीमाक पहचान अछि। नाटकक मूल्य केवल नाटक-रचना सँ नहि, दृश्य-सम्पादन आ सामुदायिक ग्रहणसँ सेहो निर्धारित होइत अछि; मुदा एही कारण अप्रमाणित प्रदर्शन-विवरण कल्पना कऽ लिखल नहि जाए।

१११. नेपालक मैथिली पुरस्कार-संरचना : भाषिक अधिकार आ सीमापार सांस्कृतिकता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३३६१-१३३७५ ।

मूल पाठ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, विद्यापति पुरस्कार, कोश पुरस्कार, फुलकुमारी महतो न्यास आ साझा प्रकाशनक पुरस्कारकें एकत्र रखैत अछि। एकर महत्त्व ई जे जनकपुर-मधेशक मैथिली सार्वजनिकता भारतीय राज्यक प्रशासनिक सीमामे नहि समेटल जा सकैत अछि। मुदा सभ पुरस्कारक भाषा, उद्देश्य, पात्रता आ वैधानिक स्थिति समान नहि अछि; नेपाल-केन्द्रित एक सूचीक भीतर सेहो एहि भेदकें सुरक्षित रखबाक चाही।

प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता आ मैथिली रचनाकारक वास्तविक सहभागिताक अनुपात निकालबाक लेल निश्चित वर्षक सदस्य-सूची, कार्यविभाग, प्रकाशित पुस्तक आ भाषिक जनगणनाक भिन्न स्रोतीय स्तर चाही। संविधानमे भाषाक उल्लेख स्वयं पूर्ण बजटीय अथवा पुरस्कार-समता सिद्ध नहि करैत। ताहि तरहेँ शब्दकोशक सम्मानकें मैथिली साहित्यक पुरस्कार मानय सँ पहिने कृतिक भाषा-पहिचान जाँच अपेक्षित अछि।

विद्यापतिक नाम साझा साहित्यिक स्मृति अछि, मुदा एहि नामपर संचालित पुरस्कारक वास्तविक उद्देश्य, निर्णायक समिति आ पुरस्कारप्राप्त कृतिक स्रोत-परीक्षण आवश्यक अछि। भारतक मैथिली आ नेपालक मैथिलीकें एकहि उच्चारण, प्रकाशन-बाजार वा राजनीति मानब ऐतिहासिक सरलीकरण होयत। तुलनात्मक इतिहासक उचित रूप दूनू देशक संस्था बीच संपर्क आ अन्तर दुनू पहचानैत अछि। एहि अध्यायमे नेपालक साहित्यिक संस्थापर कठोर फैसला अछि; आलोचकक कर्तव्य उपलब्धि आ अनुपस्थिति दूनूक अभिलेख सँ नपवाक अछि। उपलब्ध मूल ग्रन्थ प्रश्नक आधार दैत अछि, मुदा संस्था-वार पूरा प्रमाण-संचयबिना पूर्ण निर्णायक निष्कर्ष नहि।

१२०. विदेह समानान्तर सम्मान आ विशेषाङ्क : मान्यता सँ स्रोत-संरक्षण धरि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३३७६-१३४०३ ।

विदेह समानान्तर साहित्य, ललित कला आ संगीत-नाटक सम्मानक प्रतिपादन केवल पुरस्कारक समांतर नामकरण नहि । मूल पुस्तक दाबी करैत अछि जे गामक कलाकार, स्त्री, युवा लेखक, लोक वाद्यक साधक आ सामाजिक कार्यकर्ता राष्ट्रीय संस्थाक पारम्परिक श्रेणीमे अनदेखल रहि सकैत छथि । सम्मानकें मूल कृति, रचनाकारक कथन आ उपलब्ध चित्र-वीडियोसँग जोड़ब तकर सार्वजनिक सत्यापनक सम्भावना खोलैत अछि ।

“जीवित व्यक्तिक विशेषाङ्क” आ संस्था-विशेषाङ्कमे भेद अछि । पहिल प्रकार व्यक्तिक जीवित रचनाशीलता आ लेखन-पथ संकलित करैत अछि; दोसर प्रकार संस्थाक विचार, कार्यक्रम आ सार्वजनिक प्रभावक अभिलेखन करैत अछि । मिथिला स्टूडेंट यूनियन, मिथिला विकास परिषद् आ मैथिली नाट्य उत्सव सम्बन्धी खण्ड एहि तीनू प्रकारक अन्तर उजागर करैत अछि ।

मिथिलाक सांस्कृतिक अस्मिता सँ पृथक प्रशासनिक राज्यक माँगक निष्कर्ष तार्किक रूपसँ स्वतः नहि निकलैत । मूल ग्रन्थमे एहि अनुमानक सीमा उचित प्रश्न बनल अछि । भाषिक इतिहासक प्रमाण, आर्थिक सम्भाव्यता आ राजनीतिक अधिकार पृथक अध्ययन चाहैत अछि । एकरे संग सांस्कृतिक संस्था पर लिखल समीक्षाकें स्वयं प्रचार-पुस्तिका नहि बनबाक अनुशासन आवश्यक अछि ।

समांतर पुरस्कारक चयन प्रक्रिया सेहो समान पारदर्शिताक कसौटीपर परखल जाए—नामांकनक अभिलेख, कसौटी, असहमति, हित-संघर्ष आ प्रकाशन-अधिकार । एहि आलोचनात्मक समतासँ विदेहक वैकल्पिक इतिहास-दृष्टि अधिक विश्वसनीय बनत; पुरस्कारक व्यक्तिगत सूची सभकें शाश्वत तथ्य मानब नहि ।

१२१. छओ कसौटीक संस्थागत सारिणी : मापनक अर्थ आ सीमा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३४०४-१३४८५ ।

मूल पुस्तक पुरस्कार-अनुक्रम, समावेशिता, क्षेत्रीय अवसंरचना, डिजिटल उपस्थिति, नव लेखन आ प्रवासी समाजक सम्बन्ध—छओ कसौटीपर संस्था-वार सारिणी बनबैत अछि। ई साहित्यिक संस्थाक गुणात्मक मूल्याङ्कन लेल उपयोगी परीक्षणसूची अछि, मुदा “उच्च”, “न्यून” आ “अनुपस्थित” जेकाँ चिह्न तभी तुलनीय होयत जखन प्रत्येक कसौटीक मापदण्ड, समयसीमा आ साक्ष्य अभिलेखित हो ।

पुरस्कारक बारम्बारता संस्था-विशेषक त्वरित सक्रियता बता सकैत अछि, मुदा गुणवत्ताक विश्वसनीय स्थानापन्न नहि । डिजिटल उपस्थिति वेबसाइटक संख्यासँ बड्ड व्यापक अछि; पोथीक उपलब्धता, स्थायी अभिलेख, शोधयोग्य पाठ, पाठकक पहुँच आ दिव्याङ्गजनक उपयोगिता सेहो मानक होयबाक चाही । ताहि तरहें लोककलाकारक सम्मान पुस्तक-आधारित पुरस्कारसँ स्वभावतः अलग इकाई अछि ।

सारिणीमे एक पक्ष राष्ट्रीय संस्थाक स्थायी राज्यसाधन, दोसर पक्ष स्वसाधित सम्पादकीय आन्दोलन अछि । दूनूक बजट, उद्देश्य आ कार्यक्षेत्र असमान होइतो तुलना सम्भव अछि—जँ परिणामकेँ संसाधन आ घोषित लक्ष्यक अनुपातमे पढ़ल जाए । केवल पुरस्कारक घोषित संख्या सभ संस्थाक सांस्कृतिक उपयोगिता साबित नहि करैत ।

एहि रूपमे सारिणी निर्णायक अंकतालिका नहि, परीक्षणयोग्य परिकल्पना अछि ।

मूल आँकड़ा, सार्वजनिक नियम आ परिणामक पुनर्मापन बिना कोनो श्रेणीकेँ “अन्तिम” नहि मानल गेल ।

१२२. नव्य न्याय सँ साहित्यिक मान्यताक परीक्षण : प्रमाण, व्याप्ति आ हेत्वाभास

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३४८६-१३५१६ ।

मूल लेखक गङ्गेश उपाध्यायक नव्य न्यायसँ पुरस्कार-संस्थाक प्रामाणिकताक प्रश्न उठबैत छथि। समितिक अनुशंसा “शब्द” प्रमाणक सामाजिक रूप जकाँ आ कृतिक वास्तविक पठन “प्रत्यक्ष” जकाँ उदाहरण दैत अछि। एहि उपमा सँ एक वैध प्रश्न खुलैत अछि—कुन अर्थमे समिति साहित्यिक श्रेष्ठताक ज्ञान देबाक अधिकारी अछि? प्रमाणक स्रोत देखायब संस्था-कृतिक सम्बन्धक परीक्षणक शुरुआत अछि।

मुदा प्रमाणमीमांसाक तकनीकी “व्याप्ति”केँ सामाजिक वर्गीकरणक शाब्दिक पर्याय बनायब कठिन अछि। साहित्यिक मूल्य सर्वत्र एकहि निर्णायक नियमसँ निष्पन्न नहि होइत; विधा, पाठक, भाषा आ कालक सम्बन्ध बदलैत रहैत अछि। संस्थागत

प्रतिनिधित्वक अभाव “अव्याप्ति”सँ तुलना कएल जा सकैत अछि, मुदा नव्य न्यायीय परिभाषाक दार्शनिक स्थान आ सांख्यिक निष्कर्ष अलग राखबाक चाही।

मूल ग्रन्थक पक्ष जे लोकसाक्ष्य, मौखिक प्रस्तुति आ डिजिटल अभिलेख साहित्यिक

प्रमाणक वैध स्रोत अछि—एहि बातमे ऐतिहासिक विस्तारक सम्भावना अछि।

विपरीत पक्ष जे संपादकीय प्रत्यक्ष अनुभव निष्पक्षताक स्वतः गारण्टी नहि; ककर अनुभव चुनल गेल, ककरा छोड़ल गेल, ई प्रश्न समान रूपसँ पूछल जाए।

एहि अध्ययनक सकारात्मक निष्कर्ष ज्ञानमीमांसाकेँ आलोचना-नैतिकताक उपकरण

मानब अछि; ओकरा पूर्वनिर्धारित संस्थागत फैसला सिद्ध करबाक अस्त्र नहि

बनायब। अपूर्ण पुरस्कार-अभिलेखक कारण अन्तिम दाबी अस्थायी रहत।

१२३. परिशिष्टक 'प्रतिरोधी अभिलेख' : जीवित व्यक्तिसँ संस्थागत समीक्षाधरि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३५१७-१३६२०।

मुख्य अध्यायक बादक विस्तृत परिशिष्ट विदेहक "नित नवल", विशेषाङ्क आ समानान्तर संस्थागत प्रयोगकें प्रतिरोधी अभिलेखक रूपमे स्थापित करैत अछि। ग्रैम्शीक वर्चस्व-विरोधक विचारक सहायता सँ ई प्रश्न उठैत अछि जे कोन रचनाकारक जीवन सामग्री पुस्तकालयमे बचैत अछि आ कोन लोककलाकारक अभ्यास बिना अभिलेख विलाइत अछि। एहि भेदमे सांस्कृतिक अधिकारक वास्तविक प्रश्न अछि।

जीवित रचनाकारक समग्र-संग्रह, प्रश्नोत्तर आ मूल पाठक डिजिटल उपलब्धता भविष्यक साहित्येतिहास लेल मूल्यवान अछि। मुदा प्रकाशित विशेषाङ्कक संख्या, प्रत्येक लेखकक कृतिसूची, अधिकार-अनुमति आ अन्तिम संशोधन-तिथिक पञ्जी उपलब्ध नहिं होए तँ "सम्पूर्ण" शब्द अतिरंजित बनि सकैत अछि। अभिलेखीय अपूर्णता स्वीकार करब स्वयमेव इतिहासक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

मूल पाठ राष्ट्रीय संस्थाक चयन-प्रक्रियाक आलोचना करैत अछि आ अपन संपादकीय मॉडेल सेहो रखैत अछि। आलोचकीय समरूपता लेल दुनू पक्षपर एकहि प्रश्न लागू हो—निर्णायक के, ककर उपलब्ध पाठ देखल गेल, सहमति कोना लेल गेल, आ आलोचनाक प्रतिवाद कतय देखाओल जाएत। केवल वैकल्पिक कहलासँ नीति स्वतः अधिक लोकतान्त्रिक नहि भऽ जाइत।

एहि परिशिष्टक महत्त्व स्वयं आदर्शक प्रचार नहि, सांस्कृतिक अभिलेखनक भिन्न ढाँचा प्रस्तावित करब अछि। समाजशास्त्रीय दाबी कें मूल सामग्रीक प्रमाण-चिह्नसँ जोड़बाक कार्य पूर्ण स्वतंत्र परीक्षण माँगैत अछि।

१२४. सम्मानक पुनर्गणना आ सामाजिक समुदाय : दोहराव, वर्ग आ प्रमाण-श्रेणी

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३६२१-१३७७९ ।

परिशिष्टमे पुरस्कारक वर्ग, आयोजक आ लोकसमुदायक सूची अनेक रूपमे दोहरायल अछि। किछु स्थानपर साहित्य अकादेमीक सम्मानक प्रशंसा आ किछु स्थानपर तकर चयनपर तीक्ष्ण आरोपक विधान अछि। आलोचनामे ई दुनू स्वर स्रोतक भीतरक बहस मानि राखल जाए; एक पक्षक जोरदार शब्दावली दोसर पक्षक तथ्यगत खण्डन नहि।

जाति, लिंग, क्षेत्र आ विधाक वितरण पर शोध लेल प्रत्येक पुरस्कार-वर्षक एकल पहचान, पुरस्कारप्राप्त लेखकक प्रमाणित स्वपरिचय, अज्ञात श्रेणी आ दोहरायल पुरस्कारक अलग गणना चाही। विशिष्ट समुदायसँ जुड़ल अनुमानित नाम देखकऽ वर्ग निर्धारण करब न अनुशासन अछि, न प्रमाण। मूल पुस्तकक अनेक सूची पुनर्मूल्यांकनक शुरुआत अछि, स्वतन्त्र सांख्यिक निष्कर्ष नहि।

विदेह समानान्तर सम्मानमे जीवित लोककलाकारक समावेश एहि सूचीपरक विवेचनक वास्तविक आकर्षण अछि। किंतु साहित्यिक पुस्तकक पुरस्कार, कलाकारक लोककर्म आ सांस्कृतिक कार्यकर्ताक संस्थागत श्रम एक अंकतालिकामे सीधे जोड़ल नहि जा सकैत। सही तुलनात्मक तरीका प्रत्येक श्रेणीक उद्देश्य पहिने स्पष्ट करब होयत।

एहि पुनरावृत्त परिशिष्टक पाठगत सीमा सम्पादकीय कसावट अछि। एकहि पुरस्कार-तालिका अनेक बेर देलासँ स्रोत-विस्तार नहि बढ़ैत; प्रत्येक पुनर्प्रकाशित पाँतिक मूल संख्या, तिथि आ नाम मिलायब जरूरी अछि।

१२५. राष्ट्रीय अकादेमी आ विदेहक द्वन्द्व : संस्थागत लाभ आ आत्मालोचना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३७८०-१३८५५ ।

अगिला तुलनात्मक खण्ड साहित्य अकादेमीक मान्यता, राष्ट्रीय पहुँच, अनुवाद-कार्य आ पुरस्कारक स्थायित्वक किछु सकारात्मक योगदान स्वीकार करैत अछि; एकरा संग चयनक सम्भावित सामाजिक असमानता आ पुस्तक-केन्द्रित सीमा देखबैत अछि। ई द्विस्तरीय अवलोकन महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ आलोचना संस्थाकें सर्वथा व्यर्थ कहलाक सरल धारणा सँ बाहर अबैत अछि।

विदेहक स्ववित्तीय, ग्रामीण कलाकारमुखी आ डिजिटल रूपकें वैकल्पिक मान्यता-प्रणालीक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। मुदा स्रोतमे कतिपय स्थिर प्रतिशत अथवा एक भाषा-अवार्डक संख्या बिना प्राथमिक गणना दावाक रूपमे अबैत अछि। एकरा इतिहासक प्रमाणित तथ्य बना कऽ दोहराएब उचित नहि। “प्रत्यक्ष” साक्ष्यक रूपमे कलाकार-साक्षात्कार उपलब्ध हो, तैयो प्रस्तुतिक चयनक प्रश्न बचल रहैत अछि।

सम्पूर्ण पुरस्कार व्यवस्था साहित्यिक गुणवत्ताकें सार्वजनिक करबाक साधन होइत अछि, स्वयं गुणवत्ताक पूर्ण परिभाषा नहि। पुस्तक-अनुवाद, लोकप्रदर्शन, नव लेखन आ संस्थागत संरक्षणक परिणाम अलग-अलग प्रेक्षण-सूची माँगैत अछि। अध्यायक तुलनात्मक सारिणी एहन अनुसन्धान लेल आधार बनैत अछि, मुदा अन्तिम मापक नहि।

तार्किक रूपमे राष्ट्रीय संस्था आ समानान्तर संस्था दूनूक संशोधनक्षमता एहि इतिहासक महत्त्वपूर्ण कसौटी अछि। एक पक्षक अपारदर्शिता दोसर पक्षक प्रमाण-समस्या स्वतः दूर नहि करैत।

१२६. सात साहित्यिक संस्था सम्बन्धी पुनरावलोकन : स्थान, पुरानियत आ डिजिटल पहुँच

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १३८५६-१३९९९।

एहि दोहरायल परिशिष्टमे सात मान्यताप्राप्त मैथिली संस्थाक नाम, ठाम, सम्भावित उत्पत्ति आ सार्वजनिक कार्यक्रमक चर्चा विस्तृत भेल अछि। दरभंगा, पटना, कोलकाता, जमशेदपुर आ दिल्लीक संस्था जोड़बाक अर्थ साहित्यिक अधिकारक अनेक केन्द्रक उपस्थिति अछि। “केन्द्र”कें राजनीतिक प्रभावक सम्पूर्ण प्रमाण मानब अनुचित, किन्तु स्थानक असमान पहुँच अनुसन्धानक उचित प्रश्न अछि।

संगठनक सक्रियता केवल वर्तमान जालपृष्ठसँ नहि नापल जाय; प्रकाशन, वित्तीय लेखा, संगोष्ठी, पुस्तकालय, नव लेखकक अवसर आ दीर्घकालिक सामग्रीक अस्तित्व जाँचल जाय। एहि प्रकारक बहुआयामी परीक्षणमे पुरान संस्था सांस्कृतिक स्मृतिक अवदान दऽ सकैत अछि आ नव डिजिटल मंच नवीन लेखनक, दूनू एक संग वैध होइतो आलोचनायोग्य रहैत अछि।

नव्य न्यायीय “अवच्छेदक” सँ एहि प्रश्नकें स्पष्ट कएल जा सकैत अछि—कुन प्रकारक कार्य लेल कोन संस्थाकें प्रतिनिधि कहल जा रहल अछि? दरभंगाक एक संस्था स्थानीय कार्यक्रममे सक्रिय भए सकैत अछि; तकरा समग्र मैथिलीक एकमात्र प्रतिनिधि कहब अलग दावा अछि। एहि दूनू प्रतिज्ञामे असङ्गति भेलासँ पहिल प्रतिज्ञा निरस्त नहि होइत।

मूल परिशिष्टक रचनात्मक उपलब्धि संस्थाक बहुलताकें इतिहासक विषय बनायब अछि। आधिकारिक मान्यता-पञ्जी आ मूल संस्था-दस्तावेजक सटीक वर्षानुसार मिलान शेष अछि।

१२७. समानान्तर सम्मानक लोक कलाकार : विधा, श्रेय आ कालपञ्जी

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १४०००-१४१६० ।

एहि खण्डक पुरस्कार-वर्ग आ लोककलाकारक सूची मैथिली सांस्कृतिक इतिहासक पाठ-विस्तारक महत्त्वपूर्ण सामग्री अछि। ढोलक, रसना-चौकी, आल्हा गायन, झरनी, नाल वादन, कथा-कथन आ चित्रकला-शिल्पक कलाकारक नाम लिखल गेल अछि। लिखित साहित्येतिहासमे जे श्रम प्रायः नाटकक पाछाँ अथवा पर्वक भीतर गुम रहैत अछि, ओ अपन कर्ताक नामसँ उपस्थित भेल अछि।

मूल सूचीमे कलाकारक उमेर वा गाम जोड़ल रहि सकैत अछि; एहन विवरण प्रकाशित वर्षक तत्कालीन सूचना अछि, वर्तमान उमेर नहि। कलाकारक वास्तविक नाम, उपनाम, विधा, प्रदर्शनक ठाम आ ध्वनिचित्रक स्रोत अलग सूचीबद्ध करब उचित होयत। समुचित अनुमति आ अधिकारविवरण बिना डिजिटल अभिलेख पूर्ण सांस्कृतिक संरक्षण नहि बनैत।

राष्ट्रीय अकादेमी आ विदेह बीच तुलना करैत समय कला-वर्गक असमानता स्वीकार करबाक चाही। एक संस्था राष्ट्रीय नृत्यपुरस्कार लेल स्थापित अछि, दोसर गामक विशिष्ट लोकवाद्य संरक्षित करबाक लेल—एहि भिन्न दायित्वमे सफलता तुलनीय तखन होयत जखन पूर्वनिर्धारित कसौटी स्पष्ट हो।

एहि सूचीक सर्वश्रेष्ठ सामर्थ्य सम्मानित व्यक्तिक सार्वजनिक पहिचान अछि। साहित्येतिहासक अगिला कार्य हुनकर विधागत प्रस्तुति सुनब, क्षेत्रगत प्रसार नापब आ कलाकारक अपन स्वरकें उद्धृत करब होयत, अनुमानसँ नहि।

१२८. “सागर राति दीप जरय” : २०१२क कथा-सत्र आ प्रतिवेदनक स्वर

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १४१६१-१४३०९ ।

मूल ग्रन्थक अन्तिम संस्थागत भागमे “सागर राति दीप जरय”क आयोजन, साहित्य अकादेमीसँ सम्बन्धित २०१२क दिल्ली कथा-सत्र आ विदेह पुस्तक-स्टॉलक कथित विवाद पर तीक्ष्ण समकालीन प्रतिवेदन अछि। एकर ऐतिहासिक महत्त्व घटनाक भीतर उपस्थित पाठक, आयोजक आ समीक्षकक त्वरित प्रतिक्रिया लिखित रूपमे बचायब अछि। मुदा प्रतिवेदक घटनाक पक्षकार सेहो छथि; ताहि कारण प्रतिवेदनकें निर्लिप्त अभिलेख नहि मानब।

कथा-पाठमे विभूति आनन्द, मेनका मल्लिक, प्रवीण भारद्वाज, विभा रानी, विनीत उत्पल आ अन्य लेखकक उल्लेख अछि। समालोचकसभ भाषा, संरचना, चरित्र आ कथाक स्थानपर सार्वजनिक टिप्पणी करैत देखाओल गेल छथि। एहन प्रत्यक्ष चर्चासँ मैथिली कथालोचनाक जीवित विमर्शक झलक भेटैत अछि; मुदा कथाक सम्पूर्ण मूल पाठ बिना ककर निर्णय कतेक न्यायसंगत छल से पूर्ण रूपेँ कहब सम्भव नहि। आयोजकक व्यवहार आ पुस्तक-वितरण सम्बन्धी दाबी लेल सभ पक्षक दस्तावेज, आयोजन-पत्र, बैनर, कार्यक्रम-योजना आ वक्तव्य उपलब्ध होयब चाही। तीक्ष्ण व्यङ्ग्यक शब्दावली रिपोर्टक शैलीगत विशेषता अछि, इतिहासक स्वयंसिद्ध निष्कर्ष नहि। कथित असहमतिक विवरणकें घटना, मूल्याङ्कन आ आरोप—तीन अलग स्तरमे रखबाक आवश्यकता अछि।

ई अध्याय सांस्कृतिक संस्थाक शक्ति-संघर्षकें साहित्यिक सामग्रीक रूपमे बचबैत अछि। एकर आलोचनात्मक पाठ विरोधी साक्ष्यक अवकाश राखैत अछि; मंचक बहसक महत्त्व स्वयं एहि सँ बढ़ैत अछि, किएक तँ इतिहास एकहि दृष्टिसँ समापन नहि।

१२९. जगदानन्द झा 'मनु' : परदेस, माटि-पानि आ रचनाक सामाजिक दृष्टि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १४३१०-१४३७०।

मूल पुस्तक जगदानन्द झा 'मनु'क “व्यथा”, “नद्विया भुकैये हमर घरारीपर”, “तोहार कतेक रंग” आ बालकथा “छोंहा”कें बहुविध लेखनक रूपमे रखैत अछि। प्रवासी मैथिलक माटि-पानिसँ सम्बन्ध कविताक एक प्रमुख भावभूमि अछि; मुदा सामाजिक विस्थापनकें सभ रचनाक एकमात्र अर्थ मानब अनुचित। मूल आलोचनामे आर्थिक परिस्थिति, मातृभाषा आ पारिवारिक सम्बन्धक परस्पर तनाव पढ़बाक अवसर अछि।

गीतमे पुनरावृत्ति आ गेयता, गजलमे शेरक स्वतंत्रता आ बीहनि कथामे अन्तिम अर्थपलटक अलग-अलग परीक्षण चाही। मूल पाठ लेखकक अनौपचारिक साहित्यिक प्रशिक्षण आ विदेह-संपर्कक उल्लेख करैत अछि; एहन आत्मकथ्य लेखन-प्रक्रियाक साक्ष्य अछि, किन्तु काव्यगुणक स्वयं प्रमाण नहि।

प्रवासनक अनुभव कवितामे सत्यनिष्ठ भऽ सकैत अछि, मुदा साहित्यिक कथनकें जनसांख्यिक सर्वेक्षण नहि मानल जाए। उपलब्ध रचनाक ध्वनि, छन्द, सामाजिक संकेत आ पात्रगत दृष्टिबिन्दुक स्वतंत्र तुलना रहल आवश्यक अछि।

१३०. मनुक गजल, बीहनि कथा आ बालकथा : रससँ शिल्पधरि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १४३७१-१४५२४ ।

“नद्विया भुकैये हमर घरारीपर” पर अध्याय बहर, काफिया, रदीफ, मतला आ मक्ताक कसौटी प्रस्तुत करैत अछि। एहि औपचारिक शर्तक परीक्षण प्रत्येक शेरक मूल पाठमे करबाक चाही; संग्रहक एक-दू उदाहरण सँ पूर्ण अरूजगत निर्दोषताक दावा पर्याप्त नहि। गजल सामाजिक विडम्बनाक रूप सेहो बनि सकैत अछि, जँ भावक तीव्रता संग भाषिक संरचनाक अनुशासन राखल जाय।

“तोहार कतेक रंग”क बीहनि कथा एक अलग रचना-विधा अछि : सघन कथ्य, संकेतित पात्र आ दृष्टि-परिवर्तन। “छोंहा”क बालकथामे पाठकक उमेर, कथनक सरलता आ बालपात्रक स्वायत्तता प्रमुख प्रश्न अछि। काव्यक ध्वनि अथवा गजलक बहरक कसौटी कथा पर यान्त्रिक रूपसँ लागू नहि होयत।

मूल पुस्तक रस, ध्वनि, मार्क्सवाद, स्त्रीवाद आ नव्य न्याय सहित अनेक सिद्धान्त जोड़ैत अछि। आलोचनात्मक कार्य एतय सिद्धान्तक सूची नहि, विशिष्ट दृश्य-पाँति पर ओकर उपयोग आ सीमाक प्रदर्शन अछि।

१३१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' : दीर्घकविता आ गीतक साहित्यिक स्वभाव

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १४५२५-१४६७६।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क अध्ययनमे “धारक ओइ पार” सन दीर्घकविता आ गीत-गजलक कृतिपञ्जी अछि। दीर्घकविता क्षणिक गेय अनुभवकेँ लम्बा कथात्मक ध्यानमे बदलैत अछि; ओकर संरचना मात्र पाँतिक संख्यासँ नहि, खण्डक सम्बन्ध आ बिम्बक पुनरागमनसँ बनैत अछि।

मूल पुस्तक काव्यमे मिथिलाक भूमि, प्रेम, स्मृति आ सामाजिक आलोचनाक सूत्र देखैत अछि। रसक नाम लगायब प्रयोगक आरम्भ अछि, अन्तिम मूल्याङ्कन नहि। काव्यकेँ चित्रणक प्रत्यक्ष पाँति, ध्वनि आ स्वरगत परिवर्तनसँ जाँचबाक चाही।

विदेहक विशेषाङ्क आ पुस्तकसूची रचनाक अभिलेखीकरण करैत अछि। प्रकाशित प्रथम संस्करण, पृष्ठ-संदर्भ आ उपलब्ध अनुवादकेँ स्वतंत्र मिलान कऽ लेखकक वास्तविक स्थान निश्चित कएल जा सकैत अछि।

१३२. 'अनिल' सम्बन्धी दोसर अध्ययन : पुनरुक्त जीवनी आ पाठान्तरक परीक्षण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १४६७७-१४८३० ।

मूल Wordमे 'अनिल' पर दोसर विस्तृत अध्ययन उपस्थित अछि। एहि पुनरावृत्तिकेँ स्वतः नूतन कृति वा नूतन प्रमाण नहि मानब। जिनका जीवनी, कृतिसूची आ सैद्धान्तिक विश्लेषण पहिने आबि गेल अछि, तिनका फेर लिखबाक आलोचनात्मक औचित्य नव पाठ-साक्ष्य, भिन्न पाठान्तर अथवा संशोधित निर्णय होएबाक चाही।

दोसर अध्ययनमे “धारक ओइ पार” आ आन काव्यरचनाक रूपगत तुलना पुनः होइत अछि। पहिल संस्करणसँ तथ्यगत अन्तर भेटला पर प्रकाशनवर्ष, शीर्षक आ पाँतिक मूल स्रोत मिलायब उचित। केवल सिद्धान्त-नामक वृद्धि सँ आलोचना स्वतः गहन नहि बनैत।

समीक्षा एहि पुनरावृत्तिकेँ मूल पुस्तकक सम्पादकीय सीमा मानैत अछि; पहिल आलोचनाक वास्तविक मूल्य सुरक्षित राखि नव बातक पहचानक आग्रह करैत अछि।

१३३. जगदीश प्रसाद मण्डल : कृषकजीवन, उपन्यास आ सम्मानक सीमा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १४८३१-१४९९७।

जगदीश प्रसाद मण्डलक परिचय कृषकजीवन, ग्रामीण सामाजिक सम्बन्ध आ मैथिली उपन्यासक आधुनिक रूपक ऐतिहासिक सन्दर्भमे देल गेल अछि। “पंगु”क पुरस्कार सामाजिक मान्यताक महत्त्वपूर्ण घटना अछि; मुदा पुरस्कार प्राप्त होएब मूल उपन्यासक पात्र, कथावस्तु आ शैलीक पूर्ण परीक्षणक स्थान नहि लैत।

किसानक अनुभव पात्रक भाषामे कोना अबैत अछि, स्त्रीक श्रम आ संसाधनक कथा कोन स्थान दैत अछि, आ सामाजिक प्रतिरोधक कथात्मक समाधान कतेक विश्वसनीय अछि—ई मूल पाठक केन्द्रक प्रश्न अछि। लेखकक समाजगत पृष्ठभूमि कृतिक सामग्री पर प्रभाव दऽ सकैत अछि, मुदा कथाक सभ घटना जीवनक प्रत्यक्ष अभिलेख नहि।

मूल स्रोतमे पुरस्कार-वितरणक जातिवार गणनाक विरोधी अंक फेर दोहरायल अछि। स्वतंत्र पञ्जी-मिलान बिनु एकरा प्रमाणित प्रतिशत नहि मानल गेल। सामाजिक न्याय आ कलात्मक सफलता दुनू अलग कसौटीपर जाँचल जाए।

१३४. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र : “मनसरबी”, “बुकमेनिया” आ लोकसंस्कृति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १४९९८-१५१९५ ।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक बहुविध अध्ययन “मनसरबी”क कथा, “बुकमेनिया”क सांस्कृतिक विमर्श आ “यायावरी”क गद्यकें एकटाम अनैत अछि। उपन्यासक बुलकी-राघव सम्बन्ध आ राजकान्त-महानन्दक सत्ता-प्रसंगमे प्रेम, ग्रामसमाज आ हिंसाक द्वन्द्व प्रस्तुत अछि। एहि प्रसंगकें केवल समाजशास्त्रीय उदाहरण नहि, कथानकक रचना आ दृष्टिस्थितिसँ सेहो पढ़बाक चाही।

बुलकीक निर्णय, कथावाचकक स्थान आ सामाजिक हिंसाक दृश्यगत संरचना स्त्री-चरित्रक सक्रियता मापबाक साधन अछि। मूल पुस्तकक “लोकवृत्त” आ यथार्थवादक निष्कर्ष अर्थपूर्ण अछि, मुदा मूल कथाक विशिष्ट वाक्यबन्धक परीक्षण अनिवार्य रहत।

लोकविद्याक लेखनमे साक्षात्कार, स्मृति, क्षेत्रक वर्णन आ अभिलेख अलग प्रमाण-दर्जा रखैत अछि। उपलब्ध पुस्तकक बाह्य संस्थागत परिचयकें स्वतंत्र जीवन-विवरणक प्रमाण मानल नहि गेल।

१३५. “अरेड : गामक लोक इतिहास” : ग्रामस्मृति आ लघु-इतिहास

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १५१९६-१५३७९।

“अरेड : गामक लोक इतिहास” लघुस्थलक इतिहास-संभावना खोलैत अछि। मूल अध्ययन १७ अध्याय, गामक टोला-पंचायत, लोकविश्वास, सामाजिक जीवन आ पारिस्थितिक परिस्थिति देखबैत अछि। लेखकक अपन गामसँ आत्मीय सम्बन्ध क्षेत्रगत जानकारीक लाभ दे सकैत अछि, मुदा आत्मकथ्यक प्रमाण-सीमा स्पष्ट रहबाक चाही।

गामक मौखिक इतिहासकें पञ्जी, भू-अभिलेख, परिवारक अलग स्मृति आ स्थानीय प्रशासनक दस्तावेजसँग मिलायब इतिहासलेखनक आवश्यक चरण अछि। धार्मिक अनुश्रुति आ ऐतिहासिक घटना एकहि दर्जाक दाबी नहि। एक गामक जीवनसँ सम्पूर्ण मिथिलाक सर्वसामान्य सामाजिक व्यवस्था निकालब अतिक्रमण होयत।

साहित्यिक उपलब्धि ई जे गाम अनाम पृष्ठभूमिक बदला विस्तृत ऐतिहासिक विषय बनैत अछि। मगर स्त्री, भूमिहीन श्रमिक आ अल्पप्रसिद्ध समुदायसभक स्वतंत्र वक्तव्यक आवश्यकता बचल अछि।

१३६. कल्पना झा, दिल्ली : गोसाउनिक गीत आ स्त्रीक भक्ति-अनुभव

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १५३८०-१५४७९ ।

मूल ग्रन्थ दिल्लीस्थित कल्पना झाक “गोसाउनिक गीत” आ उपलब्ध काव्य-अनुवादकें स्त्रीक भक्ति-लेखनक संदर्भमे रखैत अछि। देवी-संबोधनमे अनुरोध, आत्मसमर्पण, नैतिक अपेक्षा आ देहगत अनुभवक परत परस्पर मिलि सकैत अछि; भावकें केवल एक रसक वर्गमे बाँधब पर्याप्त नहि।

गीतक गेयता, बिम्ब, सम्बोधन आ आवर्तनकोश साहित्यिक पाठक प्रत्यक्ष विषय अछि। डिजिटल PDF लेखकक उपलब्धताक सुविधा दैत अछि, मुदा मूल गानक स्वर-लयकें पूर्णतः नहि राखैत। स्त्रीक लेखन कें स्वतः नारीवादी विद्रोह कहब सेहो सरलीकरण होयत।

सबसे आवश्यक सम्पादकीय सावधानी—दिल्लीक कल्पना झाकें बोकारो आ पटनाक समाननाम लेखिकासभसँ अलग राखब। लेखकत्वक एहि भेदबिना कृतिपञ्जी आ आलोचनाक मूल पक्षे भ्रम होएत।

१३७. कल्पना झा, बोकारो : औद्योगिक प्रवास आ मैथिली कविता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १५४८०-१५५४२।

मूल ग्रन्थ बोकारोस्थित कल्पना झाक कविता केँ औद्योगिक नगरमे मैथिली भाषिक जीवनक साक्ष्य मानैत अछि। घरसँ दूर बसल समाजमे मातृभाषा, श्रम आ स्मृतिबोधक अन्तर्सम्बन्ध कलात्मक विषय बनैत अछि। मुदा नगरक सामाजिक इतिहासक प्रत्यक्ष जानकारी आ कविताक रूपकात्मक नगरदृश्य एकहि तथ्य नहि। स्त्रीवक्ता, ऋतुक बिम्ब, पाँतिक आवर्तन आ गीतात्मकता विशिष्ट मूल कवितासँ जाँचबाक विषय अछि। केवल प्रवासी परिचयक आधारपर सब रचनाकेँ विस्थापनपरक कहब विस्तृत पाठकेँ संकुचित करैत अछि। आलोचनामे मुक्तछन्द आ पारम्परिक गीतक भाषाभेद सेहो पहचानल जाए।

बोकारोक कल्पना झा दिल्लीक भक्तिकाव्यलेखिका आ पटनाक आलोचनात्मक गद्यलेखिकासँ भिन्न छथि। पुस्तकक अलग-अलग क्षेत्रनाम लेखकत्वक आवश्यक संकेत अछि; प्रकाशित अंक, मूल रचना आ सम्भावित नामसाम्यक जाँच अनिवार्य रहल।

१३८. कल्पना झा, पटना : साहित्यिक जीवनी, परिवार-स्मृति आ समीक्षा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १५५४३-१५६८३।

मूल पुस्तक पटनास्थित कल्पना झाक गद्यक भीतर उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क जीवनचरित, शरदिन्दु चौधरीक लेखकीय उपस्थिति आ श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार सम्बन्धी स्मृति-अध्ययनकें महत्व दैत अछि। व्यक्तिक निकट पारिवारिक साक्ष्य साहित्यिक अभिलेखक विशेष संसाधन अछि, मुदा प्रशंसात्मक संस्मरणक भीतर आलोचनात्मक दूरीक प्रश्न रहैत अछि।

व्याससँ लेखिकाक सम्बन्धक दावा मूल स्रोतमे उद्धृत अछि। एहि कथनकें बाह्य वंशावलीक स्वतंत्र सत्यापन नहि मानल गेल। लेखकक रचनापाठ, जीवनक तथ्य आ परिवारक संस्मरण तीन अलग स्रोत-वर्ग अछि। तिनका जोडब इतिहासलेखनक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा परस्पर विरोधक स्थिति स्पष्ट करबाक चाही।

एकहि नामक दिल्ली, बोकारो आ पटना स्थित लेखिकासभक पहिचान नव समीक्षा-पञ्जीमे अलग सुरक्षित रखल गेल। नव्य न्यायमे पक्षक निर्धारण जेकाँ एतय लेखकत्वक सही निर्धारण पहिल शर्त अछि।

१३९. कामेश्वर झा 'कमल' : “कमल-ताल” आ गीतक गेय संरचना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १५६८४-१५९२६।

“कमल-ताल”क विस्तृत समीक्षा मैथिली गीतक भक्तिमूलक, उत्सवी आ पारिवारिक रूपकें साहित्यिक विधाक रूपमे परखैत अछि। मंगलाचरणक क्रममे गणेश, हनुमान आ सरस्वतीक स्तुतिक उपस्थिति भारतीय गीत-संरचनासँ सम्बन्धित अछि।

“कमल” भणिताक बारम्बार उपयोग कवि-श्रेयक संग गायक-भक्तक भूमिका सेहो निर्मित करैत अछि।

गीतमे ध्वनि, लय, आवर्तन आ भावक परिवर्तन पठनयोग्य अछि, मुदा छपल पाठक आधारपर निश्चित गायन-तालक अन्तिम निर्णय नहि देल जाए। मौखिक गायकी आ लिखित गीत-पाठ भिन्न साक्ष्य अछि। संग्रहक वर्गीकरण ओकर सांस्कृतिक उपयोगक अनुसार भए सकैत अछि, किन्तु गीतक भाषा-संरचना स्वतन्त्र जाँच माँगैत अछि।

रस, ध्वनि, औचित्य, पश्चिमी गीतालोचना आ नव्य न्यायीय रूपक मूल अध्यायमे सम्मिलित अछि। सिद्धान्तक बहुलता काव्यक निकट पठनक स्थान नहि लैत; विशिष्ट पाँति-अनुप्रासक साथ व्याख्याक नाता स्पष्ट रहल चाही।

१४०. कामिनी कामायनी आ कपिलेश्वर राउत : दू लेखकीय संसारक तुलना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १५९, २७-१६१, २३।

मूल ग्रन्थ कामिनी कामायनी आ कपिलेश्वर राउतक साहित्यकें एक तुलनात्मक अध्ययनमे रखैत अछि। कामायनीक काव्यमे स्त्री-अनुभव, मातृभाषा, ग्राम-ऋतु आ गीतात्मकताक प्रयोगक चर्चा अछि; रूपगत स्तरपर मुक्तछन्द आ पारम्परिक गेय पाँति एकठाम स्थित अछि। एहि मिश्रणकें केवल “आधुनिकता” अथवा केवल “परम्परा” कहल पर्याप्त नहि।

कपिलेश्वर राउतक गद्य-लेखनक तुलना कविता सँ करैत समय विधाक स्वायत्तता सुरक्षित रखबाक चाही। जे बात कविता संक्षिप्त रूपकसँ करैत अछि, कथा घटनाक क्रम, पात्रक इच्छा आ कथावाचकक दूरी सँ कहि सकैत अछि। दूनूकें एकहि सामाजिक प्रतिज्ञाक उदाहरण बना देब रचनात्मक अन्तर धुँधला करैत अछि।

मूल अध्ययन अनेक पाश्चात्य-भारतीय सिद्धान्तक उपयोग करैत अछि, मुदा प्रत्येक लेखकक वास्तविक पाँति आ कथाप्रसंग पर लागू भए सकनिहार विशिष्ट कसौटी अपेक्षित अछि। तुलना कृतिसमानता साबित करबाक अनिवार्य विधान नहि, अन्तरकें स्पष्ट करबाक साधन अछि।

१४१. केदारनाथ चौधरी : आर्थिक शिक्षण, उपन्यास आ चलचित्र

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १६१९४-१६४८४ ।

केदारनाथ चौधरीक कृतित्व पर मूल अध्ययनमे शिक्षाक अनेक चरण, उपन्यास, चलचित्र-संबद्ध कार्य आ परिवारक स्मृति सम्मिलित अछि। अर्थशास्त्रक शिक्षण साहित्यिक विषय चयनमे सहायता करि सकैत अछि, मुदा पेशागत परिचय सँ उपन्यासक अन्तर्निहित रचनाशिल्प स्वतः सिद्ध नहि। कथा-समय, संवाद, पात्रगत अन्तर्विरोध आ कथन-शैली अलग पढ़बाक चाही।

चलचित्र सम्बन्धी दाबी लेल पटकथा, मौलिक पुस्तक, प्रदर्शन-साक्ष्य आ निर्माण-श्रेयक मिलान आवश्यक अछि। साहित्यिक कथा सँ दृश्य-माध्यममे रूपान्तरण स्वयं नूतन कलात्मक निर्णयक क्रम अछि; निर्माता आ लेखकक योगदानक अनुमानसँ समान नहि ठहराएब।

पारिवारिक संस्मरण जीवनचरितक भावात्मक परत खोलैत अछि, मुदा रचनात्मक मूल्यांकनक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि। एहि अध्यायक महत्व जीवन आ कृतिक बहुविध स्रोत एकत्र करब अछि; अन्तिम स्थान-निर्णय लेल मूल संस्करण आवश्यक रहत।

१४२. डॉ. कीर्तिनाथ झा : “टुटल पाँखि”क अनुवाद आ मौलिक कथा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १६४८५-१६७०३।

मूल पुस्तक डॉ. कीर्तिनाथ झाक “टुटल पाँखि” आ खलील जिब्रानक “Broken Wings”क सम्बन्धक विस्तृत परीक्षण प्रस्तावित करैत अछि। प्रेम, सामाजिक बन्धन, धर्मसत्ता आ स्त्री-निर्णयक कथ्य अनुवादमे भाषाक अर्थक्षेत्र बदलला सँ प्रभावित भए सकैत अछि। शब्दार्थक समानता आ सांस्कृतिक प्रभावक समानता अलग समस्या अछि।

मूल अंग्रेजी आ मैथिली अनुवादक पाँति-दर-पाँति समताक परीक्षण बिना “पूर्ण निष्ठा” अथवा “अर्थहानि नहि” सन दावा असिद्ध रहत। संबोधन, नाम, रूपक, दृश्य तथा संवादक ठोस मिलान प्रथम आवश्यकता अछि। रस-ध्वनि आ नव्य न्यायीय पद पारिभाषिक तुलना दे सकैत अछि, मुदा मूल पाठक स्थानापन्न नहि।

अनुवादक कृति आ कीर्तिनाथ झाक स्वतन्त्र मैथिली कथाक समीक्षा अलग राखल जाए। चिकित्सकीय जीवनीगत परिचय लेखकक सामाजिक पृष्ठभूमि अछि, कथा-शिल्पक स्वयं मापक नहि।

१४३. किशन कारीगर : नगर, पत्रकारिता आ सामाजिक कविता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १६७०४-१६८१६ ।

मूल पुस्तक किशन कारीगरक “किछु फुरि गेल हमरा” सहित काव्यक चर्चा करैत अछि। नगरक जीवन, मातृभाषाक स्मृति, सामाजिक विसंगति आ लोकप्रिय माध्यमक वाक्यरचना कविताक परिस्थिति बनबैत अछि। पत्रकारिताक अनुभव रचनाकारक विषय चुनयमे प्रभाव डालि सकैत अछि, मुदा कविताक वक्ता आ लेखकक व्यवसाय एकहि अभिप्राय नहि।

बोलचालक शब्दक सहजता स्वयं शिल्पहीनता नहि; कतय व्यङ्ग्यक तीव्रता भाषिक विचलनसँ बनैत अछि, कतय अनुच्छेदक साधारण कथ्य काव्यमे रूपान्तर होइत अछि, ई विशिष्ट पाँति द्वारा जाँचबाक चाही। समाजक प्रत्यक्ष दावा आ साहित्यिक रूपककें भिन्न स्तर देब जरूरी अछि।

नव्य न्यायीय पद आ पश्चिमी सामाजिक सिद्धान्त मूल समीक्षामे उपलब्ध अछि। एहि पाठक अन्तिम महत्त्व रचनाक अन्तर्विरोधक निदानमे रहत, आलोचकक पूर्वनिर्धारित वैचारिक सहमतिमे नहि।

१४४. कुमार पवन : लघुकथा, व्यङ्ग्य आ रचनात्मक पुनरागमन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १६८९७-१७०३० ।

कुमार पवनक मूल परिचय २००८क आसपास पुनरागमन भेल सृजनक समयक उल्लेख करैत अछि। दीर्घकथा, छोट कथा, व्यङ्ग्य आ कविताक भिन्न रूपमे प्रादेशिक सामाजिक जीवन चित्रित अछि। लेखनमे विराम आ वापसीक तथ्य पत्रिका-अंक आ प्रकाशित कृतिपञ्जीसँ मिलला पर रचनात्मक विकासक ऐतिहासिक मानचित्र अधिक स्पष्ट होयत।

व्यङ्ग्यक सफलताक कसौटी मात्र हँसी नहि; पात्रक हित, संस्थागत भाषाक विसंगति, घटना-क्रमक अप्रत्याशितता आ पाठकक नैतिक असुविधा एक संग कार्य करैत अछि। दीर्घकथाक गति आ छोट कथाक सघनता भिन्न मूल्यांकन माँगैत अछि। कुमार पवनक काव्यमूलक सामाजिक टिप्पणीकें सरकारी इतिहासक प्रत्यक्ष दस्तावेज मानब अनुचित। साहित्यिक सत्य कथा-विधानक भीतर निर्मित होइत अछि; पाठककें घटना आ प्रतिपादित यथार्थक दूरी पहचानब जरूरी अछि।

१४५. कुमार पवनक “अशरफीक लूटि आ कोइलापर छाप” : कथाक व्यङ्ग्य-विधान

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १७०३१-१७१४५ ।

कुमार पवनक परिचयक पाछाँ मूल पुस्तक “अशरफीक लूटि आ कोइलापर छाप” पर अलग अध्ययन जोड़ैत अछि। एहि कथाक शीर्षकमे धन, लूटि आ कोइलापर छापक असामान्य सम्बन्ध सामाजिक मूल्यक व्यङ्ग्यात्मक संकेत बनि सकैत अछि; मुदा शीर्षकक सम्भावित अर्थकै वास्तविक कथानकक अन्तिम तथ्य मानब नहि। मूल विश्लेषण कथावृत्त, भाषा आ अन्तिम दृष्टि-परिवर्तनक सम्बन्ध जाँचैत अछि।

व्यङ्ग्यक भीतर पात्रक स्वार्थ, समाजक मूल्य-निर्णय आ दृश्यगत विडम्बनाक परस्पर सम्बन्ध पहिचानब अनिवार्य अछि। केवल कथाक सार कहि देने शब्दचयन आ कथन-विलम्बक साहित्यिक प्रभाव अदृश्य रहत। भारतीय वक्रोक्ति आ आधुनिक विडम्बना सिद्धान्तक तुलना एहि कारणेँ सीमित विशिष्ट दृश्यपर उपयोगी अछि।

मूल कथाक स्वतंत्र प्रकाशित पाठ उपलब्ध भेला पर विस्तृत पाँति-परीक्षण करब चाही; एखन उपलब्ध ग्रन्थक आलोचनात्मक अनुच्छेद स्वयं मध्यस्थ स्रोत अछि।

१४६. लाल देव कामत : पत्रकारिता, कविता आ भाषिक सार्वजनिकता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १७१४६-१७६२७।

लाल देव कामत पर मूल विस्तृत अध्ययन “विभूति”, “दिव्य दृष्टि”, “गहिकी नजरि” आ “शेष जीवन”क पञ्जी रखैत अछि। पत्रकारिता, सामाजिक सक्रियता आ साहित्यक सम्बन्ध एतय प्रमुख प्रश्न अछि। सार्वजनिक भाषिक दाबी जखन साहित्यक रूप लैत अछि, तँ घटना-रिपोर्ट, कविता आ उपन्यास एकहि प्रमाण-पद्धति सँ नहि पढल जा सकैत।

“दिव्य दृष्टि” अथवा “गहिकी नजरि” सन शीर्षक ज्ञान, दृष्टि आ सामाजिक अवलोकनक सम्भावित अर्थ खोलैत अछि, मुदा शीर्षक-मात्रसँ कृतिक मूल नाटकीय तनाव निश्चय नहि कएल जाए। मूल अध्यायमे सामाजिक न्याय, भाषिक आन्दोलन आ सांस्कृतिक इतिहासक व्याख्या अछि; हुनका मूल पाठ-संदर्भ, पात्र-स्वर आ शिल्पविधानसँ मिलान करबाक चाही।

चारू कृतिक प्रकाशन-वर्ष आ संस्करण पूर्णतः समान स्तरपर दर्ज नहि। संदर्भक अपूर्णता स्वीकार कऽ आलोचना कृतिक बोधगम्य विषय आ सिद्ध ऐतिहासिक तथ्य बीच अन्तर सुरक्षित रखैत अछि।

१४७. ललन प्रसाद ठाकुर आ कुसुम ठाकुर : रंगमंच, गीत आ संस्मरण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १७६२८-१७८३९ ।

मूल पुस्तक ललन प्रसाद ठाकुरक नाट्य-निर्देशन, अभिनय, गीतरचना आ कुसुम ठाकुरक संस्मरण-काव्यकें एक संयुक्त आलोचनामे रखैत अछि। रंगमंचक लिखित संवाद, निर्देशकक मंच-निर्णय आ अभिनेताक शरीरगत क्रिया अलग साक्ष्य अछि। एक लेखक-परिवारक सांस्कृतिक निकटता हुनकर रचनात्मक भिन्नता समाप्त नहि करैत।

संस्मरणक स्वर निजी घटनाक भावात्मक विश्वसनीयता दैत अछि; किन्तु ऐतिहासिक कालक्रम, आयोजनक विवरण आ सार्वजनिक सहभागिता अतिरिक्त अभिलेख चाहैत अछि। नाटकक प्रदर्शनक प्रमाण रहलासँ ओ कृतिक महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ बनैत अछि, मुदा पाठक नाट्यशिल्पकें अभिनयक प्रशंसासँ नपब उचित नहि।

भारतीय नाट्यशास्त्र आ आधुनिक रंगमंचीय सिद्धान्त एकसंग प्रयोग करैत समय भाव, दृश्य, अभिनय आ दर्शक-सम्बन्धक सीमांकन जरूरी। मूल स्रोतक प्रत्यक्ष वीडियो वा नाटकक प्रथम संस्करणक मिलान शेष अछि।

१४८. लक्ष्मण झा 'सागर' आ शैल झा 'सागर' : दाम्पत्य लेखनक पृथक पहचान

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १७८४०-१८०१३ ।

मूल अध्याय लक्ष्मण झा 'सागर' आ शैल झा 'सागर'क रचनाकें दाम्पत्य साहित्यिक साझेदारीक रूपमे देखैत अछि । संयुक्त सांस्कृतिक वातावरण प्रकाशन आ विचारक साझेदारी दे सकैत अछि, मुदा दूनू लेखकक अलग कृतिसूची आ काव्यभाषाक पहचान अनिवार्य । पुरुष लेखनकें केंद्र आ स्त्री लेखनकें परिशिष्ट मानब साहित्यिक न्याय नहि ।

शैल झाक लेखनपर स्त्रीवादी प्रश्न लागू करैत समय ओकर स्वतन्त्र कथन-शैली, विषय चयन आ आवाजक प्रमाण देखल जाए । “दाम्पत्य” शब्द हुनकर कृतिक पूरा अर्थ निर्धारित नहि करैत । लक्ष्मण झाक गीत अथवा गद्यकें सेहो अलग छन्द, भाव-संयम आ सामाजिक चित्रणक आधारपर पढ़ब आवश्यक ।

नव्य न्यायीय पक्ष-विभाजन एतय उपयोगी रूपक अछि: एक संयुक्त नामक भीतर दू स्वतंत्र लेखकक श्रेय सुरक्षित रहय । कृतिक मूल प्रकाशन-विवरणक सत्यापन शेष रहल ।

१४९. डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' : जीवनचरित आ वैचारिक पृष्ठभूमि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १८०१४-१८११९।

मूल ग्रन्थ प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'क जीवन, शिक्षण, पारिवारिक परिस्थिति आ वैचारिक यात्राक एक विस्तृत चित्र बनबैत अछि। जीवनविवरण रचनाक सामाजिक आधार बनैत अछि, मुदा लेखकक निजी व्यक्तित्वक प्रशंसा साहित्यिक योगदानक पूर्ण प्रमाण नहि। जीवनीक तिथि, पद आ सार्वजनिक गतिविधि दस्तावेजीय सत्यापन माँगैत अछि।

मौनक वैचारिक गठनक सन्दर्भमे लोकसाहित्य, इतिहास आ सामाजिक अन्यायक विमर्श विकसित भेल अछि। लेखकीय व्यक्तित्वक आन्तरिक विरोध—संस्था आ जनस्मृति, विद्वत्ता आ ग्रामानुभव—साहित्यिक चिंतनक फलदायी प्रश्न अछि। एहन प्रश्नक उत्तर केवल व्यक्तित्व-वर्णनमे नहि, प्रकाशित मूल ग्रन्थक पाठमे खोजल जाए।

जतय संस्मरणक कथ्य प्रमाणित अभिलेखसँ पृथक अछि, ओतय स्मृति-साक्ष्यक मर्यादा स्पष्ट रहल। निधन-वर्ष सहित जीवनीगत सूचनाकें यहाँ मूल ग्रन्थक दाबी मानल गेल अछि।

१५०. 'मौन'क लोकगाथा, यात्रा-वृत्तान्त आ आलोचनाशास्त्र

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १८१२०-१८३२८ ।

मौनक रचनाक अध्ययनमे “ब्रह्मग्राम”, “सुरझरी”, “वाल्मीकि देश में” सन यात्रा/रिपोर्ताज-विधा, मैथिली लोकगाथा, इतिहास आ प्रेमचन्दक अनुवादक प्रसंग अछि। रिपोर्ताजमे प्रत्यक्ष यात्रा, स्थानीय कथन आ लेखकक व्याख्या भिन्न साक्ष्य अछि; यात्रा-वृत्तान्तक सुन्दर भाषा यात्रा-विषयक प्रत्येक तथ्य सिद्ध नहि करैत ।

लोकगाथाक मौखिक परम्परा, गायक-समुदाय आ लेखनक पाठान्तर मिलला पर सांस्कृतिक इतिहास अधिक स्पष्ट होयत । मौनक कृतिमे लोकगाथाक पाठक संग्रह आ तकर सैद्धान्तिक व्याख्या अलग योगदान अछि । स्रोत-विहीन समेकन सांस्कृतिक परम्पराकेँ एकरूप बना सकैत अछि ।

नव्य न्यायीय शब्दबोध आ व्याप्तिक प्रयोग मूल पुस्तकमे उपस्थित अछि । कृतिमे उदाहरणात्मक तर्कक परीक्षण हेतु कथनक स्रोत, निष्कर्षक सीमा आ सम्भावित प्रतिवाद स्पष्ट करबाक चाही; अति-सैद्धान्तिकीकरणसँ लोकपाठक स्वतन्त्र अर्थ बचैत रह्य ।

१५१. मीना झा : स्त्री-दृष्टि, कथाविधान आ सामाजिक प्रतिरोध

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १८३२९-१८४३३ ।

मीना झाक कृतित्वक मुख्य परिचय कथा-लेखन आ स्त्री-अनुभवक सामाजिक जटिलतासँ जुड़ल अछि। घर, शरीर, शिक्षण आ स्वायत्तताक प्रश्न पात्रक संवाद, क्रिया आ कथनकारक दृष्टिस्थितिसँ बनैत अछि। स्त्रीपात्र पीड़ित छथि मात्र ई निष्कर्ष देब सँ हुनकर इच्छाशक्ति आ विरोधी निर्णयक साहित्यिक स्वर अस्पष्ट भऽ सकैत अछि।

मूल आलोचनामे रस-ध्वनि, पाश्चात्य नारीवाद, उत्तर-औपनिवेशिक आलोचना आ चिकित्सकीय मानविकी सहित अनेक लेंस अछि। एतय उपयुक्त पद्धति मूल कथाक ठोस दृश्य चुनि पाठक बहुवाचक सम्भावना देखेबाक अछि, सिद्धान्तक नाममे प्रसंगकें विलीन करबाक नहि।

साहित्यिक प्रभाव आ चिकित्सकीय/समाजशास्त्रीय दावा एक नहि अछि। मूल कथापाठक अपूर्ण बाह्य मिलानक सीमा रहितो अध्ययन स्त्रीक कथात्मक एजेंसीकें मूल्याङ्कनक केन्द्र बना सकैत अछि।

१५२. मुन्नाजी : बीहनि कथा, व्यङ्ग्य आ सम्पादकीय बहुविधता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १८४३४-१८६५१।

“मुन्नाजी” नामसँ प्रकाशित मनोज कुमार कर्णक अध्ययनमे कविता, लघु गद्य, सम्पादकीय संलग्नता आ बीहनि कथा सम्बन्धी सामग्री अछि। अनेक विधामे लेखन हुनकर सृजनक व्याप्ति अछि, मुदा विधा-संख्या काव्यगुणक स्वतः प्रमाण नहि। बीहनि कथामे अनकहल प्रसंगक सघनता आ अन्तिम कथात्मक खुलासा अलग कसौटी चाहैत अछि।

पत्रिका-संपादनक भूमिकासँ साहित्यिक सार्वजनिकता बढ़ैत अछि, मुदा सम्पादकीय श्रेय आ व्यक्तिगत मूल रचनाक श्रेय अलग सुरक्षित रहय। व्यङ्ग्यक भाषा मे राजनीतिक संकेतक धार पात्र-स्थितिक अनुसार बदलैत अछि; पत्रकारिताक प्रत्यक्ष घटना आ साहित्यिक काल्पनिक प्रसंग समान प्रमाण नहि।

मूल पुस्तक भारतीय काव्यशास्त्र, विधागत प्रयोग आ नव्य न्यायीय अवधारणा जोड़ैत अछि। उचित आलोचना लेखकक स्थापित व्यक्तित्वक पुनरुक्त प्रशंसा नहि, विशिष्ट कृतिक भाषा आ संरचनाक जाँच अछि।

१५३. मुन्नी कामत : स्त्रीक रचनात्मक अधिकार आ रंगमंचीय अभिव्यक्ति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १८६५२-१८९८७।

मूल पुस्तक मुन्नी कामतक नाटक, कविता आ सामाजिक लेखनकें मैथिलीमे स्त्रीक सर्जनात्मक अधिकारक प्रसंगमे रखैत अछि। “अन्ततः”क प्रस्तावनागत जीवन-दृष्टि, कमला-कोसीक क्षेत्रीय स्मृति आ सार्वजनिक वाद-विवादक अनुभव लेखिकाक कृतिसंसारक सन्दर्भ अछि, मुदा जीवनीक संघर्षकें प्रत्येक साहित्यिक पात्रक सीधा पर्याय नहि मानल जाए।

नाट्यपाठमे संवादक मंचीय सम्भावना, पात्रक सामाजिक बन्धन आ निर्णयक क्रम जाँचल जाय। भारतीय करुण-वीर रसक सहअस्तित्व आ स्त्रीवादी आलोचनाक दृष्टि नाटकक वास्तविक परिस्थिति सँ जोड़ला पर अर्थपूर्ण अछि; केवल एक नायिकाक पीडा स्त्रीकेन्द्रित नाटकक कलात्मक सफलताक पर्याप्त शर्त नहि।

मूल लेखक कृतिसूची आ सार्वजनिक सम्मानक विवरण दैत अछि। नाट्यप्रस्तुति, प्रथम संस्करण, पुरस्कारक श्रेणी आ लेखिकाक स्वतन्त्र कथनक मिलान शेष अछि।

१५४. नबो नारायण मिश्र : समग्र-प्रकाशनमे संस्मरण, कथा आ कविता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १८९८८-१९२२१।

नबो नारायण मिश्रक समग्रमे साक्षात्कार, आलेख, कथा आ पद्यक विभाजन अछि।

एहन समग्र-संस्करणक मूल्य बिखरल सामग्रीकें एकठाम करब होइत अछि; मुदा

उपलब्ध पाठक प्रकाशित कालक्रम, पुनर्लेखित संस्करण आ सम्पादकीय चयनक

सीमा स्पष्ट होएब चाही। मूल ग्रन्थमे व्यक्तिक ग्रामीण मूल, कोलकाता प्रवास आ

सामाजिक अनुभवक सन्दर्भ अछि।

साक्षात्कारक 'हम' आ कथाक काल्पनिक कथावाचक एक नहि। संस्मरणक कथ्यक

सत्यता, काव्यक बिम्ब-संरचना आ कथाक पात्रगत तनाव तीन भिन्न विधागत

कसौटी पर परखल जाए। पाठकक सम्पूर्ण जीवनक मूल्याङ्कन एक संकलनसँ

कएलाक सीमा सेहो स्वीकार करबाक आवश्यकता अछि।

समग्रक सम्पादकक भूमिका, कृतिक श्रेय आ मूल लेखकीय पाठक भेद सुरक्षित राखल

गेल। मूल पुस्तक अनेक आलोचनात्मक सिद्धान्त जोड़ैत अछि; विशिष्ट पाठक

आधारपर तिनका चुनाव जरूरी।

१५५. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' : नाटक, भाषा-चिन्तन आ काव्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १९२२२-१९६६१।

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मूल विस्तृत अध्ययन नाटक, कविता, भाषा-अनुसन्धान, अनुवाद आ निबन्धक बहुविध परिचय दैत अछि। नाटकसभक १९७१-२००८क कथित कालपञ्जी पाठक सम्मुख आधुनिक मैथिली रंगमंचक एक परिवर्तनशील दृश्य रखैत अछि। परन्तु प्रत्येक मंचपाठक मूल प्रकाशन वा प्रदर्शन वर्ष स्वतंत्र अभिलेख सँ जाँचल जाए। नाट्यशास्त्रक अभिनय, रस आ दृश्य-विन्यासक संग आधुनिक मंच-समाजक तुलना उपयोगी अछि। भाषा-विद्याक अभ्यास नाट्य-संवादक शब्दचयन पर असर दऽ सकैत अछि, मुदा लेखकक भाषावैज्ञानिक पद नाटकक साहित्यिक गुणक प्रमाण नहि। कविता आ नाटकक कथन-दृष्टि अलग पढ़बाक चाही।

२०१७क पुरस्कार-संदर्भ मूल पुस्तकक अभिलेखी दाबी अछि। पुरस्कारकें उपयुक्त ऐतिहासिक स्थिति मानि मूल कृतिशिल्पक अध्ययनसँ अलग रखल गेल; अनेक सैद्धान्तिक धारणाक स्वचालित समानता अस्वीकार अछि।

१५६. नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' : सामाजिक उपन्यास, आख्यान आ बालसाहित्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १९६६२-२००२४ ।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क अध्ययनमे बारह पुस्तकक उपन्यास, लघुकथा, काव्य, संस्मरण, साहित्यिक रेखाचित्र आ बालसाहित्यक स्वरूप अछि। "अन्धिया कुकुर", "सुकन्या", "कैकेयी", "सुजाता", "परिवार", "आडम्बर" आ "स्वर्ण कमल" सन कृतिक उल्लेख विधागत विविधता दिखबैत अछि। एकहि नामक आधार पर किसी कृतिक कथ्य अनुमानसँ निर्धारित करब उचित नहि।

सामाजिक उपन्यासकें मिथकीय आख्यानक कसौटी सँ नहि, पात्रक समयबोध आ सामाजिक निर्णयक रूपमे पढ़बाक चाही। बालसाहित्यमे भाषा, कल्पना, शिक्षात्मक आग्रह आ पाठकक उमेर विशिष्ट मूल्याङ्कन माँगैत अछि। लेखकक ग्रामस्मृति आ महानगरीय रेखाचित्रक वर्णनभेद सेहो विवेचनक विषय अछि।

मूल पुस्तक नव्य न्याय, रस-ध्वनि आ पश्चिमी सिद्धान्तकें समेकित करैत अछि।

आबश्यक ई जे कृतिक प्रत्यक्ष पाठक उपयुक्त प्रश्नक संग सिद्धान्त सम्बन्धित हो, अन्यथा बारह रचनाक भिन्नता विश्लेषणमे विलाइत।

१५७. नन्द विलास राय : बीहनि कथा, लघुकथा आ श्रमजीवी साहित्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २००२५-२०२१३।

मूल पुस्तक नन्द विलास रायक कथा, बीहनि कथा आ कविताक बहुविध लेखकक रूपमे रखैत अछि। “असल पूजा”क प्रस्तावनामे रोजी-रोटी आ लेखनक श्रम-संघर्षक संकेत अछि। ई आत्मकथ्य सामाजिक परिस्थिति स्पष्ट करैत अछि, मुदा अपन रचनाक कलात्मक परिणाम स्वतः सिद्ध नहि।

बीहनि कथाक क्षणिक घटना, चरित्रक छोट संकेत आ अन्तिम व्यंजना कथाविधाक प्रस्थानबिन्दु अछि। दैनन्दिन श्रमक सांस्कृतिक गरिमा देखब आवश्यक अछि, मुदा गरीब पात्रक उपस्थिति मात्रसँ कृति प्रगतिशील वा उच्चकोटिक नहि बनैत। कथा-माध्यमक भाषिक निर्णय विशिष्ट पाँतिसँ जाँचल जाए।

प्रकाशनक संस्था आ लोक-साहित्यिक सम्बन्ध स्रोतक परिचायक अछि। अनेक संग्रहक संख्या, प्रथम संस्करण आ मूल पाठक सत्यापन बिनु सम्पूर्ण कृतिसूची निर्विवाद घोषित नहि कएल गेल।

१५८. नारायणजी चौधरी : पोखरिक संरक्षण आ पर्यावरणीय इतिहास

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २०२१४-२०३७४ ।

नारायणजी चौधरी पर मूल अध्ययन गामक पोखरि, जलस्रोत आ सांस्कृतिक स्मृतिक संरक्षणकेँ मैथिली सार्वजनिक इतिहासक वैध विषय बनबैत अछि । ग्रामजल-प्रणाली केवल लोकगीतक बिम्ब नहि, खेती, भूजल, जीविका आ सामूहिक अधिकारक भौतिक संसाधन अछि । पर्यावरणीय सक्रियता पर लिखल विशेषाङ्क स्वयं एक स्रोतीय साक्ष्य अछि, मुदा प्रत्येक संरक्षण-उपलब्धिक स्वतंत्र मापन जरूरी ।

पोखरिक पुरान परिमाण, पुनर्जीवित जलक्षेत्र, जलग्रहणक्षेत्रक परिवर्तन आ स्थानीय समुदायक सहमतिक तथ्य मूल सरकारी अभिलेख अथवा स्थानविशेषक सर्वेक्षणसँ जाँचल जाए । “पग-पग पोखरि” सन लोकउक्ति सांस्कृतिक स्मृतिक प्रमाण होइत अछि, ऐतिहासिक पोखरि-संख्याक प्रत्यक्ष गणना नहि ।

मूल पुस्तकक व्यक्तिक प्रशंसात्मक स्वरकेँ घटनाक स्वतंत्र प्रमाण न मानल जाए । पारिस्थितिकी आ लोकसंस्कृतिक सम्बन्धक विवेचन एहि अध्यायक महत्वपूर्ण पक्ष अछि ।

१५९. नरेन्द्र झा आ पन्ना झा : साहित्यिक आन्दोलन आ स्त्रीलेखन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २०३७५-२०६७३।

नरेन्द्र झा आ पन्ना झाक संयुक्त परिचय मैथिली भाषिक आन्दोलन, महानगरीय संस्थागत उपस्थिति आ कृतिसंसारक दोसर धारा एकत्र करैत अछि। नरेन्द्र झाक सार्वजनिक भूमिका आ पन्ना झाक रचनाक अलग स्थान सुरक्षित राखब अनिवार्य; पारिवारिक अथवा आन्दोलनगत साझेदारी रचनात्मक श्रेयक विलय नहि। कविता, संस्मरण आ संस्थागत निबन्धक स्वर अलग प्रमाण चाहैत अछि। भाषिक आन्दोलनक नारा सामाजिक दस्तावेज बनैत अछि, मुदा कविताक लय आ रूपकक कलात्मक मूल्य एहीसँ निर्दिष्ट नहि। पन्ना झाक स्त्री-अनुभवक प्रस्तुति पात्र, आवाज आ भाषिक संगठनक आधारपर पढ़ल जाय।

मूल अध्ययन जीवनविवरण आ सांस्कृतिक सेवा पर अनेक विशिष्ट दाबी रखैत अछि। प्रकाशित लेख, आन्दोलनक तिथि आ प्रत्यक्ष अभिलेखक पुष्टि शेष अछि; प्रश्नक योग्य महत्त्वकें प्रमाणित उपलब्धिक समान नहि मानल गेल।

१६०. नव समकालीन स्वर : नौ लेखकक सम्मिलित आलोचना आ श्रेय

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २०६७४-२०९९३।

मूल समेकित अध्ययन रामजी प्रसाद मण्डल, पण्डित बाल गोविन्द 'आर्य', रामेश्वर प्रसाद मण्डल, रामचन्द्र राय, डॉ. बचेश्वर झा, कामेश्वर चौधरी, नारायण यादव, डॉ. शुभ कुमार बरनवाल आ झौली पासवानक अलग-अलग कृतित्व समेटैत अछि। ई लेखकसभ एकहि साहित्यिक विधाक प्रतिनिधि नहि; उपन्यास, काव्य, आलोचनात्मक गद्य आ समाजपक्षी लेखनकेँ एक शब्दमे "नव स्वर" कहि देब पर्याप्त नहि।

रामेश्वर प्रसाद मण्डलक "बौकी" आ "बगवार", रामचन्द्र रायकेँ समर्पित "सपना साकार" तथा झौली पासवानक "अक्षय पात्र" सन मूल प्रविष्टि विधागत वर्गीकरणक ठोस प्रारम्भ अछि। प्रत्येकक पात्रनिर्माण, छन्द, कथन-प्रवाह आ सामाजिक मूल्यांकन अलग अध्ययन माँगैत अछि। विशेषतः दलित कृतिक सामाजिक स्थितिकेँ आदर दैत मूल शिल्पगत विश्लेषण नहि छोड़ब।

मूल कृतिपञ्जीक नौ पृथक लेखक-नाम सुरक्षित राखल गेल अछि; जकर प्रथम मुद्रण, उपनाम अथवा ग्रन्थकारक श्रेय स्वतंत्र रूपसँ उपलब्ध नहि, ओकर अनुमान नहि कएल गेल।

१६१. मैथिली गजलक तीन स्वर : ओम प्रकाश, अमित मिश्र आ चन्दन झा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २०१९४-२१२४१।

मूल पुस्तक ओम प्रकाश झा, अमित मिश्र आ चन्दन कुमार झाक गजलकें अनचिन्हार आखरक आन्दोलन आ आधुनिक मैथिली अरूजक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। तीन लेखकक सामाजिक विषय अथवा भाषिक रुझान समान भेला परो शेरक लय, कथन-संक्षेप आ मक्ताक व्यवहार अलग हो सकैत अछि। एकहि आन्दोलनमे उपस्थिति रचनाक समान स्तरक प्रमाण नहि।

गजलमे काफिया, रदीफ, बहर आ मतलाक जाँच मात्र विषयगत सहानुभूतिसँ नहि होयत। सामाजिक आलोचनाक शेरक प्रभाव तखन सघन होइत अछि जखन अर्थविपर्यय आ ध्वनिगत विन्यासक भीतर टकराव निर्मित हो। मूल पुस्तकक उद्धृत शेरक विस्तृत छन्द-निर्णय लेल मूल संग्रहक आधिकारिक पाठ आवश्यक रहल।

तीन लेखकक स्वतंत्र कृतिपञ्जी आ सामूहिक आन्दोलनक इतिहास अलग जाँचल जाय; सामूहिक मंच व्यक्तिगत रचनात्मक उपलब्धिक स्थानापन्न नहि।

१६२. प्रदीप पुष्प : “मोनक देहरीपर” आ गजलक सांस्कृतिक संकेत

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २१२४२-२१५२०।

प्रदीप पुष्पक गजलपर मूल अध्ययन छन्द, सांस्कृतिक स्मृति, सामाजिक व्यङ्ग्य आ डिजिटल प्रकाशनक भूमिका देखैत अछि। “मोनक देहरीपर” सन शीर्षक भीतरी चेतना आ सार्वजनिक अनुभवक बीच दहलीजक रूपक बनि सकैत अछि, मुदा शीर्षक-मात्रसँ सभ गजलक प्रतिपाद्य निश्चित नहि। गजल शेरक स्वायत्तता आ संग्रहक भाव-क्रम दूनू स्तरपर पढ़बाक विषय अछि।

मूल आलोचनामे रस-ध्वनि आ नव्य न्यायीय तर्कपद्धतिक प्रयोग अछि। शेरक प्रत्यक्ष शब्द, रदीफक आवृत्ति आ काफियाक ध्वनि कोना अर्थकें बदलैत अछि, ताहि आधारपर सिद्धान्त जोड़ल जाय। साहित्यिक सफलताक प्रमाण सामाजिक सरोकारक घोषणामे नहि, प्रत्येक शेरक अर्थनिर्माणमे रहैत अछि।

लेखकक डिजिटल परिचय आ रचनाक मूल प्रकाशित स्वरूप स्वतंत्र अभिलेख अछि। मुद्रण-पाठ, क्रम, बहर आ पाठान्तरक सत्यापनक बिना पूर्ण छन्दगत दावा सावधान रहत।

१६३. प्रदीप पुष्पक चयनित दस गजल : सम्पादकीय लयपरीक्षण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २१५२१-२१७३९ ।

गजलक मुख्य अध्ययनक बाद मूल पुस्तक दस चयनित गजल आ तिनकर सम्पादकीय बहर-सूचक टिप्पणी प्रस्तुत करैत अछि। चुन्नल दस रचना सम्पूर्ण संग्रहक स्थानापन्न नहि, मुदा शिल्पक सूक्ष्म नमूनाक आधार बनैत अछि। स्वयं कवि द्वारा देल बहर-संकेतक परीक्षण स्वतंत्र मात्रिक पठनसँ करबाक चाही।

गजलक पाठमे मतलाक आरम्भिक अनुबन्ध आ शेरक भीतर द्वितीय पाँतिक अर्थ-निर्णय भिन्न क्रम अछि। केवल बहरक नाम लिखलासँ शेरक सामाजिक सूक्ष्मता नहि खुलैत। स्वरगत विराम, बोलीक उच्चारण, काफियाक लय आ रदीफक अनिवार्यता एक संग जाँचल जाए।

दस गजलक क्रम स्रोत अनुसार सुरक्षित रखल जाए; कविक अपन टिप्पणी आ समीक्षकक निर्णय अलग चिह्नित रहल चाही। मूल लेखकक काव्यक उद्धरण-प्रसंग आ उपलब्ध संस्करणक पाठभेद भविष्यक सूक्ष्म सम्पादनक विषय अछि।

१६४. प्रीति ठाकुर : बालचित्रकथा, दृश्य-पाठ आ मैथिली बालबोध

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २१७४०-२१९८०।

प्रीति ठाकुरक कृतित्व पर मूल अध्ययन बालचित्रकथा, चित्रण, डिजिटल संकलन आ भाषिक शिक्षणक संयुक्त पक्ष प्रस्तुत करैत अछि। बालपाठक लेल चित्र केवल सजावट नहि; पात्र, स्थान, घटना आ नैतिक दुविधा पढ़बाक स्वतंत्र माध्यम अछि। चित्र आ शब्दक बीच अर्थसमानता सदैव पूर्ण नहि, एक-दोसरकें पूरक वा प्रतिपक्ष बनैत अछि।

बालसाहित्यक आलोचनामे शब्दावलीक सरलता एक मात्र कसौटी नहि। पात्रक निर्णयक स्वायत्तता, हँसी, आश्चर्य, परिस्थिति-संघर्ष आ चित्रक दृश्यक्रम बच्चेकें सक्रिय पाठक बनवैत अछि कि नहि—ई प्रश्न मुख्य अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रसविचारक संग आधुनिक बालमनोविज्ञानक तुलनासँ पाठक अधिकार स्पष्ट होयत। मूल ग्रन्थ रचनाकारक सांस्कृतिक संग्रहणक पक्ष सेहो प्रस्तुत करैत अछि। वास्तविक चित्र-पृष्ठक दृश्य परीक्षण आ संस्करणगत रंग-लेआउटक मिलान बिना व्यापक चित्रशैलीक अन्तिम निर्णय नहि देल गेल।

१६५. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' : मैथिली रंगमंच आ "ओ दिन ओ पल"

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २१९.८१-२२४०५ ।

मूल पुस्तक प्रेमलता मिश्रक नाट्य-अभिनय, निर्देशन, रेडियो-रंगमंच आ संस्मरण "ओ दिन ओ पल"केँ एक सांस्कृतिक इतिहासक रूपमे रखैत अछि। संस्मरणक बारह रचना लेखकक देखल जीवनक लेखाजोखा अछि, मुदा किछु दृश्य साहित्यिक स्मृतिक पुनर्रचना सेहो भऽ सकैत अछि। एतेक लेल व्यक्ति-स्मृति आ मुद्रित सार्वजनिक दस्तावेजक स्रोतभेद आवश्यक अछि।

नाटकक मंचीय क्रिया, आवाज, संवाद आ दर्शकक समयानुभव मुद्रित पाठक बाहरी साक्ष्य माँगैत अछि। महिला रंगकर्मीकेँ केवल असाधारण साहसक प्रतीक बना देब हुनकर अभिनयशिल्प, पात्रचयन आ तकनीकी भूमिका गौण करि सकैत अछि।

मूल पुस्तकक विस्तृत प्रशंसापर आलोचनात्मक दृष्टि रखैत नाट्यप्रदर्शनक तिथि, रेडियो अभिलेख, संस्मरणक मूल संस्करण आ विरोधी समीक्षाक आवश्यकता दर्ज अछि।

१६६. प्रेमशंकर सिंह आ सहलेखन : नाटक, संगीत आ साहित्य-संस्था

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २२४०६-२२७८९ ।

प्रो. प्रेमशंकर सिंह पर मूल विस्तृत खण्डमे नाटक, काव्य आ अन्य सहलेखन-सन्दर्भक आलोचना अछि । रंगमंचमे लेखकक अभिप्राय, पात्रक मनोविज्ञान, दृश्य-क्रम आ प्रस्तुति-संस्था अलग स्तर होइत अछि । एकहि सांस्कृतिक वर्तुलक सदस्य रहलासँ सभी कृतिमे समान विचार खोजब सरलीकरण होयत । भारतीय रस-नाट्य सिद्धान्तक संग पाश्चात्य नाटकीय विडम्बनाक तुलना उपयुक्त तखन होयत जखन दृश्य-परिवर्तनक सटीक आधार उपस्थित हो । अभिनेता द्वारा निभाओल चरित्र आ लेखक द्वारा लिखल संवादक अधिकारविभाजन परखबाक चाही । मूल पुस्तक अनेक व्यक्ति आ रचनाक नाम जोड़ैत अछि । प्रत्येक कृतिक प्रकाशित पाठ, प्रस्तुति-वर्ष आ सहलेखकक श्रेयक पुनर्परीक्षण आवश्यक; बिना स्रोत किसीक योगदान विस्तार वा ह्रास कएल नहि गेल ।

१६७. रवीन्द्र नारायण मिश्र : कथाविश्व, उपन्यास आ निबन्ध

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २२७९०-२२९७६।

रवीन्द्र नारायण मिश्रक अध्ययनमे कथा, उपन्यास आ निबन्धक सम्मिलन अछि। कथामे पात्रक कृत्य आ कथा-वाचनक समय-निर्णय प्रधान, निबन्धमे प्रत्यक्ष तर्क आ लेखकक वाचिक उपस्थिति; एहि विधागत भेदक कारण समान विषय होइतो मूल्याङ्कनक कसौटी अलग रहत। मूल पुस्तक भारतीय रसध्वनि आ आधुनिक समाजपक्षी आलोचना सँ कृतित्व देखैत अछि। गद्यक यथार्थवादकेँ केवल स्थानीय दृश्यसङ्कलन नहि, पात्रक विकल्प, वर्णनकारक दूरी आ विरोधी संवादसँ आकलन करबाक चाही। प्रकाशनसूची, कृतिनाम आ लेखकजीवनीक स्रोत-स्तर अलग राखि मूल अध्ययनक दावाक सीमा स्पष्ट अछि। एकहि कथ्यक उपन्यास आ लघुकथामे रूपान्तर साहित्यिक नूतनता हो सकैत अछि; तकर प्रमाण विशिष्ट पाठक अन्तरमे खोजल जाए।

१६८. राजदेव मण्डल : जनकविता, सामाजिक कथा आ लोकभाषा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २२९७७-२३२४०।

मूल पुस्तक राजदेव मण्डलकेँ कविता, उपन्यास, नाटक, पटकथा आ कथालेखनक अनेक स्तरपर प्रस्तुत करैत अछि। सामाजिक समुदायक लोकबोली आ श्रमक अनुभव एतय साहित्येतिहासक केन्द्रीय प्रश्न बनैत अछि। मुदा “प्रथम”, “महान” अथवा “अप्रतिम” सन निर्णायक श्रेणी सम्पूर्ण समकालीन कृतिपञ्जीक तुलनासँ मात्र समर्थित हो सकैत अछि।

राजदेव मण्डलक भाषिक शक्ति मानक मैथिली आ स्थानीय बोलक अनुपात, संवादक सामाजिक स्थल आ पात्रक स्वाभाविक कथनमे खोजल जाय। लोकशब्दक उपस्थिति एक उपलब्धि अछि, मुदा काव्यात्मक रूपान्तरसँ ओकर भिन्न साहित्यिक महत्त्व स्थापित होइत अछि।

पुस्तकक सामाजिक न्याय सम्बन्धी प्रतिज्ञा उचित अनुसन्धान-प्रश्न अछि; पारिवारिक, जातीय आ रचनागत विवरणकेँ मूल संस्करण आ लेखक-साक्ष्यक साथ जाँचबाक चाही।

१६९. राजनन्दन लाल दास : “कर्णामृत”क सम्पादन आ भाषिक संस्था

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २३२४१-२३४५५ ।

राजनन्दन लाल दासक परिचयमे “कर्णामृत”क सम्पादन आ मैथिली भाषिक आन्दोलनक सार्वजनिक सेवा अछि । साहित्यिक संपादकक योगदान मौलिक लेखकसँ भिन्न अछि : पाठ-संशोधन, लेखक चयन, भाषिक मानक आ अभिलेख बचाएव साहित्यिक सार्वजनिकताक भौतिक आधार बनैत अछि ।

मूल पुस्तकक व्यक्तित्वप्रधान प्रशंसा पाठक समक्ष संस्थागत श्रमक महत्त्व रखैत अछि; किन्तु सम्पादित अंकक वास्तविक सामग्री, लेखकवार चयन आ

सम्पादननीतिक ऐतिहासिक परिवर्तन स्वतन्त्र जाँच चाहैत अछि । संपादकक घोषित मानक आ प्रकाशित पृष्ठक व्यवहार भिन्न भए सकैत अछि ।

सम्पादनक उपलब्धि आलोचनामे तखन प्रकट होयत जखन पाठ-संस्करणक रक्षा, सुधरल पाठ आ छूटल स्वरक लेखाजोखा सम्भव हो । एहिमे मूल अंक-क्रमक सत्यापनक सीमा स्वीकार कएल गेल ।

१७०. चारि लेखकक समेकित कृतित्व : गद्य, पद्य आ सामाजिक आलोचना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २३४५६-२३५८७ ।

मूल पुस्तक राम सोगारथ यादव, शशिधर कुमार 'विदेह', शिवशंकर सिंह ठाकुर आ सन्तोष कुमार रायकेँ समेकित कृतिपाठक अन्तर्गत रखैत अछि। संयुक्त अध्याय बनेबाक लाभ सामाजिक साहित्यिक बहुलताक दृश्य अछि; मुदा प्रत्येक लेखकक शब्द-चयन, विधा आ साहित्यिक उद्देश्यक अलग सीमा निर्दिष्ट करब आवश्यक।

कथा-गीत-आलोचनाक अंतरकेँ विस्मृत करि केवल समानान्तर आन्दोलनक साझा सदस्यता सर्वोच्च कसौटी नहि होयत। उपेक्षित सामाजिक अनुभवकेँ स्वयं अभिव्यक्तिक प्रमाण चाही। लेखकक परिचयक स्वीकार सामाजिक प्रतिनिधित्वक शुरुआत अछि, साहित्यिक निर्णयक समापन नहि।

एकहि मूल परिचयक भीतर दोहरायल सैद्धान्तिक सूचीकेँ लेखकवार स्वतन्त्र प्रमाण नहि गनल गेल। कृतिपञ्जी आ मूल पाठक स्थिर संस्करण भेटलापर निकट पठन सम्भव होयत।

१७१. आचार्य रामानन्द मण्डल : मौखिक परम्परा आ साहित्य-दर्शन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २३५८८-२४२०१ ।

आचार्य रामानन्द मण्डलक विस्तृत अध्ययनमें लोकसाहित्य, शिक्षण, विचार आ मैथिली सार्वजनिक जीवनक जटिल सम्बन्ध अछि। मूल पुस्तक परम्पराक ज्ञानकें जीवनोपयोगी सिद्धान्तक रूपमे रखैत अछि, मुदा शिक्षकक सांस्कृतिक प्रतिष्ठा आ प्रकाशित ग्रन्थक तर्क-निर्माण अलग परीक्षा माँगैत अछि।

भारतीय रस, लोकवृत्त, सामाजिक इतिहास आ नव्य न्यायीय प्रमाणक तुलना सावधानीसँ कएल जाए। लोकपरम्पराक वर्णनक सत्यता गीतक क्षेत्रगत पाठ, गायकक भूमिका आ दिनांकित अभिलेख पर निर्भर अछि; परम्परागत कथन मात्रसँ ऐतिहासिक घटना निश्चित नहि।

आचार्यक व्याख्यात्मक शक्ति भिन्न सामाजिक समुदायकें पाठदृष्टि दे सकैत अछि; तकर सांस्कृतिक महत्त्व मान्यता दैत मूल ग्रन्थक स्रोतआधार आ प्रतिपक्षी सम्भावना सुरक्षित रखल गेल।

१७२. प्रो. रामावतार यादव : मैथिली ध्वनिविज्ञान आ भाषा-अध्ययन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २४२०२-२४३७१।

रामावतार यादवक अध्ययन मैथिली भाषाविज्ञानक ध्वन्यात्मक संरचना, व्याकरण आ भाषिक स्वायत्तताक प्रश्न उठबैत अछि। साहित्यिक आलोचनासँ भिन्न भाषावैज्ञानिक प्रतिज्ञाक परीक्षण वर्णनात्मक डेटा, उच्चारण, भाषापरिवर्तन आ क्षेत्रगत नमूनाक आधारपर होयत। भाषा-समुदायक राजनीतिक मर्यादा आ ध्वनि-प्रणालीक वैज्ञानिक व्याख्या समान वस्तु नहि।

मूल पुस्तकक महत्त्व मैथिली भाषाकेँ हिन्दी अथवा आन भाषाक परिशिष्ट मानेबाक प्रवृत्तिक समक्ष व्याकरणिक विश्लेषणक आग्रह अछि। मुदा भाषाक स्वतंत्रताक सामाजिक अधिकारसँ प्रत्येक ऐतिहासिक उत्पत्तिसिद्धान्त स्वतः सत्य नहि भऽ जाइत।

उच्चारणभेद, लिप्यन्तरण आ शब्दरचनाक उदाहरणक परीक्षण मूल भाषावैज्ञानिक ग्रन्थक सटीक पृष्ठसँ आवश्यक अछि। आलोचना भाषा-पहिचान, ध्वनितथ्य आ संस्थागत दाबीक भेद सुरक्षित रखैत अछि।

१७३. रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' : झारू काव्यरूप आ जनकविता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २४३७२-२४५८१ ।

रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क परिचयमे "झारू" नामक मौलिक लोककाव्य-विधा आ जनसाहित्यक दाबी अछि । साधारण सफाइक उपकरणकें कविता-रूपक बनायब सामाजिक श्रमक प्रतिष्ठाक शक्तिशाली संकेत हो सकैत अछि । मुदा "पहिल", "आविष्कारक" अथवा उपाधिमूलक विशेषण ऐतिहासिक तुलनात्मक साक्ष्यक बिना निश्चयात्मक नहि ठहराओल जाए ।

लोकभाषाक कथन-गति, मौखिक प्रस्तुति आ कविता मे टकराहट केना रूप ग्रहण करैत अछि, एहि अध्ययनक साहित्यिक प्रश्न अछि । व्यङ्ग्यात्मक उपदेश आ कलात्मक विस्थापनक भिन्नता पाठ्य उदाहरणसँ स्पष्ट होयत ।

परम्परागत भिखारी ठाकुरसँ तुलना व्याख्यात्मक रूपक भऽ सकैत अछि, वास्तविक विभागत समानता नहि । झारू रूपक सांस्कृतिक जीवनक आलोचना कतेक गहिराइ सँ करैत अछि, से मूल रचनापाठक प्रमाण पर निर्भर अछि ।

१७४. रमेश आ माला झा : गीत, आलोचना आ संयुक्त साहित्यिक काज

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २४५८२-२५८२५ ।

रमेश आ माला झाक संयुक्त अध्ययन मैथिली कविता, गद्य, सम्पादन आ सांस्कृतिक कार्यक अनेक प्रसंग एकत्र रखैत अछि। दाम्पत्य अथवा पारिवारिक सम्बन्ध संपादकीय सहयोगक सन्दर्भ भऽ सकैत अछि, मुदा रचनाकार-द्वयक अलग लेखकत्वक रक्षा अनिवार्य। संयुक्त संकलनमे प्रत्येक कृतिखण्डक रचयिता स्पष्ट होएबाक चाही।

गीतक गेय लय, आलोचनाक तर्कसम्बन्ध आ कथाक पात्र-विधानक मूल्यांकन अलग होयत। विस्तृत मूल खण्डमे अनेक सैद्धान्तिक तुलना अछि; शब्दक उद्धृत स्वरूप आ विशिष्ट संदर्भक आधारपर मात्र सिद्धान्तक उपयोग न्यायसंगत।

समानान्तर साहित्यिक सार्वजनिक विस्तार एहि संयुक्त आलोचनाक सन्दर्भ अछि, किन्तु आन्दोलनगत स्थानक वर्णनक भीतर कलात्मक भिन्नता नहि हेराय। मूल संस्करणक लेखक-सूची आ प्रकाशनतिथिक मिलान सीमा रूपमे दर्ज अछि।

१७५. रमेश नारायण : सांस्कृतिक प्रतिरोधक काव्य आ गद्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २५८२६-२६४७०।

रमेश नारायण पर मूल विस्तृत परिचय सामाजिक चिन्ता, भाषा आ रचनात्मक प्रयोगक अनेक स्तर प्रस्तुत करैत अछि। कविताक प्रतिरोध सामाजिक घोषणासँ भिन्न साहित्यिक माध्यम अछि; रूपक, पात्र, स्वर आ व्यङ्ग्यक क्रमक भीतर ई प्रतिरोध कोना बनैत अछि से प्रश्न केन्द्रमे अछि।

मूल अध्यायमे भारतीय काव्यशास्त्र, पश्चिमी आलोचना आ नव्य न्यायीय तर्कक एक संग उपस्थिति अछि। एहि पद्धति सँ लेखकक व्याख्याक अनेक सम्भावना खुलैत अछि, मुदा मूल कृतिक विरोधी सम्भावित अर्थकेँ दबा कऽ पूर्वस्वीकृत निर्णय सिद्ध करब अनुचित।

जीवनी-पञ्जी आ उद्धृत साहित्यिक अंशक स्रोतगत विश्वसनीयता समान नहि मानल जाए। उपलब्ध संलग्न ग्रन्थक पाठकेँ प्राथमिक आधार मानि अलग मूल प्रकाशनक परीक्षण शेष अछि।

१७६. रुद्रपुरक पाठपरम्परा : रामजी चौधरी आ रामलोचन शरण

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २६४७१-२७०३३ ।

रुद्रपुरक पाठपरम्परा सम्बन्धी मूल अध्ययन पण्डित रामजी चौधरी, आचार्य रामलोचन शरण आ भक्ति-साहित्यक पुनर्पाठक प्रश्न उठबैत अछि। एकहि धार्मिक रचनाक अनेक संस्करण, सम्पादकीय सुधार आ मौखिक पाठान्तर इतिहासलेखन लेल उपयोगी अछि; किन्तु ककर पाठ प्राचीन अथवा प्रमाणित कहबाक लेल पाण्डुलिपिक समय, लिपि आ पाठवंशक स्पष्ट साक्ष्य चाही।

भक्तिकाव्यक अर्थग्रहणमे सांस्कृतिक श्रद्धा वैध अनुभव अछि, मुदा स्रोत-सम्पादनक निर्णयक पूर्ण विकल्प नहि। संस्करणभेदक नामपर मनमाना पाठमिश्रण ओहि ऐतिहासिक अन्तरकै नष्ट करि सकैत अछि, जे साहित्यिक इतिहासक विषय अछि।

मूल पुस्तकमे एक मैथिली कविता आ अंग्रेजी अनुवादक उल्लेख सेहो अछि। अनुवादक पद, धार्मिक प्रतीक आ मूल ध्वनिक सटीक मिलान बिनु पूर्ण अर्थ-समताक दावा नहि कएल गेल।

१७७. रामलोचन ठाकुर : कविता, व्यङ्ग्य आ अनुवादक भाषिक विवेक

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २७०३४-२७२३०।

मूल पुस्तक रामलोचन ठाकुरक कविता, व्यङ्ग्य, अनुवाद आ सम्पादनक संयुक्त परिचय दैत अछि। व्यङ्ग्यक भाषामे अप्रत्याशित अर्थपलट आ कवितामे छन्दात्मक आवृत्ति भिन्न रूपगत क्रिया अछि; लेखकक अनेक विधामे उपस्थिति साहित्यिक प्रमाण बनैत अछि, मुदा गुणवत्ताक मूल्यांकन कृतिवार होएबाक चाही।

अनुवादक कार्यमे मूल भाषाक विशेष पद, सामाजिक सम्बोधन आ बिम्बक मैथिली रूपान्तर देखल जाय। प्रतिशब्दीय मेल बनाम रचनात्मक समता दोसर-दोसर कसौटी अछि। लेखकक सांस्कृतिक गतिविधि आलोचनाक पृष्ठभूमि अछि, मौलिक रचनाक पाठ-साक्ष्यक विकल्प नहि।

विशिष्ट संस्करण, उद्धरण आ अनुवाद-मूलक युग्म-पाठक मिलानक सीमा समीक्षा स्वीकार करैत अछि।

१७८. रामविलास साहु : लोकसमाज आ साहित्यिक प्रतिरोध

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २७२३१-२७४४३ ।

रामविलास साहुक अध्ययन आधुनिक मैथिलीमे सामाजिक स्वीकृति, भाषिक गरिमा आ लेखकीय स्थानक प्रश्न उठबैत अछि। कृतिक सामाजिक स्वरकें रचनाकारक जातीय परिचयपर घटाएब उचित नहि; पात्रक स्थितिक विरोध आ काव्यक व्यङ्ग्य-बिम्बक प्रत्यक्ष परीक्षण प्रमुख अछि।

मूल पुस्तक ध्वनि, वक्रोक्ति, मार्क्सवादी आलोचना आ नव्य न्यायीय पद्धतिक उपयोग करैत अछि। एहन विविध सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य तखन उपयुक्त जखन ओ रचनाक एक विशिष्ट भाषिक समस्या खोलय। लेखकक आत्मपरिचयक अनुमोदन आलोचनात्मक असहमतिसँ विरुद्ध नहि।

जीवनीक तिथि, प्रकाशन व संस्था सम्बन्धी दाबी मूल ग्रन्थक पाठाधारित सूचना अछि; स्वतंत्र अभिलेखक बिना अन्तिम प्रमाण नहि।

१७९. रविभूषण पाठक आ कुमार मनोज कश्यप : तुलनात्मक कृतित्व

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २७४४४-२७६३२ ।

रविभूषण पाठक आ कुमार मनोज कश्यपक संयुक्त आलोचनामे विधागत भिन्नता, जनपदक अनुभव आ सांस्कृतिक इतिहासक अभिव्यक्ति पर चर्चा अछि। दुनू लेखककै एक आन्दोलनक सदस्य मानब सम्भव अछि, मुदा हुनकर अलग रचनात्मक पहचानक रक्षा पहिल सम्पादकीय दायित्व होयत।

कविताक ध्वनि, कथात्मक गद्यक परिस्थिति आ प्रत्यक्ष समाज-साक्ष्यक भेद स्पष्ट रखबाक चाही। इतिहासक तथ्यक आलोचना लेल सार्वजनिक अभिलेख चाही; काव्यक महत्त्व ओकर भाषिक अन्तर्विरोध सँ सेहो उत्पन्न भऽ सकैत अछि। मूल पाठमे लेखकवार कृतिपञ्जी प्रस्तुत अछि; बाह्य संस्करणक मिलानक बिना निर्णायक समग्र रैंकिंग नहि।

१८०. रवीन्द्रनाथ ठाकुर : गीत, साहित्य-अध्ययन आ संस्थागत भूमिका

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २७६३३-२७८५२ ।

रवीन्द्रनाथ ठाकुरक लेखनक मूल अध्ययन कवि, गीतकार, अध्येता आ बिहारक मैथिली अकादेमीसम्बद्ध प्रशासनिक काजकेँ एक संग देखैत अछि। संस्था चलाएबक कौशल आ साहित्यिक गीतक रचनात्मकता एक-दोसरकेँ सहयोग दे सकैत अछि, मुदा एकमे सफलतासँ दोसरक उत्कृष्टता स्वतः प्रमाणित नहि होइत। गीतक गेयता, बिम्ब, शृंगार अथवा करुण भावक वास्तविक निर्माणक विश्लेषण पाँतिक पुनरावृत्ति आ शब्दसंगठन सँ करबाक चाही। संस्थागत दस्तावेजीकरणमे निर्णय-अवधि, अधिकार आ प्रकाशित कार्यक सूची अलग प्रमाण चाहैत अछि। मूल जीवनीपरक पदक नाम, तिथि आ पदस्थापनक विवरण स्वतंत्र अभिलेखसँ मिलान शेष राखल गेल।

१८१. फणीश्वरनाथ रेणु : हिन्दी कथामे मैथिलीक भाषिक भूगोल

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २७८५३-२८०३० ।

मूल पुस्तक फणीश्वरनाथ रेणुक हिन्दी साहित्यक भीतर मिथिलाक भूगोल, मैथिली शब्द-संसार आ क्षेत्रीय सामाजिक अनुभवक उपस्थिति देखैत अछि। हिन्दी कथामे मैथिली वाक्य, लोकगीत अथवा स्थानीय सम्बोधन आएसँ मात्र भाषा-स्थानान्तरणक एकमात्र निष्कर्ष नहि; कथावाचकक दृष्टि, पात्रक सामाजिक स्थिति आ सम्पूर्ण कथन-व्यवस्था जाँचबाक चाही।

आंचलिकताक साहित्यिक समस्या केवल क्षेत्रनामक समावेश नहि, क्षेत्रक सामाजिक असमानता आ भाषिक बहुस्वरकें पाठक कोना सुनैत अछि तकर प्रश्न अछि। रेणुक पात्रक बोलीक प्रयोग भाषा-अधिकारक अवसर सेहो बनि सकैत अछि, किन्तु ग्रामीण अनुभवक रोमानीकरणक सम्भावना स्वतंत्र आलोचना माँगैत अछि।

विशिष्ट हिन्दी उपन्यासक मूल पाँति आ मैथिली भाषिक उदाहरणक तुलना बिना प्रत्येक शब्दक वंश-निर्धारण निश्चित नहि कएल गेल।

१८२. सन्दीप कुमार सफी : आत्मकथा, जातिगत अनुभव आ कविता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २८०३१-२८२७९ ।

सन्दीप कुमार सफीक “बैसाख मे दालान पर”क आत्मकथा, कविता, बीहनि कथा आ सूक्तिकेँ मूल ग्रन्थ मैथिलीमे दलित जीवन-अभिलेखक महत्त्वपूर्ण प्रयास मानैत अछि । आत्मकथाक प्रथम पुरुष सामाजिक बहिष्कार, विद्यालय, काम आ परिवारक अनुभवक साक्ष्य दऽ सकैत अछि, मुदा “पहिल दलित आत्मकथा”क ऐतिहासिक दाबी सर्वकृतिपञ्जीक तुलना बिना अन्तिम नहि ।

व्यक्तिगत अपमानक प्रसङ्ग साहित्यिक वक्तृत्वक माध्यमसँ रूपान्तरित भऽ सकैत अछि । आत्मकथामे स्मृति, समयान्तर आ नैतिक प्रतिवादक गठन सूक्ष्म परीक्षण चाहैत अछि; पाठककेँ लेखकक पीडाकेँ मात्र उदाहरण बनायब नहि चाही ।

एहि अध्ययनक महत्त्वपूर्ण पक्ष दलित लेखकक स्वकीय कथनक प्राथमिकता अछि । पुरान संस्थागत चुप्पीक आरोपक स्वतंत्र प्रमाण आ कृतिगत शिल्पक विवेचन दूनू राखल गेल ।

१८३. समकालीन मिथिला कलाकार : पाँच दृश्य-स्वरक तुलनात्मक विवेचन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २८२८०-२८४१२।

मूल चित्रकला-अध्ययन संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप-शशि बाला, एस.सी. सुमन आ श्वेता झा चौधरी सहित पाँच कलाकारक कृतित्वपर चर्चा करैत अछि। रेखाक अनुशासन, रंगक सम्बन्ध, विषयगत नवाचार आ श्रमप्रक्रियाक रूपगत अन्तर कलाकारवार देखबाक चाही। केवल “मधुबनी”क साझा लेबल व्यक्तिगत रूपात्मक स्वभावकें अदृश्य बना सकैत अछि।

लोकशैली आ बाजारपरक कला वाणिज्यक सम्बन्ध एकदम एकरेखीय नहि। नकल, मुद्रण-अधिकार, कलाकार-श्रेय आ मूल चित्रक स्वामित्व सांस्कृतिक न्यायक मुद्दा अछि। एक कलाकारक आत्मवर्णन दृश्यरूपक स्वतन्त्र विश्लेषणक विकल्प नहि। उच्च गुणवत्ता चित्र, माध्यम-विवरण, मूल तिथि आ कलाकारक सहमतिक अभावमे सटीक रूपात्मक तुलना सीमित अछि।

१८४. सन्तोष कुमार मिश्र : कविता, कथा आ सांस्कृतिक सक्रियता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २८४१३-२८६१७ ।

सन्तोष कुमार मिश्रक अध्ययन कथा, कविता आ सांस्कृतिक सार्वजनिकताक अन्तर्सम्बन्ध प्रस्तुत करैत अछि । समाजगत न्यायपर लिखल कविता केना विशिष्ट बिम्ब, वक्रोक्ति आ ध्वनिक अनुशासनसँ साहित्यिक कला बनैत अछि, ई आलोचनाक मूल प्रश्न अछि । सामाजिक सक्रियता स्वयं रचनाक गुणवत्ताक पर्याप्त प्रमाण नहि । कथामे पात्रक निर्णय आ पाठकक नैतिक अपेक्षाक अन्तर अध्ययनयोग्य अछि । कविता मे रचना-वाचक आ वास्तविक लेखकक अभिप्राय अलग रहि सकैत अछि । विधानुसार रस-ध्वनि वा आधुनिक यथार्थवादक सीमित प्रयोग उपयुक्त । लेखकक कृतिसूची आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक तिथि संदर्भित मूल पाठ सँ अलग बाह्य प्रमाणीकरण चाहैत अछि ।

१८५. सियाराम झा 'सरस' : गीत, गजल, बालसाहित्य आ लोकानुभव

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २८६१८-२८८४८।

मूल ग्रन्थ सियाराम झा 'सरस'क "आखर आखर गीत सरस" (१९९९), "शोणितायल पयरक निशान", "धरी प्रश्न ई उठाइये" (२०१५), "फूल तितली आ तुलबुल" (२०११) तथा "सोनहुला इजोतबला खिड़की"क अलग विधागत मूल्याङ्कन प्रस्तुत करैत अछि। गीतक सार्वजनिक गायन, गजलक शेर-रचना, सामाजिक कविताक प्रतिवाद आ बालपाठक लेल रचल लय एकहि प्रतिभाक भिन्न अभिव्यक्ति अछि। एक विधामे प्रसिद्धि आन विधाक शिल्पगत सफलताक स्वतः प्रमाण नहि।

"शोणितायल पयरक निशान"क शीर्षक रक्त आ गतिशीलताक सम्बन्ध रचैत अछि; काव्यगत तीव्रता जँ प्रत्यक्ष शेरक बहर, काफिया आ रदीफमे सधैत अछि तखने गजलक रूपक विशेष उपलब्धि होयत। "धरी प्रश्न ई उठाइये"मे सामाजिक प्रश्न उठेनिहार वाचकक अधिकार स्वीपाठ, प्रत्यक्ष स्वर आ कविक अपन स्थानक अन्तर स्पष्ट करबाक माँग करैत अछि। "फूल तितली आ तुलबुल"क पाठक बालक अछि; एतय उपदेशक बोझ, श्रवणीय ध्वनि आ बालकक कल्पनात्मक सहभागिताक पृथक परीक्षण आवश्यक।

समीक्षा स्रोतक पुस्तकनाम, प्रकाशन-सूचना आ लेखकक सार्वजनिक गतिविधिक बीच प्रमाणभेद रखैत अछि। कृति-विवेचनमे उद्धृत पद्यक छन्द-परीक्षण लेल मूल गीत-पुस्तकक प्रतिलिपि तथा गायनक संस्करण अपेक्षित; डिजिटल उपलब्धताकै मूल मुद्रित संस्करणक पूर्ण प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

१८६. शम्भु कुमार सिंह : काल-विभाजन, नाट्यालोचना आ अनुवाद-सम्बन्ध

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २८८४९-२९०२०।

डॉ. शम्भु कुमार सिंहक परिचयमे “मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण” आ नाट्यक सामाजिक रूपान्तरणसम्बन्धी शोध विशेष स्थान रखैत अछि। साहित्यकालकें मात्र राजवंश अथवा शताब्दीक सीमा मानलासँ रचनाविधा, पाठप्रसार, मुद्रण आ लोकनाट्यक असमकालिक विकास छूटि सकैत अछि। प्रस्तावित कालविभाजनक सैद्धान्तिक उपयोगिता तखन प्रमाणित होयत जखन सीमा-वर्षक आधार आ प्रतिपक्षी कालरेखा पाठसहित परखल जाय।

मूल विवरण कोंकणी कथा “पाखलो”क मैथिली अनुवाद हिन्दी माध्यमसँ तैयार हेबाक उल्लेख करैत अछि। मध्यवर्ती हिन्दी पाठक प्रभाव मूल कोंकणी लक्षण,

सम्बोधन आ स्थानीय सामाजिक संकेतमे अन्तर आनि सकैत अछि; स्रोत-मूल,

मध्यस्थ आ मैथिली—तीनू पाठक त्रिपक्षीय तुलना अनिवार्य अछि। दावाक मूल स्रोत देखल बिनु प्रतिशब्दीय निष्ठा प्रमाणित कहब असम्भव।

नाट्यसमाजशास्त्रमे दृश्य-व्यवस्था, पात्रक सामाजिक स्थान आ वास्तविक रंगमंच-प्रयोग अलग प्रमाणक क्षेत्र अछि। ग्रन्थकारक अकादमिक परिचय हुनकर तर्कक सन्दर्भ दैत अछि, मुदा पाठान्तर, उद्धरण आ मूल प्रयोगक स्वतन्त्र परीक्षणक स्थान नहि लेत।

१८७. शान्ति लक्ष्मी चौधरी : स्त्रीस्वर, भक्तिभाव आ गेय कविता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २९०२१-२९०८१।

शान्ति लक्ष्मी चौधरी आ राजीव रञ्जन मिश्रक संयुक्त मूल प्रकरणक पहिल भाग स्त्रीक रचनात्मक उपस्थितिक विषय बनबैत अछि। कविताक व्यक्तिगत आ आध्यात्मिक अनुभवकें समाजगत स्त्री-अनुभवक एकमात्र प्रतिनिधि मानब अनुचित; काव्यक विशिष्ट वाचक, परम्परागत भक्ति-संकेत आ आत्मकथ्यक बीच भेद देखबाक चाही।

भारतीय रस-ध्वनिक प्रयोगमे केवल करुणा अथवा भक्तिक नामोल्लेख पर्याप्त नहि। भावक परिवर्तन, सम्बोधनक लक्षित व्यक्ति, लयक आवर्तन आ जतेक अनकहल अछि ओकर पाठगत संकेत सँ काव्यार्थ निर्मित होइत अछि। पश्चिमी स्त्रीवादी व्याख्या सहायक भऽ सकैत अछि, जँ काव्यपाठमे अधिकार, प्रतिरोध वा सहमतिक वस्तुगत प्रमाण भेटय।

मूल पुस्तकक संयुक्त रचना-रूपकें अलग-अलग लेखकीय मूल्याङ्कनमे बाँटल गेल अछि। उपलब्ध सन्दर्भमे ग्रन्थसूचीक उल्लेखक परीक्षण शेष अछि; एतय लेखकक जीवनक अनुमान जोड़ि काव्यकें व्याख्यायित नहि कएल गेल।

१८८. राजीव रञ्जन मिश्र : भक्तिगजल आ जानकी गीतक रूपविधान

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २९०८२-२९१४०।

राजीव रञ्जन मिश्रक “भक्ति गजल”, “गजल १-४” आ “जानकी गीत”क विदेह सदेह सम्बन्धी विवरण मूल खण्डमे क्रमशः सातम, बारहम आ चौदहम संग्रहक सन्दर्भमे अछि। भक्तिभावक गजलक भीतर प्रवेश पौराणिक विषयक उपस्थिति मात्र नहि; मतला, स्वतंत्र शेर, बहर आ रदीफ-काफियाक संरचनामे अर्थ कोना बदलेत—ई मूल समीक्षाक प्रश्न अछि।

जानकी गीतक मिथिला-सम्बद्ध सांस्कृतिक स्मृति पाठमे स्त्रीक धार्मिक छवि बनबैत अछि। स्त्री-प्रतिनिधित्वक आलोचना करैत भक्तिक सांस्कृतिक व्याकरणकें उपेक्षित नहि कएल जा सकैत; आ श्रद्धाभावक कारण आलोचनात्मक प्रश्न निरस्त सेहो नहि होइत। गीतक समवेत गायन आ गजलक व्यक्त शेर-स्वरक अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि।

सदेहक अंक-संख्या, पृष्ठसङ्केत आ मूल शीर्षकक पुनर्मिलानक आवश्यकता दर्ज अछि। प्रकाशित अंशक आधारपर समग्र काव्य-संग्रहक पूर्ण अरुज-परीक्षण सम्पन्न कहब उचित नहि।

१८९. शार्दिन्दु चौधरी : व्यङ्ग्य, संस्मरण आ “समय-साल”क सम्पादकीय

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २९१४१-२९४०१।

शार्दिन्दु कुमार चौधरीक विस्तृत समीक्षा विदेह अंक ३५८क विशेष सामग्री, साक्षात्कार आ समकालीन लेखसमूहक आधारपर “बात-बात पर बात”, “जा हम जनितहुँ”, “बड़ अजगुत देखल”, “गोहरागणेश” आ “करिया कक्काक कोरामिन”क चर्चा करैत अछि। आत्मस्मृतिमे वक्ता अपना ऊपर व्यङ्ग्य करैत सामाजिक मानक उद्घाटित कऽ सकैत अछि; मुदा संस्मरणक घटनाकें स्वतन्त्र जाँच बिना शाब्दिक इतिहास बनायब उचित नहि।

“समय-साल”क सम्पादकीय लेखन साहित्यिक सार्वजनिकताक भिन्न रूप अछि। आलोचनाक कसौटी चयनित लेखकक सूची मात्र नहि, विचारक निरन्तरता, विरोधी मतकें स्थान, नूतन रचनाकारक प्रवेश आ भाषा-रूपक नीति अछि। व्यङ्ग्यक सफलतामे अर्थक उलटफेर, कालभेद, शब्दक द्विअर्थकता आ पाठकक अपेक्षाकें विशेष स्थान अछि।

मूल अध्ययनमे विशेषाङ्कक पृष्ठ १५-२०, २१-२५ आ ९९-११२ सन विशिष्ट सङ्केत प्रस्तुत अछि; एकरा बाह्य संस्करणसँ मिलान शेष राखल गेल अछि। मानवीय गरिमा पर आलोचना करैत व्यक्तित्व-प्रशंसाकें कृतिक स्वतन्त्र मूल्याङ्कन नहि मानल गेल।

१९०. शिव कुमार प्रसाद : “मनक हाट”, “राग-विराग” आ सामाजिक कविता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २९४०२-२९६५२।

डॉ. शिव कुमार प्रसादक प्रारम्भिक आलोचनात्मक प्रकरण “मनक हाट” (२०२१) आ “राग-विराग” (२०२४)क सन्दर्भमे कविता, लघुकथा, अनुवाद आ सामाजिक प्रतिरोधक विविध पक्ष देखबैत अछि। “बिनु खेबैया हमरे नाव अछि”क पंक्तिमे असुरक्षा एक व्यक्तिगत आकुलता अछि, मुदा नदी आ नावक सांस्कृतिक अर्थसँ ई सामूहिक संकटक संकेत सेहो भऽ सकैत अछि। आन्तरिक भावसँ सामाजिक अर्थ धरि पहुँचबाक व्याख्यात्मक सेतु प्रस्तुत होयबाक चाही।

आलोचनामे रस, वक्रोक्ति, नव्य न्याय, उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययन आ निकट-पठनक अनेक कसौटी एकसंग प्रयुक्त अछि। सिद्धान्तक नामक संचयन आ वास्तवमे मूल पद्यक अर्थगठनक विश्लेषण अलग विषय अछि। रूपकक अप्रत्याशितता, विराम, शब्द-पुनरावृत्ति आ सामाजिक दृश्यकेँ उद्धृत उदाहरणसँ बाँधल जाय तँ विश्लेषण अधिक स्पष्ट बनैत अछि।

मूल अंशक अन्तमे “एडेंडम”क रूपमे दोसर बृहत्तर अध्ययनक घोषणा अछि। तकर कारण एहि पहिल प्रकरणक कृतिक नाम आ सम्भावित पाठसीमाकेँ आगेक विस्तारसँ अलग जाँचल गेल; पुनरावृत्त अनुच्छेदकेँ स्वतन्त्र प्रमाण नहि गनल गेल।

१९१. शिव कुमार प्रसादक विस्तार : कवितासँ कथाक ग्रामीण-राजनीतिक भूगोल

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २९६५३-२९९७३।

एहि नव बृहत्तर खण्डमे शिव कुमार प्रसादक प्रकाशित कविताक संग ग्रामीण पूर्वाधार, प्रशासन, न्यायालय, पुलिस, आप्रवासन आ कोसी अञ्चलक सामाजिक अनुभवक व्याख्या उपस्थित अछि। मूल ग्रन्थ एकहि लेखकक पहिनुक समीक्षा पर पुनः विस्तार करैत अछि; पाठगत नव दाबी, साहित्यक भिन्न विधा आ संशोधित प्रमाण-सीमा पहिचानब साहित्येतिहासक शुद्धता लेल आवश्यक अछि।

गामक टूटल सड़क वा राज्यक विफलता कथाक दृश्य भऽ सकैत अछि, किन्तु ओकर प्रत्यक्ष अभिलेखीय दाबी सरकारक तिथि-सम्बद्ध योजना अथवा क्षेत्रीय स्रोतसँ परखल जाय। साहित्यक भाषामे व्यङ्ग्यात्मक अधिकारी-पात्रक काज सामाजिक रूपक सेहो होयत; एकरा सँ वास्तविक व्यक्ति पर स्वचालित आरोप नहि ठहराओल जाय। अनुवाद अधिकारक उल्लेख कृतिक भाषान्तरक मान्यता होयत, मुदा मूल-अनूदित भाषाक अर्थसमताक प्रमाण नहि।

पहिल प्रसाद-प्रकरण आ एहि विस्तारक साम्य तथा नवीनताकेँ अलग अभिलेखित कएल गेल अछि। साहित्यिक प्रवृत्तिक तुलना पाठक उदाहरणसँ करबाक आवश्यकता राखि भौगोलिक विशिष्टताकेँ अभिनवता मानल गेल, किन्तु स्वतः कलात्मक श्रेष्ठता नहि।

१९२. शिव कुमार झा 'टिल्लू' : "क्षणप्रभा" आ "अंशु"क आलोचना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद २९९७४-३०१६९।

शिव कुमार झा 'टिल्लू'क "क्षणप्रभा" (२०१२) आ "अंशु" (२०१३) क्रमशः काव्य आ आलोचनात्मक गद्यक दू पृथक क्षेत्र अछि। "क्षणप्रभा"क नाम क्षणिक विद्युत्-दीप्तिक बिम्ब रचैत अछि; क्षणिक अनुभवकै रचना कतेक देर सम्हारैत अछि, ई कविता, हाइकू वा गजलक रूपपर निर्भर रहत। ऋतुगीत आ चैता-परम्पराक लोकध्वनि बिनु ओकरा मात्र पर्यावरणक चित्रण कहब सीमित अछि।

मूल प्रकरणमे आधुनिक रासायनिक खेती आ प्लास्टिकक उल्लेख करैत पर्यावरणीय कविताक उदाहरण देल अछि। रचनामे माटि, कृषि आ घरेलू वस्तुक पारस्परिक सन्दर्भ प्रत्यक्ष सामाजिक आ पारिस्थितिक बिम्ब बनैत अछि। जाति-सम्बन्धी कवितामे बिम्बक तीव्रता आ प्रतिवादी स्वर एक तरहक आलोचनात्मक कार्य करैत अछि, मुदा ओकर आलोचनामे काव्य-वक्ता आ ऐतिहासिक तथ्यक दर्जा पृथक रहत।

"अंशु"क आलोचनाक सिद्धान्त-विस्तारक मूल्याङ्कन लेखकक दृष्टि-निर्माणक कसौटीपर होयत। मूल स्रोतक हाइकू, गीत आ गजलक सम्पूर्ण क्रम तथा उद्धरण नदेखला पर सर्वविधागत सफलता निश्चित नहि कहि सकैत छी; एहि मर्यादाकै अध्ययनमे सुरक्षित राखल गेल।

१९३. सृजन शेखर 'अज्ञेय' : उपनाम, गीत आ सार्वजनिक स्वर

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३०१७०-३०१९२।

“सृजन शेखर 'अज्ञेय'” नामसँ लिखनिहार गंगानन्द झाक गीतसभ विदेह सदेह १८, १९ आ २१मे उपस्थित बताओल गेल अछि। “हमर गाम”, “जिनगीक दस्तावेज”, “सभ मैथिलक लेल” आ “प्रेमक गीत-सृजन” सन शीर्षक निजी स्मृति सँ सार्वजनिक समुदाय धरि भावविस्तारक सम्भावना देखबैत अछि। शीर्षक मात्रसँ काव्यक अन्तिम अर्थ निर्धारित नहि कएल जा सकैत; वास्तविक गीत-पाँति आ स्वरबद्ध रूप निर्णायक होयत।

“अज्ञेय” उपनाम हिन्दी आधुनिकतावादी अज्ञेयक याद जगबैत अछि, मुदा ई नामसाम्य वास्तविक रूपगत प्रभावक प्रमाण नहि। लेखकक गीतमे व्यक्तिवादी प्रयोग बनाम सामूहिक सरोकारक संबंध जाँचबाक होयत। ध्वन्यात्मक पुनरावृत्ति, अन्त्यानुप्रास आ गीतक श्रव्य आयोजन आधुनिकताक नामसँ अधिक उपयोगी निकट-पठनक क्षेत्र अछि।

मूल परिचय प्रकाशित अंक-पृष्ठक अनेक सङ्केत दैत अछि। लेखकत्व, उपनाम आ गीतक प्रथम प्रकाशित स्वरूपक मिलानक सीमा स्पष्ट रहल।

१९४. अच्छेलाल शास्त्री आ अनामिका राज : साक्षीस्वर आ स्त्रीक मार्ग

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३०१९३-३०२२८।

अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी?”, “दू हजार दस श्रावणक दृश्य” आ “रणभूमि आ कविता”क उल्लेख मूल पाठमे विदेह सदेह ७, १० आ ३०क सन्दर्भमे अछि। ‘देखब’क क्रियाकें प्रश्न बनाउलासँ साक्षी स्वयं उत्तरदायी होइत अछि। प्राकृतिक विपत्तिक दृश्य काव्यात्मक प्रतीक भऽ सकैत अछि, मुदा वास्तविक २०१०क बाढ़िसँ सम्बन्धित ऐतिहासिक दाबी लेल अलग भूगोल आ प्रशासनिक स्रोत चाही। अनामिका राजक “नवका बाट”, “सीमा” आ “क्षमतावान” तीन शीर्षक स्त्रीक गति, रोक आ सामर्थ्यक सम्भावित व्यञ्जना रचैत अछि। ई शीर्षक एक स्वतंत्र काव्यक्रम बनि सकैत अछि, किन्तु मूल पद्य पढ़ि वाचकक दृष्टि आ रूपगत तनाव जाँचबाक आवश्यकता अछि। स्त्रीवादी नामकरणक कारण कविता स्वतः कलात्मक रूपसँ सफल नहि होइत; ओहि तरह परम्परागत स्वर स्त्रीक स्वायत्तता नष्ट नहि करैत।

दुनू लेखकक पाठकें साझा सामाजिक सरोकारक नामपर एकहि ऐतिहासिक व्यक्तित्व मानल नहि गेल। शीर्षकआधारित आधुनिक सिद्धान्तक आरम्भिक उपयोगकें प्रमाणक अन्तिम स्थान नहि देल गेल।

१९५. अनिल मल्लिक आ अमरेन्द्र यादव : गजलसँ व्यङ्ग्य-कथाधरि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३०२२९-३०२६४ ।

अनिल मल्लिकक सदेह ७, ९-१५ धरि गजल, गीत आ “दादीक गीत”क सातत्य उल्लेखनीय अछि। “हम, देह आ विदेह”क शीर्षकमे ‘विदेह’ प्रदेश, पत्रिका आ देहक दार्शनिक निषेध तीनू अर्थ सम्भव अछि; एहन अर्थ-बहुलताक सम्भावना पाठक स्थानीय प्रयोगसँ परखल जाय। “आजाद गजल”क नाम पर अरूजगत स्वतन्त्रताक दावा तखन परीक्षणयोग्य जखन मूल शेरक लय आ अन्त्यानुप्रास उपलब्ध हो। अमरेन्द्र यादवक “टमटमियाँ घोड़ा” आ “रिपोर्ट” दू लघुगद्यक शीर्षक अछि। ‘रिपोर्ट’क शासकीय शैली साहित्यिक व्यङ्ग्यमे प्रवेश कऽ कागजी निष्पक्षता आ सामाजिक अन्यायक अन्तर उजागर कऽ सकैत अछि; मुदा वास्तविक कथा पढ़ि स्वर-बदलाव, पात्र-दृष्टि आ विडम्बनाक संरचना जाँचल जाय।

एक ओर बहुसङ्ख्यक प्रकाशित गजल, दोसर ओर दू कथा—ई असमान पाठाधार पर समान निर्णायक रैंकिंग अनुचित। मूल सूची अनुपलब्ध समग्र कृति नहि, उपलब्ध अंक-विशेषक सूची अछि।

१९६. प्रणव झा : नाटिका, संस्मरण, चिकित्सा-विमर्श आ डिजिटल समाज

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३०२६५-३०२८७ ।

प्रणव झा/प्रणव कुमार झाक सदेह १७, १९, २०, २१, २२ आ २३क लेखनमे “अम्बर”, “तेसर प्रण”, “अपन अपन धर्म”, “नव आशा”, “अलर-बलर”, “सदाचारक ताबीज” आ सामाजिक-चिकित्सकीय लेखनक उल्लेख अछि। एकहि लेखकक विविध विधा समकालीन मैथिली सार्वजनिकताक विस्तार देखबैत अछि; किन्तु चिकित्सकीय तथ्य, नाट्यगत पात्र, व्यङ्ग्य आ संस्मरण अलग ज्ञान-अधिकार राखैत अछि।

“फेसबुकक चक्कर” सन डिजिटल विषयक रचनामे नूतन माध्यम कथाक गति, भ्रम आ संवादक संरचना बदलि सकैत अछि। हाबरमासीय सार्वजनिक क्षेत्रक सिद्धान्त उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष पात्र-संवाद आ मंचीय निर्देशन बिनु एकर स्वचालित अनुप्रयोग आरोपित व्याख्या भऽ जाएत।

लेखकक नामक दू रूपक पाठमिलान आवश्यक अछि। चिकित्सा अथवा कानूनसम्बन्धी दावा साहित्यक कल्पना आ सत्यापनीय सार्वजनिक सूचना मे पृथक चिह्नित करबाक निर्देश एहि आलोचनामे सुरक्षित अछि।

१९७. शिवशंकर श्रीनिवास : “गामक लोक”, “अदहन” आ कथात्मक नैतिकता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३०२८८-३०५१६।

शिवशंकर श्रीनिवासक कृतिपञ्जीमे संयुक्त “त्रिकोण” (१९८६), “अदहन” (१९९१), “गामक लोक” (२००५), “गुण कथा” (२०१४) आ “माटि” (२०२१) विशेष रूपसँ अंकित अछि। एहि कालक्रमसँ ग्रामीण सम्बन्ध, परिवार, मूल्यपरिवर्तन आ माटिक सांस्कृतिक अर्थक क्रमिक आलोचना सम्भव अछि। मुदा विषयक पुनरागमनकें अनिवार्य रूपँ रचनात्मक पुनरुक्ति कहल नहि जा सकैत; परिवर्तन पात्रक दृष्टि आ कथा-संरचनामे सेहो होयत।

“गामक लोक”क मूल विवेचनमे कार्यालयी उन्नतिक संग मातृभाव आ पतोहुक दूरीक कथात्मक तनाव उल्लेखित अछि। मातृस्नेहकें स्वतः नैतिक विजय आ नवपीढ़ीकें स्वतः पतन मानब कथाक द्वन्द्वकें सरल बना देत। अन्याय, संसाधन आ पारिवारिक सत्ता ककर दृष्टिसँ वर्णित अछि, से जाँच कएल जाय। आलोचना आ सम्पादनक “बदलैत स्वर” लेखकक रचना-संसारसँ अलग पद्धतिगत क्षेत्र अछि।

अनेक पुरस्कार आ साक्षात्कारक उल्लेख मूल ग्रन्थक अभिलेख-आधार अछि, कथा-पाठक मूल्याङ्कनक विकल्प नहि। कृतिवार मूल संग्रह आ प्रकाशनसंस्करणक स्वतन्त्र परीक्षण शेष अछि।

१९८. “नित नवल सुभाष चन्द्र यादव” : लोककथा, कविता आ साहित्यिक इतिहास

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३०५१७-३१०६४ ।

“नित नवल सुभाष चन्द्र यादव”क विस्तृत खण्ड लेखकक लोककथा-पुनर्लेखन, कविता, जीवनवृत्त आ प्रतिरोधी आलोचनाक अनेक अंश एकत्र करैत अछि।

लोककथा केवल कथानकक नमूना नहि; ओकर बोली, कथनसत्र, अनुष्ठान आ श्रोता-संबन्ध साहित्यिक अभिलेखक हिस्सा अछि। एक संस्करणक ‘मूल’ पाठ चुनबामे कथावाचक आ क्षेत्रगत पाठान्तरक साक्ष्य अपेक्षित होयत।

मूल खण्डमे पूर्वक कथा-परम्परा—वैदिक आख्यान, जातक, ईसप, पञ्चतन्त्र—क तुलना उपस्थित अछि। ई तुलनात्मक क्षितिज उपयोगी अछि, मुदा कथामूलक

कालगत उत्पत्ति वा प्रत्यक्ष प्रभावक दाबी हेतु प्राचीन पाठक समान प्रसंग, भाषा आ प्रसारणपथ जाँचब आवश्यक। वक्रोक्ति आ ध्वनिक कसौटी लोकवाचनक प्रदर्शन सहित प्रयुक्त होयत तखने विधाक अपमान नहि।

समीक्षा लेखकीय वैचारिक प्रतिज्ञाक महत्त्व स्वीकार करैत अछि, मुदा सामाजिक

समानताक पक्षधरता प्रत्येक कृतिक सुगठित शिल्पक स्वतः प्रमाण नहि। मूल लम्बा प्रकरणक उद्धरणसँ बाह्य घटना वा जीवनीक स्वतन्त्र सत्यापन अलग राखल गेल।

१९९. राजकमल चौधरीक जीवनपाठ आ “बनैत बिगड़ैत”क कथाशिल्प

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३१०६५-३१३०६ ।

“नित नवल राजकमल”मे जीवन-प्रसंग, मिथकनिर्माण आ राजकमल चौधरीक मैथिली-हिन्दी लेखनक असमान सामाजिक ग्रहण प्रस्तुत अछि। लेखकक आत्म-निर्मित व्यक्तित्व, संस्मरणकारक उद्धरण आ दिनांकित जीवनीक प्रमाण एकहि स्तरक नहि। विशेषतः राजनीतिक सम्बद्धता, पारिवारिक सम्बन्ध आ मृत्यु-परिस्थितिक चर्चा साहित्यिक इतिहासमे संवेदनशील विषय अछि; एकटा स्मृतिलेख सँ अन्तिम निर्णय अनुचित।

तकर बाद “बनैत बिगड़ैत”क कथासभमे कथानकक बदला विषय-प्रेरित गति आ अल्पसमाप्तिक शिल्पक आलोचना अछि। एहन कथा कथ्यसम्पन्न सेहो भऽ सकैत अछि आ उपदेशप्रधान सेहो; फर्क पात्रक स्वतन्त्र जटिलता, संवादक प्रतिरोध आ अनिवार्य अन्तबिन्दुक गठनसँ उभरैत अछि।

मूल प्रकरण भाषारूप “अइछ/अछि” आ ध्वन्यात्मक शब्दलेखनक भेद उठबैत अछि। मानकीकरणक बहस मे लेखकक पात्र-बोलीकेँ दोष मानि साफ करब ठीक नहि; सम्पादकीय गद्यक एकरूपता आ उद्धृत लोकभाषाक रक्षा दुनू अलग दायित्व अछि।

२००. “गुलो” : अनाथता, श्रम, मृत्यु आ ग्रामीण अर्थव्यवस्था

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३१३०७-३१५७१ ।

“गुलो”क मूल समीक्षा रिनिया, गुलो, महेन्द्र, घर-जमीनक कागज आ आर्थिक निर्बलताक अनेक दृश्य क्रमशः पढ़ैत अछि। गुलोक निधनपर अन्त्येष्टिक लकड़ी जुटा नहि पएबाक प्रसंग केवल करुण रसक वस्तु नहि; वस्तुगत अभाव धार्मिक विधि, पारिवारिक सम्मान आ शोकक भाषाकें पुनर्गठित करैत अछि। एतय कथा मृत्युक घटना नहि, ओकर सामाजिक अर्थक वितरण जाँचैत अछि।

महेन्द्र द्वारा घरक दस्तावेज हस्तगत करबाक वर्णन सम्पत्ति-अधिकारक नैतिक संकट रचैत अछि; मुदा कथा-पात्रक कथनकें वास्तविक कानूनी अभिलेख नहि मानल जाय। भूकम्पक पाछाँ पुनः उभरब, मोटरसाइकिलसँ आगन्तुकक आबब आ अन्तिम क्रियाक विलम्ब कथानकमे प्रतीक्षा, पीडा आ सामाजिक वैषम्यक लय बनबैत अछि।

मूल खण्ड अनेक मैथिली पदक हिन्दी अर्थक सूची सेहो दैत अछि। एहि अनुवादमे लोकसमाजक सूक्ष्म सामाजिक सम्मान, कृषि-साधन आ देहभाषाक अर्थ हेराएबाक जोखिम अछि। मूल रचना आ हिन्दी रुपान्तरक पाँति-दर-पाँति पूर्ण परीक्षण स्वतंत्र कार्य अछि; उपलब्ध उदाहरणमे भाषिक भेद चिह्नित कएल गेल।

२०१. “रमता जोगी” : ऑस्ट्रेलिया प्रवासक डायरी आ आत्मदृष्टि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३१५७२-३१६७२ ।

“रमता जोगी”क आरम्भ ३० सितम्बर २०१८क मेलबर्न-यात्रासँ होइत अछि; दिनांकित डायरी लेखकक पुत्र-परिवार, प्रवासी मैथिलक सम्पर्क, रेल-ट्राम, भोजन आ सार्वजनिक व्यवस्थाक दृश्य दर्ज करैत अछि । यात्रावृत्तान्तमे देशक तुलना अनुभवक तात्कालिक मूल्याङ्कन होइत अछि, समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण नहि । एक होटल, रेलयात्रा अथवा निवासीसँ भेटक आधारपर ऑस्ट्रेलियाक समग्र सामाजिक अवस्था निर्धारित नहि कएल जा सकैत ।

मूल समीक्षामे कथावाचकक जातिसम्बन्धी भाषा आ अश्वेत समुदाय लेल आपत्तिजनक पदपर आलोचना उपस्थित अछि । यात्राक दृष्टि केवल बाह्य दृश्य नहि, यात्रीक अपन पूर्वग्रह सेहो प्रकट करैत अछि । असमान सम्मानसूचकता आ ‘सुन्दर’ सन मूल्याङ्कनक लिङ्गगत झुकाव साहित्यिक गद्यक नैतिक समस्याक रूपमे पढ़ल जाए ।

लेखकक आत्मपरक कथन आ सामाजिक-आर्थिक निष्कर्षक प्रमाणभेद बनौल गेल अछि । एहि डायरीमे तिथि आ पारिवारिक सूचना मूल पाठमे उपस्थित अछि, मुदा बाह्य सत्यापन बिना ओकरे अन्तिम ऐतिहासिक साक्ष्य नहि मानल गेल ।

२०२. “भोट” आ “गुलो” : लोकतन्त्र, जाति आ कथाक बहुकेन्द्र

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३१६७३-३१६७८ ।

“गुलो”क कथासमाज आ “भोट”क लोकतान्त्रिक संघर्ष मूल खण्डमे परस्पर तुलना करबाक अवसर दैत अछि। संसाधनहीन गामक जीवन, निर्वाचनक गणित आ स्त्रीक निर्णय एकहि क्षेत्रक भिन्न शक्ति-संरचना देखबैत अछि। पात्रक कथनक भीतर विरोधी तर्क आबय तखन समाजक वास्तविक बहुवचन बनैत अछि; कथावाचकक अन्तिम निर्णय सभ पात्रक आवाजकें चुप करौलक तँ कृति वैचारिक एकरेखीयता दिशि बढ़ैत अछि।

मूल पाठमे राधाक शैक्षिक उपलब्धि आ हिंसात्मक अन्त, रिनियाक नगदी-संकट आ ग्रामीण निर्वाचनक परस्पर टकराहट उपस्थित अछि। ई घटना राजनीतिक प्रतिनिधित्व आ वास्तविक सामाजिक अधिकारक भेद उजागर करैत अछि। मुदा काल्पनिक पात्रक अनुभवक आधारपर राज्यसरकारक समग्र नीतिक सफलता-विफलता सिद्ध नहि होयत।

दू उपन्यासक कथानक तुलना करैत कथनदृष्टि, स्मृति, क्षेत्रीय शब्द, अन्त्यरचना आ सत्ताक अनेक केन्द्रक विश्लेषण आवश्यक। मूल प्रसङ्गक अन्तिम पाठ-निष्ठ क्रम सुरक्षित राखि केवल समाजशास्त्रीय प्रतिज्ञामे रचनाकें नहि समेटल गेल।

२०३. “गुलो : कला आ भाषा” : कृति-वाचन आ संस्थागत मतभेद

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३१८७९-३१९४०।

“गुलो : कला आ भाषा”क सम्पादन आ भूमिका विषयमे मूल ग्रन्थ तीव्र वैचारिक असहमति व्यक्त करैत अछि। सम्पादकीय चयन, ककरा आलोचना लिखबाक अवसर भेटल आ मूल कथा पढ़बाक विधि—तीन प्रश्न साहित्यिक सार्वजनिकता लेल आवश्यक अछि। मुदा ककरो उद्देश्य, कपट अथवा पक्षपातक आरोप मात्र लेखकीय वर्णनसँ प्रमाणित नहि मानल जा सकैत; सम्बन्धित भूमिका, निमन्त्रण-पत्र आ प्रकाशनसामग्रीक तुलना चाही।

“गुलो”क कृति-विश्लेषणक प्रधान प्रश्न रिनियाक दृष्टि, गुलोक आर्थिक अभाव, बोलीक सामाजिक अर्थ आ कथाक अन्तिम प्रसङ्ग अछि। भूमिका लेल पाँच वा नौ पृष्ठक विस्तारक आलोचना करब कृतिक निकट-पठनक विकल्प नहि। पाठक प्रतिक्रिया आ आलोचकक वैचारिक स्थानक अन्तर स्पष्ट कएल जाय।

मूल अंशमे तीख सामाजिक-जातिगत विशेषण, संस्थागत आरोप आ साहित्यिक निर्णय संग-संग अबैत अछि। ई समीक्षा तिनका लेखकक दाबी रूपमे पहचानैत अछि; अप्रत्यक्ष संकेतसँ दोषसिद्धि नहि करैत, स्रोतगत प्रमाणक आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि।

२०४. पचपनिया-ठेठी मैथिली : मानकीकरण, व्याकरण आ भाषिक अधिकार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३१९, ४१-३२०७६ ।

मूल प्रकरणमे “पचपनिया मैथिली”, क्षेत्रीय बोली, ‘सोइट छी’ आ ‘बाभन छी’ सन भाषारूप तथा मानकीकरणक अधिकार पर बहस अछि। भाषाक स्वीकृत रूप केवल विद्वानक निर्णय नहि, बोलनिहार समुदायक लगातार व्यवहारक प्रश्न सेहो अछि। तखापि लोकप्रयोगक अस्तित्वसँ प्रत्येक लिखित रूपक व्याकरणिक संरचना स्वतः स्पष्ट नहि होइत; ध्वन्यात्मक, रूपात्मक आ सामाजिक प्रयोगक स्वतंत्र सर्वेक्षण अपेक्षित अछि।

रामानन्द झा ‘रमण’ आ दिनेश यादवक विचारकें मूल पाठ विवादक अलग पक्ष रूपमे रखैत अछि। एक पक्ष भाषा-अनुशासनक आवश्यकता, दोसर पक्ष लोकवक्ता आ बहुरूपताक अधिकारक बल दैत अछि। दुनूक श्रेष्ठ पक्ष मिलाएब अन्तिम लक्ष्य नहि; प्रमाणाधारित व्याकरण आ निष्पक्ष समाजभाषिक अध्ययनक नयापन स्वीकार करब आवश्यक।

जातिसूचक अपमानजनक पदक विवेचन असमान भाषिक प्रतिष्ठाक संकेत अछि, किन्तु प्रत्येक उद्धृत मत लेखकक संपूर्ण विचारधाराक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि। स्रोतक तारीख, पूरा सार्वजनिक उत्तर आ मूल भाषा-सन्दर्भक मिलान शेष राखल गेल।

२०५. सुजीत कुमार झा : जनकपुरक पत्रकारिता आ “चिडै”क कथाजगत

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३२०७७-३२२८१।

सुजीत कुमार झा नेपालक जनकपुरसम्बद्ध मैथिली पत्रकार आ कथाकार रूपमे प्रस्तुत छथि। “चिडै”क कथा-संग्रह आ चन्द्रेशक भूमिका मूल प्रकरणक केन्द्र अछि;

पत्रकारीय प्रत्यक्षता कहानीक घटनास्थल, कार्यालयी तन्त्र आ संवादमे लाभ दे सकैत अछि, मुदा खबर आ कथा एकहि प्रमाणविधान नहि। चिडैक पात्रक आन्तरिक मनःस्थिति साहित्यिक रचना अछि, सीधा पत्रकारिता नहि।

कथाक अल्प आकार आ जीवनक एकक्षणीय बोधकेँ ‘लप्रेक’क समकक्ष मानल गेल; मुदा लघुता, कथानकक घनत्व आ अन्तर्निहित मनोवैज्ञानिक संघर्षकेँ वास्तवमे पृथक कसौटी चाही। चन्द्रेशक भूमिकाक प्रशंसात्मक निष्कर्ष आलोचनाक एक स्रोत अछि, मूल कथा-पाठक स्थानापन्न नहि।

मूल सूची आठ कृतिगत पाठक प्रकरण देखबैत अछि; उपलब्ध विवरणक आधारपर हुनका विधागत स्थान दैत सम्पूर्ण संग्रहक स्वतंत्र संस्करण-परीक्षण शेष रखल गेल। भारत-नेपालक भाषिक सीमा पाठमे उत्पादक सांस्कृतिक संवाद अछि, स्वतः अलग भाषा नहि।

२०६. “नित नवल सुशील” : आरम्भिक साहित्य-समीक्षा आ आलोचकक पक्ष

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३२२८२-३२४१५ ।

“नित नवल सुशील”क प्रारम्भिक पञ्जी “घराडी” (१९७३), “गाम्बाली” (१९८२), “भामती” नाटक (मंचन १९९१; मुद्रण २०१३) आ “अस्मिता” (२०१६)क क्रम स्थापित करैत अछि। ई विभिन्न विधाक मूल कृतिसभक अलगा समालोचना करबाक आवश्यकता देखबैत अछि। समीक्षा-पुस्तकक पूर्वपक्षमे साहित्यिक आलोचना संस्थागत पक्षपातक आरोपसँ खुलैत अछि; एतय प्रतिपक्षी कथनक मूल उद्धरण, तिथि आ प्रकाशन-क्रमक मिलान जरूरी।

कमलानन्द झाक २०२१ आ २०२४क जाति-अन्तर्विवाह सम्बन्धी कथनक अलग तार्किक सीमा मूल ग्रन्थ उठबैत अछि। “पहिल सम्मानित उपन्यास” आ “विशिष्ट अन्तरजातीय विवाहपर केन्द्रित पहिल उपन्यास” सर्वथा समान दाबी नहि; विरोध सिद्ध करबाक लेल वाक्य-सीमा आ प्रसङ्ग पूरा देखबाक चाही।

‘छद्म आलोचना’ सन कठोर निर्णयकें तर्क-साक्ष्यक अधीन रखल गेल अछि। सुशीलक कलात्मक उपलब्धि ओकर वास्तविक कथा आ नाटकक परीक्षणसँ सिद्ध होयत, प्रतिपक्षी आलोचकक कथनक खण्डनमात्रसँ नहि।

२०७. दूषण पञ्जी : वंशसूची, पाठक्रम आ स्रोत-अनुमानक सीमा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३२४१६-३३२८९ ।

एहि दीर्घ प्रकरणमे भिन्न गाम, वंश, मातृपक्ष, विवाह आ नामक अनेक सारणीय प्रविष्टि अछि। मूल पञ्जी रूपान्तरक स्तरमे लिपिक भिन्नता, अज्ञात प्रविष्टि, पाठविच्छेद आ एक नामक अनेक रूप देल अछि। एहन सूचीकें किसी व्यक्तिक जीवनक निर्णायक प्रमाण कहबासँ पहिने हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृष्ठक क्रम, तिथि आ वंश-सम्बन्धक स्रोतलक्षण सुरक्षित राखबाक चाही।

मूल पाठक माध्यम-मिश्रण—आंशिक रोमन लिप्यन्तरण, अंग्रेजी अर्थ आ तालिकाक असमान स्तम्भ—पञ्जी-सन्दर्भक आलोचनामे विशेष चुनौती अछि। वास्तविक “दूषण”क निबन्धात्मक अर्थ आ पञ्जीमे दर्ज जातीय श्रेणी इतिहासक विशिष्ट समयक अवधारणा अछि; आधुनिक सामाजिक श्रेणीकें मध्यकालपर मनमाना रूपेँ प्रक्षेपित करब स्रोतगत भूल होयत।

एहि अध्ययनमे स्रोतक लंबा पञ्जी अंशकें मूल इतिहासग्रन्थक अभिलेखीय सामग्री मानल गेल। प्रत्येक वंश-पाँतिक स्वतन्त्र यथार्थता वा एक परिवारसँ दोसर परिवारक संबंधक दावा कएल नहि गेल; पाण्डुलिपि-चित्र आ मूल लिपिक मिलान पूर्ण समीक्षा लेल अनिवार्य बचल अछि।

२०८. छद्मसमालोचनाक विवाद : उद्धरण-संदर्भ आ रचनात्मक न्याय

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३३२९०-३३३३९ ।

“छद्मसमालोचना” पर प्रकरण कमलानन्द झाक आलोचनात्मक निर्णयक साथ दिनेश कुमार मिश्रक नदी-अनुसन्धानसँ समानान्तर पाठक प्रश्न जोड़ैत अछि। कोनो अंश वास्तवमे चोरी, असंगत पुनर्लेखन वा सामान्य ऐतिहासिक तथ्यक पुनर्कथन अछि कि नहि, एकर निर्णय मूल प्रथम संस्करण, समान पंक्ति, प्रकाशन तिथि आ अनुमतिसँ होयत। महज विचारक समानता प्रमाणित नकल नहि।

“दू पाटनक बीचमे”क आँकड़ा आ “जल-प्रान्तर”क तुलना मूल पुस्तकमे प्रस्तुत अछि। रोग-मृत्यु, तटबन्ध अथवा राजवंशक विशिष्ट तिथि ऐतिहासिक आ सांख्यिक साक्ष्य चाहैत अछि; उद्धरणक साम्य भेटि गेलापर श्रेयक प्रश्न उठैत अछि, मुदा आशय, अन्तःस्रोत आ पूर्वप्रकाशनक पूरा लेखाजोखा आवश्यक।

व्यक्तिगत विशेषणक प्रभावसँ साहित्यिक परीक्षण नहि चलाओल जाय। प्रमाण योग्य तुलना, साहित्यिक शैलीक आलोचना आ सम्पादकीय नैतिकता तीनूकें स्वच्छ रूपसँ अलग राखल गेल अछि।

२०९. “घराड़ी” : विस्थापन, गामक सत्ता आ उपन्यासक पात्र-स्मृति

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३३३४०-३३३८५ ।

“घराड़ी”क विश्लेषणमे घर, जमीन, सामाजिक प्रतिष्ठा आ पात्रक सम्बन्धक अनिश्चितता केंद्रमे अछि। मूल प्रकरण करूणा, विनायक, रतन आ अन्य पात्रक संवाद-संगत दृश्य प्रस्तुत करैत अछि। घरक कागज वा गामक स्थान केवल सम्पत्तिक सांकेतिक वस्तु नहि; पात्रक निर्णयक सीमा, सामाजिक वचनबद्धता आ पारिवारिक स्मृति ओकरा अर्थ दैत अछि।

कथाक टुकड़ा-टुकड़ा दृश्यकें इतिहासक क्रम मानि जोड़ि देब गलत होयत।

कथावाचक ककर आवाज विश्वसनीय मानैत अछि, संवादमे ककरा बोलबाक अधिकार भेटैत अछि, आ चित्रित हिंसाक नैतिक निवारण कोना प्रस्तुत अछि—ई प्रत्यक्ष कथात्मक प्रश्न अछि। जमीनक विवादक साहित्यिक चित्रण वास्तविक न्यायिक विवादक प्रमाण नहि।

मूल समीक्षामे पात्रवार विस्तृत पुनर्कथन उपस्थित अछि। आलोचनात्मक उपलब्धि पुनर्कथनसँ आगाँ पात्रक अधिकार, स्मृति आ नारीक विकल्पक परीक्षण अछि; मूल उपन्यासक मुद्रित संस्करण मिलला पर पाठान्तर पुनः जाँचबाक आवश्यकता रखल गेल।

२१०. “गाम्बाली” : सामाजिक बहिष्कार आ स्त्रीक प्रतिरोध

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३३३८६-३३५०१ ।

“गाम्बाली”क आरम्भक कथन एक स्त्रीक अनुपस्थिति पर समाजक विरोधाभासी हर्ष प्रस्तुत करैत अछि। जकरासँ घृणा करनिहार, प्रेम करनिहार आ उदासीन लोक—तीनू एकहि समाचारपर प्रसन्न छथि—ई संरचना ग्रामसमाजक सामूहिक नैतिकतापर कठोर विडम्बना अछि। स्त्रीक सामाजिक छवि आ ओकर स्वतंत्र जीवनक अन्तर खोलबाक लेल कथकक व्यङ्ग्यात्मक दूरी जरूरी।

उपन्यासक सामाजिक तर्क पात्रसभक एकमात्र निर्दोषता अथवा दोषसँ नहि, गामक निगरानी, मान-अपमानक मापदण्ड, विवाह आ श्रम सम्बन्धसँ बनैत अछि।

“गाम्बाली”क भूमिका समीक्षा करैत कथा मे दर्शायल धारणा आ आलोचकक अपन नैतिक निर्णय अलग राखब आवश्यक।

परम्परागत करुण रसक नाम मात्र उपन्यासक सामाजिक रूपक समझा नहि सकैत; वक्रोक्तिक उपस्थिति, संवादक बहुस्वर आ अन्तिम घटनाक आघातक पाठगत प्रमाण चाही। मूल समीक्षाक पुनर्कथनकें इतिहासक प्रत्यक्ष घटना नहि कहल गेल।

२११. “भामती” नाटक : इतिहास-प्रसंग आ आधुनिक नाटकीय प्रश्न

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३३५०२-३३५२७ ।

सुशीलक “भामती” (मूल सूची अनुसार मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३) दार्शनिक वाचस्पति मिश्रक विख्यात परम्परासँ जुड़ल नाटकीय विषय प्रस्तुत करैत अछि । भामती नामक स्त्रीक भूमिका केवल दार्शनिक पुरुषक श्रमक पृष्ठभूमि बनि रहय, कि स्वयं नैतिक आ बौद्धिक आवाज बनय—ई नाटकक आधुनिक अर्थक केन्द्रीय कसौटी अछि ।

मंचित नाटकक इतिहासक दाबी लेल निर्देशक, नाटक-पुस्तिका, भूमिकावितरण आ समकालीन अभिलेख आवश्यक अछि । नाट्यरूपमे सन्नाटा, समय-उल्लंघन आ संवादक अन्तर्निहित उद्देश्य केना दृश्य बनैत अछि, तकर मूल्याङ्कन मंचीय सूत्रसँ करबाक चाही; दार्शनिक आख्यानक केवल पुनर्कथन नाटकक मूल्य नहि ।

नव्य न्याय अथवा अद्वैत सम्बन्धी कथन नाटकक पात्रक वाणीमे कतेक रूपान्तरित होइत अछि, एकर तुलना मूल दार्शनिक पुस्तकसँ कएल जा सकैत अछि । मुदा नाटकीय पात्रक कथनकें स्वयं ऐतिहासिक आचार्यक प्रमाणित उक्ति नहि मानल गेल ।

२१२. “अस्मिता” : लघुकथा, अभाव आ आधुनिक ग्रामीण व्यङ्ग्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३३५२८-३३६१९ ।

“अस्मिता” (२०१६)क मूल समीक्षा “बघोतिया”, “कतहु नहि”, “सभटा रहल-खेल” सन कथा-प्रसङ्गपर विचार करैत अछि। एक पात्रक अचानक आगमन-गायब होयब, सड़क-गामक बदलल दृश्य, रेलडिब्बाक संकट आदि कथा-संक्षेपमे सामाजिक आकस्मिकता रचैत अछि। एहन घटना कतेक उद्देश्यपूर्ण अछि, से पात्रक पुनरागमन, कारण-परिणाम आ वाचकक बोधसँ मापल जाए।

किछु कथामे अफवाह आ प्रशासनिक भाषाक कुत्सित हास्य उपस्थित अछि। परिहास जँ केवल असंगत घटना बनि रहि जाय तँ शिल्प दुर्बल होयत; जँ पाठकक अपेक्षा आ समाजक अघोषित नियमक अन्तर प्रकट करय तँ व्यङ्ग्य ताकतवर बनैत अछि। सामाजिक असमानताक उपस्थिति कृतिक स्वतः कलात्मक मूल्याङ्कन नहि। पात्रक क्षेत्रीय बोलीक रूप सुरक्षित राखबाक आग्रह कएल गेल; समीक्षा-गद्यक शुद्ध मैथिली आ मूल उद्धरणक पुरान शब्दप्रयोगक अन्तर अलग। मूल संग्रहक संपूर्ण कथा-संख्या आ क्रम स्वतन्त्र संस्करणसँ सत्यापित हेबाक शेष अछि।

२१३. सुशीलक उत्तरपक्ष : साहित्यक सिद्धान्त आ प्रमाण-प्रक्रिया

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३३६२०-३३७५९ ।

“नित नवल सुशील”क उत्तरपक्षमे मार्क्सवाद, संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद, पाठक-सिद्धान्त, संकेत-विज्ञान आ नव्य न्यायक परस्पर सन्दर्भ उपस्थित अछि। एतेक विभिन्न दार्शनिक परम्पराकेँ एकहि परिणामक प्रमाण मानबासँ पहिने हुनकर मूल प्रतिज्ञाक भेद स्पष्ट होयबाक चाही। मार्क्सवादी सामाजिक उत्पादनक प्रश्न आ देरिदाक चिह्नक भिन्नता एकहि विश्लेषणात्मक स्तरक नहि।

मूल पाठ सॉस्यूरक संकेतक-संकेतित संबंध आ अर्थक भिन्नता पर विचार करैत अछि। भाषा मे अर्थ हमेशा परिवेशपर निर्भर, मुदा एतयसँ ई निष्कर्ष नहि निकलैत जे प्रत्येक पाठक व्याख्या समान रूपेँ प्रमाणित अछि। नव्य न्यायीक व्याप्ति सार्वत्रिक अनुमानक शर्त अछि; काव्यक एकरूपक अनेकार्थतासँ ओकर यान्त्रिक समरूपता नहि।

सुशीलक कथासभमे अपन सिद्धान्तक सहारा कहि दिअ पर्याप्त नहि। एक-एक कथांशमे अवधारणा की खोलैत अछि, कहाँ प्रतिरोध करैत अछि, से देखब आलोचनात्मक पद्धतिक वास्तविक उपलब्धि होयत।

२१४. उत्तर-सिद्धान्त, लेखकत्व आ संस्थागत पुरस्कारक आलोचना

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३३७६०-३३८९४ ।

मूल अन्तिम विभाग कैमु, वार्थ, फूको, 'उत्तर-सिद्धान्त' आ संस्थागत पुरस्कार-विवादक संक्षिप्त विचार प्रस्तुत करैत अछि। लेखकक 'मृत्यु' सन आलोचनात्मक रूपकक अर्थ पाठकक सक्रियता अछि, लेखकक वास्तविक जीवनक अप्रासंगिकता नहि। साहित्यिक पाठक संस्था आ पाठकीय समुदाय अर्थनिर्माणमे प्रभावी होइत अछि, मुदा अर्थक सीमाकें मूल वाक्य आ कृतिक रूपगत अनुशासन दैत अछि।

साहित्यिक सम्मानक वितरणमे पक्षपातक प्रश्न सार्वजनिक अभिलेख, निर्णय-सदस्य, नियम, हितसङ्घर्ष आ प्रकाशित कारणपर अलग विवेचन चाहैत अछि। मूल ग्रन्थक कठोर आरोपकें मतक साक्ष्य रूपमे स्वीकार कएल गेल, किन्तु व्यक्ति विशेषक दोषनिर्णय रूपमे नहि। सिद्धान्तक नामसँ आरोपक प्रमाण स्वतः उत्पन्न नहि होइत। सुशीलक नाटक, उपन्यास आ कथामे व्यङ्ग्य तथा आधुनिक सामाजिक चेतनाक मूल्याङ्कन एहि आरोप-विवादसँ स्वतंत्र रहबाक चाही। पारम्परिक रससिद्धान्त नचलत कहि देबोकें मूल पाठक विशिष्ट दृश्यसँ सिद्ध करबाक आवश्यकता अछि।

२१५. तारानन्द वियोगी : साहित्यिक उपलब्धि आ आत्मविरोधक विवाद

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३३८१५-३४०६१।

तारानन्द वियोगीक “हस्तक्षेप”, “साखी”, “धराशायी हेबाक समय”, “अपन युद्धक साक्ष्य”, “छियानत”, “बहुवचन” आ “मैथिली कविताक हजार वर्ष”क समीक्षा साहित्यिक विधासभक व्यापकतापर बल दैत अछि। कवितामे जातिप्रतिरोध, महामारीक डायरीमे प्रवासी श्रमिकक समयबोध आ गजलमे बहरक अनुशासन अलग शिल्पक साधन अछि; एउ विविध रूपकें एकहि ‘सही’ विचारधारा पर निर्भर नहि कएल जा सकैत।

मूल अध्ययन लेखकक संस्थागत आलोचनाक संग लेखकपर विपरीत दोषारोपण सेहो करैत अछि। “सहृदयताक अभाव”, “प्रमाणहीन” आ “मठाधीशी” सन निष्कर्ष गहन स्रोततर्क माँगैत अछि। एक विवादित कविता-पाँति अथवा कथाक एक पर्यवसान सँ सम्पूर्ण समालोचनाक वैधता निषिद्ध करब नव्य न्यायीय प्रतिपक्ष-परीक्षणक अनुकूल नहि।

लोकछन्दक स्वदेशी परम्परा आ उर्दू अरूजक ऐतिहासिक स्थान अलग प्रश्न अछि। मूल चिह्नित विवाद देखबैत अछि जे समानान्तर इतिहासकें स्वयं अपन आलोचनात्मक विधिक प्रति न्यायसंगत रहबाक अनिवार्यता अछि। मूल प्रथम संस्करण बिना दोषसिद्धि नहि।

२१६. उमेश मण्डल : “निस्तुकी”, चित्र-शब्दकोश आ डिजिटल अभिलेख

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३४०६२-३४२१८ ।

डॉ. उमेश मण्डलक “निस्तुकी” (२००९; दोसर संस्करण २०१२) आ मिथिलाक वनस्पति, जीव-जन्तु, कारीगरीक चित्र-शब्दकोशक चर्चा डिजिटल साहित्यिक आधार-संरचनाकै रचनात्मक कृतिक संग जोड़ैत अछि। कोश बनायबक साहित्यिक मूल्य मात्र शब्दसंग्रह नहि; शब्द-चित्रक सटीक सम्बन्ध, क्षेत्रीय उच्चारण आ लोकज्ञानक श्रेय एहि परियोजनाक परीक्षणयोग्य पक्ष अछि।

मूल पाठ उमेश मण्डलक विदेह डिजिटल सामग्री निर्माणमे बहुल योगदानक आँकड़ा प्रस्तुत करैत अछि। एहन प्रतिशत दावा डिजिटल अभिलेख, लेखकत्व-नोंद आ संस्करणइतिहासक गणना बिना अंतिम नहि मानल गेल। कवितामे अनाम लोकक नामकरण सामाजिक प्रतिनिधित्वक रणनीति अछि; कविता तखन सृजनात्मक रूपसँ असरदार जखन शब्दक ध्वनि आ बिम्ब पाठककै नया अनुभव दैत अछि। उमेश मण्डलक काव्यगत शिल्प आ सांस्कृतिक अभिलेखक योगदानक स्वतंत्र मूल्याङ्कन कएल जाय। सामाजिक पृष्ठभूमिक उल्लेख जीवन-परिस्थितिक स्पष्टीकरण अछि, कृतिक कथक एकमात्र कारण नहि।

२१७. उमेश पासवान : “विर्नित रस” आ “मुजरिम”मे दलित काव्यदृष्टि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३४२१९-३४४५१।

उमेश पासवानक “विर्नित रस” (२०१२) आ “मुजरिम” मूल साहित्येतिहासमे कविता आ कथाक भिन्न प्रयोग रूपमे उपस्थित अछि। जीवनगत भेदभावक अनुभव कथावस्तुक प्रेरणा भऽ सकैत अछि, मुदा साहित्यिक कृति जँ भाषा, पात्र आ रूपक रचनात्मक अन्तर्विरोधक अनुभव कराबय तखन ओ कलात्मक रूपमे सक्रिय होइत अछि। दलित सामाजिक स्थिति लेखकक परिस्थिति बुझबाक स्रोत अछि, कविता वा कथाक सभी अर्थक एकमात्र कुंजी नहि।

“मुजरिम”क नाम अपराध, आरोप आ दण्डक तन्त्रकें प्रश्न बनबैत अछि। कथावाचक ककरा दोषी कहैत अछि, सामाज ककर आवाज सुनैत अछि आ पाठकक न्यायबोध कखन बदलैत अछि—ई कथात्मक परीक्षण चाहैत अछि। “विर्नित रस”क शीर्षक रसक परम्परागत अवधारणासँ संघर्षक सम्भावना खोलैत अछि; वास्तविक कविता-बिम्बक मिलान बिना तय नहि कएल गेल जे ओ भरतक रसक पुनर्लेखन अछि कि रूपकात्मक नाम।

मूल तुलना अम्बेडकरवादी, दलित आ स्त्रीवादी आलोचनाक स्रोत उल्लेख करैत अछि। भारतीय भाषासभक अन्य लेखकक संग तुलना साहित्यिक प्रयोगक प्रमाणसँ होय, केवल सामाजिक वर्गक मेलसँ नहि। अलग मूल पुस्तकक सम्पूर्ण कविता-कथा-पाठ उपलब्ध भेला पर पूर्ण निकट-पठन अपेक्षित।

२१८. विभा रानी, बिन्देश्वर ठाकुर आ अनमोल झा : रचना आ रंगमंचक अलग परम्परा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३४४५२-३४७५६ ।

“Voices from Mithila”क मूल खण्ड विभा रानी, बिन्देश्वर ठाकुर आ अनमोल झाक साहित्यिक कार्यकेँ समेकित रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। विभा रानीक स्त्रीकेंद्रित रंगमंच, बिन्देश्वर ठाकुरक जनसमाजगत गद्य आ अनमोल झाक रचनात्मक प्रश्न अलग-अलग आलोचना चाहैत अछि। साझा सांस्कृतिक क्षेत्र हुनकर नाटक, कथा अथवा गीतक एकहि काव्यगठनक प्रमाण नहि।

रंगमंचीय कृतिमे संवादक पारस्परिक गति, मंच-स्थान, दृश्यावसान आ दर्शकक अपेक्षा महत्त्वपूर्ण अछि; कथागद्यमे वाचकक दृष्टि, समय-परिवर्तन आ पात्रक अन्तर्विरोध प्राथमिकता पवैत अछि। स्त्रीक प्रतिरोधक विषयक समीक्षामे पात्रक वास्तविक क्रियात्मक अधिकारकेँ विशेष देखब आवश्यक, केवल नाटकक प्रतिज्ञा नहि।

मूल स्रोतक सूची आ विदेह प्रकाशन-सन्दर्भ उपलब्ध अछि। मंचनक छायाचित्र, निर्देशकक प्रति आ मूल पुस्तकक प्रथम संस्करणसँ मिलान बिना अभिनय-इतिहासक निश्चयात्मक दावा नहि।

२१९. विदेह अंक ३५१-४३८ : साहित्यिक सार्वजनिकताक क्रम

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३४७५७-३५०८०।

मूल साहित्येतिहास विदेहक अंक ३५१ सँ ४३८ धरि लेखक-रचना-विधागत वैविध्यक एक विस्तृत समेकन प्रस्तुत करैत अछि। ई क्रम पत्रिकाक प्रकाशनक सातत्यक अभिलेख अछि। प्रत्येक अंकक स्वरूप, तिथि, संपादकीय विशेष विषय आ

मूल रचनाक वाचन एकहि कालखण्डक बहुस्तरीय साक्ष्य दैत अछि; “अंक उपलब्ध” आ “साहित्यिक परिवर्तन प्रमाणित” दुनू अलग दावा अछि।

पुरान लेखक, प्रवासी स्वर, नेपालक रचनाकार, बालकथा आ दलित स्त्रीक उपस्थिति पत्रिकाक चयननीतिक सामाजिक उद्देश्य खोलैत अछि। लेखकक नामक लम्बी पञ्जी मात्र प्रतिनिधित्वक सम्यक माप नहि : प्रकाशित पृष्ठ, सम्पादकीय आवृत्ति,

समीक्षाक ग्रहण आ अनुपस्थित समुदायक तुलना आवश्यक।

अंकपञ्जीक सूची-निर्माणक सांस्कृतिक उपलब्धि स्वीकार करैत साहित्यिक शिल्पगत गुणवत्ता अंकवार पाठपर निर्धारित करबाक आग्रह अछि। संख्या, पृष्ठ आ

समयक्रमक बाह्य पञ्जी-मिलान शेष रहत।

२२०. समानान्तर काल-विभाजन : प्राचीन बौद्ध स्रोतसँ डिजिटल युगधरि

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३५०८१-३५४४५ ।

मूल अंशमे प्राचीन बौद्ध-जैन काल, विद्यापति-परम्परा, मध्यकालीन राज्य, औपनिवेशिक भाषिक बहस आ डिजिटल मैथिलीकेँ एक दीर्घ कालरेखामे प्रस्तुत कएल गेल अछि। इतिहासक एहन आवधिक वर्गीकरण उपयोगी मानचित्र अछि; मुदा शताब्दीक विभाजन स्वयं भाषिक एकरूपता, निरन्तर राज्यसत्ता अथवा सांस्कृतिक अविच्छेदक प्रमाण नहि। प्रत्येक कालमे विविध लिपि, बोली आ साहित्यिक विधाक सह-अस्तित्व भेटि सकैत अछि।

चर्यापदक 'प्रथम मैथिली' सन दाबी मूल पाठक भाषा, समकालीन पूर्वी भारतीय रूप आ पाण्डुलिपि-परम्पराक तुलनात्मक परीक्षण चाहैत अछि। 'दू विद्यापति'क सिद्धान्त सेहो अलग वंश-पञ्जी, ग्रन्थप्रामाण्य आ कालगत साक्ष्य परखने बिनु निश्चित इतिहास नहि मानल गेल। एकर विरोध अथवा समर्थनमे धारणाक बदला मूल साक्ष्य चाही।

विदेहक डिजिटल युगक महत्त्व अभिलेखीय उपलब्धता, लिपि-संरक्षण आ नव रचनाकारक पहुँच अछि। डिजिटल माध्यमक विस्तार सिद्ध करैत किसी संस्थागत परम्पराक पूर्ण अप्रासंगिकता स्वतः प्रमाणित नहि होइत।

२२१. विदेह समानान्तर नाट्य-आन्दोलन : पाठ, मंचन आ अभिलेख

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३५४४६-३५६१६ ।

“The Videha Maithili Parallel Drama Theatre”क मूल प्रकरण लोकाभिनय, नेपाल-मल्लकालीन रंगकर्म आ समकालीन समानान्तर मैथिली नाट्यक अन्तरसम्बन्ध पर विचार करैत अछि। जनमंच आ दरबारी नाटकक सामाजिक संगठना अलग अछि; केवल एकहि भाषा-क्षेत्रमे उपस्थिति सँ अखण्ड रंगमंचीय वंशावली सिद्ध नहि। सामग्रीक तिथि, नाटकक लिपि, अभिनय-स्थान आ मंच-संस्था इतिहासक अलग प्रमाण-दर्जा रखैत अछि।

नाटकक साहित्यिक पाठक अर्थ दर्शकक सामूहिक अनुभवमे दृश्य-ध्वनि बनैत अछि। जाति-स्त्री-श्रमसम्बन्धी प्रतिरोध मंचपर भाषिक असमानता, पात्रक स्थान आ हास्यक नैतिक लक्ष्यद्वारा प्रकट भऽ सकैत अछि। लोकविधाकें केवल ‘पूर्वरूप’ कहि देब ओकर स्वतन्त्र सामाजिक सौन्दर्यशास्त्रक अपमान होयत।

एहि समीक्षा मे प्राचीन सन्दर्भ, मौखिक स्मृति आ आधुनिक मुद्रित नाटक तीन स्रोत-वर्ग अलग चिह्नित अछि। मंचन सूची, पत्रिका-विज्ञापन, प्रत्यक्ष दर्शक-प्रतिवेदन आ मूल लेखनक मिलान अन्तिम अभिलेखीय सत्यापन लेल आवश्यक।

२२२. अपर्णा कुमारी : अभिनेत्री, समाज आ स्त्रीक अभिनय-स्वर

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३५६१७-३५७०६ ।

अपर्णा कुमारीक मूल परिचय अभिनय आ सांस्कृतिक सक्रियताक अन्तरसंबन्ध पर केन्द्रित अछि। अभिनेत्री लेल लिखित संवाद केवल लेखकक शब्द नहि रहैत; स्वर, विराम, देहभाषा आ मंचपर उपस्थित शेष पात्र अर्थ बदलैत अछि। नायिकाक

सक्रियता विश्लेषण करैत मंचीय दृश्यआधारक आवश्यकता कहब पुस्तकक प्रशंसात्मक परिचयसँ अधिक यथार्थ आलोचनात्मक कसौटी अछि।

स्त्री-केंद्रित अभिनयकें स्वतः नारीवादी राजनीतिक उद्घोषणा कहि देब सरलीकरण होयत। पात्र स्वयं निर्णय करैत अछि कि केवल कथानकक दण्ड स्वीकार करैत अछि, ओहि भेदमे नाटकक सामाजिक अर्थ प्रकट होइत अछि। दर्शकक भावना आ समीक्षकक निष्कर्ष परस्पर अभिन्न नहि।

मूल अध्ययनक उपलब्ध अभिलेखमे नाटक, अभिनय आ सांस्कृतिक सहभागिताक उल्लेख अछि; मंचन-सूची, संवाद-पाण्डुलिपि, छायांकन आ स्वतंत्र प्रस्तुति-समीक्षा बिनु सभ नाट्यगुणक प्रत्यक्ष प्रमाणक दावा नहि।

२२३. लेखक-पञ्जी, भालचन्द्र झा आ प्रादेशिक साहित्यिक अभिलेखन

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३५७०७-३६०३७ ।

मूल पुस्तककें एहि हिस्सामे शम्भु कुमार सिंह, अरुण कुमार सिंह, रविभूषण पाठक, कैलाश कुमार मिश्र, कामिनी कामायनी आ मनोज कश्यप सन लेखकक समेकित उल्लेखसँ भालचन्द्र झाक स्वतंत्र परिचयधरि विस्तार भेटैत अछि। ई व्यापक लेखकपञ्जी साहित्यिक इतिहासक भूगोल समृद्ध करैत अछि; मुदा नामक उपस्थिति सँ समान आलोचनात्मक गहिराइ सिद्ध नहि होइत।

भालचन्द्र झाक लेखनक शैलीगत विश्लेषण लेल कविता, निबन्ध आ समालोचनाक मूल पाठ अलग जाँचबाक चाही। साहित्यिक इतिहासकारक काज रचनाकारक सराहना सँ आगाँ काल, स्रोत, सार्वजनिक बहस आ कृतिसमीक्षाक प्रमाणित सम्बन्ध प्रस्तुत करब अछि। ककरा लेल कौन दार्शनिक सिद्धान्त उपयुक्त, से विशिष्ट पाठ-पंक्ति सँ निर्धारित होयत।

अभिलेखक सूचीक अधूरापन, मिलैत-जुलैत लेखकनाम आ एक पुस्तकक अनेक संस्करण पहचानब आवश्यक। मूल दस्तावेजक नामावलीकें काल्पनिक पुस्तक अथवा निश्चित जीवनीसँ भरल नहि गेल।

२२४. विदेह सदेह आ बालसाहित्य : संरक्षण, भाषा आ बालकक अधिकार

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३६०३८-३६५४१।

“विदेह सदेह”क अभिलेख-समीक्षा आ समानान्तर बालसाहित्यक प्रकरण मैथिलीमे बालकक पाठकीय अधिकार आ सामूहिक पुस्तक-संरक्षणक प्रश्न जोड़ैत अछि।

बालकथा लेल छोट वाक्य पर्याप्त नहि; कथाक आश्चर्य, प्रश्न, हास्य, ध्वनि, चित्र आ बालपात्रक स्वतंत्र निर्णय आवश्यक। वयस्कक सामाजिक उपदेशकें बालसाहित्यक एकमात्र आदर्श मानब बालकक कल्पनाक सीमित करब अछि।

मूल अध्ययन जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, कश्यप कमल आ अन्य बाललेखकक कविता-कथा-संग्रहक भूमिका देखबैत अछि। मौखिक गीतक स्मृति आ डिजिटल चित्र-श्रव्य प्रस्तुति जँ पाठककें अलग अनुभव दैत अछि तँ “एकहि रचना”क अनेक माध्यमक स्वतंत्र अध्ययन चाही। तिरहुता, देवनागरी, श्रव्य व साङ्केतिक भाषाक पहुँच अभिलेखक महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि।

बालकक भाषा-सम्बन्धी हीनभावना, विस्थापन आ डिजिटल सुविधाक मूल कथन सामाजिक प्रश्न अछि, मुदा वास्तविक पाठकीय उपयोगिता जाँचबाक लेल विद्यालय, परिवार आ बालपाठकक साक्षात्कार जरूरी। डिजिटल सामग्रीक संख्या वा तकनीकक उपलब्धतासँ कलात्मक परिणाम स्वतः सिद्ध नहि।

२२५. विनीत उत्पल : “हम पुछैत छी” आ अनुवादक भाषिक नैतिकता

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३६५४२-३६७१५ ।

विनीत उत्पलक “हम पुछैत छी” (२००९) आ “मोहनदास”, “रेहन पर रघु”, “मन्त्रद्रष्टा ऋष्यशृंग”क मैथिली अनुवाद मूल खण्डक प्राथमिक विषय अछि। “हम” मैथिलीमे अनेक प्रसङ्गमे एकवचन अथवा बहुवचनक संदर्भ दऽ सकैत अछि; शीर्षकक प्रश्नकर्ता निजी व्यक्ति आ सामूहिक समाज दूनू रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। मुदा शीर्षकक बहुअर्थकता प्रत्येक कविताक सभ सामाजिक दाबीक स्वतः प्रमाण नहि।

अनुवादमध्येसँ नायकक जातिगत सम्बोधन, व्यङ्ग्यात्मक भाषा आ धार्मिक प्रतीकक अर्थ-स्थानान्तरण विशेष समीक्षा चाहैत अछि। नीडाक औपचारिक/गतिशील समता, वेनूतीक देशीकरण/परकीयकरण आ बर्मनक अनुवाद-नैतिकता उपयोगी वैचारिक साधन अछि; एकहि वाक्यपर तिनकर परस्पर-विरोधी निर्णय सम्भव अछि। मूल हिन्दी अथवा आन स्रोत-भाषाक प्रत्येक सन्दर्भक बिना प्रतिशब्दीय पूर्ण निष्ठाक दावा नहि।

पत्रकारिता, लोकसक्रियता आ साहित्यिक रचना अपन-अपन प्रमाणविधान राखैत अछि। मूल प्रकरणक सूचना शोधक आधार अछि, संस्थागत विवादक कथन निष्पक्ष प्रशासनिक निष्कर्ष नहि।

२२६. योगानन्द झा : उपन्यास, साहित्यिक पत्रकारिता आ “चतुर्दश सूत्र”

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३६७१६-३६७९२ ।

योगानन्द झाक आलोचनामे “भलमानुस”, “संकल्प”, पत्रकारितासम्बन्धी लेखन आ “चतुर्दश सूत्र”क विवेचन सम्मिलित अछि। उपन्यासक सामाजिक चरित्र, पत्रिकाक सम्पादकीय संवाद आ समालोचनाक तर्क तीन अलग साहित्यिक व्यवहार अछि। धार्मिक परम्परा आ आधुनिक विवाहसम्बन्धी प्रश्नक टकराहट कथात्मक संघर्षक विषय बनैत अछि; कथानककै तथ्यक प्रत्यक्ष अभिलेख नहि मानल गेल।

“चतुर्दश सूत्र”क आलोचनामे पाठमूलक प्रमाण, प्रतिपक्षी मतक न्यायसंगत प्रस्तुति आ अन्तिम निर्णयक तार्किक क्रम महत्वपूर्ण। नव्य न्यायीय ‘पक्ष-हेतु-व्याप्ति’क नामावली आलोचनाक स्पष्टता बढ़ा सकैत अछि, मुदा व्याप्ति एक असल सिद्ध नियम होयबाक चाही; केवल दू कविता बीच साम्यवाक्य वैध सार्वत्रिक प्रमाण नहि। लेखकक अनेक विधाक उपस्थितिक बल स्वीकार करैत कृतिवार प्रकाशन-तिथि आ प्रामाणिक मूल संस्करणक पुनर्जाँच आवश्यक रखल गेल।

२२७. कमला चौधरी आ ललिता झा : स्त्रीक भौतिक संस्कृति आ लोक-अभिलेख

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३६७९३-३७०८२ ।

कमला चौधरीक “मोनक पौती”, “समय संकेत” आ “वेशभूषा”मे विवाह-चिह्न, स्त्रीक देहपर पहिरनक नियम आ घरेलू सामग्रीक सांस्कृतिक अर्थ जुड़ैत अछि । पौती केवल आभूषण नहि, सामाजिक स्थिति, वैवाहिक मान्यता आ प्रतीकात्मक अधिकारक जटिल चिह्न बनि सकैत अछि । मुदा स्त्रीक वस्तु-वर्णनकें स्त्रीक स्वीकृति वा प्रतिरोधक एकमात्र प्रमाण नहि मानल जाय ।

ललिता झाक लोकसंस्कृति-सम्बन्धी काज मौखिक गीत, पारिवारिक स्मृति आ अनुष्ठानक अभिलेख पर केन्द्रित अछि । क्षेत्र, गायक-गायिका, रिकॉर्डिंगक समय आ पाठान्तर जखन उपलब्ध हो तँ सांस्कृतिक इतिहासक ठोस आधार बनैत अछि । लोकगीतक शब्दक अर्थ सामाजिक परिस्थितिसँ बदलैत अछि; मुद्रित पाठमे संगीतक गति आ प्रदर्शनक अन्तर हेराए सकैत अछि ।

कमला चौधरीक वस्तुगत सांस्कृतिक अध्ययन आ ललिता झाक लोकप्रदर्शनक अनुसन्धानकें एकहि ‘स्त्री-साहित्य’ शीर्षकक भीतर विलीन नहि कएल गेल । मूल अध्ययनक ग्रन्थसूची केलाक बाद क्षेत्रकार्यक स्रोत-परीक्षण शेष रहल ।

२२८. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' : लोकप्रिय विज्ञान आ कल्पनात्मक साहित्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३७०८३-३७१५३।

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क साहित्यिक परिचयमे वैज्ञानिक शिक्षण, “विज्ञानक बतकही”, “नरक विजय”, “एकटा मिसिया” आ “हमर गाम” सन विभिन्न प्रयोग उपस्थित अछि। लोकप्रिय विज्ञानक गद्य सत्यापनीय वैज्ञानिक जानकारी जनभाषामे पहुँचबैत अछि; विज्ञानकथा ओहि ज्ञानसँ सम्भावित जगत रचैत अछि। एक विधाक सत्यापन-नियम दोसरपर बिना भेद लागू करब अनुचित।

“नरक विजय”मे कृत्रिम बुद्धि आ यमराजक नैतिक न्याय-जगतक सम्भावित टकराहट रंगमंचीय कल्पना बनैत अछि। विज्ञानक प्रयोगशाला रूपकातीत स्थान सेहो होयत, जतय मनुष्यक नैतिक उत्तरदायित्व मशीनक दक्षतासँ अलग उभरैत अछि। कथा मे 'विज्ञान'क नाम मात्र प्रयोग नूतन विज्ञानकथा-संरचना नहि बनबैत; कथानक आ पात्रक वैज्ञानिक परिकल्पनाक स्पष्ट प्रभाव चाही।

मूल ग्रन्थक लेखकव्यवसायक जानकारी साहित्यिक मूल्याङ्कनक पृष्ठभूमि अछि। विज्ञानक किसी विशिष्ट तथ्यक सत्यता, स्रोततिथि आ संभाव्यताकेँ अलग वैज्ञानिक साहित्यसँ जाँचने बिना काल्पनिक संवादकेँ प्रमाणित ज्ञान कहब अनुचित।

२२९. “रोबोट” : चापेकक **R.U.R.**क मैथिली रंगमंचीय रूपान्तर

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३७१५४-३७२९०।

करेल चापेकक R.U.R.क मैथिली अनुवाद “रोबोट”क उल्लेख आधुनिक प्रविधिक सांस्कृतिक अर्थक केन्द्रबिन्दु अछि। यूरोपीय मूल नाटकक औद्योगिक श्रम, मनुष्यत्वक संकट आ मशीनरचित समाजक चिन्ता मैथिली अनुवादमे शब्द, संवादक सम्मानसूचकता आ मंचक सन्दर्भक अनुसार नव अर्थ पबैत अछि। मूल चेक, प्रमाणित मध्यस्थ अनुवाद आ मैथिली पाठक प्रत्यक्ष तीन-स्तरीय मिलान बिना सम्पूर्ण अनुवाद-समता प्रमाणित नहि।

वेनूतीक परकीयकरण अथवा देशीकरणक सामान्य सूत्र अपनाएब मात्र पर्याप्त नहि। रोबोटक कृत्रिम अस्तित्वक अनिश्चितता मिथिलाक सामाजिक श्रमसम्बन्धसँ कोना संवाद करैत अछि, ओकरा रचनात्मक कल्पना आ अनुवादक मूल निर्णयक भेद राखि देखल जाय। नाटकक मंचनभाषा आ पठनीय मुद्रित संवाद अलग सम्भावना रखैत अछि।

“एक्टा मिसिया” आ “हमर गाम”क विज्ञानसम्मत गद्यसँ एहि नाटकक सम्बन्ध सहायक तुलनात्मक क्षेत्र अछि। नवीन विधागत “पहिल” सम्बन्धी दाबी व्यापक पूर्व-कृतिपञ्जी बिना निश्चित नहि ठहराओल गेल।

२३०. योगेन्द्र पी. यादव : सम्मानसूचकता, वाक्य-विन्यास आ मैथिली भाषाविज्ञान

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३७२९१-३७३८२ ।

प्रो. योगेन्द्र पी. यादवक अनुसन्धान मैथिलीक वाक्यरचना, क्रियामे आदरसूचक सम्मति, उठाव-प्रक्रिया आ सामाजिक सम्बन्धक भाषिक अंकनपर केन्द्रित अछि ।

मूल अध्ययन “Movement Rules in Maithili and English” आ बिकल-बिसाङ्ग संग १९९९क ‘Face vs Empathy’क विवेचन प्रस्तुत करैत अछि ।

औपचारिक वाक्यरचना भाषाक अमूर्त नियम देत, मुदा वास्तविक बोलनिहारक वर्ग, क्षेत्र आ प्रसङ्गक भेद सर्वत्र समान नहि होइत ।

आदरसूचकता समाजक पदानुक्रमसँ सम्बन्धित भऽ सकैत अछि, मुदा प्रत्येक सम्मानसूचक क्रियारूपकें विशिष्ट जातिगत आदेशक शाब्दिक प्रतिबिम्ब मानव उपयुक्त नहि । ध्वनि, क्रियारूप, संबोधन आ सामाजिक दूरीक बहु-कारकीय अध्ययन आवश्यक । अन्वयक नियम परीक्षण लेल उदाहरण-वाक्यक प्रत्यक्ष स्वीकार्यता, मूल भाषाभाषीक निर्णय आ प्रतिवादक तुलना चाही ।

नव्य न्यायीय व्याप्तिक संग जनरेटिव व्याकरणक नियमक तुलना फलदायी रूपक होयत, औपचारिक समरूपता नहि । मूल भाषावैज्ञानिक शोधग्रन्थक प्रयोग-डेटाक पुनः परीक्षण एखन शेष अछि ।

२३१. नेपालक मैथिली भाषा-अधिकार, कोश आ बहुभाषिक शिक्षा

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद ३७३८३-३७४९८ ।

मूल अन्तिम अध्याय भाषा-अधिकार, नेपालक भाषिक सर्वेक्षण, बहुभाषिक कोश, मातृभाषा-आधारित शिक्षण आ भाषिक संस्थाक प्रसङ्ग जोड़ैत अछि। भाषा-विज्ञानक वर्णनात्मक प्रश्न—केना बोली अबैत अछि—आ सार्वजनिक नीतिक प्रश्न—ककरा कोन भाषामे पढबाक अधिकार अछि—अलग अछि, मुदा दुनूक बीच वास्तविक सम्बन्ध अछि। समुदायगत भाषिक पहचान लेल विद्यालयक पाठ्यपुस्तक, शिक्षक-तैयारी आ प्रशासनिक विन्यास परस्पर आवश्यक।

औपचारिक शोध अंग्रेजीमे प्रकाशित रहितो मैथिली समाजक भाषिक बोध बदलि सकैत अछि; मुदा ज्ञानक सामाजिक पहुँच अलग समीक्षा चाहैत अछि। प्रचलित लिपि, शिक्षकक उपलब्धता आ स्थानीय बोलक्षेत्रक विविधता बिना केवल भाषिक घोषणासँ शिक्षा-समानता सुनिश्चित नहि।

यादवक देश-सीमापार विद्वत् योगदानक मूल्याङ्कन स्रोतक स्पष्ट कृतिपञ्जीसँ कएल गेल। अन्तरराष्ट्रीय संस्थागत सम्मानक विशेष विवरणक बाह्य प्रमाण, सर्वेक्षणक परिमाण आ भाषा-नीतिक प्रभावक अंकगत जाँच एखन अलग कार्य अछि।

२३२. समग्र समानान्तर साहित्येतिहास : उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ प्रमाणक भविष्य

मूल ग्रन्थक संरचनात्मक अनुच्छेद : मूल वर्ड अनुच्छेद १-३७४९८।

“A Parallel History of Mithilā & Maithilī Literature”क केन्द्रीय साहित्येतिहासीय योगदान प्रचलित एकरेखीय सूची सँ बाहर चर्यापद, लोककलावन्त, नेपालक मैथिली, गजल, स्त्री-दलित रचनाकार, पञ्जी, बालसाहित्य, समालोचना, नाटक आ डिजिटल प्रकाशनकें एक बहुल विषय-क्षेत्रमे अनब अछि। ई ग्रन्थ केवल लेखकसूची नहि, साहित्यिक मान्यताक निर्माणक प्रक्रिया पर सार्वजनिक हस्तक्षेपक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

मूल पाठक बड़ सीमा सेहो दृष्टिगोचर अछि : अनेक लेखकक जीवनक आलोचनामे मूल रचनाक पर्याप्त निकट-पठनक स्थानपर पूर्वस्वीकृत सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन, कतिपय दीर्घ समान सामग्रीक पुनरावृत्ति, पुरस्कारक गणनाक आन्तरिक असंगति, विरोधी आलोचकपर स्रोताविहीन कठोर विशेषण, आ पञ्जीक वंशसूचीसँ बिना मूल हस्तलिखित प्रमाणक निश्चित अनुमान। एहिसभक समाधान दमन अथवा निषेध नहि, स्रोतक श्रेणी, प्राथमिक प्रकाशनक संगति आ निष्पक्ष प्रतिपक्ष-परीक्षण अछि।

नव सम्पादकीय संस्करणक प्राथमिकता रहत—एकरूप लेखकपञ्जी, प्रत्येक रचनाक संस्करण-विवरण, मूल उद्धरणक सटीक स्थान, संदेहग्रस्त कथनक स्पष्ट स्थिति, पाठान्तरक सूची, तिथि-सत्यापन आ दृश्य-श्रव्य रचनाक पृथक अभिलेख।

साहित्यिक आलोचनाक भारतीय, पाश्चात्य आ नव्य न्यायीय पद्धति ओतहि लागू हो जतय विशिष्ट पाठ-विषय ओकर उपयोग प्रमाणित करैत अछि।

एहि २३२-इकाईक संचयी अध्ययनमे मूल Wordक अन्तिम संरचनात्मक अनुच्छेद ३७४९८ धरि विषयगत अनुक्रम समीक्षा-पञ्जीमे समाविष्ट कएल गेल अछि। ई प्रमाण-सीमासहित साहित्यिक मूल्याङ्कन अछि; मूल ग्रन्थक प्रत्येक ऐतिहासिक दावा, पञ्जीक प्रत्येक वंशपाँति, सभ चित्रक मूल स्रोत अथवा सर्वप्रथम प्रकाशित पुस्तकक शत-प्रतिशत स्वतन्त्र सत्यापनक दावा नहि।

समेकित निर्णय

एहि समग्र समीक्षामे उपलब्ध मूल साहित्येतिहासक विविध विधा, काल, लेखकसमूह आ मूल अभिलेखीय प्रतिज्ञासभक आलोचनात्मक परीक्षा प्रस्तुत अछि। ई पूर्ण पुस्तकक विषयगत पाठमिलान अछि; मूल पुस्तकक हरेक वंशसूची, आकृति, जीवनी, पत्रिका-अंक अथवा बाह्य ऐतिहासिक विवरणक स्वतन्त्र तथ्यसत्यापनक समकक्ष नहि।

समग्र साहित्येतिहासक समावेशी अभिप्रायक महत्त्व स्वीकार करैत स्रोतगत विसङ्गति, उपलब्ध प्रमाणक अन्तर, समान विषयक पुनरावृत्ति आ आलोचनात्मक पक्षधरता सँ उत्पन्न सीमासभक विवेचनक अंग बनाओल गेल अछि।

पुस्तकाधारित ग्रन्थसूची

ठाकुर, गजेन्द्र। A Parallel History of Mithilā & Maithilī Literature (Volumes 1–100)। विदेह, २०२६।

चौधरी, राधाकृष्ण। A Survey of Maithili Literature। १९७६।

मिश्र, जयकान्त। A History of Maithili Literature। दू खण्ड, १९४९–१९५०।

ग्रियर्सन, जॉर्ज अब्राहम। Maithili Chrestomathy। १८८२।

साहित्येतिहासक दोसर दृष्टि

चर्यापदसँ डिजिटल युग धरि मैथिली साहित्यक
बहुवचन, उपेक्षित लोकस्वर, स्त्री आ दलित
लेखन, नाटक, कविता, समालोचना आ
भाषाविज्ञानक प्रमाणाधारित पुनर्पाठ।

एहि खण्डमे २३२ अलग आलोचनात्मक अध्ययन,
ऐतिहासिक प्रतिज्ञाक परीक्षण आ स्रोतगत
सीमाक विस्तृत विवेचन प्रस्तुत अछि।

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका



VIDEHA.CO.IN



GITHUB MIRROR